



श्रीः ।

ज्योतिर्विद्वरशुकदेवविरचित ।

भाषाटीकासमेत ।

यह पुस्तक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज "श्रीविङ्कटेश्वर" छापाखानामें

संवत् १९५६, शके १८२१.

इस पुस्तकका रजिस्टरी सब हक "श्रीविङ्कटेश्वर" यन्त्राधिकारिने स्वाधीन रक्खा है.



श्रीः ।

## अथ ज्योतिषसारस्थविषयानुक्रमणिका

| विषय.                             | पत्रांक. | विषय.                                 | पत्रांक. |
|-----------------------------------|----------|---------------------------------------|----------|
| मङ्गलाचरणम्                       | १        | रांवे ...                             | १७       |
| शकप्रकरण                          | २        | सोम...                                | १७       |
| संवत्सरपारिज्ञान ...              | ११       | भौम...                                | १८       |
| संवत्परिज्ञान ...                 | ११       | बुध ... .. .                          | १७       |
| संवत्सरभामानि ...                 | ११       | गुरु ... .. .                         | १७       |
| संवत्सरोके फल ...                 | ३        | शुक्र... .. .                         | १७       |
| संवत्सरोके स्वामी                 | ११       | शनि... .. .                           | १७       |
| संवत्सरोके भेद ...                | ४        | वारोंके देवताअधिदेवताकृत्य .          | १९       |
| अन्यमतसे स्वामीफल                 | ११       | विचारकरनेका कालपरिमाण                 | १७       |
| ऋतुप्रकरण... .. .                 | ११       | दाषादाष ... .. .                      | १७       |
| अथन... .. .                       |          | कृत्य ... .. .                        | १७       |
| शुभाशुभ कर्म ... .. .             |          | तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ ....             | १७       |
| संक्रांत्यनुसारऋतु ... .. .       | ५        | वस्त्रपरिधान ... .. .                 | २०       |
| राशिअनुसारऋतु ... .. .            | ११       | शमशुक्रम ... .. .                     | १७       |
| मासप्रकरण... .. .                 | ६        | विद्यारंभ ... .. .                    | १७       |
| मासपरिज्ञान ... .. .              | ११       | वारकाष्ठक ... .. .                    | २१       |
| चांद्र मास ... .. .               | ११       | नक्षत्रपरिज्ञान ... .. .              | १७       |
| सौर मास ... .. .                  | ११       | कोष्ठक ... .. .                       | २४       |
| सावन मास ... .. .                 | ११       | कार्याकार्यविचार ... .. .             | २५       |
| नाक्षत्र मास... .. .              | ११       | अधोमुखनक्षत्र ... .. .                | १७       |
| मासोंके नाम व सूर्य देवता ...     | ११       | तिर्यङ्मुख नक्षत्र ... .. .           | १७       |
| वारोंके अनुसार मास फल ...         |          | ऊर्ध्वमुख नक्षत्र ... .. .            | १७       |
| पक्ष... .. .                      |          | ध्रुवनक्षत्र ... .. .                 | १७       |
| अधिकमास ... .. .                  | ८        | मृदु नक्षत्र... .. .                  | २६       |
| क्षयमास ... .. .                  | ११       | लघु नक्षत्र... .. .                   | १७       |
| संवत्सरफल अधिकमासस्वामी इत्या-    |          | तीक्ष्ण नक्षत्र ... .. .              | १७       |
| दिक चक्र ... .. .                 | ९        | चर नक्षत्र ... .. .                   | १७       |
| तिथिप्रकरण... .. .                | १३       | उग्र नक्षत्र... .. .                  | १७       |
| तिथिसंज्ञापरिज्ञान और उनके फल ... | १४       | मिश्र नक्षत्र ... .. .                | २७       |
| कोष्ठक ... .. .                   | १५       | नष्टवस्तुज्ञान ... .. .               | २७       |
| अष्ट दिशाओंके स्वामी ... .. .     | १६       | नक्षत्रानुसार प्रश्न                  | १७       |
| ग्रहोंके वर्ण वा जाति ... .. .    | १७       | तिंथेवारनक्षत्रानुसार प्रश्न ... .. . | २८       |
| घातोंमें कर्तव्य कर्म ... .. .    | १७       | मद्यारंभसुहूर्त ... .. .              | २९       |



(२)

## ज्योतिषसारकी-

| विषय.                              | पत्रांक. | विषय.                         | पत्रांक. |
|------------------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| नवीनवस्त्रधारणका                   | .... २९  | योगों के नाम ... ..           | .... ३८  |
| मोती सुवर्णआदिका                   | .... "   | योगोंकी वर्जिततथटी ... ..     | .... ३९  |
| पुंसवनका .... ..                   | .... ३०  | करणजाननेकी रीति               | .... "   |
| कर्णवेधका ... ..                   | .... "   | नाम ... ..                    | .... "   |
| अन्नप्राशनका ... ..                | .... "   | काष्ठक ... ..                 | .... ४०  |
| शमश्रुकर्मका... ..                 | .... "   | कल्याणी ... ..                | .... "   |
| दंतबंधनका... ..                    | .... ३१  | संक्रांति ... ..              | .... ४१  |
| शमश्रुकर्म आवश्यक                  | .... "   | कोष्ठक वारनक्षत्रानुसार       | .... "   |
| शमश्रुकर्ममें वर्ज्य ...           | .... "   | करणकोष्ठक ... ..              | .... ४३  |
| मौंजीबंधन ... ..                   | .... ३२  | फलश्रुति ... ..               | .... ४४  |
| विवाहनक्षत्र... ..                 | .... "   | संक्रांतिमुहूर्त ... ..       | .... ४५  |
| अग्निहोत्रके ... ..                | .... "   | द्वितीयप्रकार ... ..          | .... "   |
| विद्याभ्यासके ... ..               | .... "   | धान्यलेनेका विचार ... ..      | .... "   |
| औषधी लेनेके ... ..                 | .... "   | नक्षत्रानुसार संक्रांतिपीडा   | .... ४६  |
| रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभ विचार... .. | .... ३३  | जन्मनक्षत्रोंका फल ... ..     | .... "   |
| रोगमुक्तिहोनेका प्रमाण             | .... "   | संक्रांतिका स्वरूप ..         | .... "   |
| रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र              | .... "   | चंद्रसे संक्रांतिवर्णफल... .. | .... "   |
| रोगमुक्तिस्नानलग्न                 | .... ३४  | राश्यनुसारचंद्र               | .... ४७  |
| लताऔषधिलगानेका                     | .... "   | पुण्यकाल ... ..               | .... "   |
| कूपारभ ... ..                      | .... "   | ग्रहणप्रकार... ..             | .... "   |
| द्रव्य देनेलेनेका ... ..           | .... "   | चंद्रग्रहणकामवृत्त            | .... "   |
| हाथी लेनेदनेका ... ..              | .... "   | सूर्यग्रहण ... ..             | .... "   |
| बोडालेनेका देनेका                  | .... ३५  | राश्यनुसार शुभाशुभ फल         | .... ४८  |
| गवादि पशुलेनेका                    | .... "   | द्वितीय पक्ष... ..            | .... "   |
| गौ लेने तथा बेचनेका                | .... "   | ऋतुप्रकरण... ..               | .... "   |
| तृणकाष्ठादिसंग्रहका                | .... "   | मासफल ... ..                  | .... ४९  |
| हलधारण करनेका                      | .... ३६  | तिथिफल ... ..                 | .... "   |
| बीज बोनेका ... ..                  | .... "   | ग्रहण और संक्रांति            | .... "   |
| राश्यनुसार चंद्रादयका फल           | .... "   | वारफल ... ..                  | .... "   |
| पुण्यनक्षत्रके गुणदाय              | .... "   | नक्षत्रफल                     | .... ५०  |
| सर्पदशमें वर्जित ... ..            | .... ३७  | योगफल                         | .... ५१  |
| माना सीखनेका ... ..                | .... "   | करणफल ... ..                  | .... "   |
| राज्याभिषेकका ... ..               | .... "   | राशिफल ... ..                 | .... ५२  |
| राजदर्शनका ... ..                  | .... "   | होराफल ... ..                 | .... "   |
| द्वितीयाके चंद्रोदयका              | .... ३८  | लग्नफल ... ..                 | .... "   |
| योगप्रकरण ... ..                   | .... "   | ग्रहोंका फल ... ..            | .... ५३  |
|                                    |          | रक्त फल ... ..                | .... "   |
|                                    |          | कालफल                         | .... "   |

| विषय.                              | पत्राक. | विषय.                          | पत्राक |
|------------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| पहिले वृश्चोका फल                  | ५४      | माता पिताके नाशक ... ..        | ६८     |
| रजस्वलाधर्म ...                    | "       | मृत्युकारक ... ..              | "      |
| गर्भाधानसुहृत                      | ५५      | ग्रहोंकी दृष्टि ... ..         | ६९     |
| ऋतुकी १६ रात्रि                    | "       | ग्रहोंका उच्चत्व व नीचत्व ...  | ७०     |
| तिथिवारसुहृत                       | ५६      | जन्मलग्नका फल ... ..           | "      |
| नक्षत्र ... ..                     | "       | स्त्रीजातक ... ..              | ७१     |
| गामपापुसवन ... ..                  | ५७      | कोष्ठक ... ..                  | ७४     |
| वारफल ... ..                       | "       | अष्टोत्तरीकी महादशा ... ..     | ७५     |
| सीमन्तोन्नयनविष्णुबली...           | ५८      | संख्याका क्रम ... ..           | "      |
| पक्षच्छिद्रा तिथि ... ..           | "       | अंतर्दशालानेका क्रम ... ..     | "      |
| मास-व्यञ्जानमाह ... ..             | "       | कोष्ठक ... ..                  | ७६     |
| गर्भिणीधर्म ... ..                 | ५९      | विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा. | ७८     |
| गर्भिणीप्रश्न ... ..               | "       | दशाओंकी भोक्तृ व भोग्यकी रीति. | "      |
| प्रसूतस्थानप्रवशन                  |         | ।वशात्तराक्रमकोष्ठक            | ७९     |
| प्रसूतिकालका प्रश्न                | ६०      | महादशा अंतर्दशा फल             | ८०     |
| तिथिगंडान्त ...                    | "       | रविकी दशा ... ..               | "      |
| लग्नगंडान्त .                      | ६१      | चंद्रका दशा ..                 | "      |
| नक्षत्रगंडान्त                     | "       | भौमकी दशा ..                   | "      |
| जातक ..                            | "       | राहुकी अंतर्दशा                | "      |
| जन्मकालका शुभाशुभ.                 | ६२      | गुरुकी अंतर्दशा                | ८१     |
| गंडान्तकाल ... ..                  | "       | शनिकी अंतर्दशा                 | "      |
| कृष्णचतुर्दशीका फल ...             | "       | बुधकी अंतर्दशा                 | "      |
| अमावास्याके फल ...                 | "       | केतुकी अंतर्दशा                | "      |
| दिनक्षयादितिथिफल ...               | "       | शुक्रकी अंतर्दशा               | ८२     |
| न्येष्ठानक्षत्रका फल ...           | ६३      | योगिनीदशाक्रम                  | "      |
| मूलका फल ... ..                    | "       | वर्षसंख्या .....               | "      |
| जन्मकालमें मूलनक्षत्र कहाँ है .    |         | योगिनीदशाका कोष्ठक             | ८३     |
| तिसका ज्ञान ... ..                 | ६३      | अंतर्दशाका फल ....             | "      |
| आश्लेषा नक्षत्रका नराकारचक्र       | ६४      | वर्षदशा... ..                  | ८४     |
| जन्मकालके ग्रहोंका फल ...          | "       | सूर्यकी दशाफल ... ..           | ८६     |
| पुरुषजातकोष्ठक ... ..              | ६६      | चंद्रकी दशा ....               | "      |
| जन्मकालमें बालकके मृत्युकारकग्रह   | "       | मंगलकी ....                    | "      |
| जन्मकालमें स्त्रीके मृत्युकारकग्रह | ६७      | बुधकी ....                     | "      |
| पराक्रमी ग्रह ... ..               | "       | शनिकी ....                     | "      |
| अपराक्रमी ग्रह ... ..              | "       | गुरुकी ....                    | "      |
| जातिभ्रंशकारक ... ..               | "       | राहुकी ....                    | "      |

| विषय.                             | पत्रांक. | विषय.                          | पत्रांक. |
|-----------------------------------|----------|--------------------------------|----------|
| शुक्रकी ... ..                    | ८६       | विवाहसमये प्रश्न ... ..        | ९९       |
| नित्यानित्यदशाकाप्रत्य० ...       | "        | वर्षप्रमाण ... ..              | १००      |
| दूसरा मत ... ..                   | ८७       | मंगलविचार ... ..               | १०१      |
| गोचरप्रकरण... ..                  | ८८       | भौमपरिहार                      | "        |
| द्वादशभवनक ... ..                 | "        | ज्येष्ठविचार                   | १०२      |
| जन्मके चंद्रमार्गे पांच           | "        | कन्यालक्षण                     | "        |
| गाचरचक्र ... ..                   | ८९       | वरलक्षण                        | "        |
| वेधचक्र... ..                     | "        | वरदोष ....                     | १०३      |
| जन्मचन्द्रमार्गे पांच वर्जनीय ... | ९०       | अस्तोदय...                     | "        |
| नेष्टस्थानके अनुसार चन्द्रफल...   |          | अस्त और उदयकाल ....            | "        |
| नेष्टस्थानके अनुसार दान...        | ९१       | अस्तमें वर्जनीयकर्म            | "        |
| वारोंके अनुसार दान ....           | "        | विवाहे वर्जनीय ....            | १०४      |
| ग्रहोंके दान और जप ....           | "        | मूलादि जन्मनक्षत्रका दोष ...   | "        |
| कोष्ठक ... ..                     | ९२       | जन्मनक्षत्रादिवर्ज्य ....      | "        |
| ग्रहपीडानिवारणार्थ... ..          | "        | वर्षसारणी ... ..               | १०५      |
| जातकर्म ... ..                    | ९३       | वर्षप्रमाण ... ..              | १०६      |
| नामकर्म ... ..                    | "        | गुरुचंद्रबल... ..              | "        |
| नामका भवकहडा चक्र... ..           | "        | गुरुका फल.... ..               | "        |
| कोष्ठक ... ..                     | ९४       | गुरु अनुकूल करनेका ....        | "        |
| मंचकारोहण ... ..                  | "        | अष्टमैत्रीज्ञानम्              |          |
| पालनेका सुहूर्त ... ..            | ९५       | वगादज्ञान                      | १०७      |
| दुग्धपान ... ..                   | "        | योनि ...                       | "        |
| तांबूलभक्षण... ..                 | "        | वश्यावश्य                      |          |
| सूर्यावलोकन ... ..                | ९६       | कोष्ठक ...                     | १०९      |
| कर्णवेध ... ..                    | "        | नाडी ....                      | ११०      |
| भूमिमें बैठना ....                | ९६       | नवपत्रक                        |          |
| अन्नमाशनसुहूर्त ... ..            | "        | मृत्युषडष्टक ....              | "        |
| चौलकर्मसुहूर्त ... ..             | ९७       | प्रीतिषडष्टक ... ..            | "        |
| विद्यारंभ ... ..                  | "        | द्विर्द्वादश ... ..            | "        |
| यज्ञोपवीतका सुहूर्त ....          | ९८       | चतुर्थसप्तमादि ... ..          | "        |
| मास्तादिसुहूर्त ... ..            | "        | वश्यावश्ययो० ....              | १११      |
| वर्षसंख्या ... ..                 | "        | ग्रहोंका शत्रुत्वमित्रत्व .... | "        |
| गुरुबल ... ..                     | "        | ताराके कोष्ठक ... ..           | ११२      |
| गलग्रह तिथि ... ..                | ९९       | योनिका कोष्ठक... ..            | ११३      |
| शुद्धादिका संस्कार ....           | "        | ग्रहोंका कोष्ठक ... ..         | ११४      |
| विवाहप्रकरण ....                  | "        | शुणोंका कोष्ठक ... ..          | "        |

| विषय.                              | पत्राक. | विषय.                                | पत्राक. |
|------------------------------------|---------|--------------------------------------|---------|
| नाडीका कोष्ठक ... ..               | ११४     | उद्यास्तल्लक्षण                      | १२५     |
| सत्कूटअसत्कूटकोष्ठक ...            | "       | लग्नके उक्त अंशदेनेका क्रम ...       | "       |
| कोष्ठक ... ..                      | ११५     | तात्काल स्पष्ट सूर्य लानेका साधन...  | १२६     |
| वर्णादिकका फल ...                  | "       | उदाहरण                               | "       |
| वैरियोनीका फल ...                  | "       | सूर्यकी गति ... ..                   | "       |
| गणोंका फल ... ..                   | "       | स्पष्ट रविके उत्तर ...               | "       |
| कूटफल ... ..                       | ११६     | अभुक्तदिवसके उदाहरण                  | १२७     |
| नाडीफल ... ..                      | "       | अयनांशलानेका क्रम ...                | "       |
| पार्श्वनाडी ... ..                 | "       | लग्नसे इष्टकाल लानेका क्रम...        | १२८     |
| असत्कूटविचार ... ..                | "       | भोग्यभुक्तसे इष्टकाल लानेका क्रम ... | "       |
| दुष्टकूटाका दान... ..              | ११७     | उदाहरण ... ..                        | १२९     |
| विवाहके उत्तमक्षत्र ... ..         | "       | रविके भोग्यकाल लानेका क्रम ..        | "       |
| एकविंशतिमहादोष ... ..              | "       | लग्नसे भुक्तकाल लानेका क्रम ..       | "       |
| कोष्ठकानि ... ..                   | ११८     | इष्टकालसमयका तत्काल सूर्य ...        | १३०     |
| दोषलक्षण... ..                     | १२०     | इष्टकाल ... ..                       | "       |
| कर्तरीदोष... ..                    | "       | भुक्तभोग ... ..                      | "       |
| वधूवरकी राशिमें अष्टमल्लक्षणवर्ष्य | "       | इष्टघटीसे लग्नलानेका ... ..          | १३१     |
| दुष्टसुहृत्कथन ... ..              | "       | सूर्य और लग्न एकराशिमें हों तो इष्ट  | "       |
| यमाह्लादिककथन ... ..               | "       | लानेका क्रम ... ..                   | "       |
| कोष्ठक                             | १२१     | लग्नके शुभाशुभ ग्रह ... ..           | १३४     |
| लक्षादोष                           | "       | षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम ... ..    | १३५     |
| ग्रहण तथा उत्पात ... ..            | "       | त्रिंशांशादिकथन ... ..               | "       |
| पाप ह्युक्त और वेधनक्षत्र ...      | "       | आदौ ग्रहज्ञानम् ... ..               | १३५     |
| एकार्गलदोष ... ..                  | १२२     | होराकथन ... ..                       | "       |
| चंडाशुभ ... ..                     | "       | द्रेष्काणकथन ... ..                  | "       |
| पचशलाका यंत्र.                     | "       | सप्तमांश ... ..                      | १३६     |
| सप्तशलाका यंत्र.                   | "       | लग्नका नवांश ... ..                  | "       |
| क्रांतिसाम्यचक्र                   | १२३     | द्वादशांश ... ..                     | १३७     |
| जामिन्नदोष                         | "       | विषमत्रिंशांश ..                     | "       |
| चरत्रयदाष ... ..                   | "       | समत्रिंशांश ... ..                   | १३८     |
| तिथि अनुसार वर्जित लग्न            | १२४     | षड्वर्ग जाननेका                      | "       |
| दोषनिवारण ... ..                   | "       | उक्तंश ... ..                        | १३९     |
| लग्नसुहृत् ... ..                  | "       | लग्नांशफल ... ..                     | "       |
| राशुदय ... ..                      | "       | लग्नवर्गात्तमलक्षण ... ..            | "       |
| लग्नकी घटिकाओंकी संख्या...         | "       | गोधूललग्नकाकथन ... ..                | १४०     |
| प्रतिदिवस भुक्तफल ... ..           | "       | वधूमवेश... ..                        | "       |

(६)

## ज्योतिषसारकी-

| विषय.                                 | पत्राक. | विषय.                         | पत्राक. |
|---------------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| उक्त मासादि ....                      | १४१     | शेषोंके मुख ...               | १५०     |
| नूतन पल्लवधारण ..                     | "       | दुष्टयोग ...                  | "       |
| गंधर्वविवाहसुहूर्त .                  | "       | कूर्मचक्र ...                 | "       |
| दूसरेमत अनुसार .                      | "       | स्तंभचक्र ...                 | १५१     |
| दत्तक पुत्रलेनेका सुहूर्त.            | "       | देहलीका सुहूर्त ...           | "       |
| वास्तुप्रकरण ....                     | १४३     | द्वारचक्र ...                 | "       |
| ग्रामादि अनुकूल .                     | "       | शांतिका अग्निचक्र ..          | १५२     |
| ग्रहबल....                            | "       | गृहके मुखमें आहुति ...        | "       |
| द्वारशुद्धि ....                      | "       | गृहप्रवेशका सुहूर्त ...       | "       |
| ग्राम अनुकूल ....                     | "       | कलशचक्र ...                   | १५३     |
| जातक जाननेका क्रम ...                 | "       | वामार्कलक्षण ...              | "       |
| वर्गोंके स्वामी ....                  | "       | शुभाशुभ ग्रह और लग्न          | "       |
| काकिणी ...                            | "       | गृहारंभम लग्नशुद्धि ..        | "       |
| चंद्रमाके मुखजाननेकाविचार             | १४४     | अशुभयोगोंका लग्न              | "       |
| आयादिसाधन ...                         | "       | आयुष्यप्रमाण ...              | १५४     |
| क्षेत्रफल ...                         | "       | पृथ्वी शोधनेका प्रकार         | "       |
| आयोंके नाम ...                        | "       | प्रश्नअक्षरफल ...             | १५५     |
| वर्ण अनुसार भाय ...                   | "       | यात्राप्रकरण                  | १५६     |
| आयोंके फल ...                         | १४५     | शुभाशुभ फल                    | "       |
| नक्षत्र अनुसार व्ययसाधन ....          | "       | धातचंद्र ...                  | १५७     |
| ग्रहोंकी राशि ...                     | "       | धातप्रकरणम्                   | "       |
| ग्रहोंके नाम ...                      | १४६     | कालचंद्र ...                  | "       |
| ग्रहोंके नामलानेका प्रकार ....        | "       | तिथिपरत्व वर्जितलग्न.         | १५८     |
| अंशलानेका प्रकार ...                  | "       | यात्राके नक्षत्र              | "       |
| ग्रहोंके भाग ...                      | "       | मध्यनक्षत्र                   | "       |
| ग्रहोंके द्वार ...                    | "       | वज्यनक्षत्र... ..             | "       |
| ग्रहोंके स्थानोंकी योजनाका प्रकार.... | "       | प्रयाणमें शुभाशुभ वार         | १५९     |
| अल्पदोष ...                           | १४७     | होराकथन वारसहित ...           | "       |
| ग्रहारभचक्र ...                       | "       | उत्तम प्रश्न न होय तो ...     | १६१     |
| ग्रहभारंभके मास ...                   | "       | वारानुसार वस्त्रधारण...       | "       |
| ग्रहारंभके मासोंका फल                 | "       | नक्षत्र तिथिवार अनुसार        | "       |
| मासप्रवेशसास्त्री ...                 | १४८     | दिशाशुलवर्ज्य ....            | "       |
| दिशानुसार ग्रहोंका मु० ...            | १४९     | शूलदोषनिवारणार्थ पदार्थभक्षण  | १६२     |
| ग्रहारंभके नक्षत्र... ..              | "       | कुंभमीनके चंद्रमें वर्जित ... | १६३     |
| वृषचक्र                               | "       | सन्मुखचंद्रावचार ...          | "       |
| शालान्यास                             | "       | दिशानुसार सन्मुखचंद्र         | "       |

# अनुक्रमणिका ।

( ७ )

| विषय.                           | पत्रांक. | विषय,                               | पत्रांक. |
|---------------------------------|----------|-------------------------------------|----------|
| कालवैलाविचार ... ..             | १६३      | शिवद्विचयीसुहूर्त                   | .. १८४   |
| बौद्धिनीवास ... ..              | "        | शिवाल्लिखित                         | .. १८६   |
| वारानुसार कालराहुका वास...      | १६४      | गारखनाथकृत यात्रासुहूर्तारंभ        | .. १९१   |
| काल कहाहै तिषका ज्ञान ....      | १६५      | गोरक्षमते तिथिचक्रं                 | .. १९२   |
| पथाराहुचक्र ... ..              | "        | आनंदादि शुभाशुभयोग                  | .. १९३   |
| धर्मार्थकाममोक्ष मार्गके फल ... | १६६      | उर्नोका कोष्ठक ....                 | .. १९४   |
| पथाराहु कर्म करनेयोग्य ...      | १६८      | चरयोग .... ..                       | .. १९५   |
| गर्गादिकोंका सुहूर्त ... ..     | "        | दासदासील्लेनेका सुहूर्त             | .. १९६   |
| शुभाशुभ वाहन .... ..            | "        | गवादि पशुल्लेनेका मु०               | .. १९७   |
| अंकसुहूर्त ... ..               | १६९      | अश्व माल्लेनेकामु० ...              |          |
| भ्रमणाडल सुहूर्त.... ..         | "        | हाथीमाल्लेनेका मु०....              | १९८.     |
| हैवरसुहूर्त ... ..              | १७०      | शिविकाराहणचक्र मु०                  | "        |
| घबाडसुहूर्त ... ..              | "        | छत्रचक्र .... ..                    | १९९      |
| वार अनुसार स्वरशकुन ....        | "        | मचकचक्र ....                        | "        |
| वार अनुसार छायाशकुन ....        | "        | शरसहित धनुश्चक्र                    | "        |
| काकशब्दशकुन ....                | १७१      | रथचक्र ... ..                       | २००      |
| पिंगलशब्दशकुन .                 | "        | तिल्लोंकी धानीकरनेका मु०            | "        |
| छिक्कानुसार पदच्छाया.           | "        | ऊखोंके रस काढनेका मु०               | "        |
| लककाशकुन ... ..                 | "        | कृषिकर्मका मु०... ..                | २०१      |
| पल्लीशब्दशकुन ... ..            | १७२      | हलचक्र .... ..                      |          |
| पल्लीपत्तन और सरठावरोहण         | "        | नौका बनाने व जलमें उतारनेका सुहूर्त | २०२      |
| अंगस्फुरण.... ..                | १७३      | नौकाचक्र.                           | "        |
| ख्रियाका अगस्फुरण ... ..        | १७५      | लग्न और ग्रहबल                      | "        |
| नेत्रस्फुरण.... ..              | "        | नौका स्थापनेका गृह                  | २०३      |
| त्रिशूलयंत्र.... ..             | "        | दीपिकाचक्र ....                     | "        |
| गमनका लग्न ... ..               | १७६      | कूपचक्र .... ..                     | "        |
| द्वादशस्थानोंके अनुसार ...      | १७७      | बागल्लगानेका सुहूर्त ....           | "        |
| गमनलग्नमें ग्रहबल .... ..       | १७९      | सिक्काचलानेका सुहूर्त....           | .. २०५   |
| प्रस्थान रखना .... ..           | १८०      | प्रश्नप्रकार ... ..                 | "        |
| प्रस्थानकितनेदिवस .... ..       | "        | तिथ्यादिसंयुक्त प्रश्न              | "        |
| प्रस्थानके स्थानके विचार ....   | "        | आत्मच्छायाप्रश्न                    | "        |
| प्रस्थानके दिवसमें वर्ज्यपदार्थ | "        | पंथाप्रश्न ... ..                   | "        |
| मात्स्याक्तशकुन... ..           | "        | कार्याकार्यप्रश्न ....              | २०६      |
| दुष्टशकुनदोषनिवारण :.           | १८२      | अंकप्रश्न ....                      | २०७      |
| गमनकालमें उत्तमशकुन             | "        | नवग्रहोंका यंत्र                    |          |

(८)

## ज्योतिषसारकी-अनुक्रमणिका ।

| विषय.                                 | पत्रांक. | विषय.                              | पत्रांक. |
|---------------------------------------|----------|------------------------------------|----------|
| वारनक्षत्रयुक्त पंथाप्रश्न            | ... २०७  | चन्द्रस्पष्टक्रमः                  | २१७      |
| नष्टवस्तुप्रश्न ...                   | "        | लग्नसाधनम्                         | "        |
| गर्भिणी प्रश्न ....                   | "        | मुंथा... ..                        | २१८      |
| मुष्टिप्रश्न ....                     | "        | पंचाधिकारी                         | "        |
| लग्नसे मनचितित प्रश्न.                | २०८      | दृष्टिक्रमः ....                   | "        |
| संज्ञानुसार लग्नोक्ते०                | २०९      | स्पष्टार्थचक्रम्                   | २१९      |
| अंकप्रश्न ... ..                      | "        | त्रिपताकीचक्र                      | २२०      |
| रोगीप्रश्न ... ..                     | "        | वेधविचार                           | "        |
| केवल लग्नसे प्रश्न                    | २१०      | मुद्दादशा.                         | २२१      |
| मेघका प्रश्न... ..                    | "        | मुद्दादशाचक्रम्                    | "        |
| जललग्न ... ..                         | "        | मासवनानेका क्रम                    | "        |
| मेघनक्षत्र ... ..                     | २११      | ग्रहचक्रप्रकरण ... ..              | २२२      |
| स्त्रीनपुंसक पुरुषन० ... ..           | "        | सूर्यचंद्रभौमकोष्ठक ... ..         | २२३      |
| सूर्य व चंद्रनक्षत्र सं० ... ..       | "        | बुध ... ..                         | "        |
| ध्यान्यप्रश्न ... ..                  | "        | गुरु ... ..                        | "        |
| पशुके विषयमें प्रश्न ... ..           | २१२      | शुक्र... ..                        | "        |
| राज्यभंगादि योग ... ..                | २१३      | कोष्ठक ... ..                      | २२४      |
| सूर्य तथा चंद्र परिवेष अर्थात् मंडलका | "        | शनि राहु ... ..                    | "        |
| फल ... ..                             | "        | केतु... ..                         | २२५      |
| उत्पातांका फल... ..                   | "        | कोष्ठक ... ..                      | "        |
| छायाबल यात्रा ... ..                  | "        | जन्मनक्षत्र कहां पडाहै तिसका ज्ञान | "        |
| वायुपरीक्षाकथन... ..                  | २१४      | लग्नशुद्धि व पंचकज्ञान... ..       | २२६      |
| वर्षनिकालनेका प्रकार ... ..           | २१५      | वारोंमें पंचक वर्जित ... ..        | "        |
| तिथिबनानेका क्रम ... ..               | २१६      | दिनमान रात्रिमान ... ..            | २२७      |
| नक्षत्र छानेका क्रम ... ..            | "        | दिवस कितना चढाहै ... ..            | "        |
| ग्रहचालनक्रम ... ..                   | "        | रात्रि कितनी गई... ..              | "        |
| ग्रहस्पष्टाकरण ... ..                 | "        | अंतरंग बाहिरंग नक्षत्र ... ..      | २२८      |
| अथात अभोगबनानेकी रीति ... ..          | २१७      | सूतिकालान ... ..                   | "        |

इति ज्योतिषसारस्थ विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेंकटेश्वर” छापाखाना—मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः

# अथ ज्योतिषसारः ।

भाषाटीका समेतः ।

तत्रादौ मङ्गलाचरणश्लोको ।

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ॥

अज्ञानगजगण्डघ्नीं गर्गलल्लादिकान्मुनीन् ॥ १ ॥

नानाग्रंथान्समालोक्य दैवज्ञानां च तुष्टये ॥

कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम् ॥ २ ॥

टीका—ग्रंथके निर्विघ्न परिसमाप्तिके लिये प्रथमतः गणेशजीको नमस्कार करके और चैतन्यस्वरूपिणी अज्ञानको नाश करनेहारी ऐसी जो सरस्वतीजी ताको नमस्कार करके और गर्गाचार्य, लल्ल, वसिष्ठ, नारद इत्यादिक जो ज्योतिःशास्त्रके प्रवर्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करके और सूर्यसिद्धांतादिक नानाप्रकारके ग्रन्थ अवलोकन करके ज्योतिर्विदके संतोषके लिये और बालकोंको थोडेमें मुहूर्तादिकका ज्ञान होय इस कारण अत्युत्तम ज्योतिषसारनामक ग्रंथको करते भये ॥ १ ॥ २ ॥

शकप्रकरणप्रारंभः ।

संवत्सरनामपरिज्ञानम् ।

शकेंद्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसैर्हते ॥

शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

टीका—शालिवाहन शकमें जिस संवत्सरका नाम जानना होय उसकी यह रीतिहै कि, शकक्री संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावे और ६० का भाग देय, जो शेष बचे वही संवत्सरका नाम जानिये ॥ ३ ॥



( २ )

ज्योतिषसार ।

संवत्परिज्ञान ।

स एव पञ्चाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥

रवाया उत्तरे तीरे संवन्नान्नाऽतिविश्रुतः ॥ ४ ॥

टीका—जो शालिवाहनके शकमें १३५ मिलावे तो वही विक्रम संवत् होजाय. जो रेवानदीके उत्तर तटमें संवत् नामसे प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

संवत्सरोके नाम ।

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ॥

शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ५ ॥

टीका—संवत्सरोके अंकोंमें ९ युक्त करे और ६० के भाग देनेसे जो शेष रहे सो प्रभवादि संवत्सर जानना—उदाहरण जैसे १९३५ में ९ मिलाये तो १९४४ हुये—अब इसमें ६० का भाग दिया तो शेष २४ रहे इस कारण इस संवत्सरका नाम विक्रति नाम जानना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥

अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ६ ॥

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥

चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ७ ॥

सर्वचित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥

नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ८ ॥

हेमलंबी विलंबी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥

शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ९ ॥

पुवंगः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ॥

परिधावी प्रमादि च आनंदो राक्षसो नलः ॥ १० ॥

पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥

हुंदुभी रुधिरोग्दारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ११ ॥

| सं० | नाम       | सं० | नाम        | सं० | नाम      | सं० | नाम        | सं० | नाम         |
|-----|-----------|-----|------------|-----|----------|-----|------------|-----|-------------|
| १   | प्रभवः    | १३  | प्रमाथी    | २६  | स्वरः    | ३७  | शोभनः      | ४९  | राक्षसः     |
| २   | विभवः     | १४  | विक्रमः    | २६  | नन्दनः   | ३८  | क्रोधी     | ५०  | नलः         |
| ३   | शुक्रः    | १५  | वृषः       | २७  | विजयः    | ३९  | विश्वामसुः | ५१  | पिंगलः      |
| ४   | प्रमोदः   | १६  | चित्रभानुः | २८  | जयः      | ४०  | पराभवः     | ५२  | कालयुक्तः   |
| ५   | प्रजापतिः | १७  | सुभानुः    | २९  | मन्मथः   | ४१  | पुवंगः     | ५३  | सिद्धार्थी  |
| ६   | अंगिराः   | १८  | तारणः      | ३०  | दुर्मुखः | ४२  | कीलकः      | ५४  | रौद्रः      |
| ७   | श्रीमुखः  | १९  | पार्थिवः   | ३१  | हेमलंबी  | ४३  | सौम्यः     | ५५  | दुर्मतिः    |
| ८   | भावः      | २०  | व्ययः      | ३२  | विलंबी   | ४४  | साधारणः    | ५६  | कुंडुभिः    |
| ९   | युवा      | २१  | सर्वजित्   | ३३  | विकारी   | ४५  | विरोधकृत्  | ५७  | सधिरोद्गारी |
| १०  | धाता      | २२  | सर्वधारी   | ३४  | शार्वरी  | ४६  | परिधावी    | ५८  | रक्ताक्षी   |
| ११  | ईश्वरः    | २३  | विरोधी     | ३५  | प्लवः    | ४७  | प्रमादी    | ५९  | क्रोधनः     |
| १२  | बहुधान्यः | २४  | विकृतिः    | ३६  | शुभकृत्  | ४८  | आनंदः      | ६०  | क्षयः       |

### संवत्सरोका फल.

प्रभवाद्दिगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं  
शेषं ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पंचद्वाभ्यां सु-  
भिक्षकम् ॥ त्रिषष्टे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ १२ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरोमसे चलते हुये संवत्सरोको द्विगुणा करे, उसमें-  
से तीन घटाके सातका भाग देनेसे जो शेष रहै तिससे शुभाशुभ फल जानि-  
ये ॥ १ अथवा ४ शेष रहै तो दुर्भिक्ष और ५ वा २ वचै तो सुभिक्ष, ३  
अथवा ६ शेष रहै तो साधारण और जो शून्य आवे तो पीडा जाननी १२

### संवत्सरोके स्वामी.

युगं भवेद्द्वत्सरपंचकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्या ॥ भवंति  
तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ विष्णु-  
र्जावः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यःपितरः ॥ विश्वेदेवाश्चन्द्र-  
ज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥ १३ ॥

टीका—पांच वर्षका एक युग होता है, इसी प्रमाणसे ६० वर्षके १२ युग और  
क्रमसे उनके १२ स्वामी विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, शिव,  
पितर, विश्वेदेव, चन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार, सूर्य्य ॥ १३ ॥

( ४ )

ज्योतिषसार ।

भेद.

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्यस्तस्मादिडान्दि-  
दिति पूर्वपदाद्भवेषु ॥ एवंयुगेषु सकलेषु तदीय-  
नाथा बह्वचर्कशीतगुविरंचिशिवाः क्रमेण ॥ १४ ॥

टीका—इष्ट शकमें पांचका भाग दे शेष बचें उनसे संवत्सरोके नाम क्रमसे जानिये ॥ पहिले संवत्सका स्वामी अग्नि १ दूसरे परिवत्सरका स्वामी सूर्य २ तीसरे इडावत्सरका स्वामी चन्द्रमा, ३ चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा, ४ पांचवें इद्वत्सरके स्वामी शिव ५ ॥ १४ ॥

दूसरामत ।

आनंदादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ॥

जयादेःशंकरः प्रोक्तःसृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका—आनंदादिक २० संवत्सरोका स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्ता है और भावादिक २० संवत्सरोका स्वामी विष्णु है जो सबका पालन करते हैं तीसरे जयादिक २० संवत्सरोका स्वामी रुद्र संहारकरते हैं ॥ १५ ॥

ऋतुप्रकरणम् ।

अयन.

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरदृश्च तदामरम् ॥ भवति

दक्षिणमन्य ऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १६ ॥

टीका—शिशिर, वसंत, ग्रीष्म इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति उत्तर दिशा-को होती है तिसको उत्तरायण कहते हैं, यही देवताओंका दिवस है और वर्षा शरद् हेमंत इन तीनों ऋतुमें सूर्यकी गति दक्षिणको होती है तिसको दक्षिणायन कहते हैं यही देवताओंकी रात्रि है ॥ १६ ॥

अयनोंमें शुभाशुभकर्म ।

ग्रहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः ॥ सौम्या-

यने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्स्वल्न दक्षिणे च ॥ १७ ॥

टीका—ग्रहप्रवेश देवप्रतिष्ठा विवाह मुंडन व्रतधारण मंत्र लेना ये सब शुभ कर्म उत्तरायणमें करावे और सब निंद्य कर्म दक्षिणायनमें करने योग्य हैं १७ ॥

संक्रांति अनुसार ऋतु.

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ॥

ग्रीष्मश्चवर्षाश्च शरच्च तद्वद्वेमंतनामा कथितश्च षष्ठः ॥ १८ ॥

टीका—मकर आदि लेकर दो राशि सब सूर्य भोगतेहैं तब एक ऋतु होतीहै उसी प्रकार सूर्य १२ राशि भोगतेहैं उससे ६ ऋतु होतेहैं ॥ १८ ॥

तथा मतांतर राशि ।

चैत्रादि द्विद्विमासाभ्यां वसंताद्यृतवश्च षट् ॥

दाक्षिणात्याः प्रगृह्णति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ १९ ॥

टीका—चैत्रादिक दोमासमें १ ऋतु इस प्रकारसे १२ मासमें ६ ऋतु होतेहैं सो दक्षिण देशमें देव पितृ कर्ममें प्रसिद्धहै ॥ १९ ॥

|         |              |            |              |
|---------|--------------|------------|--------------|
| १ मकर   | } शिशिरऋतु १ | ७ कर्क     | } वर्षाऋतु ४ |
| २ कुंभ  |              | ८ सिंह     |              |
| ३ मीन   | } वसंतऋतु २  | ९ कन्या    | } शरदऋतु     |
| ४ मेष   |              | १० तुला    |              |
| ५ वृष   | } ग्रीष्मऋतु | ११ वृश्चिक | } हेमंतऋतु ६ |
| ६ मिथुन |              | १२ धन      |              |

मतांतरराशानुसार

मासअनुसार.

मेषादिक दो राशि सूर्य भोगते हैं चैत्रसे लेकर दो२ मास वसंत इस प्रमाणसे वसंत आदिक६ होती हैं। आदिक छः६ ऋतु होती हैं.

|         |           |           |         |           |           |           |         |
|---------|-----------|-----------|---------|-----------|-----------|-----------|---------|
| २ वृषभ  | } वसंत    | ७ तुला    | } शरद   | १ चैत्र   | } वसंत    | ७ आश्वि   | } शरद   |
| ३ मिथुन |           | ८ वृश्चि. |         | २ वैशा.   |           | ८ कार्ति. |         |
| ४ कर्क  | } ग्रीष्म | ९ धन      | } हेमंत | ३ ज्येष्ठ | } ग्रीष्म | ९ मार्ग.  | } हेमंत |
| ५ सिंह  |           | १० मक     |         | ४ आषा     |           | १० पौष    |         |
| ६ कन्या | } वर्षा   | ११ कुंभ   | } शिशिर | ५ श्राव.  | } वर्षा   | ११ माघ    | } शिशिर |
|         |           | १२ मीन    |         | ६ भाद्र.  |           | १२ फा.    |         |

१ दक्षिण देशवासी इस महीनेमें पितृकर्म करते हैं

## मासप्रकरण तत्र मासपरिज्ञान ।

पूर्वराशि परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ॥

सा राशिः संक्रमाख्या स्यान्मसत्र्वयनहायने ॥ २० ॥ -

टीका—पूर्व राशिको छोड़के जिस आगेकी राशिमें सूर्य जाताहै उसी सूर्यकी राशिसे १२संक्रांति मास ऋतु अयन इन सबोंकी गणना होतीहै ॥ २० ॥

दर्शावधि मासमुशंति चांद्रं सौरं तथा भास्करराशिभोगात् ॥

त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमिदोर्भगणाश्रयाश्च ॥ २१ ॥

टीका—मास कई प्रकारके होतेहैं एक चांद्रमास जो शुक्लप्रतिपदासे अमावास्या पर्यन्त होताहै, दूसरा सौर मास जो सूर्यके एकराशि भोगनेसे होताहै. तीसरा सावनमास जो तीस दिनका होताहै, चौथा नाक्षत्र मास जो चंद्रमाके गिरद नक्षत्रोंके फिरनेसे होताहै ॥ २१ ॥

## मासोंके नाम तथा सूर्य्य देवता और देवी ।

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्चशुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः॥तथेष ऊर्जश्च सहाःसहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण ॥ २२ ॥ अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ॥ चैत्रमासे तु वेदांगो भानुर्वै-शाख एव च ॥२३॥ ज्येष्ठमासे तपेदिंद्र आषाढे तपते रविः ॥ग-भस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥२४॥ सुवर्णरेताश्चयु-जि कार्तिके च दिवाकरः ॥ मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुःस-नातनः ॥ इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ॥ २५ ॥ केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥ माधवं माघमासे तु गोविंदमथ फाल्गुने ॥ २६ ॥ चैत्रे विष्णुं तथा विद्याद्वैशाखे मधु-सूदनं ॥ त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः॥२७॥श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ॥ आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥ २८ ॥ मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च दे-वता ॥ माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ॥ २९॥ चैत्रे मासि रमा देवी वैशाखे मोहिनी तथा॥पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढे कमलेति च॥३०॥कार्त्तीमती श्रावणे च भाद्रे तु अपरा-जिता ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी तु कार्तिके ॥ ३१ ॥

| संख्या | नामानि       | नामानि | सूर्य       | देवी       | देवता       |
|--------|--------------|--------|-------------|------------|-------------|
| १      | चैत्रमास     | मधुः   | वेदांगः     | रमा        | विष्णुः     |
| २      | वैशाखमास     | माधवः  | भानुः       | मोहिनी     | मधुसूदनः    |
| ३      | ज्येष्ठमास   | शुक्रः | इन्द्रः     | पद्माक्षी  | त्रिविक्रमः |
| ४      | आषाढमास      | शुचिः  | रविः        | कमला       | वामनः       |
| ५      | श्रावणमास    | नभः    | गभस्तिः     | कांतिमती   | श्रीधरः     |
| ६      | भाद्रपदमास   | नभस्यः | यमः         | अपराजिता   | हृषीकेशः    |
| ७      | आश्विनमास    | इषः    | सुवर्णरेताः | पद्मावती   | पद्मनाभः    |
| ८      | कार्तिकमास   | ऊर्जः  | दिवाकरः     | राधा       | दामोदरः     |
| ९      | मार्गशीर्षमा | सहाः   | मित्रः      | विशालाक्षी | केशवः       |
| १०     | पौषमास       | सहस्यः | विष्णुः     | लक्ष्मी    | नारायणः     |
| ११     | माघमास       | तपाः   | अरुणः       | रुक्मिणी   | माधवः       |
| १२     | फाल्गुनमास   | तपस्यः | सूर्यः      | धात्री     | गोविंदः     |

### वार अनुसार मासफल ।

पंचार्कवासरे रोगाः पंचभौमे महद्भयम् ॥

पंचार्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥ ३२ ॥

टीका—एक महीनेमें पांच रविवार पडें तो रोग उत्पन्न होय और ५ भौमवार पडनेसे अधिक भय उपजे और ५ शनिवारसे दुर्भिक्ष होय और शेष वार ५ पडे तो वे शुभदायक होय ॥ ३२ ॥

पक्ष.

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ॥ पूर्वस्तु  
दैवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृष्णे सितपंचमीतः ॥ आदौ शुक्लः  
प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णेपि मासके ॥ ३३ ॥

टीका—शुक्लप्रतिपदासे पौर्णमासीतक शुक्लपक्ष और वदीपडवासे अमावा-  
स्यातक कृष्णपक्ष होता है. शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका

(८)

ज्योतिषसार ।

होताहै ॥ ३३ ॥ दूसरा भेद—शुद्धी पंचमीसे लेकर वदी ५ तक शुक्लपक्ष जानिये. पहिले शुक्लपक्ष तदनंतर कृष्ण जो अमावास्याको मास पूरा होता हो तो प्रथम कृष्णपक्ष तिसके पछे शुक्ल और कदाचित् पूर्णिमाको मासांत हो तो ये दोनों पक्ष देश अनुसार प्रचलितहैं ॥ ३३ ॥

अधिक मास ।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनेः षोडशभिस्तथा ।

घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ ३४ ॥

टीका—३२महीने १६ दिवस ४ घटी बीत जाने पर्यंत अधिकमासका संभव होताहै ॥ ३४ ॥

शाके बाणकरांकके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते

शेषा वह्निमधौ च माधवशिवे ज्येष्ठे वरे चाष्टके ॥

आषाढे नृपतौ नभश्च शरके भाद्रे च विश्वांशके

नेत्रे चाश्विनकेऽधिमासमुदिते शेषेऽन्यके स्यान्नहि ॥ ३५ ॥

टीका—वर्तमान शाकके अंकमें ९२५ हीनकरो और शेष अंकमें १९ का भागदो, जो शेष ३ रहैं तो अधिक चैत्रमास जानना-और ११ शेष रहैं तो वैशाख और जो ००।०९ बचैं तो ज्येष्ठमास अधिक होगा-और जो १६ शेष रहैं तो आषाढ अधिक होगा-और जो ५ बचैं तो श्रावण अधिक जानना और जो १३ शेष रहैं तो दो भाद्रपद होंगे-और जो २ शेष रहैं तो आश्विनमास की वद्धि होगी-और अंक शेष रहनेसे कोई मास अधिक नहीं जानना ३५ ॥

क्षयमास ।

असंक्रातिमासोधिमासःस्फुटंस्याद्विसंक्रातिमासःक्षयाख्यःकदाचित् ।  
क्षयः कार्तिकादित्रयेनान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ३६ ॥

टीका—जो दो अमावास्याके बीचमें संक्रांति न होय तो वह अधिकमास होताहै-और जो दो अमावास्याके बीचमें कदाचित् दो संक्रांति होय तो क्षयमास जानना-और कार्तिक आदि ३ मासही क्षय होतेहैं-और जिस संवत्में क्षयमास होगा उसी संवत्में अधिकमास २ होगा-इन सब श्लोकोंका आशय ग्रहणके सूर्य, चंद्रमाका स्पर्श मोक्ष सहित आगे चक्रोंमें देख लेना चाहिये ॥

# भाषाटीकासमेत ।

( ९ )

| संव-<br>त्सर<br>फल    | नामसंख्या<br>अंकोके जा<br>शेषफलवचे | अधि<br>षष्टि                      | आधिक<br>मास                     | सूर्यचंद्र<br>ग्रहण   | प्रभवादिसंवत्सरोके फल ॥  |
|-----------------------|------------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------|---|--|
| १<br>शे. ३<br>सम      | १९३५<br>विकृति<br>शा. १८००         | विष्णुअ<br>धिपति<br>त्वाष्ट्र     | शेष १<br>नास्ति                 | श्रावण १५<br>चंद्र स्प. ५२।<br>१७ मो २।३१                                     | प्रकृतिविकृतिरतिविकृतिप्रकृतिस्तथा ॥ तथा<br>पिसुखिनो लोकाश्चास्मिन् विकृतिवत्स्ने ॥        |
| २<br>शे. ५<br>सुभि.   | १९३६ खर<br>शाके १८०१               | विष्णुअ<br>धिपति<br>त्वाष्ट्र     | आश्विन<br>शेष २                 | श्रा.कृ. ३०मं.सू.पौ. शु.<br>१५ चं. स्प. ३३।५२<br>मो. ३।१८                     | खराब्देनिःस्वनालोकाभन्योन्यसमरोत्सुकाः ॥<br>मध्यमाष्टरित्युग्रं रोगैर्भूयात्प्रकंपन ॥      |
| ३<br>शे. ०<br>पीडा    | १९३७ श.<br>१८०२<br>नंदन ६          | विष्णुअ<br>धिपति<br>अहिर्बुध्न्य. | चैत्रसंभ<br>व शेष ३<br>अब्दराशे | ज्ये.शु. १५चं.प्र.स्प. ३३।९<br>मो. ३।३०मार्ग.शु. १५चं.<br>स्प. २८।३४ मो. ३।३९ | नंदनाब्दे सदापृथ्वी बहुसत्यार्धवृष्टयः ॥<br>आनंदोप्यखलानां च जंतूनांसमहीभुजाम् ॥           |
| ४<br>शे. २<br>महर्षे. | सं. १९३८<br>श. १८०३<br>विजय        | विष्णुअ<br>धिपति<br>अहिर्बुध्न्य. | नास्ति<br>शेष ४                 | मार्ग.शु. १५ चं.<br>स्प. ३८।८ मो. ४।१।<br>२२ उत्तरआशा                         | विजयाब्दे तु राजानः सदाविजयकाक्षिणः<br>सुखिनोजंतवः सर्वे बहुसत्यार्धवृष्टयः ॥              |
| ५<br>शे. ४<br>दुभि.   | सं. १९३९<br>श. १८०४<br>जय          | वि. अ.<br>अहिर्बुध्न्य.           | श्राव.<br>शेष ५                 | ज्येष्ठ कृ. ३०स्प. १५।<br>५८ मोक्ष २३।५७<br>संभवदृष्टिनास्ति                  | जयमंगलघोषाद्येर्धरणीभाति सर्वदा ॥ जया<br>ब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकाक्षिणः ॥                |
| ६<br>शे. ६<br>सम      | सं. १९४०<br>श. १८०५<br>मन्मथ       | वि. अ.<br>अहिर्बुध्न्य.           | नास्ति<br>शेष ६                 |   | मन्मथाब्दे जनाः सर्वे तस्करारतिलोषुषाः ॥<br>शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥               |
| ७<br>शे. १<br>दुभि.   | सं. १९४१<br>श. १८०६<br>दुमुख       | वि. अ.<br>अहिर्बुध्न्य.           | नास्ति<br>शेष ७                 | वै.शु. १५चं.प्र.दृष्टिना<br>स्तिआ.शु. १५ चं.स्प.<br>४५।२० मो. ४।७।२४          | दुर्मुख्याब्दे मध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा ॥ महा-<br>वैरामहीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥            |
| ८<br>शे. ३<br>सम      | सं. १९४२<br>श. १८०७<br>हेमलंब      | वि. अ.<br>पितर                    | ज्येष्ठ.<br>शेष ८               | चै. शु. १५ चं. स्प.<br>३४।५० मो. ४।२।५८                                       | हेमलंबेत्वीतिभीतिमध्यसत्यार्धवृष्टयः ॥ आ-<br>तिभूर्भूपतिक्षोभाखड्गविद्युलतादिभिः ॥         |
| ९<br>शे. ५<br>दुभि.   | सं. १९४३<br>श. १८०८<br>विलंबी      | वि. १२<br>पितर                    | नास्ति<br>शेष ९                 | माघशुक्र १५<br>चंद्रग्रहणसंभव<br>दृष्टिनास्ति                                 | विलंबवत्सरेभूषाः परस्परविरोधिनः ॥ प्रजा-<br>पीडात्वनर्धत्वं तथापिसुखिनोजनाः ॥              |
| १०<br>शे. ०<br>शिडा   | सं. १९४४<br>श. १८०९<br>विकारी      | वि. १३<br>पितर                    | नास्ति<br>शेष १०                | श्राव. १५चं.स्प. ४३।६<br>भा. ३० प्र. सू.<br>९।४८मो. २।२।४४                    | विकार्येब्देखिलालोकाः सरोगावृष्टिपीडिताः ॥<br>पूर्वसत्यफलस्वरूपं बहुलंचापरंफलम् ॥          |
| ११<br>शे. २<br>सुभि.  | सं. १९४५<br>श. १८१०<br>शर्वरी      | वि. १४<br>पितर                    | वैशा.<br>शेष ११                 | मा. १५प्र.स्प. ४९।५२<br>मो. ५।९।१२ सं.<br>१९।४५ नास्ति                        | शर्वरीवत्सरे पूर्णा धरासत्यार्धवृष्टिभिः ॥ जना-<br>श्चसुखिनः सर्वैराजानः स्युर्विवैरिणः ॥  |
| १२<br>शे. ४<br>भिक्ष  | सं. १९४६<br>श. १८११<br>प्लव        | वि. १५<br>पितर                    | नास्ति<br>शेष १२                | आषाढ शु. १५ चं<br>प्र. स्प. ४९।१३<br>माक्ष ५६।४०                              | प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिः प्रवसांतिभाः ॥ रो-<br>गाकुलात्वीतिभीतिः संपूर्णवत्सरेफलम् ॥ |
| १३<br>शे. ६<br>सम     | सं १९४७<br>शकः १८१२<br>शुभकृत      | विष्णु<br>१६<br>विश्वेदेवा        | भाद्रप.<br>शेष १३               | आ. ३०सू.स्प. २२।४४<br>मो. २९।५७का.चं.स्प.<br>२६।२५ मो. ३०।४७                  | शुभकृद्वत्सरेपृथ्वी राजते विविधोत्सवैः ॥<br>आतंकचौराभयदाराजानः समरोत्सुकाः ॥               |
| १४<br>शे. १<br>दुभि.  | सं. १९४८<br>शकः १८१२<br>शोभन       | विष्णु<br>१७<br>विश्वेदेवा        | शेष १४<br>नास्ति                | वैशा. १५ चं. स्प. ४१।<br>१६ मो. ५० का. १५<br>चं. स्प. ५२।५७                   | शोभनेवत्सरेधात्री प्रजानारोगशोकदा ॥ त-<br>थापिसुखिनो लोकावहुसत्यार्धवृष्टयः ॥              |



| स्व<br>त्वर<br>फल        | शेषफलवचे<br>अंकोकेजो<br>नामसंख्या | आधि<br>पति                 | आधिक<br>मास             | सूयचद्र<br>ग्रहण   |  |
|--------------------------|-----------------------------------|----------------------------|-------------------------|--|--|
| ११<br>शेष ३<br>सम        | सं. १९४९<br>शकः १८१४<br>क्रोधी    | विष्णु<br>१८<br>विश्वेदेवा | शेष<br>१५<br>नास्ति     | वै.शु. १५ चं. स्प ५१।४६<br>का. शु. १५ चं. स्प.<br>३२ मो. ४०।४४             | क्रोध्यब्देत्वखिलालोकाः क्रोधलाभपरम्यणा<br>इति दोषेणसततंमध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥            |
| १६<br>शेष ५<br>दुर्भि.   | सं. १९५०<br>शकः १८१५<br>विश्वामसु | विष्णु<br>१९<br>विश्वेदेवा | आषाढ<br>शेष<br>१६       | फा.शु. १५ चं. स्प ३१।३१<br>मो. ३५।० वै. कृ. ३०<br>मू. स्प १।२७।७।१९        | अब्देविश्वामसोः शश्वद्घोररोगाधरासुच ।<br>सस्यार्धवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ॥           |
| १७<br>शेष ०<br>पीडा      | सं. १९५१<br>शकः १८१६<br>पराभव     | विष्णु<br>२०<br>विश्वेदेवा | शे<br>१७<br>नास्ति      | नास्ति   | पराभवाब्देराजास्यात् सपरसहशत्रुभिः । आ<br>मयक्षुद्रसस्यातिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥         |
| १८<br>शेष २<br>सम        | सं. १९५२<br>शकः १८१७<br>प्लवंग    | विष्णु<br>शिव<br>चंद्रमा   | शेष<br>१८<br>नास्ति     | फा.शु. १५ मू. चं.<br>प्र. स्प. ४१।४ मो<br>४५।५४                            | प्लवंगान्देमध्यवृष्टी रोगचौराकुलाधरा । अ-<br>न्योन्यसमरेभूपाः शत्रुर्भूहृतभूमयः ॥        |
| १९<br>शेष ४<br>दुर्भि.   | सं. १९५३<br>शकः १८१८<br>कीलक      | शिव<br>अधिपति<br>चंद्रमा   | शेष<br>१९<br>ज्येष्ठ    | वै.शु. १५ चं. स्प ३६।६।०<br>३६।०।३० श. मू. स्प<br>१३।५१ मो. २०।२६          | कीलकाब्देत्वीतिमीतिः प्रजाक्षोभनृपाह्वयौ ।<br>तथाधिपद्वैतैलोकः समधान्यार्धवृष्टिभिः ॥    |
| २०<br>शेष ६<br>सम        | सं. १९५४<br>शकः १८१९<br>सौम्य     | शिव<br>चंद्रमा             | शेष<br>२०<br>नास्ति     | वै.शु. १५ चं. स्प ३६।६।०<br>३६।०।३० श. मू. स्प<br>१३।५१ मो. २०।२६          | सौम्याब्देत्वखिलालोका बहुसस्यार्धवृष्टिभिः<br>विवैरिणोधराधीशाधिप्राश्नाध्यपरंपराः ॥      |
| २१<br>शेष १<br>दुर्भि.   | सं. १९५५<br>शकः १८२०<br>साधारण    | शिव<br>अधिप.<br>चंद्रमा    | आश्विन<br>२<br>०        | आ. १५ र. च. स्प ५०।०।०<br>५८।२२ मां. १५।०।०<br>च. स्प ४८।२८।०।३३           | साधारणाब्देवृष्टयर्द्धमयंचमारणेभनः । मध्य-<br>संपद्धराधीश प्रजाः स्युः स्वस्थंचेतसः ॥    |
| २२<br>शेष ३<br>सम        | सं. १९५६<br>शकः १८२१<br>विरोधक    | शिव<br>५<br>चंद्रमा        | चैत्र ३<br>सभव<br>अंतमे | ज्ये. १५ मू. चं. प्र. स्प ३६।६।०<br>मो. ३३।०।०।१५ श. स्प.<br>५३।४०।०।५७।२६ | विरोधकृद्भवत्सरेतुपरस्परविरोधिनः । सर्वे<br>जानानृपाश्चैवमध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥           |
| २३<br>शेष ५<br>सम        | सं. १९५७<br>शकः १८२२<br>परिधावी   | वि. शि.<br>६<br>अग्नि      | शेष<br>७                | ज्ये. १५ मू. चं. प्र. स्प ३६।६।०<br>मो. ३३।०।०।१५ श. स्प.<br>५३।४०।०।५७।२६ | भूपः हवोमहारोगो मध्यसस्यार्धवृष्टयः । दुः-<br>खिनोजंतवः सर्वेवत्सरेपरिधाविनः ॥           |
| २४<br>शेष ०<br>पीडा      | सं. १९५८<br>शकः १८२३<br>प्रमाथी   | शिव<br>७<br>अग्नि          | ०<br>श्रावण<br>५        | १ प्रह. मू. ३० वै.<br>स्प. ७।३२ र मो.<br>१२।२७                             | प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्धवृष्टयः । प्रजा-<br>नांजीवनेदुःखंसमत्सर्वाः क्षितीधराः ॥    |
| २५<br>शेष २<br>दुर्भिक्ष | सं. १९५९<br>शकः १८२४<br>आनंद      | शिव<br>८<br>अग्नि          | शिव<br>८<br>अग्नि       | १ प्रह. चं. चैत्र १५<br>मौम स्प. ४०।१२२<br>मोक्ष ४२।४८                     | आनंदाब्देखिलालोकाः सर्वदानंदचेतसः । रा-<br>जानः सुखिनः सर्वेवहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥       |
| २६<br>शेष ४<br>दुर्भिक्ष | सं. १९६०<br>शकः १८२५<br>राक्षस    | वि. शि.<br>अग्नि           | ७<br>नास्ति             | २ प्र. वै. शु. १५ श. स्प ३६।६।०<br>मो. २।४५ आ. शु. १५ स्प<br>३१।२।०। २९।१० | स्वस्वकार्यरताः सर्वेमध्यसस्यार्धवृष्टयः । रा-<br>क्षसाब्देखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रयाः ॥ |
| २७<br>शेष ४<br>सम        | सं. १९६१<br>शकः १८२६<br>नल        | वि. शि.<br>अग्नि           | ७<br>ज्येष्ठ            | १ प्र. मा. शु. १५ र.<br>स्प. ४०।३९ मो. ४६।<br>५९                           | नलाब्देमध्यसस्यार्धवृष्टिभिः प्रवराधरा । नृप-<br>संक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥           |
| २८<br>शेष ६<br>दुर्भिः   | सं. १९६२<br>शकः १८२७<br>पिंगल     | वि. शि.<br>अदिव.<br>कमार   | ७<br>नास्ति             | ३ प्र. ना. श्रा. १५ स्प<br>२७।० मो. ३०।११                                  | पिंगलाब्देत्वीतिमीतिमध्यसस्यार्धवृष्टयः । रा-<br>जानोविक्रमाक्रांताभुंजंतशत्रुमेदिनी ॥   |

| सव-<br>त्सर<br>फल     | शेषफलवच<br>अंकोंकेजो<br>नामसंख्या  | आधि<br>पाति               | अधिक<br>मास  | सूयचंद्र<br>ग्रहण  |
|-----------------------|------------------------------------|---------------------------|--------------|--|
| २९<br>शेष १<br>उम     | सं. १९६३<br>शकः १८२८<br>काल        | वि.शि.<br>अश्वि.<br>कुमार | १<br>नास्ति  | का. ३० सुस्प. ९।३६मो<br>१४।२४मा. १५मं. स्प.<br>२५।२४ मो. ३०।२४   |
| ३०<br>शेष ३<br>मिक्ष  | सं. १९६४<br>शकः १८२९<br>सिद्धार्थ  | वि.शि.<br>आश्वि<br>कुमार  | ११<br>वैशाख  | ग्रहणनास्ति  |
| ३१<br>शेष ०<br>गिडा   | सं १९६५<br>शकः १८३०<br>रौद्र       | वि.शि. अ-<br>श्वि कुमार   | १२<br>नास्ति | ग्र.मार्ग.शु. १५चं. स्प.<br>४८।२०मो. ५१।३०                       |
| ३२<br>शेष २<br>मिक्ष  | सं. १९६६<br>शकः १८३१<br>हुर्मति    | वि.शि.<br>अश्वि.<br>कुमार | १३<br>भाद्र. | १ प्र. ज्ये. शु. १५भू.<br>स्प. ५९।३मो. ७।४३                      |
| ३३<br>शेष ४<br>मिक्ष  | सं. १९६७<br>शकः १८३२<br>हुंदुभि    | वि.शि.<br>१६<br>भग        | १४<br>नास्ति | १ प्र. का.शु. १५ बु.<br>स्प. ५३।३७ मोक्ष<br>५६।३७                |
| ३४<br>शेष ६<br>पम     | सं. १९६८<br>शकः १८३३<br>रुधिराहारी | शि.वि.<br>१७<br>भग २      | १५<br>नास्ति | का.कृ.३० स्प.५९।<br>२६ मो. ४।५०                                  |
| ३५<br>शेष १<br>मिक्ष  | सं. १९६९<br>शकः १८३४<br>रक्ताक्षी  | शि. वि.<br>१८<br>भग       | १६<br>आषा.   | चं.चै. १५सो.स्प. ५३मो.<br>५६ चै.३०बु. स्प.२९।<br>०मो. ३३।३१      |
| ३६<br>शेष ३<br>१९.    | सं. १९७०<br>शकः १८३५<br>क्रोधन     | १७<br>ना.<br>भग           | १७<br>नास्ति | फा. १५ स्प. २।२।२०<br>चं.मा. १५ स्प. २४।९<br>मोक्ष ३२।५९         |
| ३७<br>शेष ३<br>२०     | सं. १९७१<br>शकः १८३६<br>क्षय       | शि. वि.<br>२०<br>भग ५     | १८<br>नास्ति | सू.मा. ३० भू.स्प. ३०।<br>३८मो ३५।२८मा. १५<br>भू.स्प.२५।१मो ३३।१६ |
| ३८<br>शेष ५<br>गिडा   | सं. १९७२<br>शकः १८३७<br>प्रभव      | वि १<br>ब्रह्मा १         | १<br>ज्येष्ठ | नास्ति   |
| ३९<br>शेष २<br>मिक्ष  | सं. १९७३<br>शकः १८३८<br>विभव       | ब्रह्मा २<br>विष्णु २     | १<br>नास्ति  | नास्ति<br>१  |
| ४०<br>शेष ४<br>मिक्ष  | सं. १९७४<br>शकः १८३९<br>विभव       | ब्रह्मा ३<br>विष्णु ३     | २<br>आश्वि.  | १ चं. आषा. शु. १५<br>खप्रासस्परी ४९।५५<br>मो. ५९।२९              |
| ४१<br>शेष ४<br>प्रम ६ | सं. १९७५<br>शकः १८४०<br>प्रमोद     | ब्रह्मा ४<br>विष्णु ४     | ३<br>चैत्र   | नास्ति   |
| ४२<br>शेष ६<br>मिक्ष  | सं. १९७६<br>शकः १८४१<br>प्रजापति   | ५<br>विष्णु ५             | ५<br>नास्ति  | नास्ति   |

प्रभवादि संवत्सरो के फल ॥

वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजंतवः । स-  
न्यथापि च सस्यानि प्रचुराणि तथागदाः ॥

सिद्धार्थवत्सरे भूगो ज्ञानवैराग्यथाप्रजाः । सं-  
कलावसुधाभाति बहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥

ज्योभक्ते शसभागिने । सत-  
तं त्वखिला लोका मध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥

दुर्भृत्यवदे खिलालोका भूपा दुर्मतयः सदा ।  
तथापि सुखिनः सर्वे संग्रामाः संति चेदपि ॥

सर्वसस्ययुताधात्री पालिता धरणी धरे । प-  
र्वदेशविनाशः स्यात्तत्र हुंदुभि वत्सरे ॥

आहवे निहिताः सर्वे भूपारोगैस्तथाजनाः । यथा  
कथंचिन्नीवंति रुधिराहारी वत्सरे ।

रक्ताश्वि वत्सरे सस्यवृद्धिं वृष्टिं नुत्तमा । प्रेक्षते  
सर्वदान्योन्यं राजानो रक्तलोचनं ॥

क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टिः पूर्वदेशे च वृष्टयः । संपूर्ण-  
मितरत्सर्वे भूपाः क्रोधपरायणाः ॥

कार्पासगंधतैलेक्षुमभुसस्यविनाशनं । क्षय-  
माणाश्चापिनराजीवंति क्षयवत्सरे ॥

काश्यप्यामीतयश्चाभिकोपश्चव्याययोभुवि ।  
प्रभवाब्दे मंदवृष्टिस्तथापि सुखिनो जनाः ॥

दंडनीति पराभवा बहुसस्यार्धवृष्टयः । विभवा-  
ब्दे खिलालोकाः सुखिनः स्युर्विवैरिणः ॥

शुक्लाब्दे निखिलालोकाः सुखिनः स्वजनैः सह ।  
राजानो यद्भनिरताः परस्परजयै विणः ॥

प्रमोदाब्दे प्रमोदं तिराजानो निखिलाजनाः । वी-  
तरोगा वीतमयार्दंति शत्रुविनाशकाः ॥

नचलंति च लोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन ।  
अब्दे प्रजापतौ नूनं बहुसस्यार्धवृष्टयः ॥

| सव<br>त्सर<br>फल       | शेषफलवच<br>भक्तौकेजो<br>नामसंख्या | अधि<br>पति               | अधिक<br>मास   | सूर्यचंद्र<br>ग्रहण   | प्रभवादिसंवत्सरांके फल ॥  |
|------------------------|-----------------------------------|--------------------------|---------------|---|---|
| ४३<br>शेष ५<br>सम ७    | सं. १९७७<br>शकः १८४२<br>अंगिरा    | ब्रह्मा ६<br>बृहस्पति    | ५<br>श्रावण   | चं.प्र.वै. शु. १५चं.स्प.<br>५८।३मो. ६।४७ आ.<br>११बु. स्प.३२।९         | अत्रार्थंभुज्यतेशश्वजनेरतिथिभिःसह । अंगि-<br>राब्देखिलालोकाभूपाश्वकलहोत्सुकाः ॥               |
| ४४<br>शेष ५<br>सुमि ७  | सं. १९७८<br>शकः १८४३<br>श्रीमुख   | ब्रह्मा<br>बृहस्पति २    | ६<br>नास्ति   | आश्वि. १५ र.स्प.<br>४९।३१मो. १७।४९<br>चंद्रग्रहण                      | श्रीमुखब्देखिलाधात्रीबहुस्यार्घसंयुता । अ-<br>ध्वेनिरताविप्रानवीतोगाविवैरणः ॥                 |
| ४५<br>शेष ०<br>पीडा ०  | सं. १९७९<br>शकः १८४४<br>भांव      | ब्रह्मा<br>बृहस्पति ३    | ७<br>नास्ति   | आश्वि.कृ.३० गु.सू.<br>स्प.५।५मो. १०.११<br>३० आषा.                     | भावाब्दे प्रचुरारोगा मध्यस्यार्घवृष्टयः । रा-<br>जानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ॥            |
| ४६<br>शेष २<br>सुमि. ९ | सं. १९८०<br>शकः १८४५<br>सुवा      | ब्रह्मा<br>गुरु ४        | ८<br>ज्येष्ठ  | माघ. १५ बु. खग्रास<br>५।४७ स्प. ३२।३८<br>मो. ४१।४८ चं. प्र.           | प्रभूतपयसोगावः सुखिनस्सर्वजंतवः । सर्व-<br>कामाक्रयायुक्तो युवाब्देयुवताजनः ॥                 |
| ४७<br>शेष ४<br>१०      | सं. १९८१<br>शकः १८४६<br>धाता      | ब्रह्मा<br>बृहस्पति ५    | ९<br>नास्ति   | श्रा. १५शु. ५०स्प. ४३<br>मो. ५५ख.मा. १५१.स्प<br>४६।१३मो. ५१।३६चं.प्र. | धातवर्षेखिलाःक्षमेशाः सदायुद्धपरायणः । मप-<br>र्णाधरणीभाति बहुस्यार्घवृष्टिभिः ॥              |
| ४८<br>शेष ६<br>सम ११   | सं. १९८२<br>शकः १८४७<br>ईश्वर     | ब्रह्मा<br>इंद्र १       | १०<br>नास्ति  | श्रा. १५मौ. दृष्टि. ना.<br>नाघ ३० गु.स्प. १२।१७<br>मो. १५।३३सू.ग्रहण  | ईश्वराब्देखिलात्रंतुधात्रीधात्रीवसर्षदा । पां-<br>षयत्तुलेवान्नफलमाषेस्तुधीहिभिः              |
| ४९<br>शेष ६<br>हु. १२  | सं. १९८३<br>शकः १८४८<br>बहुधान्य  | ब्रह्मा<br>इंद्र १२      | ११<br>वैशाख   | •<br>•<br>•   | अनीतिरतुलावृष्टिबहुधान्याख्यवत्सरे । विवि-<br>धैर्घान्यनिचयः सुखपूर्णाखिलाधरा ॥               |
| ५०<br>शेष ३<br>गैय ३   | सं. १९८४<br>शकः १८४९<br>प्रमाथी   | ब्रह्मा<br>इंद्र ०       | १२<br>नास्ति  | •<br>•<br>•   | नमुंचतिपयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिजलम् । मध्य<br>मावृष्टिरघैश्चनूनम्बेप्रमाथान् ॥                |
| ५१<br>शेष ५<br>सुमिक्ष | सं. १९८५<br>शकः १८५०<br>विक्रम    | ब्रह्मा<br>१४<br>इंद्र   | १३<br>भाद्रपद | वै. शु. १५ र.संभवअह<br>शेका. ३० चं.स्प. १६।<br>३७मो. २१।२१चं. सू.     | विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रान्तभूमयः ।<br>सर्वत्रसर्वदामेधामुंचति प्रचुरजलम् ॥              |
| ५२<br>शेष ०<br>पी. १५  | सं. १९८६<br>शकः १८५१<br>वृष       | ब्रह्मा<br>१५<br>इंद्र   | १४<br>नास्ति  | वै. ३०गु. संभव ग्रह<br>णं नास्ति सू                                   | वृषाब्देनिखिलाःक्षमेशासुद्धर्षतिवृषभाइव । वि-<br>द्याप्रसक्ताविप्रेन्द्राः पश्यतेसततंभुवाम् । |
| ५३<br>शेष २<br>१६सम    | सं. १९८७<br>शकः १८५२<br>चित्रभानु | ब्रह्मा<br>१६<br>अग्नि   | १५<br>नास्ति  | •<br>•  | वित्तार्घवृष्टिस्यार्घैर्विचित्रानिखिलाधरा । नि-<br>राकुलाखिलालोकाश्चित्रभान्वाख्यवत्सरे ॥    |
| ५४<br>शेष ४<br>१७ हु.  | सं. १९८८<br>शकः १८५३<br>सुमानु    | ब्रह्मा<br>१७<br>अग्नि   | १६<br>आषा     | वै. १५स्प४४।३मो. ५३<br>ना. १५स्प४०मो. ४९<br>हा. १६स्प १५मो २३ख        | सुमानुवत्सरेभूमिभूमिपानांचविग्रहः ।<br>भातिभूर्भरिस्यार्घ्या भयंकरभुज्रगमाः ॥                 |
| ५५<br>शेष ६<br>१७सम    | सं. १९८९<br>शकः १८५४<br>तारण      | ब्रह्मा<br>१८<br>अग्नि ३ | १७<br>नास्ति  | भा. ५५ बु. स्प. ०<br>४०मो. ५३।० ख.<br>चंद्रग्रहण                      | कस्यचिन्निखिलालोकास्तरंतिप्रतिपन्नताम् ।<br>ट्टपाहुंक्षयताद्रोगा भैषज्यैस्तारणाब्दके ॥        |
| ५६<br>शेष १<br>१९ हु   | सं. १९९०<br>शकः १८५५<br>पार्थिव   | ब्रह्मा<br>अग्नि ०       | १८<br>•       | भा. ३०सो.स्प. ७ मो<br>५४।३४फा. ३०संभव.<br>दृष्टिनास्ति सू २           | पार्थिवाब्देतुराजानः सुखिनःसुप्रजाभृशम् ।<br>बहुभिःफलपुष्पाजैर्विधैश्चपयोधरैः ॥               |

| संव-<br>सर-<br>फल        | नामसंख्या<br>अंकोकेजो<br>शेषफलबचे | अधि<br>पति            | अधिक<br>मास   | सूर्य चंद्र<br>ग्रहण                                     | प्रभवादिसंवत्सरोके फल.   |
|--------------------------|-----------------------------------|-----------------------|---------------|--|--|
| ५७<br>शेष ३<br>६ सम      | सं. १९९१<br>शकः १८५६<br>व्यय      | ब्रह्मा<br>आग्नि<br>५ | ००<br>ज्येष्ठ | आषा १५स्प. २७मो.<br>३५मो. १५स्प २९मो.<br>३७ स्वधा.स ४१९८ | व्याघ्रदेनिखिलालोका बहुव्ययपराभृशम् ।<br>विरमंतीहतुरगैर्यैभूतानिसर्वदा ॥           |
| ५८<br>शेष ५<br>१ दुर्भि. | सं. १९९२<br>शकः १८५७<br>सर्वजित   | विष्णु<br>त्वाष्ट्र   | १<br>•        | पौ. १५ बुधे स्प. ३५<br>४३ मो ४४१०<br>चंद्रग्रहण          | सर्वजिद्वत्सरेसर्वे जनास्त्रिदशारात्रिभाः ।<br>राजानोविलयंयाति भीमसंग्राममृमिपाः ॥ |
| ५९<br>शेष ०<br>पीडार     | सं. १९९३<br>शकः १८५८<br>सर्वधारी  | विष्णु<br>त्वाष्ट्र   | २<br>आश्वि.   | आ. ३०स्प १।४८मो.<br>१४आ १५स्प ४०।८<br>मोक्ष ४३।२         | सर्वधार्थन्दकेभूपाः प्रजापालनतत्पराः ।<br>प्रशांतवैराःसर्वत्र बहुसत्याधैवृष्टयः ॥  |
| ६०<br>शेष २<br>३ सम      | सं. १९९४<br>शकः १८५९<br>विरोधी    | विष्णु<br>त्वाष्ट्र   | ३<br>समव      | ग्रहणनास्ति<br>•   | विरोधीवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः ।<br>भूरिभूरियुताभूमिभूरिकारिसमाकुलाः ॥           |

## सिद्धांतशिरोमणौ ।

क्षयमासविचारः ।

गतोब्ध्याद्विनदमिंते शाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः ॥

गजाद्रचग्निभूमिस्तथा प्रायशोयं कुवेददुवर्षैः क्वचिद्भोक्नुभिश्च ॥३७॥

टीका—पाहिले जिस संवत्में क्षयमास पडे तो उसके १४१ वर्ष पीछे फिर होताहै इसमें आगे १९ वर्षमें या इससे बाहर इसके मध्यमें जो ९४७ के संवत्में क्षयमास हो तो फिर आगे १११५ । १२५६ । १३७८ में पडेगा और इसके पीछे १४१ और १९ वर्षके अंतरसे क्षय-मासका संभव जानना योग्य है ॥ ३७ ॥

## तिथिप्रकरणम् ।

मासभाच्चांद्रं यावद्गणयेत्तावदेव तु ॥

यावंतिगणनाद्भानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ ३८ ॥

टीका—चैत्रादि बारह मासोंके नाम और तिन नामोंके नक्षत्रसे मास नक्षत्र जानिये जैसा चैत्रका चित्रा विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी इस प्रकार नक्षत्रोंके क्रमसे जानिये, परंतु पूर्णिमान्त महीनेसे गणित बराबर होताहै ॥ ३८ ॥

## वारसंज्ञापरिज्ञानम् ।

प्रतिपत्सिद्धिदाप्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृतीयारोग्य-  
दात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥ ३९॥ शुभा तु पंचमी ज्ञेया  
षष्टिका त्वशुभा मता॥सप्तमी तु शुभा ज्ञेया ह्यष्टमी व्याधि-  
नाशिनी॥ ४०॥मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा ॥  
एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥ ४१ ॥ त्रयोदशी  
सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्व-  
मावस्या शुभा तिथिः ॥ ४२ ॥ वृद्धिश्चाथ सुमंगलाथ सबला  
प्रोक्ता खला श्रीमती कीर्तिर्मित्रपदातथा बलवतीस्वोग्राक्रमा  
द्धर्मिणी ॥ नंदाख्या हि यशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्या  
तिथिर्नाम्ना तुल्यफला क्रमात्प्रतिपदो दर्शस्त्वमासंज्ञकः ४३  
नंदासिते सोमसुते च भद्रा कुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ॥  
पूर्णागुरौ ताश्चमृताः कुजाके सितांबुजेज्ञेच गुरौशानिः स्युः ४४  
॥ इन श्लोकोंकी टीका चक्रमें लिखी है ॥

## स्वामी ।

वह्निर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः ॥  
दुर्गातकौ विष्णुहरी स्मरश्च शर्वःशशी चेति पुराणदृष्टः ४५॥  
अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥

## संज्ञा ।

नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णैति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः॥  
कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवंत्युत्तममध्यहीनाः॥४६॥

## वर्जित ।

कूष्माण्डं बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा तैलं  
चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालांत्रकम् ॥ निष्पावांश्च  
मसूरिका फलमथो वृंताकसंज्ञं मधु द्यूतं स्त्रीगमनं क्रमा-  
त्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥ ४७ ॥

टीका

| ति. | नामतिथि  | तिथि०    | फल         | स्वामी    | ज्ञंसा नाम | शुक्ल | कृष्ण | तिथिपाल.<br>न करनसे |
|-----|----------|----------|------------|-----------|------------|-------|-------|---------------------|
| १   | वृद्धि   | प्रतिपदा | सिद्धि     | अग्नि     | नंदा       | अशुभ  | शुभ   | कूष्मांड            |
| २   | सुमंगला  | द्वितीया | कार्यसाध.  | ब्रह्मा   | भद्रा      | अशुभ  | शुभ   | कटेरीफ.             |
| ३   | सबला     | तृतीया   | आरोग्य     | गौरी      | जया        | अशुभ  | शुभ   | लवण                 |
| ४   | खला      | चतुर्थी  | हानि       | गणेश      | रिक्ता     | अशुभ  | शुभ   | तिल                 |
| ५   | श्रीमती  | पंचमी    | शुभा       | सर्प      | पूर्णा     | अशुभ  | शुभ   | खटाई                |
| ६   | कीर्ति   | षष्ठी    | अशुभा      | स्कंद     | नंदा       | मध्यम | मध्यम | तैल                 |
| ७   | मित्रपदा | सप्तमी   | शुभा       | सूर्य     | भद्रा      | मध्यम | मध्यम | आंवला               |
| ८   | बलावती   | अष्टमी   | व्याधिना.  | शिव       | जया        | मध्यम | मध्यम | नारियल              |
| ९   | उग्रा    | नवमी     | मृत्यु     | दुर्गा    | रिक्ता     | मध्यम | मध्यम | कासीफल              |
| १०  | धर्मिणी  | दशमी     | धनदा       | यम        | पूर्णा     | मध्यम | मध्यम | परवल                |
| ११  | नंदा     | एकादशी   | शुभा       | विश्वेदे. | नंदा       | शुभ   | अशुभ  | दालिया              |
| १२  | यशोबला   | द्वादशी  | सर्वसिद्धि | हरि       | भद्रा      | शुभ   | अशुभ  | मसूर                |
| १३  | जयकरा    | त्रयोदशी | सर्वसिद्धि | मदन       | जया        | शुभ   | अशुभ  | बैंगन               |
| १४  | क्रूरा   | चतुर्दशी | उग्रा      | शिव       | रिक्ता     | शुभ   | अशुभ  | मधु                 |
| १५  | सौम्या   | पूर्णिमा | पुष्टिदा   | चंद्र     | पूर्णा     | शुभ   | अशुभ  | दूत                 |
| १६  | दर्श     | अमा०     | अशुभा      | पितर      | ०          | ०     | ०     | स्त्रीसंगम          |

नंदासु चित्रोत्सववास्तुतंत्रक्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम् ॥ विवा-  
हभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपिपौष्टिकानि ॥ ४८ ॥  
जयासु संग्रामबलोपयोगिकार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि ॥  
रिक्तासु विद्रद्धघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च यांति सिद्धिम् ॥  
॥ ४९ ॥ पूर्णासु मांगल्यविक्राहयात्रा सुपौष्टिकं शांतिककर्मका

र्य्यम् ॥ सदैव दर्शं पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि ५० ॥

टीका—पडवा, छठि, एकादशीको नंदा तिथि कहतेहैं इसमें आनन्दादिक कर्म और देवताओंके उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य्य गृहस्थल बनाना-वस्तु मोल लेना नृत्य सम्बन्धी गीत वाद्य इत्यादि कर्म करने चाहिये ॥ १ ॥ द्वितीया सप्तमी द्वादशी इनको भद्रा कहते हैं इन तिथियोंमें विवाह, गाडी, संबन्धी काम मार्गसंबन्धी काम पुष्टिक्रिया करनी चाहिये ॥ २ ॥ तीज आठं, त्रयोदशीको जया कहतेहैं इनमें संग्राम और सेनाके उपयोगी अस्त्र शस्त्र ध्वजा पताका आदि निर्माण करने योग्यहैं ॥ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी ये रिक्ता इनमें विद्वानोंका वध, घातकर्मकी सिद्धि विषप्रयोग शस्त्र इत्यादि उग्र कर्म करने योग्यहैं ॥ पंचमी दशमी पौर्णमासी इन तिथियोंको पूर्णा कहते हैं इनमें विवाह इत्यादि कर्म यात्रा शांतिक पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावास्याको पितृकर्म करने योग्यहैं ॥ ५० ॥

### अथ बारहमास ।

आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः । शुक्रःशनिश्चरश्चैव  
वासराः परिकीर्तिताः ॥५१॥ शिवो दुर्गा गुहोविष्णुः कालब्र-  
ह्मेन्द्रसंज्ञकाः । सूर्यादीनां क्रमादंते स्वाभिनः परिकीर्तिताः ॥  
॥५२॥ गुरुश्चंद्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः ॥ कूरास्तु  
कूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ५३ ॥ सूर्यश्चरः  
स्थिरश्चंद्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः । लघुर्जीवो मृदुः शुक्रः श-  
निस्तीक्ष्णः समीरितः ॥ ५४ ॥

### अष्टदिशाओंके स्वामी ।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ॥

बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ ५५ ॥

टीका—पूर्वका स्वामी रवि १ आग्नेयका स्वामी शनि २ दक्षिणका स्वामी मंगल ३ नैऋत्यका स्वामी राहु ४ पश्चिमका स्वामी शनि ५ वायव्यका स्वामी

चन्द्र ६ उत्तरका स्वामी बुध ७ ईशानका स्वामी गुरु ८ इन दिशाओंके स्वामी नवग्रहभी जानिये ॥ ५५ ॥

### ग्रहोंका वर्ण और जाति ।

ब्राह्मणों जीवशुक्रौच क्षत्रियों भौम भास्करौ ॥

सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमंदौ तथात्यजौ ॥ ५६ ॥

टीका—गुरु शुक्र ये ब्राह्मण, मंगल रवि ये क्षत्रिय, बुध चंद्र ये वैश्य, राहु केतु और शनि ये तीन शूद्रहैं ॥ ५६ ॥

### ग्रहोंका वर्ण ।

रक्तावंगारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ॥

गुरुसौम्यौ पीतवर्णौ शनिराहु सितौ शुभौ ॥ ५७ ॥

टीका—मंगल और सूर्य इनका रंग लाल, चंद्रमा और शुक्र इनका वर्ण श्वेत, गुरु बुध इनका वर्ण पीत, शनि राहु केतु इनका वर्ण कृष्णहैं ॥ ५७ ॥

### वारोंके अनुसार कर्म ।

रविवारके कर्म ।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमंत्रौषधशस्त्रकर्म

सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ५८ ॥

टीका—राज्याभिषेक गीत वाद्य यानकर्म राजसेवा गाय बैलका लेना दना हवन यज्ञादि मंत्र उपदेश लेना देना औषधिका लेना शस्त्रप्रारम्भ सोना तांबा ऊनवस्त्र चर्म काष्ठ लेना युद्धप्रसंग खरीदना बेचना ये कर्म रविवारके करै ॥ ५८ ॥

### सोमवारके कर्म ।

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्यांबुविभूषणाद्याः ॥

गीतक्रतुक्षीरविकारशृंगीपुष्पांवारारंभणमिन्दुवारे ॥ ५९ ॥

टीका—शंख कमल मोती रूपा ऊख भोजन स्त्रीभोग वृक्ष जलादि कर्म अलंकार गाना यज्ञादि गोरस गाय भैंस पुष्प वस्त्र इत्यादि भोगने सोमवारको योग्यहैं ॥ ५९ ॥



## भौमवारके कर्म ।

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघाताहवशाव्यदंभान् ॥

सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरक्तानि कुजे विदध्यात् ॥ ६० ॥

टीका—भेद करना अनृत चोरी विष अग्नि शस्त्र वध नाश संग्राम कपट  
दंभ सेनाका पाडाव खानि धातु सुवर्ण मूंगा रक्तस्त्राव ये कर्म करावे ॥ ६० ॥

## बुधवारके कर्म ।

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवालिपिलेखनानि ॥

धातुक्रिया कांचनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ६१ ॥

टीका—चातुर्य पुण्य अध्ययन कला शिल्प शास्त्र सेवा लिखना चित्र  
काढना धातुक्रिया सुवर्ण युक्ति सख्यत्व व्यायाम और वाद करना ये कर्म  
बुधवारको करावे ॥ ६१ ॥

## गुरुवारके कर्म ।

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामांगल्यहेमांबरवेश्मयात्राः ॥

रथाश्वभैषज्यविभूषणादि कार्य्यं विदध्यात्सरमंत्रिवारे ॥ ६२ ॥

टीका—धर्म करना नवग्रहादि पूजा यज्ञ विद्याभ्यस सुभग वस्त्र गृहकर्म  
यात्रा रथ अश्व औषधि विभूषण आदि कृत्य गुरुवारको करावे ॥ ६२ ॥

## शुक्रवारके कर्म ।

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगंधवस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म ॥ भूपण्य-

गोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥ ६३ ॥

टीका—स्त्री गायन शय्या मणि रत्न हीरा गंध वस्त्र उत्साह अलंकार वा-  
णिज्य पृथ्वी दुकान गाय द्रव्य खेती ये कर्म शक्रवारको करावे ॥ ६३ ॥

## शनिवारके कर्म ।

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषार्कविद्याम् ॥

ग्रहप्रवेशद्विपबंधदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कमुतेऽह्नि कुर्यात् ॥ ६४ ॥

टीका—लोहा पत्थर सीसा जस्त शस्त्र दास पाप अनृत भाषण चोरी  
विष अर्क काढना गृहप्रवेश हाथी बांधना मंत्र लेना और स्थिर कर्म  
इत्यादि शनिवारको करावे ॥ ६४ ॥

## वारोंके देवता अधिदेवता और कृत्य ।

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेंद्रकालाः क्रमेण पतयः

कथिता ग्रहाणाम् ॥ वह्न्यंबुभूमिहरिशक्रशचीविरिंचिस्ते

षांपुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥ ६५ ॥

टीका—शिव पार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्यादिक वारोंके देवता जानना और अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा-ये ७ सूर्यादिक वारोंके अधिदेवता जानना ॥ ६५ ॥

## विचार करनेका कालपरिमाण ।

पतंगसूनोर्दिवसाधिपत्यं निशाप्यहश्चैव तु तिग्मभानोः ॥

रात्रिद्वयचैकदिनंच सोमि शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ ६६ ॥

टीका—शनैश्वरसे कालका प्रमाण दिन रात्रि अर्थात् अष्ट प्रहरका कहना चाहिये—और सूर्यसे दिन अर्थात् चार प्रहरका कहना—और चंद्रमासे दो रात्रि १ दिनका कहना—और शेष ग्रहोंसे उदयप्रवृत्ति अर्थात् उदयसे आठ प्रहरका काल प्रमाण कहना चाहिये ॥ ६६ ॥

## दोषादोषमाह ।

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ॥

दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निद्यो बुधवारदोषः ॥ ६७ ॥

टीका—गुरु शुक्र रवि इन तीन वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है और सोम शनि मंगल इन तीन वारोंका दिनको दोष नहीं मानना—और बुधवारको सर्वत्र निंदित जानना ॥ ६७ ॥

## कृत्य ।

सोमसौम्यशुक्रवासरास्सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ॥

भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति ॥ ६८ ॥

टीका—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारोंमें सब कर्मसिद्धि जानना और रवि, भौम, शनि इनमें उक्त कार्यमात्रकी सिद्धि जानना ॥ ६८ ॥

## तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ ।

रविस्त्रापं कांतिं वितरति शशी भूमितनयो मृत्तिं लक्ष्मीं सौम्यः

(२०)

ज्योतिषसार ।

सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ॥ विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभोगा-  
नुगमनं नृणां तैलाभ्यंगात्सपादि कुरुते सूर्य्यतनयः ॥ ६९ ॥

टीका—रविवारको तैलाभ्यंग संतापप्रद है--सोमवारको कांतिप्रद--मंग-  
लको मृत्युप्रद-बुधवारको लक्ष्मीप्रद, गुरुवारको वित्तनाशक--शुक्रवारको  
तेल लगानेसे विपत्ति आतीहै-शनिवारको तेल लगाना संपत्तिका कर्ताहै ६९

वस्त्रपरिधानशुभाशुभ ।

जीर्णं रवौ सततमंबुभिरार्द्रमिदौ भौमे शुचे बुधदिने च भवे-  
द्धनाय ॥ ज्ञानाय मंत्रिणि भृगौ प्रियसंगमाय मंदे मलायच  
नवांबरधारणं स्यात् ॥ ७० ॥

टीका—रविवारको नूतन वस्त्र परिधान करनेसे शीघ्र जीर्ण होगा--सोम-  
वारको आशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्रही रहैगा-मंगलके दिन  
पहरनेसे शोकप्रद होगा-बुधवारको धनप्राप्ति-गुरुवारको ज्ञानप्राप्ति-शुक्र-  
वारको मित्रप्राप्ति-शनिवारको पहरनेसे मलिन रहैगा ॥ ७० ॥

श्मश्रुकर्म ।

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तंडमूनुभौमश्चाष्टौ वितर-  
ति शुभं बोधनः पंच मासान् ॥ सप्तैवेदुर्दश सुरगुरुः शुक्र  
एकादशेति प्राहुर्गर्गभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ॥ ७१ ॥

टीका—रविवारको क्षौर करनेसे १ महीना आयुष्यनाश जानना-सोम-  
वारको क्षौर करनेसे ७ महीना आयुवृद्धि जानना-मंगलको ८ महीना-  
आयुष्यनाश जानना-बुधवारको ५ महीना आयुकी वृद्धि जानना-गुरु-  
वारको १० महीना आयुकी वृद्धि जानना-शुक्रवारको ११ महीना  
आयुकी वृद्धि जानना-शनिवारको ७ मास आयुका नाश जानना-यह  
गर्ग लल्ल नारदप्रभृतिमुनियों ने क्षौरकार्यमें लिखाहै ॥ ७१ ॥

विद्यारम्भः ।

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्तुंश्चायुश्चिर-  
मपिकरौत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ॥ नीहारांशौ भवति जडता पंच

ता भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयः कीर्त्तयन्त्यैवमाद्याः ॥७२॥

टीका—गुरु, शुक्र, बुध, इन तीन वारोंमें विद्यारंभ करनेसे उत्तम विद्यां शीघ्रही प्राप्त होतीहै—और चिरंजीवी होताहै—और रविवार मध्यम है—सोमवारको बुद्धि जड़ होतीहै—मंगल और शनिवारको विद्यारंभ करनेसे मृत्यु होताहै—यह नारद गर्गादि मुनियोंने कहा है ॥ ७२ ॥

टीका ।

|                |           |                     |          |                    |           |           |          |
|----------------|-----------|---------------------|----------|--------------------|-----------|-----------|----------|
| वारोंकेनाम     | राव       | सोम                 | मंगल     | बुध                | गुरु      | शुक्र     | शनि      |
| वारोंकेपति     | शिव       | पार्वती             | स्कंध    | विष्णु             | ब्रह्मा   | इन्द्र    | काल      |
| देवता          | अग्नि     | जल                  | पृथ्वी   |                    | इंद्र     | इंद्राणी  | ब्रह्मा  |
| विचारयोग्य समय | ८ प्रहर   | २ रात्री<br>४ प्रहर | ८ प्रहर  | ८ प्रहर            | ८ प्रहर   | ८ प्रहर   | ८ प्रहर  |
| दोषादोष        | रात्रिदोष | दिनदोष              | दिनदोष   | दिनदोष             | रात्रिदोष | रात्रिदोष | दनदाष    |
| कृत्य          | उक्तकर्म  | सर्वकाम             | उक्तकर्म | कर्मसिद्ध          | कर्मसि.   |           | उक्तकर्म |
|                | सिद्ध     | सिद्ध               | सिद्धि   |                    |           |           |          |
| तैलाभ्यंग      | ज्वरप्रद  | कांतिप्रद           | मृत्युद  | लक्ष्मीप्र.        | विचिना.   |           | स्वद     |
| परिधान         | जीर्ण     | सदा                 | शोक      | धन                 | ज्ञान     | इष्ट      | मलिन     |
|                | होय       | गिलारहे             | प्राप्ति | प्राप्ति           | प्राप्ति  | सन्मान    | र        |
| श्मश्रुकर्म    | १ महीना   | ७ महीना             | ८ महीना  | ५ मास              | १० मास    | ११ मास    | ७ मास    |
|                | आ.न्यून   | आ.वृद्धि            | आ.न्यून  | आ.वृद्धि           | आ.वृ.     | आ.वृ.     | न्यु.    |
| विद्यारम्भः    | मध्यम     | जडत्व               | मृत्यु   | आयु.वृ.<br>अर्थसि. | तथा       | तथा       | मृत्यु   |

### नक्षत्रपरिज्ञान ।

द्विनिघ्नमासस्तिथियुग्विधूनो भक्षोषितः स्यादुद्दुशेषसंख्या ॥

मासस्तुशुक्लादितएवबोध्यः कृष्णेद्विहीने मुनयो वदन्ति ॥७३॥

टीका—चैत्रसे लेकर गत मास चलते मास सहित दूने करे और उसमें गत तिथि चलते दिवस समेत मिलावे और एक घटावे शेषमें सत्ताईसका भाग

देनेसे शेष बचे वही नक्षत्रकी संख्या जानिये ॥ ३७ ॥

अश्विनीभरणीचैवकृत्तिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पु-  
ष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥७४॥ पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तरा-  
फाल्गुनी ततः ॥ हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनंतरम्  
॥ ७५ ॥ अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढो-  
त्तराषाढाभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ धनिष्ठा शतताराख्यं पूर्वा-  
भाद्रपदा ततः । उत्तराभाद्रकश्चैव रेवत्येतानि भानिच ॥ ७६ ॥

अथ गमनादौ शुभाशुभनक्षत्राणि ।

अश्विनीतुशुभाप्रोक्ता भरणी नाशकारिणी ॥ कार्यघ्नीकृत्ति-  
का चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः ॥७७ ॥ मृगः शुभस्ततश्चार्द्रा  
मध्यमस्तु पुनर्वसुः ॥ पुष्यः शुभः सार्पमघापूर्वास्व  
नाशमृत्युदाः ॥ ७८ ॥ उत्तराहस्तचित्रास्तु विद्यालक्ष्मी-  
शुभप्रदाः ॥ स्वातीविशाखे त्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥  
॥ ७९ ॥ ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोयक्षय नाशार्थहानिदम् ॥ विश्व  
ब्रह्मविष्णवश्च बुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः ॥८०॥ वासवं वरुणं शैवंशुभं  
भद्रं मृतिप्रदम् ॥ उत्तराभाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका ॥८१॥

नक्षत्रोक्ते स्वामी ।

भेशादस्रयमाग्निकेन्दुगिरिशाः प्रोक्ता अदित्यंगिराः सर्पाः  
कव्यभुजो भगोर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात् ॥ इन्द्राग्नी त्वथ  
मित्र इन्द्रनिर्ऋतिनीरं च विश्वे विधिवैकुण्ठो वसुपाइयजैक-  
चरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ ८२ ॥ ॥ अधोमुखनक्षत्रम् ॥  
मूलाग्नेयमघाद्विदेवभरणीसार्पाणि पूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्विर-  
धोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्तितम् ॥ तिर्यङ्मुखन-  
क्षत्रम् ॥ ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरपूषानुराधानिलत्वष्टा  
ख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येषुच ॥ ८३ ॥  
ऊर्ध्वमुखनक्षत्रम् ॥ पुष्यार्द्राश्रवणोत्तराशतभिषकब्राह्मश्राव-  
ष्ठाह्वयान्यूर्ध्वास्यान्यनि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यथै-

तेषुतु ॥ ८४ ॥ ध्रुवस्थिर नक्षत्राणि ॥ रोहिणिसहितमुत्त-  
रात्रयंकीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ॥ ८५ ॥ मृदुन० ॥ त्वाष्ट्र-

नक्षत्राणि ॥ ८६ ॥ ॥ तीक्ष्णनक्षत्राणि ॥ ॥ मूलशुक्रशिवसार्प-  
मत्तम् ॥ ८७ ॥ ॥ तीक्ष्णनक्षत्राणि ॥ ॥ मूलशुक्रशिवसार्प-  
देवतान्युल्लपंत्यथचतीक्ष्णसंज्ञया ॥ ८८ ॥ चरनक्षत्राणि ॥ वैष्ण-  
वत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुतं च चरपंचकं त्विदम् ॥ ८९ ॥  
उग्रनक्षत्राणि ॥ ॥ पूर्विकात्रितयमंतकं मघात्युग्रपंचकमिदं  
जगुर्बुधाः ॥ ९० ॥ मिश्रनक्षत्राणि ॥ हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं  
मित्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ॥ ९१ ॥ चरादिनक्षत्राणि ॥ चरं चलं  
क्रूरमुशंति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ॥ क्षिप्रं  
लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति ब्रुवंति ॥ ९२ ॥

### अंधादिक नक्षत्रसंज्ञा ।

अंधकं तदनु मंदलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ॥  
रोहिणीप्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनःपुनः ॥ ९३ ॥

### नक्षत्रौके स्वरूप ।

तुरगमुखसदृशं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैणस्योत्त-  
मांगेनतुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्रंभाति शालोपमम्भं शयन-  
सदृशमन्यच्चात्र पर्यैकरूपम् ॥ ९४ ॥ हस्ताकारमतश्चमौक्तिक-  
समंचान्यत्प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवत्स्थितं बलिनिभं  
सत्कुंडलाभं परम् ॥ क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्या-  
समानंपरंचान्यदंतिविलासवत्स्थितमतः शृंगानिभंव्यक्तिमत  
॥ ९५ ॥ त्रिविक्रमाभंचमृदंगरूपंवृत्तं ततोन्नयमलद्वयाभम्  
पर्यैकरूपं सुरजानुकारि इत्येवमश्वादिकचक्ररूपम् ॥ ९६ ॥

### नक्षत्रौके तारौकी संख्या ।

वह्नित्रिक्रत्वेषुगुणैर्दुकृताग्निभूतवाणाश्विनेत्रशर-

भूक्युगाधिरामाः ॥ रुद्राधिरामगुणवेदशतद्वियुग्म  
दंताबुधैर्निगदिताः क्रमशोभताराः ॥ ९७ ॥

| संख्या | नक्षत्रोंके नाम | शुभाशुभ संज्ञा | स्वामिकों नाम | मुख संज्ञा | रूपसंज्ञा |         | लोचन संज्ञा | स्वरूपकी आकृति | कुलित | ति |
|--------|-----------------|----------------|---------------|------------|-----------|---------|-------------|----------------|-------|----|
|        |                 |                |               |            | नाम       | नाम     |             |                |       |    |
| १      | अश्विनी         | शुभ            | अश्वि. कु.    | तिर्यङ्मु. | लघु       | क्रूर   | मंदलोच.     | अश्वरूप        | ३     |    |
| २      | भरणी            | नाशक           | यम            | अधोमुख     | उग्र      | साधा.   | मध्यलो०     | योनिरूप        | ३०    |    |
| ३      | कृत्तिका        | कार्यनाश       | अग्नि         | अधोमुख     | मिश्र     | स्थिर   | सुलोचन      | क्षुररूप       | ६     |    |
| ४      | रोहिणी          | सिद्धि         | ब्रह्मा       | ऊर्ध्वमुख  | ध्रुव     | मैत्र   | अंधलो०      | शकट            | ५     |    |
| ५      | मृगशिर          | शुभ            | चंद्र         | तिर्यङ्मु. | मृदु      | दारुण   | मंदलोच.     | मृगसम          | ३     |    |
| ६      | आर्द्रा         | शुभ            | शिव           | ऊर्ध्वमुख  | तीक्ष्ण   | चल      | मध्यलो०     | मणिसम          | १     |    |
| ७      | पुनर्वसु        | मध्यम          | अदिति         | तिर्यङ्मु. | चर        | क्षिप्र | सुलोचन      | गृहसम          | ४     |    |
| ८      | पुष्य           | शुभ            | गुरु          | ऊर्ध्वमुख  | लघु       | दारुण   | अंधलो०      | शरसम           | ३     |    |
| ९      | आश्लेषा         | शोक            | सर्प          | अधोमुख     | तीक्ष्ण   | क्रूर   | मंदलोच.     | चक्रसम         | ५     |    |
| १०     | मघा             | नाशक           | पितर          | अधोमुख     | उग्र      | क्रूर   | मध्यलो०     | शालासम         | ५     |    |
| ११     | पूर्वाषाढा      | मृत्युद        | भग            | अधोमुख     | उग्र      | स्थिर   | सुलोचन      | शय्यासम        | २     |    |
| १२     | उत्तराषाढा      | विद्या         | अर्यमा        | ऊर्ध्वमुख  | ध्रुव     | क्षिप्र | अंधलो०      | पर्यकसम        | २     |    |
| १३     | हस्त            | लक्ष्मी        | रवि           | तिर्यङ्मु. | लघु       | मैत्र   | मंदलोच.     | हस्ताकृति      | ५     |    |
| १४     | चित्रा          | शुभद           | त्वष्टा       | तिर्यङ्मु. | मृदु      | चल      | मध्यलो०     | मौक्तिक        | १     |    |
| १५     | स्वाति          | अशुभ           | वायु          | तिर्यङ्मु. | चर        | साधा.   | सुलोचन      | प्रवाल         | १     |    |
| १६     | विशाखा          | अशुभ           | इन्द्राग्नि   | अधोमुख     | मिश्र     | मैत्र   | अंधलो०      | तोरण           | ४     |    |
| १७     | अनुराधा         | सर्वांसिद्धि   | मित्र         | तिर्यङ्मु. | मृदु      | क्षिप्र | मंदलोच.     | वलिसम          | ४     |    |
| १८     | ज्येष्ठा        | क्षयनाश        | इन्द्र        | तिर्यङ्मु. | तीक्ष्ण   | दारुण   | मध्यलो०     | कुंडल          | ३     |    |
| १९     | मूल             | अर्थनाश        | राक्षस        | अधोमुख     | तीक्ष्ण   | दारुण   | सुलोचन      | सिंहसम         | १२    |    |
| २०     | पूर्वाषाढा      | हानि           | उदक           | अधोमुख     | उग्र      | क्रूर   | अंधलो०      | शय्यासम        | ४     |    |
| २१     | उत्तराषाढा      | बुद्धिदा       | विश्वेदेव     | ऊर्ध्वमुख  | ध्रुव     | स्थिर   | सुलोचन      | हस्तीसम        | ३     |    |
| २२     | आभिजित          | वृद्धिदा       | ब्रह्मा       | ०          | लघु       | क्षिप्र | अंधलो०      | त्रिकोण        | ३     |    |
| २३     | श्रवण           | सुखदा          | विष्णु        | ऊर्ध्वमुख  | चर        | चल      | सुलोचन      | व्यक्ताकार     | ३     |    |
| २४     | धनिष्ठा         | शुभदा          | वसु           | ऊर्ध्वमुख  | चर        | चल      | अंधलो०      | वामनसम         | ४     |    |
| २५     | शतभिषा          | करुणा          | वरुण          | ऊर्ध्वमुख  | चर        | चल      | मंदलोच.     | मृदंगसम        | १००   |    |
| २६     | पूर्वाभाद्र     | मृत्युदा       | अजैक          | अधोमुख     | उग्र      | क्रूर   | मध्यलो०     | वर्तुलाकार     | २०    |    |
| २७     | उत्तराभा.       | लक्ष्मी        | अहिर्बुध्न्य  | ऊर्ध्वमुख  | ध्रुव     | स्थिर   | सुलोचन      | यमलाकार        | २     |    |
| २८     | रेवती           | कामदा          | पूषा          | तिर्यङ्मुख | मृदु      | मैत्र   | अंधलो०      | मृदंगसम        | ३२    |    |

## कार्याकार्यविचार ।

अधोमुख ।

वापीकूपतडागगर्तपरिखा खाता निधेरुद्धृतिक्षेपौ  
द्यूतबिलप्रवेशगणितारंभाः प्रसिध्यन्ति च ॥

टीका—अधोमुख नक्षत्र ये हैं मूल कृत्तिका मघा विशाखा भरणी  
आश्लेषा पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा इनमें वापी कूप ताल गर्त और  
खाई खोदना द्रव्य काठना और रखना जुआ खेलना बिलांतप्रवेश गणि-  
तारंभ ये कर्म करने योग्य हैं ॥

तिर्यङ्मुख ।

अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरभ्रादिदांत्यश्वनौ  
गंत्रीयंत्रहलप्रवाहगमनारंभाः प्रसिध्यन्ति च ॥

टीका—तिर्यङ्मुख कहिये ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृग रेवती अनु-  
राधा स्वाती चित्रा इन नक्षत्रोंमें घोडा हाथी ऊंट भैंस गधा बैल मेंढा सूकर  
श्वान लेना, नाव पानीमें डालना गंत्री यंत्र हल चलाना धारण गमनादिक करे

ऊर्ध्वमुख ।

प्रसादध्वजधर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणो-  
च्छ्राया रामविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादिच ॥

टीका—पुष्य आर्द्रा श्रवण उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा शत-  
भिषा रोहिणी धनिष्ठा इन नक्षत्रोंको ऊर्ध्वमुख कहतेहैं इनमें देवस्थान ध्वजा  
मंडप घर कोट भीति तोरण बाग राज्याभिषेक आदिकर्म करने योग्य हैं ॥

ध्रुवनक्षत्र ।

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशांतिषुहितं स्थिरेषुच ॥

टीका—रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा ये ध्रुव नक्षत्र  
हैं, इनमें बीज बोना, हर्म्य, तथा नगरमें प्रवेश, राज्याभिषेक, बाग लगाना,  
ये कर्म करने योग्य हैं ॥



## मृदुनक्षत्र ।

मित्रकार्यरतिभूषणांबरोद्रीतिमंगलविधानमेषु तु ॥

टीका—मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इनको मृदु कहते हैं इनमें मित्रकार्य स्त्रीप्रसंग भूषण और वस्त्रधारण गाना आदि नाना प्रकारके मंगल कर्म करने योग्य हैं ॥

## लघुनक्षत्र ।

पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषुसिद्धिदम् ॥

टीका—अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् इनको लघु कहते हैं इनमें दुकान खोलना, भूषण धारण करना, क्रीडा करना, औषधी बनाना, कारखाना ज्ञानविद्या, शिल्पविद्या प्रस्थान गमनादिक शुभ हैं ॥

## तीक्ष्णनक्षत्र ।

भूतयक्षनिधिमंत्रसाधनं भेदबन्धवधकर्म चात्रतु ॥

टीका—आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा मूल ये तीक्ष्ण नक्षत्र हैं इनमें भूत और यक्षादिकोंकी पीड़ाका निवारण करना, द्रव्य काढना, मंत्रसाधन, भेद बंधन, वध ये कर्म उक्त हैं ॥

## चरनक्षत्र ।

दंतवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ॥

टीका—पुनर्वसु स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका ये चर नक्षत्र हैं इनमें हाथी, घोडा, नानाप्रकारके वाहन, बागमें जाना, पालकी रथ गाडी आदिकी सवारीमें बैठना योग्य है ॥

## उग्रनक्षत्र ।

शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषुस्मृतम् ॥

टीका—भरणी मघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये उग्र नक्षत्र हैं इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बंधन, उत्साह, शस्त्र, जलाना आदिकर्म करना विहित है ॥

## मिश्रनक्षत्र ।

स्वाभिधानसमकर्मसाधने कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ॥

टीका—कृत्तिका विशाखा भरणी ये मिश्रहैं इनमें नक्षत्रोंके समान कर्म करने योग्य हैं ॥

## नष्टवस्तुकेदेखनेकाप्रकार ।

( नक्षत्रोंकीलोचनसंज्ञा )

अंधके लभतेशीघ्रं मंदके च दिनत्रयम् ॥

मध्यके च चतुःषष्टिर्न प्राप्नोति सुलोचने ॥

टीका—अंध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिलती है और मंदलोचनमें जानेसे ३ दिन पीछे प्राप्त होतीहै, मध्यलोचन नक्षत्रमें वस्तु नष्ट होय तो ६४ दिवस पर्यंत मिलजाय, सुलोचनमें गई वस्तु कभी प्राप्त नहीं होती ॥ १ ॥

## नष्टवस्तुदिग्ज्ञान ।

अंधकेपूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा ॥

पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥

टीका—अंधे नक्षत्रमें नष्टवस्तु पूर्व दिशामें जानिये और मंदलोचनमें नष्ट वस्तु दक्षिणमें और मध्यलोचनकी पश्चिम दिशामें और सुलोचनमें गत वस्तु उत्तर दिशामें जानिये ॥

अंधादिनक्षत्रोंमें नष्टवस्तुको प्राप्तिहोनी वा न होनी ।

अंधे सद्यःप्राप्यते वस्तुनष्टं कष्टात्प्राप्यं मंदनेत्रे च तद्वत् ।

दूराच्छ्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥

टीका—अंध नक्षत्रमें नष्टवस्तु शीघ्र प्राप्ति होतीहै, मंदलोचनकी वस्तु परिश्रम और विलंबसे और मध्य लोचनकी गई वस्तु दूर जानिये और मिलनेवालीभी नहीं और सुलोचनमें नष्ट हुई वस्तु न सुननेमें आवे न मिले ॥

## नक्षत्रअनुसारप्रश्न ।

मघादिआर्यमांतं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥ इस्तादिवसु-

पर्यंतमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ १ ॥ शतताराद्यमांतंतु स्वगृहे  
वस्तु दृश्यते ॥ अग्न्यादिसार्पपर्यंतमदृष्टं दूरगंतथा ॥

टीका—मघासे लेकर उत्तराफाल्गुनी पर्यंत जो वस्तु चोरी जाय तो वह  
समीप जानिये, हस्तसे धनिष्ठातक दूसरे हाथमें वस्तु जानिये, शतभिषासे भरणी  
तक अपने घरमें जानिये और कृत्तिकासे श्लेषातक गई वस्तु प्राप्त नहीं होती।

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ॥ दिक्संख्ययाहृतं चैव  
सप्तभिर्विभजेत्पुनः॥एकेनभूतले द्रव्यंद्वयंचेद्द्रांडसंस्थितम् ॥  
तृतीये जलमध्यस्थमंतरिक्षेचतुर्थके ॥ तुषस्यं पंचमेतुस्या-  
त्पष्ठेगोमयमध्यगं ॥ सप्तमेभस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्रलक्षणम् ॥

टीका—१श्रसमयकी तिथिवार और गत नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करै  
और इनमें प्रहर मिलाके आठगुणा करै और सातका भाग देनेसे जो शेष रहै  
उस्से फल विचारै ॥ एक शेष रहे तो भूमिमें वस्तु जानिये, और २शेष रहै  
तो वर्तनमें, ३ शेष रहें तो जलमें ४ बचें तो अंतरिक्षमें जानिये, और ५  
बचें तो तुसमें, ६ बचें तो गोबरमें और ७ बचेंतो भस्ममें वस्तु जानिये ॥

### दिवारात्रिमुहूर्तान्याह ।

शिवोहिर्मित्रपितरौ वस्वंभोविश्ववेधसः॥विधिर्दिद्रोऽथशक्राग्नी  
रक्षोब्धीशौर्यमाभगः ॥ मुहूर्त्तैशाइमेप्रोक्ता दिवापंचदशक्र-  
मात् ॥ मुहूर्त्तारजनौ शंभुरजैकचरणाश्रयः ॥ दस्रात्पंचा-  
दितेर्जीवो विश्वकौतक्षमारुतैः ॥ दिनमानस्य तिथ्यंशोरात्रे-  
रपि मुहूर्त्तकाः॥ नक्षत्रनाथतुल्येस्मिन् स्थितकार्यात् स्वभो-  
दितम् ॥ दिनमध्येऽभिजिन्मध्ये दोषसंघेषु सत्स्वपि ॥ सर्व  
कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥

अथ रव्यादिवारेत्याज्यमुहूर्त्ताः ।

अर्यगाभानुमद्वारे चंद्रेहि विधिराक्षसौ ॥ पित्राग्नी कुजवारे तु  
चंद्रपुत्रे तथाऽभिजित् ॥ पित्राब्राह्मौभृगोवारे राक्षसाम्बूगुरो  
दिने ॥ रौद्रासापौशनेरहि इमेत्याज्यामुहूर्त्तकाः ॥ २ ॥

दिवारात्रिचक्रम् ।

|       |        |       |       |       |      |        |         |       |      |       |       |       |      |      |
|-------|--------|-------|-------|-------|------|--------|---------|-------|------|-------|-------|-------|------|------|
| १     | २      | ३     | ४     | ५     | ६    | ७      | ८       | ९     | १०   | ११    | १२    | १३    | १४   | १५   |
| शिवः  | सर्प   | मित्र | पितर  | वसु   | अंबु | विश्वे | विधि    | विधि  |      | इंद्र | राक्ष | वरुण  | अर्थ | भग   |
| आ०    | श्लेषा | अनु   | मघा   | धनि   | पूषा | उत्त   | ऽभि     |       | ज्ये | वि    | मूल   | शत    | उ    | पू०  |
| रुद्र | अजै    | अहि   | पूषा  | दस्र  | यम   | अग्नि  | ब्रह्मा | चंद्र | अदि  | गुरु  | वि    | सूर्य | त्वा | वायु |
| आ०    | पू.भा  | उ     | रेवती | अश्वि | भर   | कृत्ति | रोहि    | मृग   | पुन  | पुष्य | श्रव  | हस्त  | चि   | स्वा |
|       |        |       |       |       |      |        |         |       |      |       |       |       |      | नक्ष |

अथरव्यादिवारे त्याज्यचक्रम् ।

|        |              |           |          |             |            |               |           |
|--------|--------------|-----------|----------|-------------|------------|---------------|-----------|
| सूर्य  | चंद्र        | मंगल      | बुध      | गुरु        | शुक्र      | शनि           | वाराः     |
| अर्यम  | ब्रह्माराक्ष | पितृअग्नि | ऽभित्जित | राक्षसअंबु  | पितृब्रह्म | शिवसर्प       | मुहूर्ताः |
| उ०फा०  | रोहिणी       | मघाकृत्ति | ऽभित्जित | मूलपूर्वाषा | मघा.रो     | आर्द्राश्लेषा | नक्षत्र   |
| दिन १४ | दिन १।१२     | दि. ४।    | दिन. ८   | दिन १२।     | दिन ४।८    | दिन १।२       | दिनरात्रि |
|        | रा. ८।       | रा. ७।    | रा. ०    | रा. ६       | रा. ९      | रा. ९         |           |

मघकाढनेकासुहूर्तं ।

रोद्रैषैत्र्येवारुणे पौरुहूते याम्येसाप्पेनैर्ऋते चैवधिष्ये ॥

पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मघारंभः कालविद्भिःपुराणैः ॥

टीका—आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें प्रथम मघ काढनेका प्रारंभ करे ॥ १ ॥

नवीनवस्त्रधारण ।

रोहिणीषुकरपंचकेऽश्विभेऽन्युत्तरेपि च पुनर्वसुद्वये ॥

रेवतीषु वसुदैवते च भे नव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते ॥

टीका—रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इनमें नवीन वस्त्र धारण करे और करावे ॥

मोतीसुवर्णमणिरक्तवस्त्रधारण ।

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चकेच मार्तण्डभौमगुरुमंत्रिशशांकवारैः ॥  
मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदंतशंखरक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्धौ ॥

( ३० )

ज्योतिषसार ।

टीका—अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और भौम रवि गुरु शुक सोम इन वारोंमें मोती सुवर्ण मणि मूंगा हस्तिदंतका चूड़ा, नूतन शंख पूजामें लाना, रक्त वस्त्र धारण करना शुभ जानिये ॥

### पुंसवनकेनक्षत्र ।

श्रवणःसकरःपुनर्वसुर्निर्ऋतेर्भू च सपुष्यको मृगः ॥

रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ॥

टीका—श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर और रवि भौम गुरु ये ३ वार पुंसवनादिक कर्ममें उक्त हैं ॥

### कर्णवेधन ।

पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्रैः ॥

सेन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयोहिं शिशूनाम् ॥

टीका—रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर इनमें बालकका कर्णवेध करावै ॥

### अन्नप्राशन ।

रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्म्यतः पृथगपि द्वितयेच ॥

प्युत्तरेषु गदितं हिं नवान्नप्राशनं तु ऋषिभिः पृथुकानाम् ॥

टीका—रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इनमें ऋषियोंने आयमें और नया अन्न भक्षण करना कहाहै ॥

### क्षौरकर्म ।

पुष्येपौष्णे चाश्विनीष्वैदवेच शाक्रे हस्ताद्ये त्रिके भेष्वदित्याः ॥

क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रै च मुक्त्वा भौमादित्यापातंगिवारान् ॥

टीका—पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंमें श्मश्रुकर्म कराईये और ये वार वर्जित है. भौम रवि शनि इनमें नकरे ॥

## दंतबंधन ।

येषुयेषुप्रशंसन्ति क्षौरकर्ममहर्षयः ॥

तेषुतेष्वेव शंसन्ति नखदंतादिलेखनम् ॥

टीका—दंतबंधन और वेधना दांत और नख काटना, जो नक्षत्र ऊपरके श्लोक क्षौरकर्ममें कहे हैं इन्हींमें करना ॥

आज्ञायानरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च ॥

बंधमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ॥

टीका—राजा अथवा ब्राह्मणोंकी आज्ञा और दाहक्रिया करनेमें सूतकके अंतदिनमें यज्ञकी दीक्षामें बंधनसे छूटनेमें अवश्य क्षौर कर्म करानेसे पुष्टिका देनेवाला होताहै ॥

ताराशुद्धं क्षौर रविगुरुशुद्धा व्रतदीक्षा ॥

शुक्रविशुद्धायात्रा सर्वशुद्धं शशांकेन ॥

टीका—क्षौरकर्ममें नक्षत्रकी शुद्धि और व्रतके प्रारंभमें दीक्षाके लेनेमें रवि गुरुकी शुद्धि और यात्रामें शुक्रशुद्धि और चंद्रमाकी शुद्धि सबकामोंमें चाहिये ॥

## श्मश्रुकर्ममें वर्जनीय ।

भद्रापक्षांतरिक्ताव्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीपुरात्रौ संध्यापातार

भास्वच्छनिषुघटधनुःकर्ककन्यागतेके ॥ जन्मक्षैजन्ममासे

सुरदिनयजने भूषितो ग्रामयायी भुक्तोभ्यक्तोभिषिक्तः सम-

दिनरजिगःश्मश्रुकार्यं न कुर्यात् ॥

टीका—भद्रा पूर्णिमा अमावास्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिवस अष्टमी प्रतिपदा श्राद्धदिवस छठेमें रात्रिमें संध्याकाल व्यतिपातादिक दुष्टयोग मौमवार रविवार शनिवारमें कुंभ धनु कर्क कन्या इन चार राशियोंके सूर्यमें जन्मनक्षत्र और जन्ममास देवताके पूजन वा हवनादिकर्मदिवस अलंकारादि धारण दिवस भोजनके पीछे तेल लगाने और स्नानके पीछे मंगल अभिषेक तथा स्त्रीके रजस्वला होने और सम दिवस आदिकमें क्षौरकर्म वर्जनीय है ॥

( ३२ )

ज्योतिषसार ।

मौंजीबंधन ।

सौम्येपौष्णे वैष्णवेवासवाख्ये हस्तेस्वातित्वष्ट्रपुष्याश्विभेषु ।

ऋक्षेदित्यामिखलाबंधमोक्षौ संस्मर्येते नूनमाचार्यवर्यैः ॥

टीका—मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौंजीबंधन त्यागना ऐसा आचार्योंने श्रेष्ठ कहाहै ॥

विवाहनक्षत्राणि ।

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ॥

निर्विधाभिरुडुभिमृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥

टीका—मूल अनुराधा मृगशिर रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा तीनों उत्तरा इन सब नक्षत्रोंमें विवाह शुभ जानिये ॥

अग्निहोत्रारंभः ।

प्राजापत्ये पूषभेसद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठास्वैंदवे कृत्तिकासु ॥

अभ्याधानं चोत्तराणां त्रयेपि श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥

टीका—रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृत्तिका और तीनों उत्तरा इनमें प्रथम अग्निहोत्र प्रारंभ करे ॥

विद्यारंभमुहूर्त ।

मृगादिपंचस्वपि भेषु मूले हस्तादिकेच त्रितयेश्विनीषु ॥

पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्भद्रिद्यासमारंभमुशंतिसिद्धये ॥

टीका—मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती अश्विनी पूर्वाषाढा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें बालकको प्रथम विद्याभ्यास आरंभ करावे ॥

औषधिग्रहण ।

पौष्णद्वयेचादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ॥

मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति संतः ॥

टीका—रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषां अनुराधा मूल मृग इन नक्षत्रोंमें औषध बनाना खाना शुभहै ॥

## रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभनक्षत्र ।

स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाकेभौमे सूर्य्यजे सूर्य्यवारे ॥

नंदारिक्तास्वेवरोगस्य चाप्तिर्मृत्युर्ज्ञैयः शंकरोरक्षितापि ॥

टीका—स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा और भौम शनि रवि ये वार, नंदा तिथी कहिये पडवा षष्ठी एकादशी और रिक्ता कहिये चौथ नौमी चतुर्दशी इनमें रोग उत्पन्न होते हैं, उनकी शिवभी रक्षा नहीं कर सकते ॥

## रोगसे मुक्ति होनेका प्रमाण ।

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात् ॥

वश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्यास्याद्वासराणांमघासु ॥

टीका—रोग उत्पन्न होनेके दिवस जो रेवती अथवा अनुराधा होय तो रोगीके प्राण अति कठिनतासे बचें, उत्तराषाढा अथवा मृगशिर होय तो एकमास पर्यंत और मघा होय तो बीस दिवसतक पीडा रहै ॥

पक्षाद्धस्तेवासवे सद्विदैवे मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येनवाहात् ॥

याम्येत्वाष्ट्रैवैष्णवे वारुणे च नैरुज्यंस्यान्नूनमेकादशाहात् ॥

टीका—हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न रोग १५ दिवस रहताहै और धनिष्ठा विशाखा मूल अश्विनी कृत्तिकामें उत्पन्न ९ दिन और भरणी चित्रा श्रवण शततारकामें उत्पन्न हुआ रोग ११ दिवस भोगना होता है ॥

आहिर्बुध्नेतिष्यसंज्ञेसभागे प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ॥

रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां जाल्पतं गर्गमुख्यैः ॥

टीका—उत्तराभाद्रपदा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुआ रोग सात दिवसतक निश्चय भोगना पडता है यह गर्ग-मुनिका वाक्य है ॥

## रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र ।

इंदोर्वारेभार्गवे च ध्रुवेषुसार्पादित्यस्वातियुक्तेषुभेषु ॥

पित्र्येचांत्येचैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जंतोः ॥



( ३४ )

ज्योतिषसार ।

टीका--सोम शुक्रवार और ध्रुवनक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा और आश्लेषा पुनर्वसु स्वाती ये शुभ हैं. और मघा रेवती इनमें रोगीका स्नान अयोग्य और दुःखदायक है ॥

रोगमुक्तस्नानलग्न ।

लग्नेचरे सूर्यकुजेज्यवारेरिक्तातिथौचन्द्रबले च हीने ॥

केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानंहितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥

टीका--मेष कर्क तुला मकर ये चरलग्न, रवि भौम गुरु ये वार और रिक्तातिथि ४ । ८ । १४ और चन्द्र हीनबल होय, केंद्र तथा त्रिकोणमें पाप ग्रह होय ऐसी लग्नमें स्नान करावे तो आरोग्य होय ॥ ५ ॥

लता औषधीवावृक्षारोपण ।

सावित्रतिष्याश्विनवारुणानिमूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि ॥

लताौषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥

टीका--हस्त पुष्य अश्विनी शततारका मूल विशाखा और मृदु ध्रुव इन नक्षत्रोंमें लता औषधी और वृक्षोंका लगाना शुभहै ॥

कूपारंभकेनक्षत्र ।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ॥

प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारंभे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥

टीका--हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा तीनों उत्तरा और रोहिणी इन नक्षत्रोंमें अगले मुनीश्वरोंने कूपारंभ श्रेष्ठ कहाहै ॥

द्रव्यदेनावास्थापितकरना ।

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तम् ॥

हस्तेन विन्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्नियतं कदाचित् ॥

टीका--साधारण उग्र ध्रुव और दारुणसंज्ञक नक्षत्रोंमें जो दूसरेको द्रव्य देना स्थापित करै तो वह वस्तु फिर प्राप्त नहीं होय ॥

हस्तीलेनावादेना ।

हस्तेषुचित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये च पुनर्वसौ च ॥

प्रोक्तानि सर्वाण्यपिकुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥

टीका—हस्त चित्रा अश्विनी स्वाती पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें हाथी लेना और देना और उसके अलंकार शृंगारादिक सकल कर्म करना गर्गादिमुनियोंने शुभ कहेहैं ॥

अश्वलेना वा देना ।

पुष्यश्रविष्ठाश्विनसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु ॥

सवारुणक्षेत्रेषु बुधैःस्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमाणाम् ॥

टीका—पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृगशिर रेवती स्वाती पुनर्वसु हस्त शतभिषा इन नक्षत्रोंमें तुरंग ले और दे तथा उसके अलंकार और शृंगारआदि कर्म करै गवादिपशुओंकेनगरमेंलाने और पहुँचानेमें वर्ज्य ।

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषु चतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ॥

ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्याद्धीमान्पशूनां न कदाचिदेव ॥

टीका—चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी चतुर्दशी अमावास्या अष्टमी इनमें गवादिपशुओंको ग्राममें न लावें और न बाहिर पहुँचावे ॥

गवादिपशुओंकेक्रयविक्रयमेंवर्जित ।

शुक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ॥

अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥

टीका—ज्येष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इन नक्षत्रोंमें गायका बेचना और मोल लेना दोनों वर्जनीय हैं ॥

तृणकाष्ठादिसंग्रहमेंवर्ज्य ।

वासवोत्तरदलादिपंचके याम्यदिग्गमनमेहगोपनम् ॥

प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्याकावितरणं च वर्जयेत् ॥

टीका—धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे लेकर पांच नक्षत्रोंको पंचक कहते हैं इनमें दक्षिण दिशाका गमन और घर बनाना प्रेतदाह तृण काष्ठ संग्रह शय्या-दिक निर्माण करना वर्जितहै ॥

## हलचलानेकानक्षत्र ।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषुभेषु ॥

हलप्रवाहंप्रथमं विदध्यात्रीरोगमुष्कान्वितसौरभयैः ॥

टीका—मृदु ध्रुव क्षिप्र चरसंज्ञक नक्षत्रोंमें तथा मूल और मघा विशाखा इन नक्षत्रोंमें रोगरहित आंडू बैलोंसे प्रथम हल चलावै ॥

## बीजबोना ।

रौद्राहियाभ्यानि लवारुणेंद्राण्याहुर्जघन्यानि तथा बृहन्ति ॥

ध्रुवद्विदैवादितिभानि नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनींद्रैः ॥

बृहत्सुधान्यंकुरुतेसमर्धं जघन्यधिष्ण्येभ्युदितो महर्वः ॥

समेषुधिष्ण्येषु समंहिमांशुर्वदंति संदिग्धमिदं महांतः ॥

टीका—आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शतभिषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंको जघन्य कहतेहैं इनमें मासकी आदिमें जो चंद्रमा उदय होय तो धान्य महंगा होय, ध्रुव कहिये तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु इनको बृहत् कहतेहैं इनमें चंद्रमा उदय होय तो अन्न सस्ता होय और शेष नक्षत्र सम जानिये उनमें चंद्रोदय होनेसे अन्नका भाव साधारण रहताहै ॥

## राशिपरत्वमें चंद्रोदयकाफल ।

मीनमेषोदितश्चंद्रः सततं दक्षिणोन्नतः ॥ शेषोन्नतश्चोत्तरायां

समतावृषकुंभयोः ॥ विद्वरंतुसमे चंद्रेदुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचंद्रमाः ॥

टीका—मीन अथवा मेष राशिमें जो शुक्र द्वितीया चंद्रमाका उदय होय तो उससे दक्षिणको उन्नत जानिये और उससे दुर्भिक्षका संभव होताहै और मिथुनसे लेकर मकर पर्यंत जो चंद्रोदय होय तो उत्तरको उन्नत जानिये यह चंद्रमा सुभिक्ष क्षेम और आरोग्यताका कर्ता वृष और कुंभमें चंद्रमाका उदय होय तो सम रहताहै इसमें राजाओंके कलह और विद्वरता होतीहै ॥

## पुष्यनक्षत्रकेगुणदोष ।

परकृतमखिलं निहन्तिपुष्यो न खलु निहंति परंतु पुष्यदोषमा ॥

ध्रुवममृतकरोष्टमेपिपुष्ये विहितमपैति सदैव कर्मसिद्धिम् ॥

टीका—पुष्य दूसरेके दोष और अष्टमस्थान स्थित चंद्रके दोषको दूर करता है परंतु उसी नक्षत्रका दोष होय तो वह दूर नहीं होता और इस नक्षत्रमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है ॥

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषुचित्रानुराधामृगरेवतीषु ॥

स्वातौधनिष्ठासु मघासुमूले बीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रतिष्ठा ॥

टीका—हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती स्वाती धनिष्ठा मघा मूल इन नक्षत्रोंमें बीज बोनसे खेत अधिक फलतेहैं ॥

### सर्पदंशविचार ।

यःकृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पातकार्द्रासु भुजंगदष्टः ॥

सवैनतेयेन सुरक्षितोपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥

टीका—कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रोंमें जो सर्प काटै तो गरुडकोभी रक्षक होनेपर मनुष्य मृत्युको प्राप्त होय ॥

### गानारंभविचार ।

हस्तस्तिष्यो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ॥

पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चंद्रवतीं नृत्यारंभे शोभनो ऋक्षवर्गः ॥

टीका—हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनों उत्तरा और शुभ चन्द्रमा पाकर गाने और नृत्यकारंभ करना पूर्वाचार्योंने शुभ कहाहै ॥

### राज्याभिषेकनक्षत्र ।

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषु तिसृषूत्तरासुच ॥

रेवतीमृगशिराश्विनीषुच क्षमाभृतां समभिषेकइष्यते ॥

टीका—अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनी इन नक्षत्रोंमें राज्याभिषेक करना उचित है ॥

### राजदर्शन ।

सौम्याश्वितिष्यश्रवणश्रविष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रभूषभानि ॥

मित्रेणयुक्तानिनरेश्वराणां विलोकनेभानि शुभप्रदानि ॥

टीका—मृगशिर अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त ध्रुव चित्रा रेवती अनुराधा इन नक्षत्रोंमें राजाका प्रथम दर्शन शुभदायक है ॥

### पुष्यकाफल ।

सिंहोयथासर्वचतुष्पदानां तथैवपुष्योबलवानुडूनाम् ॥

चन्द्रेविरुद्धेप्यथ गोचरेपि सिद्धयन्ति कार्याणिकृतानिपुष्ये ॥

टीका—जैसे सब चतुष्पद जीवोंमें सिंह बलवान् है वैसेही नक्षत्रोंमें पुष्य है; पुष्यमें किया कार्य गोचर दोष और कनिष्ठ अर्थात् चौथा आठवां बारहवां चंद्र होने परभी सिद्ध होताहै ॥

ग्रहेणविद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्धतारोपि विलोमगोपि ॥

करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥

टीका—ग्रह करिके विद्ध वा अशुभ ग्रह करिके युक्त होय अथवा तारा इससे प्रतिकूल होय तथापि पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होताहै; परंतु विवाहमें पुष्यनक्षत्र वर्जितहै ॥

### योगप्रकरण ।

प्रतिदिनके योगजाननेकी रीति ।

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेवच ॥

गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः ॥

टीका—पुष्यसे सूर्यनक्षत्रतक चलते नक्षत्रोंको गिनै और श्रवणसे दिवसनक्षत्रतक गिनै, दोनों संख्याओंको इकट्ठा करै और सत्ताईसका भाग देवै जो शेष रहै वही योग जानिये ॥

### योगोंकेनाम ।

विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अति-

गंडःसुकर्माचधृतिः शूलस्तथैवच ॥ गंडोवृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्या-

घातोहर्षणस्तथा ॥ वज्रसिद्धी व्यतीपातो वरीयान् परिघः

शिवः ॥ सिद्धः साध्यः शुभः शुद्धो ब्रह्मेद्रो वैधृतिःक्रमात् ॥

सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥

टीका—विष्कंभ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अति-  
गंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात  
१३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वरीयान् १८ परिघ्न  
१९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ ऐंद्र  
२६ वैधृति २७ ये सत्ताईस योग निजनामके तुल्य फल करते हैं अर्थात्  
जो इनके नामोंका अर्थ है वही फल जानों ॥

### योगोंमें वर्जनीयघटिका ।

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः॥सवैधृ-  
तिस्तुव्यतीपातनामासर्वोप्यनिष्टः परिघ्नस्यचार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु  
योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपंचशूले ॥ गंडेतिगंडे च  
षडेव नाद्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥

टीका—और इनमें अशुभ योगोंका आदिका चतुर्थांश वर्जनीयहै, व्यती-  
पात वैधृती ये सम्पूर्ण और विष्कंभकी ३ वज्रकी ४ व्याघातकी ५  
गंडकी ६ अतिगंडकी ६ शूलकी १५ घड़ी सकलशुभकार्यमें वर्जनीय हैं ॥

### करणजाननेकी रीति ।

गततिथ्योद्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ॥

एकोनाः सप्तहृच्छेषः करणं स्याद्द्रवादिकम् ॥

टीका—शुक्लप्रतिपदासे जिस तिथिका करण जानना हो उसकी पूर्वगत ति-  
थिको द्विगुणी करै तिसमें एक मिलाकर सातका भाग दे जो शेष बचै वही  
उस तिथिका करण जानिये, और प्रत्येक तिथिको दो करण भोगते हैं ॥

### नाम ।

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततोभवेत्तैतिलनामधेयम् ॥

गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्तः॥

अंतकृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दशभागयोः ॥ ज्ञेयंचतुष्पदं

नागं किंस्तुघ्नंप्रतिपदले ॥

इन्द्रोब्रह्मामित्रनामार्यमाभूः श्रीःकीनाशश्चेति तिथ्यर्धनाथाः ॥  
कक्ष्युक्षाख्यौ सर्पवायुस्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम् ॥

कृत्य ।

पौष्टिकस्थिरशुभानिबवाख्येवालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ॥  
कौलवेप्रमदमित्रविधानं तैत्तिलेशुभगताश्रयकर्म ॥ गरेचबी-  
जाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक्रियाश्च ॥ नसि-  
द्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिषु तंत्रसिद्धिः ॥  
मंत्रौषधानिशकुनौ तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्मच-  
तुष्पदेति ॥सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागे किंस्तुघ्ननाम्निनि-  
खिलं शुभकर्मकार्यम् ॥

| शुक्लतिथी६०        | कृष्णतिथी६०    | नाम      | स्वामि  | कृत्य  |
|--------------------|----------------|----------|---------|--|
| पूर्वदल उत्तरद     | पूर्वदल उत्तरद |          |         |  |
| स्थिर .*           | ०।०            | किंस्तु. | वायु    | समस्त शुभकार्य करै   |
| < १ १५ ४ ११ ७      |                | वव       | इन्द्र  | व्रतउत्साह देवालय आदि शुभकर्म करै                                  |
| २ १२ ५ १२ १ ८ ४ ११ |                | बालव     | ब्रह्मा | ब्राह्मणोंसे हितकरै  |
| ६ १३ २ ९ ५ १२ १    |                | कौलव     | मित्र   | उन्माद और मित्रताकरै   |
| १० ६ १३ २ ९ ५ १२   |                | तैत्तिल  | सूर्य   | विवाहादिक मंगलकार्य करै  |
| १४ ३ १० ६ १३ २ ९   |                | गरज      | भूमि    | बीजबोना हल चलाना   |
| ११ ७ १४ ३ १० ६ १३  |                | वाणिज    | लक्ष्मी | देवप्रतिष्ठा घर दुकान और व्यापार करावै                             |
| ८ १५ ४ ११ ७ १४     |                |          | यम      | सकल कर्म वर्जित परंतु विष और घात<br>ये क्रूरकर्म वर्जित नही        |
| स्थिर ०            | ० ०            | १४ शकुनि | कलि     | मित्रोपदेश औषधि ग्रहपूजा करावै                                     |
| स्थिर              | ३०             | ० चतुष्प | वृषभ    | गौ ब्राह्मण राज्य पितृ इनसंबंधी कृत्य<br>करावै                     |
| स्थिर              |                | नाग      | सर्प    | सौभाग्यकर्म युद्धमेंजाना धीरज और<br>विद्याभ्यास करना ये कर्म करावै |

कल्याणीतिथिमानम् ।

कृष्णेभिदिशयोरूर्ध्वं सप्तमीभूतयोरधः ॥ शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं  
भद्रा प्राग्वसुपूर्णयोः ॥ मनुवसुमुनितिथियुगदशशिवगुण

संख्यासुतिथिषुपूर्वात्याः ॥ आयातिविष्टिरेषापृष्टेषुभद्रा पुर-  
स्त्वशुभा ॥ शास्त्रार्थः ॥ दिवासर्पमुखी भद्रारात्रौभद्रा च वृश्चि-  
की ॥ सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् ॥ रात्रिभ-  
द्रायदाह्निस्याद्विवाभद्रायदानिशि ॥ नतत्रभद्रादोषः स्यात्स-  
र्वकार्याणि साधयेत् ॥ शरीरभागः ॥ नाड्यस्तु पंचवदनेथगले  
तथैकावक्षोदशैकसहितंनियतं चतस्रः ॥ नाभ्यांकटौषडथ पु-  
च्छलता च तिस्रोविष्टेर्बुधैरभिहितौंगविभाग एषः ॥ स्थानफलम् ॥  
मुखेकार्यध्वस्तिर्भवति मरणं चाथगलके धनाहानिर्वक्षस्यथ  
कटितटे बुद्धिविलयः ॥ कलिर्नाभौदेशे विशयमथ पुच्छे च  
जगदुः शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्वमुनयः ॥ चंद्रः ॥ मीने  
मेषालिकर्केशशिनि निवसति स्वर्गसंस्थापि विष्टिः कन्यायां  
तौलिसंस्थेधनमिथुनगते नागलोकेनिवासः ॥ कुंभेसिंहवृषेवा  
मकरमुपगतेराजतेमृत्युलोके भद्राचंद्रप्रभावा हिमकरतनया  
नोशुभा लौकिके स्यात् ॥ स्थानफलम् ॥ स्वर्गभद्राभवेत् सौख्यं  
पाताले च धनागमः ॥ मृत्युलोके यदाभद्राकार्यसिद्धिस्त-  
दानहि ॥ वारानुसारनाम ॥ सोमेशुके च कल्याणी शनौ  
चैवतुवृश्चिकी ॥ गुरौपुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषुभद्रिका ॥

| तिथि  | शास्त्रार्थ                  | सं०    | स्थान | फल    | चंद्र  | स्थान  | फल     | वार     | नाम                |
|-------|------------------------------|--------|-------|-------|--------|--------|--------|---------|--------------------|
| कृष्ण | ३ इनतिथियोंकी                | ३० घडी | ३     | पुच्छ | विजय   | मीन    | स्वर्ग | सौख्य   | सो. श. } कल्याणी   |
|       | उत्तरार्द्धकीभद्रातिस्काना   |        |       | कटि   | बुद्धि | वृश्चि |        |         |                    |
| शुक्ल | १० मवृश्चिकीदिवसमेंहोती      |        |       |       |        |        | पाताल  | धनप्रा. | श. गुरु } पुण्यवती |
|       | ४ उत्तरकी३०घटिका पुच्छ       |        |       |       |        |        |        |         |                    |
| शुक्ल | वर्जनीय मुख शुभहोय,          |        | ४     | नाभे  | कलह    | कन्या  | पाताल  | धनप्रा. | श. गुरु } पुण्यवती |
|       | ११ उत्तरार्द्ध कहिये रात्रि  |        | ११    | कपाल  | धन     | तुला   |        |         |                    |
| कृष्ण | ७ ३० व. पूर्वाद्धकीभद्राकाना |        |       |       |        |        | पाताल  | धनप्रा. | श. गुरु } पुण्यवती |
|       | मसर्पिणीरात्रिमेंआतीहैउ      |        | १     | गल    | मरण    | मिथु   |        |         |                    |
| शुक्ल | १४ सकी५घडीमुखवर्जनीयहै       |        |       |       |        |        | पाताल  | धनप्रा. | श. गुरु } पुण्यवती |
|       | ८ विध्वंस करता पीछे पुच्छ    |        | ५     | मुख   | वध्वंस | कुंभ   |        |         |                    |
| शुक्ल | शुभहोय पूर्वाद्धकहिये        |        |       |       |        |        | पाताल  | धनप्रा. | श. गुरु } पुण्यवती |
|       | १५ दिवसमें भद्राहोय          |        | ३०    |       |        |        |        |         |                    |

दैतद्रैःसमरेऽमरेषु विजितेष्वीशःक्रुधाहृष्टवान् स्वकायात्कि-  
लनिर्गताखरमुखीलांगूलिनीचक्रपात् ॥ विष्टिःसप्तभुजाभृगेंद्र-



गलकाक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नीमुदितैः सुरैस्तुकरणप्रांतेनियुक्तातुसा  
टीका--दैत्य और देवताओंमें बड़ा घोर युद्ध हुआ तब देवताओंका  
पराजय हुआ, तिस समय शिवजीके क्रोध करनेसे उनकी देहसे एक स्त्री  
गर्दभमुखी पुच्छवती पहियेके समान जिसके चरण विष्टिनाम सप्त भुजा  
मृगकीसी ग्रीवा कृश उदर प्रेतपर चढी दैत्योंके वध करनेवाली निकली  
और देवताओंने प्रसन्न होके करणोंके प्रांतभागमें स्थापितकी ॥

### संक्रांतिः ।

वारानुसारनाम ॥ ॥ घोरारवौर्ध्वाक्ष्यमृतद्युतौचसंक्रांतिवारेच  
महोदरीस्यात् ॥ मंदाकिनीज्ञेचगुरौचनंदाभिश्चाभृगौराक्षसि  
चार्कपुत्रे ॥ नक्षत्रोंके अनुसारनाम ॥ ॥ अग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुव-  
मिश्राख्यदारुणैः ॥ ऋक्षैः संक्रांतिरर्कस्यघोराद्याः क्रमशोभवे-  
त् ॥ ॥ फल ॥ ॥ ध्वांक्षवैश्यान्सुखयति महोदर्यलंचौरसा-  
थान्घोराशूरानथनरपतीनिवमंदाकिनीच ॥ नंदाख्याचद्विजव-  
रगणान्मिश्रकाख्यापशून्श्च चांडालांतांप्रकृतिमखिलांराक्षसी  
संज्ञिताच ॥ ॥ कालफल ॥ ॥ पूर्वाह्नकालेनृपतिद्विजेन्द्रान्म-  
ध्यंदिनेचाथविशोपराह्णे ॥ शूद्रान्नवावस्तमितोप्रदोषेपिशाच-  
कात्रात्रिचरान्निशथि ॥ नटादिकांश्चापररात्रिकाले प्रत्यूषका-  
लेपशुपालकांश्च ॥ संक्रांतिरर्कस्यसमस्तलिगा प्रभातसंध्या-  
समयेनिहंति ॥ ॥ दिशाकोमुख ॥ ॥ अर्केशुक्रेमुखंपूर्वे सौ-  
म्येभौमेचदक्षिणे ॥ शनौचंद्रमुखंपश्चाद्गुरौचैवोत्तरामुखी ॥  
वार और नक्षत्रोंके अनुसार जाननेकाकोष्ठक ।

| वार   | नक्षत्र | नाम       | फल           | काल          | फल           | दिशा     |
|-------|---------|-----------|--------------|--------------|--------------|----------|
| रवि   | उग्र    | घोरा      | शूद्रोंकोसुख | पूर्वाह्न    | विप्रराजाओं. | पूर्वको  |
| सोम   | क्षिप्र | ध्वांक्षी | वैश्योंकोसु० | मध्याह्न     | वैश्योंको    | पश्चिमको |
| मौम   | चर      | महोदरी    | चोरोंकोसु०   | अपराह्न      | शूद्रोंको    | दक्षिणको |
| बुध   | मैत्र   | मंदाकि.   | राजाओंकोसु०  | प्रदोष       | पिशाचोंको    | दक्षिणको |
| गुरु  | ध्रुव   | नंदा      | द्विजगणको०   | अर्द्धरात्रि | राक्षसोंको   | उत्तरको  |
| शुक्र | मिश्र   | मिश्रा    | पशुको०       | अपररात्रि    | नटादिकको     | पूर्वको  |
| शनि   | दारुण   | राक्षसी   | चांडालोंको०  | प्रत्यूषका०  | पशुपालकोंको  | पश्चिमको |

करणअनुसारसंक्रांति ।

॥ स्थितिः ॥ ॥ चतुष्पदेतैतिलनागयोश्च सुप्तोरविःसंक्रमणंक-  
 ॥ विद्याद्वारख्येचगराह्वयेच सवालवारख्येस्थितएवाव-  
 ष्ठी ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ किंस्तुघ्ननाग्निशकुनेवणिकौलवारख्ये चो-  
 र्ध्वस्थितस्यखलुसंक्रमणंरवेस्स्यात् ॥ धान्यार्घविष्टिषुभवेत्क्र-  
 मशस्त्वनिष्टो मध्येष्टतेतिमुनयःप्रवदंतिपूर्वे ॥ वाहनम् ॥ ॥ सिं-  
 होव्याघ्रोवराहश्चगर्दभःकुंजरस्तथा ॥ महिषीघोटकःश्वाचच्छा-  
 गोवृषभकुक्कुटौ ॥ गजोवाजीवृषोमेष खरोष्ट्रौकेसरीक्रमात् ॥  
 शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्चबवादितः ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ गजेल-  
 क्ष्मीवृषेस्थैर्यै घोटेकेवाहनेतथा ॥ सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंसुभिक्षं-  
 गर्दभेशुनौ ॥ वराहे महतीपीडाजायतेमेषवाहने ॥ महिष्यांच  
 भवेत्क्लेशः कुक्कुटेमृत्युरेवच ॥ श्वेतपीतहरितंचपांडुरंरक्तश्याम  
 मसितंबहुवर्णम् ॥ कंबलोविवसनंचनवर्णान्यंशुकानिचबवादितः  
 क्रमात् ॥ ॥ आयुधम् ॥ भुशुंडीचगदाखड्गदंडकोदंडतोम-  
 रान् ॥ कुंतपाशांकुशास्त्रंच बाणश्चैवायुधंभवात् ॥ ॥ भोज-  
 नपात्रम् ॥ ॥ सौवर्णराजतंताम्रं कांस्यंलोहंचखर्परम् ॥ पत्रं-  
 वस्त्रंरोभूमिः काष्ठपात्रंबवादितः ॥ ॥ भक्ष्यपदार्थ ॥ ॥ अ-  
 न्नंचपायसंभक्ष्यं पक्वानंचपयोदधि ॥ चित्रान्नंगुडमध्वाज्यंशर्क-  
 रातुबवादितः ॥ ॥ गन्धम् ॥ ॥ कस्तूरीकुंकुमंचैव चंदनमृत्ति-  
 कातथा ॥ गोरोचनमलक्तंच हरिद्राचतथांजनम् ॥ सिंदूरमगुरु-  
 श्चैव कर्पूरश्चबवादितः ॥ ॥ जाति ॥ ॥ देवभूताहिविहगप-  
 शवोमृगएवच ॥ ब्रह्मक्षत्रियविद्ब्रूमिश्रजातिर्ववादितः ॥ ॥  
 पुष्पम् ॥ ॥ पुन्नागजातिबिकुलाश्चकेतकी बिल्वस्तथार्कः कम-  
 लंचदूर्वा ॥ मल्लीतथापाटलिकाजपाचबवादिपुष्पाणिचयो-  
 जयेत्तु ॥ ॥ भूषणम् ॥ ॥ नूपुरंकंकणंमुक्ता विद्रुमंमुकुटंमणि-  
 म् ॥ गुंजावराटकंनीलंगरुत्मंरुक्मकंबवात् ॥ ॥ कंचुकी ॥

विचित्रपर्णाशुकभूर्जपत्रिका सीतातथापाटलनीलवर्णा ॥ कृष्णा-  
जिनचर्मचवल्कपांडुरा ववादितश्चैवतुकंचुकीस्यात् ॥ वय ॥  
शिशुःकुमारीचगतालकायुवा प्रौढाप्रगल्भाथततश्चवृद्धा ॥  
वंध्यातिवंध्याचसुतार्थिनीच प्रव्राजिकाचैवफलंशुभंवात् ॥

|         |         |         |         |          |         |          |         |         |         |         |         |
|---------|---------|---------|---------|----------|---------|----------|---------|---------|---------|---------|---------|
| करण     | वव      | बालव    | कौलव    | तैतिल    | गरु     | वाणिज    | विष्टि  | शकुनि   | चतुष्प. | नाग     | किंस्तु |
| स्थिति  | वसली    | वसली    | खडी     | निजली    | वसली    | खडी      | वसली    | निजली   | खडी     | निजली   | खडी     |
| फल      | मध्यम   | मध्यम   | महर्घ   | समर्घ    | मध्य    | महर्घ    | महर्घ   | महर्घ   | समघ     | समघ     | महघे    |
| वाहन    | सिंह    | व्याघ्र | वराह    | गर्दभ    | हस्ता   | महिषी    | घोटक    | कृत्ता  | मेंढा   | बैल     |         |
| उपवा.   | गज      | अश्व    | बैल     | मेंढा    | गर्दभ   | ऊंट      | सिंह    | शार्दू  | महिष    | व्याघ्र | वानर    |
| फल      | भय      | भय      | पीडा    | सुभिक्ष  | लक्ष्मी | क्लेश    | स्थैर्य | सुभिक्ष | उश      | स्थैर्य | मृत्यु  |
| वस्त्र  | श्वेत   | पीत     | हरित    | पांडुर   | रक्त    | श्याम    | काला    | चित्र   | कंबल    | नग्ग    | घनवर्णा |
| न्यायुध | सुशुंडी | गदा     | खड्ग    | दड       | धनुष    | तोमर     | कुंत    | पाश     | अंकुश   | तलवार   | बाण     |
| पात्र   |         | रूपा    | ताम्र   | कांस्य   |         | तीकर     | पत्र    | वस्त्र  | कर      | भूमि    | काष्ठ   |
| भक्ष्य  | अन्न    | पायस    | भक्ष्य  | पक्वान्न | पयई     | दधि      | चित्रा. | गुड     | मधु     | घृत     | ज्ञकरा  |
| लेपन    | कस्तूरी | कुंकुम  | चदन     | माटी     | गोरोच   | अलक्त    | दलद     | सुरमा   | सिंदूर  | अगर     | कर्पूर  |
| वर्ण    | देव     | भूत     | सर्प    | पशु      | मृग     | विप्र    | क्षत्री | वैश्य   | शूद्र   | मिश्र   | अंत्यज  |
| पुष्प   | पुन्नाग | जाती    | बकुल    | केतकी    | बेल     | अर्क     | कमल     | दूवा    | मल्ली   | पाटल    | जपा     |
| भूषण    | नूपुर   | ककण     | मोती    | मृगा     | सुकुट   | मणि      | गुजा    |         | नीलक    | पुन्ना  | सुवर्ण  |
| कंचु    | विचित्र | पर्ण    |         |          | सीत     | पांडरी   | नील     | कृष्ण   | अंजन    | वल्कल   | पांडुर  |
| वय      | बाल     | कुमारी  | गतार्थि | युवा     |         | प्रगल्भा | वृद्धा  | वंध्या  | अतिवं   | पुत्रव० | संन्या. |

## फलश्रुति ।

वाहनादिबुधेज्ञैयमथोत्क्रांतिविशेषतः ।

वाहनादिकवस्तूनांसंक्रमात्तुविनाशता ॥

टीका—संक्रांति जिस वाहनपर स्थित होय और जो वस्तु धारण करे  
उन सबका नाश होय ॥ २३ ॥

## सुहूर्त ।

संक्रांतिकितनेसुहूर्तहोतीहै उसकेनक्षत्रऔरफल ।

संक्रांतौसुहूर्तभेदा हरपवनयमे वारुणेसार्परोद्रे एषापंचेंदुसंज्ञा

गुरुकरपितृभे चाग्निदस्त्रेचसौम्ये ॥ त्वाष्ट्रमैत्रेचमूले श्रुतिवसु-  
वपुषा त्रीणिपूर्वाखरामे ब्राह्मेदित्येद्विदैवे भवतिशरकृतादु-  
त्तरात्रीणिऋक्षम् ॥ बाणवेदैःसमर्घं स्यान्मध्यस्थं व्योमराम-  
योः ॥ मूर्तौपंचदशेयाते दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥

टीका—आर्द्रा स्वाती भरणी शतभिषा आश्लेषा ज्येष्ठा इनमें जो संक्रा-  
ति अर्के वह १५ मुहूर्त होती है और दुर्भिक्ष करनेवाली और पुष्य हस्त  
मघा कृत्तिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती  
तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंकी संक्रांति ३० मुहूर्त होती है यह साधारण  
फलदायक है और रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इनमें संक्रांति  
अर्के तो ४५ मुहूर्त होती है यह स्वस्थताका कारण है ॥

### दूसराप्रकार ।

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकम् ॥  
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपंचमहर्घता ॥

टीका—गतमासदिन संक्रांति नक्षत्र और प्राप्त संक्रांति दिन नक्षत्र  
इनका अंतर २ अथवा तीन होयतो सस्ता और ४ वा ५ का नक्षत्रोंमें  
अंतर आवे तो महर्घ अर्थात् महंगा जानिये ॥

### धान्यविचार ।

संक्रांतिनाड्यातिथिवारऋक्षधान्याक्षरंवह्निहरेत्तुभागम् ॥  
संक्रांतिनाडीनवमिश्रिताच सप्ताहतापावकभाजिताच ॥  
एकेसमर्घद्वितयेचसौम्यं शून्येसमर्घमुनयोवदंति ॥

टीका—संक्रांतिकी घड़ी और गत तिथि वार नक्षत्र और धान्यके  
नामाक्षर एकत्र करके तीनका भाग दे वह एक मत और दूसरे मतके  
आज्ञानुसार संक्रांतिकी घड़ियोंमें ९ मिलाके ७ से गुणकर ३ का भाग  
दे शेषका फल विचारे १ शेष रहे तो धान्यकी स्वस्थता और दो बर्चे  
तो साधारणता और निःशेष हो तो महर्घता जानिये ॥

## नक्षत्र अनुसार संक्रांतिपीडा ।

संक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ॥ त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं त्रिकं  
षट्कंपुनः पुनः ॥ पंथाभोगोव्यथावस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥

टीका—संक्रांतिके अधर नक्षत्रसे अपने नक्षत्रतक गिने और इसरी-  
तिमें उसका विचार करे प्रथम ३ पंथा चलावे फिर ६ भोग फिर ३ दुःख  
६ वस्त्र फिर ३ हानि और ६ धनप्राप्ति कहते हैं ॥

## जन्मनक्षत्रोंका फल ।

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यतिथौ संक्रमणं भवेत् ॥

तन्मासाभ्यंतरेतस्यवैरं क्लेशं धनक्षयः ॥

टीका—जाके जन्म नक्षत्र विषे संक्रांति अर्के उसका किसीसे वैर होय  
और जिसके जन्ममासमें संक्रांतिका संभव हो उसे क्लेश और जिसके  
जन्मतिथिमें संक्रांति पडे उसका धनक्षय होता है ॥

## संक्रांतिकास्वरूप ।

षष्टियोजनविस्तीर्णासंक्रांतिः पुरुषाकृतिः ॥ एकवक्रानव  
भुजालंबोष्ठीदीर्घनासिका ॥ पृष्ठेलोकाभ्रमंत्येव गृहीत्वास्वर्प-  
रंकरे ॥ एवंसंक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

टीका—शरीर साठ योजन लम्बा और चौड़ा, पुरुषाकृति एक मुँह ९ भुजा  
ओठ और नासिका लंबे और स्वर्पर हाथमें लिये पीछेसे लोक भ्रमण करतेहैं।

## चंद्रसे संक्रांतिकावर्ण और फल ।

मेषालिकर्केच तथैवरक्तंचापेच मीनेच तुलेचपीतम् ॥ श्वेतं  
वृषेस्त्रीमिथुनेच चंद्रे कृष्णंचनक्रेथघटेच सिंहम् ॥ रक्तेफलं  
भवेद्दुःखंश्वेतंचैवसुखंशुभम् ॥ पीतेश्रीस्तुतथाप्रोक्ताश्यामेमृ-  
त्युने संशयः ॥

टीका—मेष वृश्चिक कर्क इन राशियोंके चंद्रमामें जो संक्रांतिका प्रवेश  
होय तो उसका रक्तवर्ण जानिये वह दुःखदायक है और धनु मीन तुलाके

चंद्रमाकी संक्रांतिका पीतवर्ण ये लक्ष्मीकी प्राप्ति करती है और वृष कन्या मिथुनकी संक्रांतिका श्वेतवर्ण सुख और शुभप्राप्ति करानेवाली है; मकर कुंभ और सिंहके चंद्रमाकी संक्रांति कृष्णवर्ण है यह मृत्युदायी है ॥

### राशिअनुसार चंद्रमा ।

यादृशेनहिमरश्मिमालिना संक्रमोभवतितिग्मरोचिषा ॥

तादृशंफलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपिवशेनशीतगोः ॥

टीका—जैसे चंद्रमा नष्टस्थानी व उत्तमस्थानी होकर शुभाशुभ फलको देताहै उसी भाँति नष्ट अथवा उत्तम चंद्रमाकी अर्की हुई संक्रांति चन्द्रमाके अनुसार फलदायक होती है ॥

### पुण्यकाल ।

पूर्वतोपिहिरवेश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तु षोडश ॥

अर्धरात्रिसमयादनंतरं संक्रमेपरदिनंहि पुण्यदम् ॥

टीका—सोलह घटिका पुण्यकाल होताहै जो संक्रांति दिनमें पडे पूव रात्रि ताँई तो पुण्यकाल उसी दिवस जानना चाहिये और जो वृद्धि रात्रिके पीछे पडे तो दूसरे दिवस पुण्यकाल होगा ॥

### ग्रहणप्रकार ।

चंद्रग्रहणकी प्रवृत्ति ।

भानोःपंचदशेऋक्षेचंद्रमायदितिष्ठति ॥

पौर्णमास्यानिशामेषेचंद्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्यसे पंद्रहवे नक्षत्रमें जो चंद्रमा स्थित होय तो पूर्णमासीके निशा शेष अर्थात् प्रतिपदाकी संधिमें चंद्रग्रहण होता है ॥

### सूर्यग्रहण ।

मघोनंग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदिसूर्यभम् ॥

अमावास्यादिवाशेषेसूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—संपूर्ण महीनोंकी अमावास्याके दिन सूर्य और चंद्रमा एक

( ४८ )

ज्योतिषसार ।

राशिके होते हैं परंतु अमावास्याके दिन सूर्यनक्षत्र और दिवसनक्षत्र एक होय तो अमावास्या और प्रतिपदाकी संधिमें सूर्यग्रहण होता है; उस दिन सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र देखिये उसमें से ११ दिन काटि शेष १६ वें सूर्य नक्षत्र होय तो वही सूर्यग्रहण होता है ॥ २ ॥

**राशि अनुसार शुभाशुभ ग्रहणफल ।**

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदंस्याद्ग्रहणंरवीन्द्रोः ॥

द्विसप्तनंदेषु च मध्यमस्याच्छेषेष्वनिष्टंमुनयोवदन्ति ॥

टीका—सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनी राशिसे जिस राशिपर होय उसका शुभाशुभ फल विचारिये, तीसरी छठी दशवीं राशि पर होय तौ शुभ जानिये और दूसरा सातवाँ नवमां ये मध्यम और पहिला चौथा पाँचवाँ आठवाँ ग्यारहवाँ बारहवाँ ये नेष्ट हैं ॥

**दूसरा पक्ष ।**

ग्रासत्तृतोयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभगःस्वराशेः ॥

ग्रासाद्रविः पंचनवर्तुमध्यस्ततोधमोक्ताश्चबुधैश्चशेषाः ॥

टीका—जिस राशिपर सूर्यग्रहण होय उससे अपनी राशितक गिनें तौ ३।८।४।११ ये उच्चम और ५।८।६ये मध्यम और १।२।७।१०।१२ ये राशि अधम जैसी राशि होय तैसाही फल होता है ॥

**ऋतुप्रकरण शुभाशुभ फल ।**

तिथिरेकगुणाप्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम्॥वारःषष्टगुणोज्ञेयो मा-  
सश्चाष्टगुणःस्मृतः॥वस्त्रं शतगुणं विद्यादर्शनं च ततोधिकम् ॥

टीका—तिथि एकगुणी नक्षत्र ४ गुणा वार ६ गुणा मास ८ गुणा और वस्त्र १०० गुणा जो अधिक ज्ञान होय तिसका गुण सबसे अधिक परंतु अच्छा दिवस होय तौ अच्छा गुण और दुष्ट होय तो बुरा जानिये ॥

**मासफल ।**

आर्तवेप्रथमेचैत्रैवैधव्यंजायते ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनवृद्धिः

स्याज्ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत् ॥ आषाढे मृतवत्सा च श्रावणधनसंयुता ॥ भाद्रे च दुर्भगानारी आश्विने धनधान्यभाक् ॥ कार्तिके निर्द्धनानारी मार्गशीर्षे बहुप्रजा ॥ पौषे च पुंश्रुली नारी माघे पुत्रवती भवेत् ॥ फाल्गुने पुत्रसंपन्ना ज्ञेयं मासफलंबुधैः ॥

टीका—चैत्रमासमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो विधवा होय, वैशाखमें धनवृद्धि रोगयुक्त, आषाढमें मृत्यु, श्रावणमें लक्ष्मी, भाद्रपदमें दरिद्र, आश्विनमें धनधान्य, कार्तिकमें निर्धन, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें व्यभिचारिणी, माघमें पुत्रवती और फाल्गुनमें श्री ऋतुदर्शन होनेसे पुत्रसंपन्न जानिये ॥

### तिथिफलम् ।

शुचिर्नारी प्रतिपदि द्वितीयायां तु दुःखिनी ॥ तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् ॥ पंचम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी ॥ सप्तम्यां सुप्रजानारी चाष्टम्यां राक्षसी तथा ॥ नवम्यां विधवानारी दशम्यां सौख्यभोगिनी ॥ एकादश्यां शुचिर्नारी द्वादश्यां मरणंध्रुवम् ॥ त्रयोदश्यां शुभाप्रोक्ता चतुर्दश्यां परान्विता ॥ पौर्णमास्यां ममावास्यां शुभं चाशुभमेव च ॥

टीका—प्रतिपदामें ऋतुदर्शन होय तो शुचि, द्वितीयामें दुःखिनी, तृतीयामें पुत्रवती, चतुर्थीमें विधवा, पंचमीमें सौभाग्यवती, षष्ठीमें कार्यनाशिनी सप्तमीमें उत्तम संतति, अष्टमीमें राक्षसी, नवमीमें विधवा, दशमीमें सौख्यभोगिनी, एकादशीमें शुचि, द्वादशीमें मरण, त्रयोदशीमें शुभ, चतुर्दशीमें व्यभिचारिणी, पूर्णिमामें शुभ, अमावास्यामें अशुभ जानिये ॥

### ग्रहण और संक्रांतिका फल ।

संक्रांत्यां ग्रहणे चैव वैरिणी च गतालका ॥

टीका—संक्रांतिमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो वैरिणी और ग्रहणमें होय तो विधवा जानिये ॥

### वारफल ।

आदित्ये विधवानारी सोमे चैव मृतप्रजा ॥ मंगले आत्मघा-



(५०)

ज्योतिषसार ।

तीस्याद्बुधेकन्याप्रसूःस्मृता ॥ गुरुवारेसुतप्रातिःकन्या-  
पुत्रयुताभृगौ ॥ मंदे च पुंश्वलीनारीज्ञेयंवारफलंशुभम् ॥

टीका—रविवारको ऋतुदर्शन होय, तो विधवा होय, सोमवारको मृतप्र-  
जा, भौमवारको आत्मघातिनी, बुधवारको कन्यासंतति होय, गुरुवारको  
पुत्रप्रसूति, भृगुवारको कन्या और पुत्रप्रसूति और शनिवारको होय तो  
स्त्री व्यभिचारिणी होय ॥

नक्षत्रफल ।

अश्विन्यांसुभगानारीभरण्यांविधवाभवेत् ॥ कृत्तिकायां च  
बंध्यास्याद्रोहिण्यांचारुभाषिणी ॥ मृगेदारिद्र्ययुक्तोक्ताचा-  
द्रायांक्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौपुत्रवतीपुष्येपुत्रधनेश्वरी ॥  
आश्लेषायांभवेद्रंध्यामघायांचार्थसंयुता ॥ पूर्वायांचार्थयुक्ताहि  
चोत्तरायांसतीतथा ॥हस्तेपुत्रधनैर्युक्ताचित्रायामनुचारिणी॥  
स्वात्यान्यगर्भावयवाविशाखायांतुनिष्ठुरा ॥मैत्रे च दुर्भगाना-  
रीज्येष्ठायांविधवाभवेत् ॥ मूलेपतिव्रतासाध्वीपूर्वासौभाग्य-  
भोगिनी ॥ उत्तरार्थवतीप्रोक्ताश्रवेसौभाग्यसंपदः ॥ धनिष्ठा-  
यांशुभानारीशतेभद्रान्विताबुधैः ॥ पुंभेचोक्ताकामिनीतु उभे  
लक्ष्मीयुता शुभा ॥ रेवत्यांपतिरिक्तातुज्ञेयं भानांफलंबुधैः ॥

टीका—अश्विनीनक्षत्रमें जो स्त्रीके प्रथम ऋतुस्नात होय तो शुभ और  
भरणीमें विधवा और कृत्तिकामें बंध्या, रोहिणीमें प्रियभाषिणी, मृगशिरमें  
दरिद्रिणी, आर्द्रामें क्रोधिनी, पुनर्वसुमें पुत्रवती, पुष्यमें पुत्र और धनवती,  
आश्लेषामें बाँझ, मघामें धनवती, पूर्वामें अर्थवती, उत्तरामें पतिव्रता, हस्तमें  
पुत्रवती धनवती, चित्रामें दासी, स्वातीमें अन्यगर्भवती, विशाखामें  
निष्ठुर, अनुराधामें दुर्भागिनी, ज्येष्ठामें विधवा, मूलमें पतिव्रता, पूर्वा-  
षाढामें सौभाग्यवती, धनिष्ठामें शुभ, शतभिषामें शुभ, पूर्वाभाद्रपदामें उत्तम-  
भोगवती, उत्तराभाद्रपदामें लक्ष्मीवती, रेवतीमें पतिरहित जानिये ॥

## योगफल ।

आद्यतौविधवानारी विष्कंभेचरजस्वला ॥ स्नेहःप्रीत्यांतुदंप-  
त्यौरायुष्मांस्तुधनप्रदः ॥सौभाग्येपुत्रयुक्ता तु शोभनेमंगला-  
न्विता ॥ अतिगंडेतुविधवासुकर्मणितुशोभना ॥ धृतौसं-  
पत्तियुक्ताच शूलरोगयुताभवेत् ॥ गंडेदुःखान्वितानारी  
वृद्धौपुत्रान्विताभवेत् ॥ ध्रुवेतुशोभनानारीव्याघातेभर्तृघात-  
की ॥ हर्षणेहर्षयुक्तातुवज्रचैवानपत्यता ॥ सिद्धौपुत्रान्वि-  
तानारी व्यतीपाते विभर्तृका ॥ मृतवत्साचवर्यान्नि परिघेचा-  
ल्पजीविनी ॥ शिवेपुत्रवतीनारी सिद्धेशीघ्रफलान्विता ॥साध्ये  
धर्मपरानारी शुभेशुभगुणान्विता ॥ शुक्लेशुभकरानारीब्रह्म-  
णिस्वपतौरता ॥ ऐंद्रदेवररक्ता च वैधव्यवैधृतौस्मृतम् ॥

टीका—विष्कंभ योगमें जो मथम ऋतुदर्शन होय तौ स्त्री विधवा होय.  
और प्रीतियोगमें पतिसे स्नेह, आयुष्मान् में धनप्राप्ति, सौभाग्यमें पुत्रवती,  
शोभनमें मंगलदायक, अतिगंडमें विधवा, सुकर्मांमें शुभ, धृतिमें संपत्तियु-  
क्त, शूलमें रोगिणी, गंडमें दुःखान्विता, वृद्धिमें पुत्रयुक्ता, ध्रुवमें शुभ, व्या-  
घातमें पतिघातिनी, हर्षणमें हर्षयुक्ता, वज्रमें वंध्या, सिद्धियोगमें पुत्र-  
युक्ता, व्यतीपातमें पतिरहिता, वर्यांनमें मृतपुत्रा, परिघमें अल्पजीविनी,  
शिवमें पुत्रवती, सिद्धिमें शीघ्रफलयुक्ता, साध्ययोगमें अधर्मपरा, शुभयो-  
गमें शुभगुणयुक्ता, शुक्लयोगमें शुभकर्मपरा, ब्रह्मयोगमें निजपतिरता, ऐंद्रमें  
देवररता, वैधतियोगमें विधवा होय ॥

## करणफलम् ।

बवेप्रोक्तातुवंध्यास्त्रीबालवेपुत्रसंपदः ॥ कौलवेपुंश्वलीनारीतैतिले  
चारुभाषिणी ॥ गरे च गुणसंपन्नावणिजेपुत्रिणीस्मृता ॥ विष्ट्यां  
चमृतवत्साच शकुनौकामपीडिता ॥ चतुष्पदे शुभानारीनागे  
पुत्रवतीभवेत् ॥ किंस्तुघ्नेव्यभिचारीतुकरणानांशुभंफलम् ॥

टीका—बव करणमें जो स्त्री प्रथम पुष्पवती होय, तो वह वंध्या होय, बालवमें पुत्रकी प्राप्ति, कौलवमें वेश्या, तैतिलमें प्रियभाषिणी, गरमें गुणसंपन्ना, वणिजमें पुत्रिणी, विष्टिमें मृतवत्सा, अर्थात् उसके बालक मर जाय शकुनिमें कामातुरा, चतुष्पदमें शुभ, नागमें पुत्रवती, किंस्तुघ्नमें व्यभिचारिणी जानिये ॥

### राशिफलम् ।

व्यभिचारिणीतुमेषेवृषभेसुखभोगिनी ॥ मिथुनेधनयुक्तोक्ताकर्क  
टेदुःखिताबुधैः ॥ सिंहेपुत्रवतीनारी कन्यायांमानिनीशुभा ॥ तु-  
लेविचक्षणानारी वृश्चिकेव्यभिचारिणी ॥ धनेपतिव्रताज्ञेयामां-  
सहीनाचनक्रके ॥ कुंभेधनवतीज्ञेयामीने च चपलाबुधैः ॥

टीका—मेषराशिमें जो ऋतुवती होय तौ व्यभिचारिणी, वृषमें सुख-  
भोगिनी, मिथुनमें धनयुक्ता, कर्कमें दुःखी, सिंहेमें पुत्रवती, कन्यामें अति-  
मानी, तुलामें चतुरा, वृश्चिकमें जारिणी, धनमें पतिव्रता, मकरमें कृ-  
शा, कुंभमें धनवती, मीनमें चपला ऐसे जानिये ॥

### होराफल ।

सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चंद्रेहोरे पतिव्रता ॥ कुजेहोरेतुदौर्भा-  
ग्यंबुधेहोरेतुपुत्रिणी ॥ जीवेसर्वसमृद्धिःस्याद्दृगौसौभाग्यम-  
वच ॥ शनौसर्वविनाशायहोरकस्यफलंबुधैः ॥

| होरा       | फल       | होरा        | फल           |
|------------|----------|-------------|--------------|
| रविकाहोरा  | योगिनी   | गुरुकाहोरा  | सर्वसिद्धि   |
| सोमका होरा | पतिव्रता | शुक्रकाहोरा | सौभाग्य      |
| भौमकाहोरा  | दुर्भगा  | शनिकाहोरा   | सर्वविनाशिनी |
| बुधकाहोरा  | पुत्रिणी |             |              |

### लग्नफलम् ।

मेषलग्नेदरिद्राचवृषभेधनसंयुता ॥ कामिनीमिथुनेलग्नेकर्कटेपति-  
नाशिका ॥ सिंहेपुत्रप्रसूताचपतियुक्तास्त्रिलग्नके ॥ तुलेचैवांध-

तादायीवृश्चिकेदद्गुदुःखिनी ॥ धनलग्नधनैश्वर्यमकरेकर्कशाभ-  
वेत् ॥ कुंभेवंशद्रयघ्नीच मीनेसर्वगुणान्विता ॥

टीका—प्रथम संक्रांति चलती होय सोई प्रथम लग्न जानिये और मेष  
लग्नमें ऋतुवती होय तौ दरिद्रिणी २ धनयुक्ता ३ कामिनी ४ पतिनाशि-  
नी ५ पुत्रप्रसूता ६ पतिव्रता ७ अंधतादायक ८ दद्गुदुःखिता ९ धनैश्वर्य-  
वती १० कर्कशा ११ उभयवंशनाशिनी १२ गुणयुक्ता ॥

### ग्रहोंके फल ।

लग्नेराहुश्चसौरिश्वरविचंद्रौतथैवतु ॥

तदासाविधवानारी सर्वसौभाग्यवर्जिता ॥

टीका—जिस लग्नमें प्रथम स्त्री रजस्वला होय उसमें राहु शनि रवि  
चंद्र ये चारि ग्रह स्थित होंय वह स्त्री विधवा होय ॥

### रक्तफल ।

शोणितार्विंदुमात्रेण स्वैरिणीचाल्पशोणिता ॥ रक्तेर-  
क्तेभवेत्पुत्रःकृष्णेचैवमृतप्रजा ॥ पिच्छिले च भवेद्रं-  
ध्याकाकबंध्याचपांडुरे ॥ पीतेदुश्चारिणीज्ञेयासुभगा  
गुंजसादृशे ॥ सिंदूरवर्णैरक्तेतुकन्यासंततिरेवच ॥

टीका—प्रथम ऋतुदर्शनके समय रक्त विंदुमात्र और अल्पवर्ण होय  
तिसका फल यह है कि, स्त्री व्यभिचारिणी होय और रक्तवर्ण रुधिर होय  
तौ पुत्रवती, काला होय तो मृतप्रजा, पिच्छिल अर्थात् गाढा होय तो  
बांझ, पांडुर वर्णसे बध्या, पीत वर्णसे दुराचारिणी, गुंजा सदृशसे सुभागिनी;  
सिंदूर वर्णसे कन्याप्रसूता, इस प्रकार फल जानिये ॥

### काल फल ।

पूर्वाह्नेसुभगाप्रोक्ता मध्याह्नेचैवनिर्धना ॥ अपराह्नेशुभाचैव  
सायाह्नेसर्वभोगिनी ॥ संध्ययोरुभयोर्वैश्या निशीथेविधवाभ-  
वेत् ॥ पूर्वरत्रेतथाबंध्या दुर्भगासर्वसंधिषु ॥

टीका—जो स्त्रीके प्रथम ऋतुदर्शन प्रातःकाल होय तो सुभगा जानिये, मध्याह्नमं निर्धना, तीसरे पहर होय तो शुभ, संध्याको होय तो सर्वभोगिनी, और दोनों संधिमें होय तो वेश्या, आधी रातिमें होय तो विधवा, पूर्व रात्रिमें होय तो वाङ्म, सब संधिमें दुर्भगा ये फल जानिये ॥

### पहिरे हुए वस्त्रोंका फल ।

सुभगाश्वेतवस्त्राच रोगिणीरक्तवस्त्रका ॥ नीलांबरधरानारीवि-  
धवापुष्पवंतिका॥भोगिनीपीतवस्त्राच मिश्रवस्त्रावरप्रिया॥ सू-  
क्ष्मास्यात्सूक्ष्मवस्त्राचदृढवस्त्रापतिव्रता ॥ दुर्भगाजीर्णवस्त्राच  
सुभगामध्यवाससा॥धौतवस्त्राशुभानारी मलिनीमलिनाभवेत्॥

टीका—प्रथम ऋतुसमय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तो शुभ, लाल वस्त्र पहिने स्त्री पुष्पवती होय तो रोगिणी, नीले वस्त्रसे विधवा, पीत वस्त्रसे भोगिनी, मिश्रवर्णवस्त्रयुता पतिप्रिया, सूक्ष्मवस्त्रयुता कशा, मोटे वस्त्रयुत पतिव्रता, जीर्ण वस्त्र पहिरनेसे स्त्री दुर्भगािनी, मध्यम वस्त्रयुत सुभगा, धुले वस्त्रयुता सुभगा, और मलिन वस्त्रपहिने स्त्री प्रथम ऋतुधर्मको प्राप्तहोय सो मलिन जानिये ॥

### रजस्वलाधर्म ।

आर्तवाभिष्टुतानारी नैकवेद्मनिसंश्रयेत् ॥ नचान्यजातिसं-  
स्पर्शं कुर्यात्स्पर्शं नचक्वचित् ॥ त्रिरात्रंस्वमुखंनैव दर्शयेद्य-  
स्यकस्यचित् ॥ स्ववाक्यंश्रावयेन्नैव नकुर्यादंतधावनम् ॥  
नकुर्यादार्तवेनारी ग्रहणामीक्षणंतथा ॥ अंजनाभ्यंजनंस्नानं  
प्रवासंवरजयेत्तथा ॥ नखादिकृतनंरज्जुतालपत्रादिवंधनम् ॥  
नवेशरावेभुंजात तोयंचांजलिनापिषेत् ॥

टीका—ऋतुमती स्त्रीको एक घरमें रखना, अन्य जातीसे स्पर्श न करना, अ-  
पनी जातिमें भी स्पर्श न करना, तीन रात्रि अपना मुख किसीको न दिखावना,  
अपनी वाणी किसीको न सुनाना, दूँतन नहीं करना, नक्षत्रोंका अवलोकन  
न करना, काजल-तैल-स्नान-रस्ता-चलना-डोराकी स्पर्श-तालपत्रका बंधन, इ-  
तने कर्म न करै, नवीन मृत्तिका के पात्रमें भोजन करै और अंजलीसे जल पीवै

गर्भाधानका मुहूर्त ।

ऋतौतुप्रथमेकार्यं पुत्रक्षत्रेशुभेदिने ॥

मघामूलांत्यपक्षांतमुक्त्वाचंद्रबलेसति ॥

टीका—प्रथम ऋतुदर्शन समय पुरुष नक्षत्र और शुभदिनमें मघा मूल रेवती अमावास्या पूर्णिमा इनको छोड़कर बलवान् चंद्रमार्गमें गर्भाधान करना योग्य है

गर्भाधाने त्याज्यमाह ।

रागदिवसंपातंतथावैधृतिम् । पित्रोःश्राद्धदिनादिवाचपरिधा-  
द्यर्द्धस्वपत्नीगमे भानूत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मक्षतःपापभ-  
म् ॥ भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताच संध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्र्यश्वतस्रः ।

टीका—गंडांत-३ प्रकारके अर्थात् तिथिगंडांत-लग्नगंडांत-नक्षत्रगंडांत-न  
धतारा—जन्मतारा—मूल—भरणी—अश्विनी—रेवती—ग्रहणदिन—व्यतीपात—  
वैधृति—श्राद्धदिन—परिघार्द्ध—उत्पातनक्षत्र—पापयुक्तनक्षत्र—जन्मलग्नसे अष्ट-  
मलग्न-भद्रा-षष्ठीतिथि—पर्वतिथि अर्थात् चतुर्दशी—अष्टमी—अमावास्या—  
पूर्णिमा—संक्रांति-रिक्तातिथि अर्थात् चतुर्थी—नवमी—चतुर्दशी संध्याकाल,  
भौम, रवि-शनि-ये वार और प्रथम रात्रिसे चाररात्रि ये गर्भाधानमें त्याज्य हैं ॥

ऋतुकीषोडशरात्रियोंकाशुभाशुभनिर्णय ।

ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणां रात्रयःषोडशस्मृताः ॥ तासामा-  
द्याश्वतस्रस्तुनिदितैकादशीचया ॥ त्रयोदशीचशेषाःस्युःप्रश-  
स्तादशवासराः ॥ तस्मात्रिरात्रंचांडालीं पुष्पितांपरिवर्जयेत् ॥

टीका—स्त्रियोंके ऋतुधर्मसंबंधी स्वाभाविक १६ रात्रि होती हैं, उनमेंसे  
प्रथम तीन रात्रिमें पुष्पवती चांडाली होती है और चौथी ग्यारवी तेर-  
हवी ये निंदित अर्थात् वर्जनीय और शेष दशरात्रि प्रशस्त हैं ॥

रात्रौचतुर्थ्यापुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जितः ॥ पंचम्यांपुत्रिणीना-  
रीषष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः ॥ सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्यामी-

(५६)

ज्योतिषसार ।

श्वरःपुमान् ॥ नवम्यांसुभगानारी दशम्यांप्रवरःसुतः ॥ एका-  
दश्यामधर्म्यास्त्री द्वादश्यांपुरुषोत्तमः ॥ त्रयोदश्यांसुताप्रा-  
पावर्णसंकरकारिणी ॥ धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चआत्मवेदीदृढव्रतः ॥  
प्रजायतेचतुर्दश्यां पंचदश्यांपतिव्रता ॥ आश्रयः सर्वभूता-  
नांषोडश्यांजायतेपुमान् ॥

टीका—चौथी रात्रिमें स्त्रीसंग करे तो पुत्र अल्पायु और धनवर्जित उत्पन्न होय, पांचवी रात्रिमें पुत्रवती, छठी रात्रिमें मध्यम पुत्र, सातमीमें पुत्र उत्पन्न नहीं होगा, अष्टमी राशिमें ईश्वरभक्त, नवमी रात्रिमें सौभाग्यवृद्धि, दशमीमें गुणवान् पुत्र, ग्यारहवीमें अधर्मी पुत्र; बारहवी रात्रिमें उत्तम पुरुष, तेरहवीमें पापकर्मिणी कन्या, चौदहवीमें धर्मात्मा कृतज्ञ और व्रत करनेहारा पुत्र, पंद्रहवी रात्रिको पतिव्रता, सोलहवी रात्रिको सबजीवोंका आश्रय देनेवाला पुत्र उत्पन्न होताहै ॥

निषेक के तिथि और वार ।

षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्रहित्वा ॥

शेषाःशुभाःस्युस्तिथयो निषेके वाराःशशांकार्यसितेन्दुजाश्च ॥

टीका—षष्ठी अष्टमी पूर्णिमा अमावास्या चतुर्थी चतुर्दशी इन तिथि-  
योंको छोड़कर शेष तिथि और सोम गुरु शुक्र बुध ये वार शुभ जानिये ॥

नक्षत्र ।

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानिनिषेक-  
कार्ये ॥ पूज्यानिपुष्यवसुशतिकराश्विचित्रादित्याश्चमध्यम-  
फलाविफला स्युरन्ये ॥

टीका—श्रवण रोहिणी हस्त अनुराधा स्वाती रेवती मूल तीनों उत्तरा शत-  
भिषां ये नक्षत्र कहेहैं और पुष्य धनिष्ठा मृगशिरः अश्विनी चित्रा पुन-  
र्वसु ये मध्यम हैं और शेष नक्षत्र अधम जानिये ॥ मुहूर्त्तमार्त्तंडमते ॥

वैधृति संक्रांति महापात आदि दुष्ट योग और श्राद्धांत पूर्व दिन जन्म नक्षत्र संधि दिवस रात्रि नक्षत्र इत्यादि वर्जनीय करते हैं और जिस लग्नमें विषमस्थानी नवांशकमें उच्च बृहस्पति अथवा सूर्य चंद्रमा होय तो पुत्रप्राप्ति होय और येही ग्रह समराशिके होय तो कन्याप्राप्ति होय ॥

### गर्भाधाने लग्नशुद्धिः ।

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैरुयायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने ॥ ओजां-  
शकेऽब्जेपिचयुग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषुमध्यमं स्यात् ॥

टीका—प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम ये केन्द्र इसमें शुभग्रह होय त्रिकोण नवम पंचम इसमें शुभग्रह होय ३।११।१०।६ इसमें पापग्रह होय लग्नको पुरुष ग्रह देखते होय और विषम नवांशमें चंद्रमा होय तो इसमें गर्भाधान शुभ है और समरात्रि पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी ये नक्षत्र मध्यम होते हैं ॥

### प्रथम गर्भिणीके पुंसवनादिकसंस्कार ।

मूलादित्रितयेकरेश्रवणके भाद्रद्रयाद्रात्रये रेवत्यां मृगपंचकेदिन  
करेभौमेनरिक्तातिथौ ॥ नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषिस्त्रीमीन-  
योश्चस्थिरे लग्नेपुंसवनंतथैवशुभदंसीमंतकर्माष्टमे ॥

टीका—मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हस्त श्रवण पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिर और रवि भौमवार लेने और रिक्ता तिथी वर्जनीय है और गर्भाधानसे दूसरा महीना व तीसरा मास और धन कन्या मीन और स्थिर लग्नोंमें पुंसवनकर्मको करे और इनही नक्षत्र वा लग्नोंमें ये अष्टमासमें सीमंतकर्म करना शुभ कहाहै ॥

### वारफलम् ।

मृत्युश्चसौरैस्तनुहानिरिंदोः प्रजामृतिः पुंसवने बुधस्य ॥

काकी च वंध्याभवतीहशुके स्त्रीपुत्रलाभोरविभौमजीवैः ॥

टीका—शनिवारको पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु होय, चंद्रवारको शरीरका नाश, बुधवारको संताननाश, शुक्रवारको काकबंध्या ( एकवार



(५८)

ज्योतिषसार ।

प्रसूति ) और रवि भौम गुरु इन वारोंमें पुत्र प्राप्ति होय, परंतु स्त्रीके चंद्रमा शुभ होय दुष्ट योगादिक वर्जितहै ॥ उक्त नक्षत्र आदिमें और शुभ दिवसमें पुंसवन कहिये गर्भकी पुरुषाकृति होना यह कर्म करावै और जिस मुहूर्तमें गर्भकी स्थिरता कहीहै उसीमें अनवलोकनभी कर्म उक्तहै ॥

अन्यमते ।

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजिसौरिणगर्भेप्रथमंविधेयम् ॥

सीमंतकर्मद्विजभामिनीनां मासेष्टमेविष्णुबलिं च कुर्यात् ॥

टीका—प्रथम गर्भधारण होनेसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम ऐसे समसौर मासोंमें आठ मासपर्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी स्त्रियोंका सीमंतकर्म और विष्णुबलि करना उचितहै ॥

सीमंतेतिष्यहस्तादितिहरिशशभृत्पौष्णाविद्ध्युत्तराख्या ॥

पक्षच्छिद्राचरिक्तापितृतिथिमपहायापराःस्युःप्रशस्ताः ॥

टीका—सीमंतकर्ममें पुष्य हस्त पुनर्वसु श्रवण मृगशिर रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभहैं और पक्ष रंघ्रतिथि रिक्तातिथी और अमा-वास्याको छोड़ शेष तिथि शुभ जानिये ॥

पक्षच्छिद्रातिथि ।

चतुर्दशीचतुर्थी च अष्टमीनवमीतथा ॥ षष्ठी च द्वादशी चैव

पक्षच्छिद्राह्वयाःस्मृताः ॥ कर्मादितासुतिथिषुवर्जनीयाश्चना-

डिकाः ॥ भूताष्टमनुतत्त्वांकदशशेषास्तुशोभनाः ॥

टीका—चतुर्दशीकी प्रथमकी ५ घटिका, और चौथकी ८ घटिका, अष्टमीकी १४ घटिका, षष्ठीकी ८ घटिका, द्वादशीकी १० घटिका वर्जनीयहैं और शेष घटी शुभहैं ॥

मासेश्वरज्ञानमाह !

मासेश्वराःसितकुजेज्यरवींदुसौरचन्द्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकराःस्युः

## मासेश्वरज्ञानार्थमासेशचक्रम्

|              |            |                |              |              |
|--------------|------------|----------------|--------------|--------------|
| १            | २          | ३              | ४            | ५            |
| स्वामी-शुक्र | स्वामी-भौम | स्वामी-गुरु    | स्वामी-रवि-  | स्वामी-चंद्र |
| ६            | ७          | ८              | ९            | १०           |
| स्वामी-शनि   | स्वामी-बुध | स्वा.गर्भाधा.ल | स्वामी-चंद्र | स्वामी-सूर्य |

### गर्भिणीधर्म ।

भूम्यांचैवोच्चनीचायमारोहणेवरोहणे ॥ नदीप्रतरणंचैवशुक्र  
टारोहणं तथा ॥ उग्रौषधंतथाक्षारं मैथुनंभारवाहनम् ॥ कृते-  
पुंसवनेचैवगर्भिणीपरिवर्जयेत् ॥

टीका—पुंसवनकर्म होने उपरांत गर्भिणीको ऊंचे नीचे स्थानपर चटना  
उतरना, भागकर चलना, नदी तरना, गाडीपर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात्  
गरम औषध नीरस क्षार आदि खाना, मैथुन, भार उठाना सर्व कर्म वर्जितहैं ॥

### गर्भिणीप्रश्नः ।

नामाक्षराणित्रिगुणीकृतानि तुरंगदेशे तिथिमिश्रितानि ॥

अष्टौ च भागं लभते च शेषं समे च कन्या विषमेचपुत्रः ॥

टीका—गर्भिणीके नामअक्षर तिगुनें करे तिनमें षोडशके नामाक्षर और  
देशके अक्षर मिलाके वर्तमान तिथि मिलावे और आठका भागदे शेष  
अंक सम बचें तो कन्या और विषम बचें तो पुत्र होय ॥

### प्रसूतिस्थान प्रवेश नक्षत्र ।

रोहिण्येन्दवपौष्णेषुस्वातीवारुणयोरपि ॥ पुनर्वसौपुष्यहस्त-  
धनिष्ठात्र्युत्तरासुच ॥ मैत्रेत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यां सूतिकागारवे-  
शनम् ॥ प्रसूतिसम्भवेकाले सद्यएवप्रवेशयेत् ॥

टीका—रोहिणी मृगशिर रेवती स्वाती शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त  
धनिष्ठा तीनों उत्तरा अनुराधा चित्रा अश्विनी ये नक्षत्र प्रसूतिका भवनके  
प्रवेशमें कहेहैं, प्रसूति समयमें ये नक्षत्रोंमें तत्काल प्रवेश करावे ॥

## गर्भके लक्षण ।

कल्लं च घनंशाखांस्थित्वंश्रोमोद्गमःस्मृतिः ॥ •

भुक्तिरुद्वेगंसंभूतिर्मासेष्वाधानतःक्रमात् ॥

टीका—गर्भाधानसे १० मास तक गर्भका रूप कहतेहैं; प्रथम १ मासमें कल्ल कहिये शुक्र रुधिर इसके संयोगसे पिंडित होताहै- २ मासमें घन कहिये वह पिंड दृढ होताहै- ३ मासमें वह पिंडमें शाखा कहिये हस्त और पाद उत्पन्न होतेहैं- ४ मासमें उसमें अस्थि-हाड होतेहैं- ५ मासमें उसपर त्वचा कहिये चमडा, ६ मासमें रोम कहिये केश होतेहैं, ७ मासमें स्मृति अर्थात् ज्ञान होताहै- ८ मासमें क्षुधा ९ नवमें मासमें उद्वेग अर्थात् गर्भस्थल उदरसे निकलनेकी इच्छा करताहै, १० मासमें प्रसव जानना चाहिये ॥

## प्रसृतिसमयका प्रश्न ।

मीनेमेषेस्त्रियौद्रे च चतस्रो वृषकुंभयोः ॥ तुलाकन्यकयोः  
सप्तवाणाख्या धनकर्कयोः ॥ अन्यलग्नेभवेत्तिस्र एवं ज्ञेयं  
विचक्षणैः ॥ यथाराहुस्तथाशय्या भौमेखट्वांगभंगता ॥ रवि-  
स्थानेभवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम् ॥

टीका--मीन अथवा मेष इन लग्नोंमें जो स्त्रीके प्रसव होय तो उससमय उसके निकट दो स्त्रियाँ और वृष कुंभ होयतो ४, तुला कन्या होयतो ७, धन ओर कर्कमें ५ अन्य लग्नोंमें तीन स्त्रियाँ जावनी चाहिये ॥ जन्मकुंडलीके मध्य जिस दिशामें राहु स्थित होय उसी दिशामें शय्या जाननी, जो लग्नेमें मंगल बैठा होय तो खाटका अंगभंग जानिये; जिस स्थानमें रवि होय उसी दिशामें दीपक और जिस दिशामें शनि होय उसमें नालसमझना ॥

## तिथिगंडांत ।

पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथ्योः संधिर्नाडीद्वयंतथा ॥

गंडांतमृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥

टीका—पूर्णातिथि कहिये १५।५।१० और पडवा छठि एकादशी कहिये नंदा इनकी संधिकी दो २ घटी अर्थात् पूर्णिमा पंचमी दशमीके अंतकी एक २ और पडवा छठि एकादशीके आदिकी एक २ घटी गंडांतहै, यात्रा विवाह यज्ञोपवीतमें वर्जितहै; करे तो मृत्यु होय ॥

### लग्नगंडांत ।

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ॥

गंडांतमंतरालेस्याद्धटिकाद्धैमृतिप्रदम् ॥

टीका—कर्क सिंह इन दोनों लग्नोकी घटिका आधी और इस क्रमसे वृश्चिक और धन मीन मेष इनकी आदिकी घटी गंडांतमें शुभकर्म न करे ये मृत्यु देतीहैं

### नक्षत्रगंडांत ।

पौष्णाश्विन्योः सर्पपित्र्यर्क्षयोश्चयज्ञ्येष्टामूलयोरंतरालम् ॥

तद्रंडांतंस्याच्चतुर्नाडिकं हियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥

टीका—रेवती अश्विनी इनकी संधिकी २ घटिका इसी क्रमसे श्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इनकी संधिके ४ घटिका वर्जनीय और ऐसेही तिथि लग्न और नक्षत्र ये त्रिविध गंडांत जानिये, यह यात्रा जन्मकाल और विवाहमें वर्जितहैं ॥

### जातक ।

जन्मकालमें गंडांतका शुभाशुभफल ।

अश्विनमिघमूलानां पूर्वार्द्धेबाध्यतेपिता ॥ पूषादिशाक्रप-  
श्चार्द्धेजननी बाध्यतेशिशुः ॥ सर्वेषांगंडजातानांपरित्या-  
गोविधीयते ॥ वर्जयेद्दर्शनंज्ञावं तच्चषाण्यासिकंभवेत् ॥

टीका—अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्द्धमें जन्म होयतो पिताको अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन दोनों नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमें जन्म होय तो माताको अशुभ और गंडांतमें जन्म होय तो शिशुका त्याग करना योग्यहै अथवा छःमासतक पुत्रको नदेखे ॥

### कृष्णचतुर्दशीकाजन्मफल ।

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतैः षड्विधंफलम् ॥चतुर्दश्याश्चषड्भागान् कुर्यादादौ शुभंस्मृतम् ॥द्वितीये पितरं हंति तृतीयमां-  
तरंतथा॥चतुर्थेमातुलंहंति पंचमेवंशनाशनम् ॥ षष्ठे च धन-  
हानिःस्यादात्मनोवंशनाशनम् ॥

टीका—जो कृष्णचतुर्दशीको जन्म होयतो तिथिके छःखंड दश २ घटिकाके करे जो प्रथम खंडमें जन्म होयतो शुभ, द्वितीयमें पिताको अशुभ, तृतीयमें माताको अशुभ, चतुर्थमें मामाको अशुभ, पंचममें वंश-  
नाश, छःमें धनहानिकारक और अपने वंशका नाशक जानिये ॥

### अमावास्याकेजन्मकाफल ।

सिनीवाल्यां प्रसूताश्चदासीभार्यापशुस्तथा ॥ गजोऽवोमहि-  
षीचैव शक्रस्यापिश्रियंहरत् ॥ कुट्टप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषक-  
रीस्मृता ॥ यस्यप्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनम् ॥ सर्वगंड-  
समस्तत्रदोषस्तुप्रबलीभवेत् ॥

टीका—चतुर्दशीयुक्त अमावास्याको दासी अथवा भार्या गाय हस्तिनी घोड़ी भैस जो प्रसूता होय तो इंद्रकी भी सम्पत्ति हरलेतेहैं और ठीक अमावा-  
स्याको प्रसूता हो तो बहुतसे दोष लगे और जिसकी इनमें प्रसूति होय उसकी आयुधनका नाश होय और गंडांतमें प्रसूति होयतो बहुतसे दोष जानिये ॥

### दिनक्षयादिकफलम् ।

दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ ॥ शूलेगंडेतिगंडेच  
परिधे यमघंटके ॥ कालगंडेमृत्युयोगेदग्धयोगेसदारूपे ॥  
तस्मिन्गंडदिनेप्राप्ते प्रसूतिर्यदिजायते॥अतिदोषकरी प्रोक्ता-  
तत्रपापयुतासती ॥

टीका—दिनक्षय व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गंड अतिगंड  
परिघार्ध यमघंट कालगंड मृत्युयोग दग्धयोग दारुणयोग इनमें जन्म होय  
तो भारी पाप लगे ऐसी प्रसूति स्त्रीको पापायुक्त जानिये ॥

## ज्येष्ठानक्षत्रफल ।

ज्येष्ठादौजननेमाताद्वितियेजननेपिता॥तृतीयेजननेभ्रातास्वयं  
मांताचतुर्थके ॥आत्मानं पंचमेहंतिषष्ठे गोत्रक्षयोभवेत् ॥सप्त  
मेचोभयकुलंज्येष्ठभ्रातरमष्टमे॥नवमेश्वशुरंचैवसर्वहंतिदशांशके॥  
टीका—ज्येष्ठा नक्षत्रमें जो जन्म होयतो उस नक्षत्रकी छःघटियोंके

दशभाग समान करे तिसका फल, प्रथमभाग माताको अशुभ, दूसरा पिता-  
को, तीसरा मामाको, चौथा माताको, पांचवा शिशुको, छठा भाग गोत्र-  
जोंको, सातवाँ पिता, नानाके परिवारको, आठवाँ बडे भ्राताको, नवम  
श्वशुरको, दशावां सर्व जनोंको बुराहै ॥

## मूलनक्षत्रफल ।

मूलस्तंभंत्वक् च शाकापत्रंपुष्पंफलंशिखा॥वेदाश्चमुनयश्चैव  
दिशश्चवसवस्तथा॥ नंदावाणरसारुद्रामूलभेदाः प्रकीर्तिताः॥  
मूलेमूलविनाशायस्तंभे हानिर्धनक्षयः ॥ त्वचिभ्रातृविनाशाय  
शाखामातृर्विनाशकृत्॥पत्रेसपरिवारःस्यात्पुष्पेषुनृपवल्लभः॥  
फलेषुलभतेराज्यं शाखायामल्पजीवितम् ॥

टीका—मूल नक्षत्रको मूल वृक्ष कल्पना करते हैं तिसकी ६० घटीके  
स्थान इस भाँति हैं, प्रथम ४घटिका वृक्षका मूल, तिनमें जन्म होय तो नाश,  
दूसरा भाग ७ घटिका स्तंभ तिनमें हानि और धनका नाश, तीसरा भाग १०  
घटिका वृक्षको त्वचा तिनमें भ्राताको अशुभ होय, चौथा भाग ८ घटिका  
शाखा तिनमें माताको अशुभ, पांचवाँ भाग ९ घटी वृक्षके पत्र तिनमें परि-  
वारनाश, छठा भाग ५ घटी पुष्प तिनमें राजमंत्री, सातवाँ भाग ६ घटी  
फल तिनमें राज्यप्राप्ति, आठवां भाग ११ घटिका वृक्षकी शाखा तिनमें  
जन्म होयतो शिशु अल्पायु होय, ऐसे आठ स्थानका फल जानिये ॥

जन्मकालमेंमूलनक्षत्रकिसलोकमेंहैइसकेजाननेकालिग्र ।

वृषालिंसिंहेषुघटे च मूलं दिविस्थितंयुग्मतुलाङ्गनांत्ये ॥

पातालगमेषधनुःकुलीरनक्रेषुमर्त्येष्वितिसंस्मरंति ॥

टीका—वृष सिंह कुम्भ वृश्चिक लग्नोंमें जन्महोय तो उस दिन मूल नक्षत्र स्वर्गमें होताहै तिसका फल राज्यप्राप्ति और मिथुन तुला मीनमें मूल पातालमें जानिये तिसका फल धनप्राप्ति और मेष धन कर्क मकर इनलग्नोंमें मूल मृत्युलोकमें होताहै इसका फल कुटुंबनाश यह १२ लग्नोंका फलहै ॥

आश्लेषानक्षत्रस्यनराकारचक्रम् ।

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहुहृज्जानुगुह्यपदमित्यहिदेह-  
भागः ॥ बाणाद्रिनेत्रहुतभ्रुकश्रुतिनागरुद्रषण्डंपंचशिरसः  
क्रमशस्तुनाड्यः ॥ राज्यंपितृक्षयोमातृनाशः कामक्रियार-  
तिः पितृभक्तोवली स्वप्नस्त्यागीभोगीधनीक्रमात् ॥

टीका—आश्लेषा नक्षत्रकी घटिकायोंको नराकार चक्रमें स्थापन कर-  
नेमें प्रथम ६ घटिका मस्तक तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वितीय ७ घटी  
मुख तिनका फल पिताका नाश, तीसरा विभाग दो घटी तिनका फल  
माताका नाश, चौथे ३ घटिका ग्रीवा तिनका फल परस्त्रीरत, पांचवां भाग  
४ घटी दोनों कांधे तिनका फल पितृभक्त, छठा भाग ८ घटी दोनों बाहु  
तिनका फल बली ७ भाग ११ घटी हृदय तिनका फल आत्मघाती आठवाँ  
भाग ६ घटी दोनों जानु तिनका फल त्यागी, नौवाँ विभाग ९ घटिका गुह्य  
तिसका फल भोगी, दशवां भाग ५ घटी दोनों पांव तिनका फल धनवान्,  
जिस विभागमें जन्म होय जिसका फल स्थानानुसार कहना योग्य है ॥

जन्मसमयमेंसूर्यादिग्रहोंकाफल ।

तनुस्थान ॥ लग्नस्थितोदिनकरःकुरुतेंगपीडांपृथ्वीसुतोवि-  
तनुतेरुधिरप्रकोपम् ॥ छायासुतः प्रकुरुतेबहुदुःखभाजंजीवे-  
दुभार्गवबुधाःसुखकांतिदाःस्युः ॥ धनस्थान ॥ दुःखावहाध-  
नविनाशकराः प्रदिष्टावित्तेस्थितारविज्ञैश्वरभूमिपुत्राः ॥  
चंद्रोबुधःसुरगुरुभृगुनंदनोवा नानाविधं धनचयंकुरुतेधन-

स्थः ॥ सहजस्थान ॥ भानुः करोतिविरुजरजनीकरोपि की-  
 त्यायुतंक्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ॥ ऋद्धिबुधःसुधिषणंसुवि-  
 नीतवेषं स्त्रीणांप्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीये ॥ सुहृत्स्थान ॥  
 आदित्यभौमशनयः सुखवर्जितांगकुर्वति जन्मनिनरंसुचिरंच-  
 तुर्थे ॥ सोमोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवासौख्यान्वितं च नृपक-  
 र्मरतः प्रधानम् ॥ सुतस्थान ॥ पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतंबुध-  
 श्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रम् ॥ शुक्रेंदुदेवगुरवः सुत-  
 धामसंस्थाः पुत्रबहुलंसुखिनं सुरूपम् ॥ रिपुस्थान ॥  
 मार्तण्डभूमितनुजौहतशत्रुपक्षंपंगुर्नरंरिपुगृहेष्वतिपूजनियम् ॥  
 काव्येंदुजौमतिविहीनमनल्पलोगंजीवः करोतिविकलंमरणं  
 शशांकः ॥ जायास्थान ॥ तिग्मांशुभौमरविजाः किलसप्तम-  
 स्थाजायांकुकर्मनिरतां तनुसंततिं च ॥ जीवेंदुभार्गवबुधा  
 बहुपुत्रयुक्तांरूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ॥ मृत्युस्थान ॥  
 सर्वैग्रहादिनकरप्रमुखानितांतंमृत्युस्थितावितनुतेकिलदुष्टबु-  
 द्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिसौख्यैर्विहीनमतिरो-  
 गगणैरुपेतम् ॥ धर्मस्थान ॥ धर्मस्थिता रविशनैश्वरभूमिपुत्राः  
 कुर्वतिधर्मरहितं विमतिकुशीलम् ॥ चंद्रोबुधोभृगुसुतः सुररा-  
 जमंत्री धर्मक्रियासु निरतं कुरुतेमनुष्यम् ॥ कर्मस्थान ॥ आदि-  
 त्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाः कुर्युर्नरंबहुकुकर्मरतंकुपुत्रम् ॥  
 चंद्रःसुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तंरूपान्वितं बुधगुरुशुभकर्म-  
 भाजम् ॥ लाभस्थान ॥ लाभस्थितोदिनकरोनृपलाभयुक्तंता-  
 रापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेकसुभगं च  
 धनाबुधीज्यः शुक्रःकरोतिसगुणंरविजःसुकीर्तिम् ॥ व्ययस्थान ॥  
 सूर्यःकरोतिपुरुषंव्ययगोविशीलं काणंशशीक्षितिसुतो बहु-  
 पापभाजम् ॥ चंद्रांगजो गतधनंधिषणःकृशांगंशुक्रोबहुव्यय-  
 करं रविजःसुतीव्रम् ॥ राहुकेतुफलंसर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥



| सं० | स्था   | रवि                                 | चंद्र                              | मंगल                            | बुध                            | बृहस्पति                       | शुक्र                          | शनि राहु के.                           |
|-----|--------|-------------------------------------|------------------------------------|---------------------------------|--------------------------------|--------------------------------|--------------------------------|--|
| १   | तनु    | अंगपीडा                             | कानि और सुख                        | रक्तकोप                         | कानि और सुख                    | कानि और सुख                    | कानि और सुख                    | अतिदुःख बायक                           |
| २   | धन     | अतिदुःख बायक नकानाश                 | संपत्तिकी बहुत प्राप्ति            | दुःख प्राप्ति धन कानाश          | नाना प्रकारके सं० प्राप्ति     | नाना प्रकारकी संपत्ति प्राप्ति | नाना प्रकारकी संपत्ति प्राप्ति | अतिदुःख प्राप्ति धन कानाश              |
| ३   | सह.    | निरोगीरहै                           | कीर्तिलाभ                          | क्रोधयुक्त रहै                  | समृद्धि                        | सुबुद्धि                       | नाना विषधारण०                  | स्त्रियोंको प्रिय हो                   |
| ४   | सुहृत् | शरीरका पीडा बहुत होय                | सुख भोगी                           | शरीरको बहुत पीडा                | सुख भोगी                       | सुख भोगी                       | सुख भोग                        | शरीरको पीडा बहुत होय                   |
| ५   | सुत    | रोग बहुत होय                        | बहुत पुत्र होय                     | संतान रहित                      | अल्प पुत्र संतानि              | बहु पुत्र प्राप्ति             | बहुत पुत्र                     | संतानि नही                             |
| ६   | रिपु   | शत्रुकानाश करे                      | मरण पावे                           | शत्रुनाश                        | बुद्धिहीन बहुरोग               | शरीर विकल रहै                  | बुद्धिहीन बहुरोग               | शत्रुग्रह पूज्य                        |
| ७   | जाया   | स्त्री दुष्ट कर्मी संतानी अल्प      | स्त्रीरूपवती पुणवती गुणयुक्त पुत्र | स्त्री दुष्ट कर्मी व संतति अल्प | स्त्रीरूपवान् व पुत्र प्राप्ति | और मनहारण होय सुख भोगी         | मनहरनेवाली पुत्रवती चर         | स्त्री दुष्ट कर्मी संतान थोड़ी उत्पन्न |
| ८   | मृत्यु | इसमें सब ग्रहोंका फल एक समान होत है | इस स्थानमें फल एक समान होत है      | इस स्थानमें फल एक समान होत है   | इस स्थानमें फल एक समान होत है  | इस स्थानमें फल एक समान होत है  | इस स्थानमें फल एक समान होत है  | इस स्थानमें फल एक समान होत है          |
| ९   | धर्म   | अधर्म दुःष्ट मति दुष्ट शील          | धार्मिक होय                        | अधर्म दुष्ट मति दुष्ट शील       | धर्म निरंतर करे                | धर्म निरंतर करे                | धर्म निरंतर करे                | अधर्म दुष्ट बुद्धि                     |
| १०  | कर्म   | अत्यंत दुष्ट कर्मी कुपुत्र          | अत्यंत कीर्ति व न होय              | दुष्ट कर्मी कुपुत्र             | कीर्ति व न होय                 | शुभ कर्म करे                   | संपत्ति व न                    | अत्यंत दुष्ट कर्मी व कुपुत्र           |
| ११  | आय     | राजसीसमाग मकरे                      | धन बहुत मिले                       | पृथ्वीलाभरा जासे                | विवेक युक्त और सुंदर           | धन और आय की वृद्धि             | गुणवान्                        | अच्छी कीर्ति पावे                      |
| १२  | व्यय   | दुष्ट स्वभाव                        | काणा होय                           | पाप कर्म                        | धनहीन                          | क्रशगात्र                      | व्याधियुत                      | तीव्र होय                              |

पुरुषके जन्मकालमें जैसे ग्रह पडे हों तिनका फल ।

टीका—जन्मलग्नेके तनु आदि द्वादशस्थानोंमें जो जो ग्रह पडे हों तिनके पृथक् पृथक् फल जाननेके लिये कोष्ठक और राहुकेतुके फल शनिके समान जानिये.

**जन्मलग्नमेंबालककेमृत्युकारकग्रह ।**

चंद्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च श-  
निजन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तुपंचभृगुषष्ठ बु-  
धश्चतुर्थे जातो नजीवतिनरः प्रवदंति संतः ॥

टीका—जन्मलग्नसे चंद्रमा अष्टमस्थानी भौम ७ स्थानमें राहु ९ स्थानमें शनि जन्मलग्नमें गुरु तृतीयस्थानमें शुक्र ६ स्थानमें बुध ४ स्थानमें ऐसे ग्रह पड़ें तो शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

**जन्मलग्नमेंस्त्रीकेमृत्युकारकग्रह ।**

षष्ठे च भवनेभौमोराहुः सप्तमसंभवः ॥

अष्टमे च यदा सौरिस्तस्यभार्या नजीवति ॥

टीका—जन्मलग्नसे छठे स्थानमें भौम राहु ७ स्थानमें शनि ८ स्थानमें ऐसे ऐसे ग्रह जिसके कुंडलीमें पड़ें होंय उस पुरुषकी स्त्री नजीवे ॥

**अच्छेपराक्रमीग्रह ।**

मूर्तांशुक्रबुधौयस्य केंद्रे चैव बृहस्पतिः ॥

दशमोऽगारकोयस्यसज्ञेयः कुलदीपकः ॥

टीका—जिसके जन्मलग्नमें शुक्र बुध और केन्द्र अर्थात् प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें बृहस्पति तथा दशमस्थानमें मंगल होय तो उस बालकको कुलदीपक जानिये ॥

**पराक्रमीग्रह ।**

नैवशुक्रोबुधोनैवनास्तिकेन्द्रे बृहस्पतिः ॥

दशमोऽगारकोनवसजातः किंकरिष्यति ॥

टीका—जिस बालकके लग्नमें बुध शुक्र अथवा केन्द्रमें बृहस्पति किंवा दशमस्थानी मंगल ऐसे ग्रह न पड़ें होंय तो उसका जन्म होना वृथा जानिये ॥

**जातिभ्रंशकारक ।**

धनस्थानेयदासौरिः सैहिकेयोधरात्मजः ॥ शुक्रोगुरुः सप्तमे

(६८)

ज्योतिषसार ।

त्वष्टमौरविचन्द्रकौ ॥ ब्रह्मपुत्रेपदेवापि वेश्यासु च सदारतिः ॥  
प्राप्तेर्विंशतिमेवर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥

टीका—जिसके धनस्थानमें शनि राहु मंगल और सप्तमस्थानमें शुक्र गुरु तथा अष्टमस्थानमें रवि चंद्र ऐसे ग्रह होंय सो बालक कदाचित् ब्राह्मण-जातिमेंभी जन्म पावे तथापि वेश्याप्रसंगी होय और वीसवीं वर्षकी अवस्थामें अवश्य म्लेच्छ होय ॥

मातापिताकेनाशक ।

षष्ठे च द्वादशेराशौ यदापापग्रहो भवेत् ॥  
तदामातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमेपितुः ॥

टीका—जो छठे अथवा बारहवें स्थानमें पापग्रह होय तो माताको अशुभ किंवा चतुर्थ अथवा दशमस्थानमें पापग्रह होय तो पिताको अशुभ जानिये.

मृत्युकारकग्रह ।

अर्को राहुः कुजः सौरिलग्नैतिष्ठतिपंचमे ॥  
पितरं मातरं हंति भ्रातरं स्वशिशून्क्रमात् ॥

टीका—जो सूर्य राहु मंगल शनि ये ग्रह जन्मलग्नसे पांचवे स्थानमें पड़े हो तो क्रमसे रवि पिताको, राहु माताको, भौम भ्राताको और शनि अपने बालकोंके लिये अशुभ जानिये ॥

लग्नस्थानेयदासौरिः षष्ठो भवति चंद्रमाः ॥  
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥

टीका—जिसके जन्मलग्नमें शनि और छठे स्थानमें चंद्रमा सप्तममें मंगल ऐसे ग्रह उसका पिता न जीवे ॥

पातालस्थो यदाहुश्चंद्रः षष्ठाष्टमेपि च ॥

पापदृष्टोपिशेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥

टीका—जन्मलग्नके सप्तमस्थानमें राहु छठे अथवा आठवें स्थानमें चंद्रमा और शेष ग्रहोंकी पापदृष्टि जो ऐसे ग्रह होंय तो जन्म होतेही बालककी मृत्यु होय ॥

जन्मलग्नेयदाराहुः षष्ठोभवतिचंद्रमाः ॥

जातोमृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यांत्वपमृत्युना ॥

टीका—जन्मलग्नेमें राहु षष्ठस्थानमें चंद्रमा ऐसे समय जन्मे तो बालककी मृत्यु और जन्म लग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि होय तो अपमृत्यु जानीये.

जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥

वर्षे च द्वादशेमृत्युर्यदिरक्षतिशंकरः ॥

टीका—जो जन्मलग्नेमें मंगल और अष्टमस्थानी बृहस्पति ऐसे ग्रह होय तो बारहवें वर्ष शंकर रक्षक हो तो भी मृत्यु जानिये ॥

ज्ञानिक्षेत्रेयदासूर्यो भानुक्षेत्रेयदाशनिः ॥

वर्षे च द्वादशेमृत्युर्देवो वैरक्षितायदि ॥

टीका—जो शनिके क्षेत्रमें सूर्य होय और सूर्यके ग्रहमें शनि होय तो बारहवें वर्ष देवरक्षितभी शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

षष्ठोष्टमस्तथामूर्तो जन्मकालेयदाबुधः ॥

चतुर्थवर्षेमृत्युश्चयदि रक्षतिशंकरः ॥

टीका—षष्ठ अष्टम अथवा जन्म लग्नेमें बुध होय तो चौथे वर्ष शंकरभी रक्षा करै तोभी बालक न बचे ॥

भौमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टसु च चंद्रमाः ॥

वर्षेष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरोरक्षितायदि ॥

टीका—मंगलके घरमें बृहस्पति और षष्ठ अथवा अष्टमस्थानी चन्द्रमा ऐसे ग्रह होय तो ईश्वररक्षितभी बालक आठवें वर्ष मृत्युको प्राप्त होय ॥

दशमोपियदाराहुर्जन्मलग्नेयदाभवेत् ॥

वर्षेतुषोडशेज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥

टीका—जन्मलग्नेसे दशमस्थानी अथवा जन्मलग्नेमें राहु होय तो सोलहवें वर्षमें मृत्यु होय ॥

ग्रहोंकीदृष्टि ।

पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमेवा ॥ त्रिपाददृष्टिश्च-

तुरष्टके च संपूर्णदृष्टिः समसप्तके च ॥ शनेस्त्वेकादशपूर्णादृष्टि-  
जीवस्यकोणके ॥ बुधेज्ञेयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके ॥

टीका—जन्म लग्नसे दशवें और तीसरे स्थानमें जौनसे ग्रह होय वे एक पाद दृष्टिसे जन्म लग्नको देखतेहैं. इसी क्रमसे नवम पंचम स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टिसे देखते हैं चौथे और आठवें स्थान जो ग्रह पड़ें होय वे त्रिपाद दृष्टिसे सप्तम स्थानी होय तिसकी पूर्ण सम दृष्टि जानिये जन्म लग्नसे शनैश्वर एकादश अथवा तीसरे स्थानमें होय तो पूर्णदृष्टिसे लग्नको देखताहै, पांचवें नवमें गुरु और चतुर्थ अष्टम स्थानमें भौम होय तो लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखता है ॥

### ग्रहोंकाउच्चत्व व नीचत्व ।

रविमेंषेतुलेनीचोवृषेचंद्रस्तुवृश्चिके ॥ भौमश्चनक्रेकर्के च स्त्रियां  
सौम्यो झषे तथा॥गुरुःकर्केच नक्रेच मीनकन्ये सितस्यच ॥ मंद-  
स्तुलायां मेषे च कन्याराहुग्रहस्यच॥ राहुर्युग्मे तु चापे च तमो-  
वत्केतुजं फलम् ॥ प्रोक्तंग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥

|      |     |         |      |       |      |       |     |                |      |
|------|-----|---------|------|-------|------|-------|-----|----------------|------|
| ग्रह | रवि | चंद्र   | भौम  | बुध   | गुरु | शुक्र | शनि | राहु           | केतु |
| उच्च | मेष | वृष     | मकर  | कन्या | कर्क | मीन   | तुल | कन्या<br>मिथुन | तुल  |
| नीच  | तुल | वृश्चिक | कर्क | मीन   | मकर  | कन्या | मेष | धन             | मेष  |

### जन्मलग्नकाफल ।

मेषेदैन्यमुपैति गर्वितवृषो नानामतिर्मन्मथेशूरः कर्कटकेधृतीच  
वनषे कन्याच मायान्विता॥सत्यंचैवतुलेत्वलौ मलिनता पापा-  
न्वितवैधनुर्मूर्खोयंमकरेघटे चतुरतामीनेत्वधीरामतिः ॥

टीका—मेष लग्नमें जन्म होय तो दीनता, वृषमें गर्वित, मिथुनमें नाना प्रकारकी बुद्धियुत, कर्कमें बडाशूर, सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें अत्यंत मानीं तुलामें सत्यवादी, वृश्चिकमें मलीन, धनमें पापबुद्धि, मकरमेंमूर्ख, कुंभमें चतुर, मीन लग्नमें जो जन्म पावै सो बडा धीर वीर नहोय ऐसे जन्मलग्नका फल जानिये

स्त्रीजातकमाह ।

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः ॥

त्रियते चाष्टमे वर्षे चंद्रः षष्ठाष्टमे यदि ॥

टीका—स्त्रीके जन्मकालमें लग्नमें पापग्रह होय तो ७ वर्षमें पतिनाश जानना और चंद्र षष्ठ वा अष्टम स्थानमें होय तो अष्टमवर्षमें पतिका नाश जानना ॥

अन्यमते ॥ द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते ॥

लग्ने च सिंहिकापुत्रे रंडा भवति कन्यका ॥

टीका—जन्म समयमें १२।८ स्थानमें जो मंगल होय और क्रूरग्रह भी १२।८ स्थानमें होय और जो लग्नमें राहु होय, तो स्त्री विधवा होय ऐसा जानना ॥

अन्यमते ॥ लग्नात्सप्तमगः पापश्चंद्रात्सप्तमगोपि वा ॥

सद्यो निहंति दंपत्यो रेकं नात्स्यत्र संशयः ॥

टीका—जो लग्नसे सप्तमस्थानमें पापग्रह होय और चंद्रमासे सप्तमस्थानमें पापग्रह होय तो विवाहसे अल्पकालमें स्त्री विधवा होय ॥

रवि सुतोयदिकर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ॥

किल जलोदरसंजनिता तदानिधनता वनिता सुतकीर्तिता ॥

टीका—जो शनैश्चर कर्कराशिमें होय और चंद्रमा मकरराशिमें होय तो जलोदररोगसे स्त्रीका नाश जानिये ॥

निशाकरः पापस्वगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभेकरोति ॥

पापाः स्मरस्थे न्यस्वगे च धर्मैकिलांगना प्रव्रजितत्वमेति ॥

टीका—जो चंद्रमा पापग्रहके मध्यमें बैठा होय तो शस्त्रसे मृत्यु कहना और जो चंद्रमा मंगलकी राशिमें बैठा होय तो अग्निसे जलकर नाश कहना और जो पापग्रह सप्तमस्थानमें अथवा नवमस्थानमें अन्य शुभ ग्रह होय तो स्त्री का पांयवस्त्रधारी वेदांती होती है ॥

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ताक्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ॥

पापखेचरविलोकनयाते मंदगे च युवतिर्जरती स्यात् ॥

टीका—जो स्त्रीके जन्मलग्नमें सप्तमस्थानमें सूर्य होय तो पति त्यागी कहना और जो मंगल सप्तम होय तो बालअवस्थामें वैधव्य प्राप्ति होय और जो सप्तम पापग्रह देखता होय तो यौवनअवस्थामें विधवा होय और जो सप्तमस्थानमें शनैश्वर होय तो वृद्ध अवस्थामें वैधव्यप्राप्ति ऐसा जानिये ॥

लग्नेसितेंदुचतथाकुजमंदभस्थौकूरेक्षितौसान्यरता च बाला ॥

स्मरेकुजांशोर्कसुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्चशुभाशुभांशे ॥

टीका—जो लग्नमें शुक्र, चंद्रमा होय और मंगल शनि ये दशम स्थानमें पड़े हों और उसको पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री परपुरुषसे संग करै-और जो सप्तम स्थानमें मंगलका अंश होय और शनैश्वर सप्तम स्थानको देखता होय तो नष्टयोनी जानना-जो सप्तमस्थानमें शुभग्रहका अंश होय तो शुभ कहना ॥

सूर्यारौखजलाश्रितौहिमवतः शैलाग्रपातान्मृति-

भौमेंद्रकेसुताःस्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादंतः ॥

सूर्याचंद्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यायुतौ बंधुना

तौचेद्वयंगविलग्नसंस्थितकरौ तोयेनिमग्नत्वतः ॥

टीका—जो सूर्य मंगल ये दशमे वा चौथे स्थानमें होय तो पाषाणसे मृत्यु कहना और जो मंगल चंद्र शनि ये अपने स्थानमें सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें बैठे हों तो कूवा-बावड़ी-तालाब आदिसे मृत्यु कहना-और जो सूर्य-चंद्रमाको पापग्रह देखते होय वा युक्त होय तो वह स्त्री बंधुयुक्त कहना-और जो सूर्य, चंद्र ये द्विस्वभावमें होय तो जलसे मृत्यु कहना चाहिये ॥

समेविलग्नैयदिसंस्थितः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥

स्यात्कामिनीब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥

टीका—जो स्मराशिकी लग्नहोय और उसमें शुक्र बुध चंद्र गुरु ये बल युक्त हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करै और उत्तम प्रकारकी ज्ञानी होय ॥

सप्तमेभार्गवैजाताकुलदोषकराभवेत् ॥

कर्कराशिस्थितेभौमेस्वैराभ्रमतिवेदमसु ॥

टीका—जिस स्त्रीके लग्नसे सप्तमस्थानमें जो शुक्र होय तो कुलको दषि  
त करे और जो कर्कराशिमें मंगल होय तो बंध्या आर दूसरेके घरमें वास  
करे ऐसा जानना ॥

पापयोरंतरेलग्ने चंद्रेवायदिकन्यका ॥

जायते च तदा हंति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥

टीका—जो लग्नके पापग्रहकी कर्तरी होय अथवा चंद्रमाके पापग्रहकी  
कर्तरी होय तो वह स्त्री दोनों वंशकी घात करनेवाली होतीहै ॥

॥ तनुस्थान ॥ मृतौकरोतिविधवां दिनकृत्कुजश्चराहुर्विनष्ट-  
तनयारविजोदरिद्राम् ॥ शुक्रः शशांकतनयश्चगुरुश्चसाध्वी-  
मायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ॥ धनस्थान ॥ कुर्वतिभा-  
स्करशनैश्चरराहुभौमादारिद्र्यदुःखमतुलं नियतं द्वितीये ॥ वि-  
त्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्यानारी प्रभूततनयांकुरुतेशशां-  
कः ॥ सहजस्थान ॥ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युः  
स्त्रियंबहुसुतांधनभागिनी च ॥ सत्यादिवाकरसुतः कुरुतेध-  
नाढ्यां लक्ष्मीं ददातिनियतं किलसैहिकेयः ॥ सुहृत्स्थान ॥  
स्वलपंपयोभवतिसूर्यसुते चतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणःकुरुते  
शशां च ॥ राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोल्पबीजां सौख्यान्वितां  
भृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः ॥ सुतस्थान ॥ नष्टात्मजारविकुजौख-  
लुपंचमस्थौचंद्रात्मजो बहुसुतांगुरुभार्गवौ च ॥ राहुदेदाति-  
मरणंरविजस्तुरोगंकन्याप्रसूतिनिरतां कुरुतेशशांकः ॥ रि-  
पुस्थान ॥ षष्ठस्थिताःशनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथाबहु-  
सुतां धनभागिनीं च ॥ चंद्रःकरोति विधवामुशनादरिद्रां वेद्यां  
शशांकतनयः कलहप्रियां च ॥ जायास्थान ॥ सौरारजीवबुध-  
राहुस्वीन्दुशुक्रादद्युःप्रसह्यमरणंखलुसप्तमस्थाः ॥ वैधव्यबंधन  
भयंक्षयवित्तनाशंव्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण ॥ मृत्युस्थान-  
स्थानेष्टमेगुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युंशशां भृगुसुतश्च तथैव  
राहु ॥ सूर्यःकरोतिविधवां धनिनीकुजश्चमूर्यात्मजोबहुसुतां



पतिवह्मभां च ॥ धर्मस्थान ॥ धर्म स्थिताभृगुदिवाकरभूमि-  
पुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजःसुभोगाम् ॥ राहुश्चसूर्यतनयश्च  
करोतिवंध्यांनारीप्रसूतितनयांकुरुतेशशांकः ॥ कर्मस्थान ॥  
सहर्नभःस्थलगतो विधवांकरोतिपापेपरां दिनकरश्चशनैश्चर-  
श्च ॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलां च चंद्रः शेषाग्रहाधनवतीं  
बहुवह्मभां च ॥ आयस्थान ॥ आयेरविर्बहुसुतां धनिनीशशां-  
कः पुत्रान्वितांक्षितिसुतौ रविजोधनाढ्याम् ॥ आयुष्मतीं सु-  
रगुरुभृगुजःसुपुत्रींराहुः करोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ व्य-  
यस्थान ॥ अंत्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रांवंध्यांकुजःपररतां  
कुटिलां च राहुः ॥ सार्धोसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्तां  
विधुः प्रकुरुतेन्ययगोदिनांधान् ॥

| स्थान | नाम    | राव                  | चंद्र                  | मंगल                 | बुध                 | गुरु                   | शुक्र               | शनि              | राहु                      |
|-------|--------|----------------------|------------------------|----------------------|---------------------|------------------------|---------------------|------------------|---------------------------|
| १     | तनु    | विधवा                | आयुका<br>नाश           | विधवा                | पतिव्रता            | पतिव्रता               | पातव्रता            | दक्षि            | पुत्रनाश                  |
| २     | धन     | दरिद्रदुःख           | बहुपुत्रव<br>ती        | दरिद्रदुःख           | सौभाग्यसं<br>पत्ति  | सौभाग्य<br>संपत्ति     | सौभाग्य<br>संपत्ति  | दरिद्रदुःख       | दरिद्रदुःख                |
| ३     | सहज    | पुत्रवती<br>धनाढ्या  | पुत्रवतीध<br>नाढ्या    | पुत्रवती-<br>धनाढ्या | पुत्रवती<br>धनाढ्या | पुत्रवती<br>धनाढ्या    | पुत्रवती<br>धनाढ्या | लक्ष्मीवती       | लक्ष्मीवती                |
| ४     | सुहृद् | दरिद्रता             | दुर्भगा                | अल्पसंता<br>नि       | अतिसुख<br>नी        | अतिसु<br>खिनी          | अतिसु<br>खिनी       | दुःखअल्प         | पुत्रनाश                  |
| ५     | सुत    | शिशुनाश              | कन्याअ-<br>धिक         | शिशुनाश<br>वती       | बहुफल<br>प्राप्ति   | बहुफल<br>प्राप्ति      | बहुफल-<br>प्राप्ति  | रोगिणी           | मरणप्राप्ति               |
| ६     | रिपु   | धनवती                | विधवा                  | धनवती                | कलहहृत्प            | धनवती                  | दरिद्रिणी<br>वेश्या | धनवती            | धनवती                     |
| ७     | ज.या   | रोगिणी               | प्रवांसना              | विधवा                | क्षय                | भयबध                   | मृत्यु              | वैधव्य<br>मरण    | वित्तनाश                  |
| ८     | मृत्यु | विधवा                | मरणांत<br>वियोगी       | धनवती                | स्वजनवि<br>योग      | स्वजनवि<br>योग         | मरणांत<br>वियोग     | आतपुत्र<br>संतान | मरणांतवि<br>योग           |
| ९     | धर्म   | धर्मपुष्क<br>ल करै   | पुत्रवती               | धर्मकार्य<br>कर्त्री | उत्तमभोग<br>वती     | धर्मवृद्धे             | धर्मवृद्धे          | वांछ             | वांछ                      |
| १०    | कर्म   | पापकारि-<br>णी       | दरिद्रव्याभि<br>चारिणी | मृत्यु               | धनवती               | धनवतीव-<br>रक प्राप्ति | धनीवर<br>प्राप्ति   | पापकर्मि<br>णी   | विधवा                     |
| ११    | असह    | अतिपुत्र<br>प्राप्ति | लक्ष्मीव-<br>ती        | बहुपुत्रव<br>ती      | मुखिनी              | आयुष्म<br>ती           | पुत्रवती            | धनवती            | सौभाग्यव<br>ती            |
| १२    | व्याय  | खर्चकर-<br>ती        | दिनांध                 | वांछक्य-<br>भिवारिणी | सुपुत्रा            | सुशीला                 | पातव्रता            | खर्चकरने<br>हारी | व्यभिचारि<br>णीप्राप्तिनी |

## अष्टोत्तरीदशाक्रम ।

आर्द्रापुनर्वसुःपुष्य आश्लेषातुरवेर्दशा॥मघापूर्वात्तराचैव चंद्रस्य  
च दशातथा॥हस्तोविशाखाचित्राचस्वाती भौमदशास्मृता ॥  
ज्येष्ठानुराधामूले च साम्यस्य च दशाबुधैः ॥अभिजिच्छ्रवणःपूषा  
ऊषाचैवशनेर्दशा ॥ धनिष्ठाशतताराचपूर्वाभाद्रपदागुरोः॥ उभा  
पूषाश्विनी कालेराहोश्रैव दशास्मृता ॥कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगः  
शुक्रदशाबुधैः ॥ एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाःसूर्यादिकादशाः ॥ क्रूर-  
जाअशुभाप्रोक्ताशुभास्यात्सौम्यखेटजा ॥

## संख्याकाक्रममहादशाकी ।

सूर्यस्यरसवर्षाणि इन्दोःपंचदशैवच ॥ भौमस्यवसुवर्षाणिऋ-  
षिचंद्रबुधस्यच ॥ ६ ॥ मंदस्यदशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंश-  
तिः ॥ राहोर्द्रादशवर्षाणि शुक्रस्यैकोनविंशतिः ॥

टीका-आर्द्रासेमृगाशरपर्यंत २८ नक्षत्र और सूर्य चंद्रभौम बुधशनिगुरुराहु  
शुक्र इस क्रमसे आठ ग्रहोंकेपृथक् दोकोष्ठक लिखेहैं तिनमेंसे महादशाकीवष  
संख्या इसप्रकारहै-पापग्रहके नक्षत्र ४ और शुभ ग्रहके ३ नक्षत्र जानिये. आ  
र्द्रासे रविदशा गिनिये और दशाकी संख्या नक्षत्रके विभागसे जाने जो विभा-  
गके अंतमें होय तो इस क्रमसे भोग्यदशा जाननी और जन्मकालमें जो दशा  
होय वही प्रथम जाननी ॥ सूर्यकी दशा ६ वर्ष, चंद्रकी १५, मंगलकी ८, बुधकी  
१७, शनिकी १०, गुरुकी १९, राहुकी १२, शुक्रकी १९ वर्ष भोग्यदशा जानिये.

## अंतर्दशा लानेका क्रम ।

महादशास्वस्वदशाब्दनिघ्नाभक्ताःस्वबाहूशशिभिःसमाद्याः ॥

अंतर्दशाःस्युर्गगनेचराणांतदेकभावोहिमहादशास्यात् ॥ ८ ॥

टीका-जो ग्रहोंकी अंतर्दशा जाननी होय तो जन्मदशाकी वर्षसंख्या-  
को दूसरी दशाकी वर्षसंख्यासे गुणा करे और १०८ का भागदे जो लब्धि  
आवे वह वर्षसंख्या जानिये, फिर १२से गुणा करके १०८ का भागदेनेसे  
जो लब्धि आवे सो मास जानिये, फिर ३० से गुणाकरके दिन और ६०  
से गुणा करके दिन और ६० से गुणा करके घटि इत्यादि निकाल

( ७६ )

ज्य

लीजिये, और इसी क्रमसे १२० का भाग विंशोत्तरी दशमें दिया जाता है ॥

| सूर्यकी महादशाके वर्ष ६<br>आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा |      |     |     |     | चंद्रकी महादशाके वर्ष १५<br>मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा |        |      |     |     |     |      |
|---|------|-----|-----|-----|---|--------|------|-----|-----|-----|------|
| अंतर्दशाक्रम  |      |     |     |     | अंतर्दशाक्रम  |        |      |     |     |     |      |
| ग्रह  | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल  | ग्रह   | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल   |
| सूर्य   | ०    | ४   | ०   | ०   | अशुभ  | चंद्र  | २    | १   | ०   | ०   | शुभ  |
| चंद्र   | ०    | १०  | ०   | ०   | शुभ   | भौम    | १    | १   | १०  | ०   | अशुभ |
| भौम   | ०    | ५   | १०  | ०   | अशुभ  | बुध    | २    | ४   | १०  | ०   | शुभ  |
| बुध   | ०    | ११  | १०  | ०   | शुभ   | शनि    | १    | ४   | २०  | ०   | अशुभ |
| शनि   | ०    | ६   | २०  | ०   | अशुभ  | गुरु   | २    | ७   | २०  | ०   | शुभ  |
| गुरु  | १    | ०   | २०  | ०   | शुभ   | राहु   | १    | ८   | ०   | ०   | अशुभ |
| राहु  | ०    | ८   | ०   | ०   | अशुभ  | शुक्र  | २    | ११  | ०   | ०   | शुभ  |
| शुक्र   | १    | २   | ०   | ०   | शुभ   | रवि    | ०    | १०  | ०   | ०   | अशुभ |
| संख्या  | ६    | ०   | ०   | ०   |   | संख्या | १५   | ०   | ०   | ०   |      |
| भौमकी महादशाके वर्ष ८<br>हस्त चित्रा स्वाती विशाखा        |      |     |     |     | बुधकी महादशाके वर्ष १७<br>अनुराधा ज्येष्ठा मूल        |        |      |     |     |     |      |
| अंतर्दशा  |      |     |     |     | अंतर्दशा  |        |      |     |     |     |      |
| ग्रह  | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल  | ग्रह   | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल   |
| भौम   | ०    | ७   | ३   | २०  | अशुभ  | बुध    | २    | ८   | ३   | २०  | शुभ  |
| बुध   | १    | ३   | ३   | २०  | शुभ   | शनि    | १    | ६   | २६  | ४०  | अशुभ |
| शनि   | ०    | ८   | २६  | ४०  | अशुभ  | गुरु   | २    | ११  | २६  | ४०  | शुभ  |
| गुरु  | १    | ४   | २६  | ४०  | शुभ   | राहु   | १    | १०  | २०  | ०   | अशुभ |
| राहु  | ०    | १०  | २०  | ०   | अशुभ  | शुक्र  | ३    | ३   | २०  | ०   | शुभ  |
| शुक्र   | १    | ६   | २०  | ०   | शुभ   | रवि    | ०    | ११  | १०  | ०   | अशुभ |
| रवि   | ०    | ५   | १०  | ०   | अशुभ  | चंद्र  | २    | ४   | १०  | ०   | शुभ  |
| चंद्र   | १    | १   | १०  | ०   | शुभ   | भौम    | १    | ३   | ३   | २०  | अशुभ |
| संख्या  | ८    | ०   | ०   | ०   | ०   | संख्या | १७   | ०   | ०   | ०   | ०    |

| शनिकी महादशाके वर्ष १०             |      |     |     |     |      | गुरुकी महादशाके वर्ष १९        |      |     |     |     |      |
|------------------------------------|------|-----|-----|-----|------|--------------------------------|------|-----|-----|-----|------|
| पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अभिजित् श्र० |      |     |     |     |      | धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा |      |     |     |     |      |
| अंतर्दशा                           |      |     |     |     |      | अंतर्दशा                       |      |     |     |     |      |
| ग्रह                               | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल   | ग्रह                           | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल   |
| शनि                                | ०    | ११  | ३   | २०  | अशुभ | गुरु                           | ३    | ४   | ३   | २०  | शुभ  |
| गुरु                               | १    | ९   | ३   | २०  | शुभ  | राहु                           | २    | १   | १०  | ०   | अशुभ |
| राहु                               | १    | १   | १०  | ०   | अशुभ | शुक्र                          | ३    | ८   | १०  | ०   | शुभ  |
| शुक्र                              | १    | ११  | १०  | ०   | शुभ  | रवि                            | १    | ०   | २०  | ०   | अशुभ |
| रवि                                | ०    | ६   | २०  | ०   | अशुभ | चंद्र                          | २    | ७   | २०  | ०   | शुभ  |
| चंद्र                              | १    | ४   | २०  | ०   | शुभ  | भौम                            | १    | ४   | २६  | ४०  | अशुभ |
| भौम                                | ०    | ८   | २६  | ४०  | अशुभ | बुध                            | २    | ११  | २६  | ४०  | शुभ  |
| बुध                                | १    | ६   | २६  | ४०  | शुभ  | शनि                            | १    | ९   | ३   | २०  | अशुभ |
| संख्या                             | १०   | ०   | ०   | ०   |      | संख्या                         | १९   | ०   | ०   | ०   |      |
| राहुकीमहादशाके वर्ष १२             |      |     |     |     |      | शुक्रकी महादशाके वर्ष २२       |      |     |     |     |      |
| उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी  |      |     |     |     |      | कृत्तिका रोहिणी मृगशिर         |      |     |     |     |      |
| अंतर्दशा                           |      |     |     |     |      | अंतर्दशा                       |      |     |     |     |      |
| ग्रह                               | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल   | ग्रह                           | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल   |
| राहु                               | १    | ४   | ०   | ०   | अशुभ | शुक्र                          | ४    | १   | ०   | ०   | शुभ  |
| शुक्र                              | २    | ४   | ०   | ०   | शुभ  | रवि                            | १    | २   | ०   | ०   | अशुभ |
| रवि                                | ०    | ८   | ०   | ०   | अशुभ | चंद्र                          | २    | ११  | ०   | ०   | शुभ  |
| चंद्र                              | १    | ८   | ०   | ०   | शुभ  | भौम                            | १    | ६   | २०  | ०   | अशुभ |
| भौम                                | ०    | १०  | २०  | ०   | अशुभ | बुध                            | ३    | ३   | २०  | ०   | शुभ  |
| बुध                                | १    | १०  | २०  | ०   | शुभ  | शनि                            | १    | ११  | १०  | ०   | अशुभ |
| शनि                                | १    | १   | १०  | ०   | अशुभ | गुरु                           | ३    | ८   | १०  | ०   | शुभ  |
| गुरु                               | २    | १   | १०  | ०   | शुभ  | राहु                           | २    | ४   | ०   | ०   | अशुभ |
| संख्या                             | १२   | ०   | ०   | ०   |      | संख्या                         | २१   | ०   | ०   | ०   |      |

## विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा ।

जन्मनोनजनुर्भमंकहत्क्रमशौकेन्दुकुजागुसूरयः ॥

शनिचंद्रजकेतुभार्गवाःपरिशेषानुदशाधिपास्तथा ॥

टीका—जन्मनक्षत्रमें २ घटाकर ९ का भागदे शेष १ रहे तो सूर्यकी दशा, २शेष रहे तो चंद्रकी दशा, ३शेष बचें तो भौमकी, ४शेष बचें तो राहु की, ५शेष रहें तो गुरुकी, ६ बचें तो शनिकी, ७ शेष बचें तो बुधकी, ८शेष बचें तो केतुकी, ९ का पूरा भाग लगजाय तो शुक्रकी दशा जानिये ॥

दशाओंके वर्ष भोग्याभोग्य निकालनेकीरीति ।

ऋतुदिगिरयो धृतिर्नृपातिधृतिर्भैवहयो नखाः समाः॥क्रमतो

हिमता अथादिमाजनिभस्था घटिकाः समाहताः ॥ भभोगेन

भक्ताःफलंभुक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद्भोग्यसंज्ञा ॥

टीका—ऋतु कहिये ६, दिक् कहिये १०, गिरि कहिये ७, धति कहिये १८ नृप १६ अतिधृति १९ भैव १७ हय ७ नख २० यह वर्षसंख्या सूर्यसे शुक्रपर्यन्त लिखी है ॥ जन्म समय जिस ग्रहके जितने वर्ष होंय तिन वर्षोंसे जन्मके गतनक्षत्रको गुणाकरे फिर भभोगसे कागले जो लब्धि मिले सो वर्ष फिर १२ के भागसे दिवस और शेष घटी पल फिर इनमें भुक्त वर्षमासादि घटावे तो शेष भोग्य वर्षादिक गिकल आते हैं ॥

## विंशोत्तरीक्रम कोष्टक ।

कृत्तिकादिक्रमेणैवज्ञेया विंशोत्तरीदशा ॥

अंतर्दशाद्युतावर्षमासवासर्वतिता ॥

टीका—कृत्तिकासे लेकर भरणीपर्यंत २७ नक्षत्र और दशा वा अंतर्दशा और उनके पतियोंके नाम और तिनके वर्षादि संख्याका कोष्टक ॥

## अन्यमते ।

स्वदशारामगुणितातदशागुणितापुनः ॥

स्वगुणेनहरेल्लब्धवर्षमासादिनंभवेत् ॥

टीका—अपनी प्राप्तदशाको तीनसे गुणा देना जिसकी अंतर्दशा लानी होय उस को वर्षसे गुणा देना अनंतर ३०से भाग लेनेसे अंतर्दशावर्षमासादिन प्राप्तहोताहै

| सूर्यकेमन्दवर्ष ६  |      |     |       |    | चन्द्रकेमन्दवर्ष १०  |      |     |      |    | भौमके मन्दवर्ष ७  |      |     |      |    |
|--|------|-----|-------|----|--|------|-----|------|----|---|------|-----|------|----|
| कृत्तिका उत्तराषाढा उत्तराषाढा अन्तर्दशा                 |      |     |       |    | रोहिणी हस्त श्रवण अन्तर्दशा                                      |      |     |      |    | मृगशिर चित्रा धनिष्ठा अन्तर्दशा                                       |      |     |      |    |
| नाम  | वर्ष | मास | दिव.  | घ० | नाम  | वर्ष | मास | दिव. | घ० | नाम   | वर्ष | मास | दिव. | घ० |
| रवि  | ०    | ३   | १८    |    | चन्द्र   | ०    | १०  | ०    |    | भौम   | ०    | ४   | २७   |    |
| चंद्र  | ०    | ६   | ०     |    | भौम  | ०    | ७   | ०    |    | राहु  | १    | ०   | १८   |    |
| भौम  | ०    | ४   | ६     |    | राहु   | १    | ६   | ०    |    | गुरु  | ०    | ११  | ६    |    |
| राहु   | ०    | १०  | २४    |    | गुरु   | १    | ४   | ०    |    | शनि   | १    | १   | ९    |    |
| गुरु   | ०    | ९   | १८    |    | शनि  | १    | ७   | ०    |    | बुध   | ०    | ११  | २७   |    |
| शनि  | ०    | ११  | १२    |    | बुध  | १    | ५   | ०    |    | केतु  | ०    | ४   | २७   |    |
| बुध  | ०    | १०  | ६     |    | केतु   | ०    | ७   | ०    |    | शुक्र   | १    | २   | ०    |    |
| केतु   | ०    | ४   | ६     |    | शुक्र  | १    | ८   | ०    |    | रवि   | ०    | ४   | ६    |    |
| शुक्र  | १    | ०   | ०     |    | रवि  | ०    | ६   | ०    |    | चन्द्र  | ०    | ७   | ०    |    |
| राहुकेमन्दवर्ष १८<br>आर्द्रा स्वाती शततारका<br>अन्तर्दशा |      |     |       |    | गुरुकेमन्दवर्ष १६<br>पुनर्वसु विशाखा पूर्वाभाद्रपदा<br>अन्तर्दशा |      |     |      |    | शनिके मन्दवर्ष १९<br>उत्तराभाद्रपदा पुष्य अनुराधा<br>अन्तर्दशा        |      |     |      |    |
| नाम  | वर्ष | मास | दि०   | घ० | नाम  | वर्ष | मास | दिव. | घ० | नाम   | वर्ष | मास | दिव. | घ० |
| राहु   | २    | ८   | १२    |    | गुरु   | २    | १   | १८   |    | शनि   | ३    | ०   | ३    | ०  |
| गुरु   | २    | ४   | २४    |    | शनि  | २    | ६   | १२   |    | बुध   | २    | ८   | ०    | ०  |
| शनि  | २    | १०  | ६     |    | बुध  | २    | ३   | ६    |    | केतु  | १    | १   | ९    | ०  |
| बुध  | २    | ६   | १८    |    | केतु   | ०    | ११  | ६    |    | शुक्र   | ३    | २   | ०    | ०  |
| केतु   | १    | ०   | १८    |    | शुक्र  | २    | ८   | ०    |    | रवि   | ०    | ११  | १२   | ०  |
| शुक्र  | ३    | ०   | ०     |    | रवि  | ०    | ९   | १८   |    | चन्द्र  | १    | ७   | ०    | ०  |
| रवि  | ०    | १०  | २४    |    | चन्द्र   | १    | ४   | ०    |    | भौम   | १    | १   | ९    | ०  |
| चन्द्र   | १    | ६   | ०     |    | भौम  | ०    | ११  | ६    |    | राहु  | २    | १०  | ६    | ०  |
| भौम  | १    | ०   | १८    |    | राहु   | २    | ४   | २४   |    | गुरु  | २    | ६   | १२   | १९ |
| बुधकीमन्दवर्ष १७<br>आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती<br>अन्तर्दशा  |      |     |       |    | केतुकेमन्दवर्ष ७<br>मघा मूल अश्विनी<br>अन्तर्दशा                 |      |     |      |    | शुक्रकी महादशा वर्ष २०<br>पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा भरणी<br>अन्तर्दशा |      |     |      |    |
| नाम  | वर्ष | मास | दिव.  | घ० | नाम  | वर्ष | मास | दिव. | घ० | नाम   | वर्ष | मास | दिव. | घ० |
| बुध  | २    | ४   | २७    |    | केतु   | ०    | ४   | २७   |    | शुक्र   | ३    | ४   | ०    |    |
| केतु   | ०    | ११  | २७    |    | शुक्र  | १    | २   | ८    |    | सूर्य   | १    | ०   | ०    |    |
| शुक्र  | २    | १०  | ०     |    | सूर्य  | ०    | ४   | ६    |    | चन्द्र  | १    | ८   | ०    |    |
| सूर्य  | ०    | १०  | ६     |    | चन्द्र   | ०    | ७   | ०    |    | भौम   | १    | २   | ०    |    |
| चन्द्र   | १    | ५   | ०     |    | भौम  | ०    | ४   | २७   |    | राहु  | ३    | ०   | ०    |    |
| भौम  | ०    | ११  | २७    |    | राहु   | १    | ०   | १८   |    | गुरु  | २    | ८   | ०    |    |
| राहु   | २    | ६   | १८    |    | गुरु   | ०    | ११  | ६    |    | शनि   | ३    | २   | ०    |    |
| गुरु   | २    | ३   | १६-१७ |    | शनि  | १    | १   | ९    |    | बुध   | २    | १०  | ०    |    |
| शनि  | २    | ८   | ९     |    | बुध  | ०    | ११  | २७   |    | केतु  | १    | २   | ०    |    |

## महादशा और अंतर्दशाओंके फल ।

रविकोदशा ।

देशांतरंचनिजबंधुवियोगदुःखसुद्वेगरोगभयचौरभयाचपीडा ॥ पूर्व-  
स्थितस्य निखिलस्य धनस्यनाशोभानोर्दशाजननकालदशाभवंति  
टीका—देशांतरवास भाताका वियोगदुःख मनको उद्वेग रोगभय  
चौरपीडा और संचित धनका नाश करै यह रविदशाका फलहै ॥

## चन्द्रान्तर्दशा ।

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबलवृद्धिपरंपराच ॥

इष्टान्नदानशयनासनभोजनानिनूनंसदाशिशिदशागमनेभवंति ॥

टीका—सुवर्ण आदिक ऐश्वर्यका और अश्व मज पालकी इत्यादि  
वाहनोंका लाभ शत्रुका पराजय बलकी वृद्धि और नाना प्रकारके सुरस  
अन्नदान शयन स्थान उत्तम आसन भोजन ये सब चंद्रमाकी दशामें  
प्राप्त होतेहैं ॥

## भौमकी अंतर्दशा ।

भूपालचौरभयवह्निकृताचपीडासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिताच ॥

चिंताज्वरश्चबहुकष्टदरिद्रयुक्तःस्यात्सर्वदाकुजदशाजननेभवंति ॥

टीका—राजा और चोरोंसे भय और अग्निसे पीडा सर्व अंगरोग सदा  
दुःखी और नानाप्रकारकी चिंता ज्वर अत्यंतकष्ट ये सब भौमकी  
दशामें मनुष्य भोगते हैं ॥

## राहुकी अंतर्दशा ।

दीनोनरोभवतिबुद्धिविहीनचिंतासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिताच ॥

पापानिबंधबहुकष्टदरिद्रयुक्तराहोर्दशाजननकालदशाभवंति ॥

टीका—मनुष्य बुद्धिहीन और दीन होय चिंतायुक्त और सर्व शरीरको  
अत्यंत रोमभय रहै और दुःख बंधन कष्ट बहुत दरिद्रता यह राहुकी  
अंतर्दशाका फल जानिये ॥

## गुरुकी अंतर्दशा ।

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिधर्माधिकार-  
परिपालनसिद्धिबुद्धिः ॥ सद्भिन्नहोषिधनधान्य-  
समृद्धिताचस्याद्देवतागुरुदशागमने भवन्ति ॥

टीका—राज्याधिकार और चित्तकी वृत्ति धर्ममें निष्ठा शरीरकी आरोग्यता निश्चय करके धन धान्यकी वृद्धि यह गुरुकी दशाका फल जानिये ॥

## शनिकी अंतर्दशा ।

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचबंधुवचनेषुचयुद्धबुद्धिः ॥

सिद्धंचकार्यमपियत्रसदाविनष्टंस्यात्सर्वदाज्ञानिदशागमनेभवन्ति ॥

टीका—मिथ्यापवाद दूसरेका हनन बंधन द्रव्यका नाश मित्र तथा बांधवोंसे कलहकी बुद्धि और कार्यभी नष्ट होजाय यह शनिकी अंतर्दशाका फल जानिये ॥

## बुधकी अंतर्दशा ।

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविला-

समभिरागमनोभिरामम् ॥ हेमादिरत्नविभवागम-

केशध्यानं स्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवन्ति ॥

टीका—सुंदर स्त्री सुख और सर्व प्रकारके भोग विलास सुवर्ण और रत्न आदिकी प्राप्ति धनसंग्रह ईश्वरस्मरण इत्यादि बुधकी अंतर्दशामें फल जानिये.

## केतुकी अंतर्दशा ।

भार्यावियोजगनितंचशरीरदुःखंद्रव्यस्यहानि-

रतिकष्टपरम्पराच ॥ रोगाश्वबंधुकलहश्च

विदेशता च केतोर्दशाजननकालदशाभवन्ति ॥

टीका—स्त्रीवियोगसे शरीरको दुःख द्रव्यकी हानि कष्ट रोग और बंधु कलह देशांतरगमन यह केतुकी दशाका अशुभफल है ॥



## शुक्रदशाका फल ।

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्रध-  
नधान्यसमाकुलंच ॥ आयुःशरीरसुतपौत्रसु-  
खंनराणांद्रव्यंचभार्गवदशागमनेभवन्ति ॥

टीका—वाग आदिक स्थानप्राप्ति और शरीर पुष्ट श्वेत छत्रिकी प्राप्ति धन  
धान्यकी वृद्धि आयुकी और पुत्र पौत्रकी वृद्धि द्रव्यकी प्राप्ति यह शुक्रद-  
शाका फल जानिये ऐसेही सर्व ग्रहोंकी महादशाओंके फल जानिये ॥

## योगिनीदशाके स्वामी ।

अथासामधीशाःक्रमान्मंगलायाः शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः  
बुधःसूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाःसुतःसंकटायास्तथातेचकेतुः ॥

टीका—मंगलादिक दशाके स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनि, शुक्र राहु  
केतु संकटा दशाके स्वामी ये मंगलादिक दशाके स्वामी क्रमसे जानना ॥

## योगिनीदशाक्रम ।

स्वर्क्षीपिनाकिनयनैःसंयोज्यं वसुभिर्भजेत् ॥

योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपातेनसंकटा ॥

टीका—जन्म नक्षत्रमें तीन अंक मिलावे और आठका भागदे शेष अंक  
रहें सो मंगलादिकदशा क्रमसे जानिये इनका क्रम कोष्ठकमें लिखाहै ॥

## योगिनीदशाके नाम ।

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिकापि च ॥

उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशाःस्मृताः ॥

टीका—मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका उल्का सिद्धा संकटा ये  
आठों योगिनीदशाओंको क्रमसे जानिये ॥

## वर्षसंख्या ।

एकद्वित्रीणि वेदाश्च पंचषट्सप्तमानिच ॥

अष्टवर्षाणिहि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ॥

## भाषाटीकासमेत ।

( ८३ )

टीका—मंगलादिदशाओंके नाम पृथक् २ और वर्ष संख्याके दिवस करि तिनमें अन्तर्दशा लानेका क्रम प्रथम दशा वर्ष एक तिसके दिवस ३६० दिन तिनमें ३६ का भागदे लब्धिको अन्तर्दशा स्पष्ट जानिये और इसी रीति अनुसार दशा और अन्तर्दशा निकाल लीजिये ॥

### अन्तर्दशा ।

अथान्तर्दशायाः प्रकारं प्रवृत्तिदशावार्षिकं स्वस्ववर्षेण गुण्यम् ।

ततः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिकासासदाखेटविद्भिर्विधेयाफलार्थम् ॥

टीका—प्राप्त दशासे जिस दशाका अंतर करना होय उसके वर्षसंख्यासे प्राप्त दशाको गुण देना उसमें ३६ का भाग देनेसे अंतर्दशा होती है—आगे चक्रमें स्पष्ट प्रतीत होगा ॥

| मंगलाकेवषे<br>१ तिसके<br>दिन ३६० | पिंगलाके<br>वर्ष २<br>दि० ७२० | धान्याके<br>वर्ष ३<br>दि १०८० | आमरी<br>वर्ष ४<br>दि १४४० | भद्रिका<br>वर्ष ५<br>दि १८०० | उल्का<br>६<br>दि २१६० | सिद्धा<br>वर्ष ७<br>दि २५२० | संकटा<br>वर्ष ८<br>दि २८८० |
|----------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|---------------------------|------------------------------|-----------------------|-----------------------------|----------------------------|
| मंगला                            | पि ४०                         | धा १०                         | आ १६                      | भ २५                         | उ ३६                  | सि ४९                       | सं ६४                      |
| पिंगला                           | २०                            | धा १२                         | भ २०                      | उ ३०                         | सि ४२                 | सं ५६                       | मं ८०                      |
| धान्या                           | आ ८०                          | भ १५                          | उ २४                      | सि ३५                        | सं ४८                 | मं ७०                       | पि १६०                     |
| आमरी                             | ४०                            | १००                           | उ १८                      | सि २८                        | ४००                   | मं ६०                       | पि १४०                     |
| भद्रिका                          | ५०                            | उ १२                          | सि २१                     | सं ३२                        | ५०                    | पि १२                       | धा २१                      |
| उल्का                            | ६०                            | सि १४                         | स २४                      | ४०                           | पि १०                 | धा १८                       | आ २८                       |
| सिद्धा                           | ७०                            | सं १६                         | ३०                        | पि ८                         | धा १५                 | आ २४                        | भ ३५                       |
| संकटा                            | ८०                            | मं २०                         | पि ६                      | धा १२                        | आ २०                  | भ ३०                        | सि ५६                      |
| जोड                              | ३६०                           | ०                             | ७२०                       | ०                            | १०८०                  | ०                           | १४४०                       |
|                                  |                               |                               |                           |                              | १८००                  | ०                           | २१६०                       |
|                                  |                               |                               |                           |                              |                       |                             | २५२०                       |
|                                  |                               |                               |                           |                              |                       |                             | २८८०                       |

३६ वर्षमें ८ योगिनीकी दशा बीत जाती है और वारंवार इसी क्रमानुसार जानिये ॥

### दशाकाफल ।

वैरिणान्तुविपदाविनाशिका वाहनादिवसुरत्नलाभदा ॥

कामिनांसुतगृहादिलाभदा मंगला सकलमंगलोदया ॥

टीका—शत्रुके उपद्रवका नाश और घोडा हाथी सुवर्ण रत्न आदिका लाभ और स्त्री पुत्र ग्रहादिकका लाभ और मंगलादि कार्यका उदय होना यह मंगला दशामें फल जानना ॥

दुःखशोककुलरोगवर्धिता व्यग्रताचकलहः स्वजनैश्च ॥

अंशभागकथिता फलदासौ पिंगलाचविदुषांसुखदादौ ॥

टीका—दुःख शोक कुलमें रोग वृद्धि-चित्तमें व्याकुलता-बंधुनमें वैरपिंगला आदिमें सुख देतीहै तिसके अनंतर लिखा फल पिंगलाका जानना ॥

धनंधान्यवृद्धिधरानाथमान्यं सदायुद्धभूमौजयधैर्यवंतः ॥

कलत्रांगनानांसुखंचित्रवस्त्रैर्युतंधान्यकाधान्यवृद्धिकरोति ॥

टीका—धनवृद्धि धान्यवृद्धि राजपूजनीय सर्वकाल युद्ध भूमिमें जय धैर्य-युक्त स्त्री पुत्रका सुख और चित्रवस्त्रयुक्त धान्या दशाका यह फल जानना.

विदेशभ्रमंहानियुद्धेगताश्च कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितत्वम् ॥

ऋणंव्याधिवृद्धिर्जनानां प्रकोपं दशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशम् ॥

टीका—विदेशमें भ्रमण, युद्धमें हानि, स्त्रीको पीडा—सुखहीन ऋणयुक्त रोगवृद्धि-जनका प्रकोप-सर्व देशमें भ्रमण यह भ्रामरीदशामें फल जानना.

धनानंदवृद्धिर्गुणानांप्रकाशं समीचीनवस्त्रागमंराजमान्यम् ।

अलंकारदिव्यांगनाभोगसौख्यं सदाभद्रिकाभद्रकार्यकरोति॥

टीका—धनकी वृद्धि, आनंदकी वृद्धि, गुणका प्रकाश, उत्तम वस्त्रप्राप्ति, राजमान्य भूषणकी प्राप्ति—स्त्रीभोगादिका सौख्य और कल्याण यह भद्रिका दशामें फल जानना ॥

एवमानापनापुत्रुल्लसुतर ५५॥ ॥१७७॥ ॥१७८॥ ॥१७९॥ ॥

टीका—भ्रमण रोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोग देशवियोग स्त्री-वियोग गोत्रमें कलह—मित्र बंधु इनसे वैर और नानाप्रकारके अनर्थ यह उल्कादशामें फल जानना ॥

राज्याभिमानंस्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभंगुणकीर्तिसिद्धिम्॥

राज्यादिलाभंसुतवृद्धिसौख्यं सिद्धंचसिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥

टीका—राज्यप्राप्ति अभिमान-अपने गोत्रमें सुख देखना-धान्य आदिका लाभ गुणसिद्धि—कीर्तिसिद्धि—राज्य आदिका लाभ—पुत्रवृद्धि—सुख और सर्वकार्यकी सिद्धि यह सिद्धादशामें फल जानना ॥

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां हिनाशम् ॥  
गृहे स्वल्पवासं प्रवासाभिलाषं दशासंकटा संकटं राजपक्षात् ॥

टीका—जनोभे कलह—ज्वरकी पीडा—स्त्रीआदिकका कष्ट और पशुओं-  
का नाश घरमें थोडा वास प्रवास अभिलाष राजपक्षसे संकट यह संकटा  
दशाका फल जानना चाहिये ॥

मंगलमंगलानंदयशोद्रविणदायिनी ॥ पिंगलातनुते व्याधि-  
म्मनसो दुःखसंभ्रमौ ॥ ४ धान्याधनसुहृद्बन्धुरूपसमिन्ति-  
नी करी ॥ भ्रामरीजन्मभूमिघ्नी भ्रामयेत्सर्वतो दिशम् ॥  
भद्रिकासुखसंपत्तिविलासवशदायिनी ॥ उल्काराज्यधना  
रोग्यहारिणी दुःखकारिणी ॥ सिद्धा साधयते कार्यं नृणां वै सु-  
खदा भवेत् ॥ संकटा संकटव्याधि मरण क्लेशकारिणी ॥

टीका—मंगला दशाका फल शुभ कार्य आनंद यश और द्रव्यप्राप्ति  
और पिंगलाका शरीरको व्याधि और मनको दुःख तथा भ्रम, धान्याको  
फल धनमित्र बंधुमिलाप आरोग्यता और सुंदरता, भ्रामरीका फल स्थान-  
नाश दिशाभ्रमण, भद्रिकाका सुख संपत्ति विलास यश इत्यादि, उल्काका  
राजभय धननाश रोगग्रस्तता और पीडा, सिद्धाका कार्यसिद्धि और सुख  
प्राप्ति, संकटाका फल व्याधि मरण क्लेश इति ॥

रविदिननखसंख्याचंद्रमाव्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वीचंद्र-  
जः षट्शराश्च ॥ शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयु-  
गकराहुः सप्ततिः शुक्रसंख्या ॥ जन्मना विंशतिः सूर्ये तृतीये  
दशचंद्रमाः ॥ चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थकम् ॥ सप्तमं  
दशसौरिः स्यान्नवमेचाष्टमेगुरोः ॥ दशमेराहुर्विंशत्या तदूर्ध्वतु  
भृगोर्दश ॥ ॥ फलम् ॥ पंथाभोगोनुतापश्च सौख्यं पीडाधनं  
क्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्यदशाफलम् ॥

टीका—वर्षदशाका आरंभ ताको क्रम-जा मासमें जाके जन्मराशिके  
सूर्य होय सो द्वादशस्थान भोगतेहैं और सब दशाका क्रम इस रीतिपरहै ॥

( ८६ )

## ज्योतिषसार ।

२० दिवस सूर्यकी दशा जन्मस्थानसे जानिये तिसका फल मार्ग चलना, ५० दिवस चंद्रमाकी दशा, तीसरे स्थानके १० दिवस रवि तिसका फल नाना प्रकारके उत्तम भोग ॥

२८ दिवस मंगलकी दशा चौथे स्थान आठदिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल रोग और तृप्तता होय ॥

५६ दिवस बुधकी दशा छठे स्थान ४ दिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल सुखकारक होय ॥

३६ दिवस शनिकी दशा सप्तम स्थान १० दिवस रवि भोगतेहैं ताको फल पीडाकारक जानिये ॥

५८ दिवस गुरुकी दशा नवमस्थान ८ दिन रवि भोगतेहैं तिसका फल धन प्राप्ति ॥

४२ दिवस राहुकी दशा दशमस्थान २७दिन रवि भोगतेहैं तिसका फल नाना प्रकारका शोच ॥

७० दिवस शुक्रकी दशा द्वादश स्थानमें रवि संपूर्ण भोगते हैं तिसका फल सर्व सुखकारक जानिये ॥

## ग्रहोंकी नित्यानित्यदशाओंका प्रकार ।

तिथिवारंचनक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्॥नवाभिश्चहरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमंदज्ञकोसताः ॥ क्रमेणैकादशाज्ञेया फलंपूर्वोक्तमेवहि ॥

टीका—गततिथि और वार नक्षत्र और अपने नामके अक्षर सबको इकट्ठे करके ९ का भागदे शेष १ रहे तो रविकी दशा, २ बचे तो चंद्रमा की, ३ शेष बचें तो भौमकी दशा, ४ शेष रहैं तो राहुकी, ५ बचे तो गुरुकी, ६ शेष रहैं तो शनिकी, ७ शेष बचे तो बुधकी, ८ शेष रहैं तो केतुकी, और पूरा भाग लगिजाय तो शुक्रकी दशा जानिये, इसी प्रकार नित्यदशा क्रमसे जानिये और फल वर्षदशाके तुल्य जानिये ॥

## दूसरा मत ।

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं  
शेषंदिनदशोच्यते ॥ रविणाशोकसंतापौ शशांकेशमलाभ-  
कौ ॥ भूमिपुत्रेतु मृत्युःस्याद्दधेप्रज्ञाविवर्द्धनम् ॥ गुरौवित्तं  
भृगौसौख्यं शनौपीडा न संशयः ॥ राहुणाघातपातौच केतौ  
मृत्युर्दशाफलम् ॥

टीका—जन्मनक्षत्रको चतुर्गुण करै उसमें गततिथि और वार [मिलाके  
नव ९ का भागदे १ शेष रहें तो एक दिनकी रविकी दशा जानिये--फल  
शोक संतापकारक, २ शेष रहें तो चंद्रमाकी दशाफल कल्याण व लाभ-  
कारक, और ३शेष रहें तो मंगलकी दशाफल मृत्युकारक, ४ शेष रहें तो  
बुधकी दशाफल बुद्धिवृद्धि, ५शेष रहें तो गुरुकी दशा, फल वित्तप्राप्ति,  
६ बचे तो शुक्रकी दशाफल सुखकारक, ७ शेष रहें तो शनिकी दशा, फल  
पीडाकारक, ८ शेष रहें तो राहुकी दशा, फल घातक और जो भाग पूरा  
लगजाय तो केतुकी दशा, फल मृत्यु इस प्रकारसे फल जानिये ॥

## गोचरप्रकरण ।

ग्रह कितने मास एक २ राशिको भोगताहै ।

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासंतुमंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चैव  
सपादद्वेदिनेशशी ॥ राहुरष्टादशान्मासान् त्रिंशन्मासान्शनै-  
श्चरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाःप्रकीर्त्तिताः ॥ फल॥  
सूर्यःपंचदिनंशशीत्रिघटिका भौमोष्टवैवासरं सप्ताहंह्युशना  
बुधस्रयदिनं मासद्वयंवैगुरुः ॥ षण्मासं रविजस्तथैवसततं  
स्वर्भानुमासद्वये केतोश्चैवतथाफलं परिमितं ज्ञेयंग्रहाणां  
फलम् ॥ राशिप्रवेशेसूर्यारौ मध्येशुक्रबृहस्पती ॥ राहुश्चंद्रः-  
शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभः ॥

टीका—उनके दिनोंकी संख्याका क्रम अनुक्रमसे लिखतेहैं ॥

( ८८ )

ज्योतिषसार ।

सूर्य—एकमास एक राशि भोगतेहैं उसमें प्रथम पांच दिन फल देतेहैं ॥

चंद्रमा—सवादादिन एकराशिभोगतेहैं और अंतकी ३घटिकाफलदेते हैं ॥

मंगल—डेढमास एकराशि भोगतेहैं और प्रथम ८ दिवस फल देतेहैं ॥

बुध—एकमास एक राशिको भोगतेहैं और सर्व दिवस फल देतेहैं ॥

गुरु—त्रयोदश १३ मास एक राशि भोगतेहैं तिसका फल मध्यम

भागके दोमास जानिये ॥

शुक्र—एक मास एक राशि भोगतेहैं और मध्यम भागमें सात दिवस फलदेतेहैं

शनि—तीस ३० मास एक राशि भोगतेहैं और अंतके ६ महीने फल देतेहैं ॥

राहु और केतु—अठारह मास एक राशि भोगतेहैं और अंतके दोमास फलदेते हैं ॥

**द्वादशभवनके स्थानोंके शुभाशुभफल**

**द्वादश स्थानोंके नाम ।**

तत्रादौतनुधनसहजसुहृत्सुतपरिपवश्च ॥

जायामृत्युधर्मकर्माव्ययाख्यानि द्वादशभवनानि ॥

**स्थानानुसार फल ।**

सूर्यःस्थानविनाशं भयंश्रियंमानहानिमथदैन्यम् ॥विजयंमार्गपीडांसुकृतंहेति सिद्धिमायुरथहानिम् ॥ चंद्रोन्नंचधनंसौख्यं रोगं कार्यक्षितिंश्रियम् ॥ स्त्रियंमृत्युंनृपभयं सुखमाव्ययंकमात् ॥ भौमोरिभीतिं धननाशमर्थं भयंतथार्थक्षतिमर्थलाभम् ॥ धनात्ययं शत्रुभयंचपीडां शोकंधनंहानिमनुक्रमेण ॥ बुधस्तु वंधं धनमन्यभीतिं धनंरुजं स्थानमथोचपीडाम् ॥ अर्थरुजं सौख्यमथात्मसौख्यमर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ गुरुर्भयं धनंक्लेशं धननाशं सुखेशुचम् ॥ मानंरोगं सुखदैन्यं लाभपीडांच जन्मभात् ॥ कविःशत्रुनाशं धनंसौख्यमर्थं सुताप्तिं रिपोः साध्वसंशोकमर्थम् ॥ बृहद्ब्रह्मलाभं विपत्तिधनाप्तिं धनाप्तितनो-

त्यात्मनोजन्मराशेः॥शनिःसर्वनाशं तथावित्तनाशं धनंशत्रुवृद्धिं  
सुतादेःप्रवृद्धिम् ॥ श्रियंदोषसंधिं रिपुंद्रव्यनाशं तथा दौर्मनस्यं  
दिशद्वह्ननर्थम् ॥ राहुर्हानिं तथानैःस्वं धनवैरं शुचं श्रियम् ॥  
कलिवसुंचदुरितं वैरंसौख्यं शुचंक्रमात् ॥केतुः क्रमाद्गुणवैरं सुखं  
भीतिं शुचंधनम् ॥ गतिंगदं दुष्कृतंच शोकं कीर्तिंचशत्रुताम् ॥  
टीका—इसका अर्थ आगे चक्रमें स्पष्ट देख लेना ॥

### गोचरचक्रम् ।

| नाम    | रवि       | चंद्र     | मंगल      | बुध       | गुरु    | शुक्र      | शनि      | राहु    | केतु      |
|--------|-----------|-----------|-----------|-----------|---------|------------|----------|---------|-----------|
| तनु    | नाश       | अन्नप्रा० | शत्रुभय   | बंधन      | भय      | शत्रुनाश   | सर्वनाश  | हानि    | रोग       |
| धन     | भय        | धनप्रा०   | धनना०     | धनप्रा०   | धनप्रा० | धनप्रा०    | वित्तना० | धनलाभ   | वैर       |
| सहज    | धन        | सुख       | धनप्रा०   | भीति      | क्लेश   | सौख्य      | धनला०    | धनप्रा० | सुख       |
| सुहृत् | मानहः     | रोग       | भय        | धनप्रा०   | धनना०   | धनप्रा०    | शत्रुवृ० | वैर     | भय        |
| सुत    | दैन्य     | कार्यक्षय | अर्थप्रा० | रोग       | सुख     | पुत्रप्रा० | सुतप्रा० | शोच     | शोच       |
| रिपु   | विजय      | लक्ष्मी   | लाभ       | स्थानला   | शोक     | रिपुभय     | धनप्रा०  | लक्ष्मी | धनप्रा०   |
| जाया   | मार्गक्र० | लक्ष्मी   | खर्च      | पीडा      | मान     | शोक        | दोष      | कलह     | मार्गक्रम |
| मृत्यु | पीडा      | मृत्यु    | शत्रुभय   | अर्थप्रा० | रोग     | धनप्रा०    | रिपु     | धनला०   | रोग       |
| धर्म   | पुण्यना०  | राजभय     | पीडा      | रोग       | सुख     | वस्त्रला०  | धनना०    | पापकर्म | दुष्टकर्म |
| कर्म   | सिद्धी    | सुख       | शोक       | सौख्य     | दैन्य   | विपत्ति    | अस्वा०   | वैर     | शोक       |
| आय     | लाभ       | आय        | धनप्रा०   | सौख्य     | लाभ     | धनप्रा०    | धनप्रा०  | सौख्य   | कीर्ति    |
| व्यय   | हानी      | खर्च      | हानि      | नाश       | पीडा    | धनप्रा०    | धनना०    | शुचि    | शत्रुनाश  |

### वेधचक्रमाह ।

सूर्यौरसांत्ये खयुगानिनंदे शिवाक्षयोर्भौमशनीनभश्च ॥ र-  
सांकयोर्लाभशरेगुणान्त्ये चन्द्रोवराब्दौ गुणनंदयोश्च ॥ ला-  
भाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वयेज्ञोद्विशरेब्धिरामे ॥ रसांक-  
योर्नागविधौखनागे लाभव्यये देवगुरुःशराब्धौ ॥ द्वयंत्येनवां  
शोद्विगुणेशिवाहौ शुक्रःकुनागे द्विनगेशिरूपे ॥ वेदांबरपंचनि-  
धौगजेशौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्रौ ॥ क्रमाच्छुभौविद्धइति  
ग्रहःस्यात् पितुःसुतःस्यान्ननेवधमाहुः ॥ दुष्टोपिखेटो विपरी  
तवेधाच्छुभोद्विकोणे शुभदः सितेब्जे ॥ स्वजन्मराशेरिनवे



(९०)

न्योतिषसार ।

धमाहुरन्यग्रहाधिष्ठितराशितःस्युः ॥ हिमाद्रिविंध्यांतरणववेधो  
नसर्वदेशेष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥

टीका—जन्म राशिसे और ग्रहके गतिसे गोचरका शुभाशुभ फल लिखे और ध्रुवांकसे ज्ञात करे जैसा सूर्य जन्मस्थानसे षष्ठस्थानमें शुभ जो द्वादश स्थानमें शुभग्रह होय तो शुभ अशुभ और जो अशुभ होय ऐसा सर्व ग्रहवेध जानना—परंतु पिता पुत्र सूर्य शनि चंद्र बुध इनका परस्पर वेध नहीं होय तो जन्मस्थानसे द्वादशस्थानमें सूर्य होय और शनि षष्ठ स्थानमें होय अथवा अन्यग्रह होय तो विपरीत वेध शुभ जानना. हिमाद्रि और विंध्य इनके अंतरमें यह वेध है अन्य देशमें नहीं जानना ऐसा कश्यपऋषि कहते हैं ॥

वेधचक्रम् ।

| रवेः  | मं. | श. | रा. | चंद्रस्य | बुधस्य |    |    |   |    |   |    |   |    |    |    |    |
|-------|-----|----|-----|----------|--------|----|----|---|----|---|----|---|----|----|----|----|
| ६     | १०  | ३  | ११  | ६        | ११     | ३  | १० | ३ | ११ | १ | ६  | ७ | २  | ४  | ६  |    |
| १२    | ४   | ९  | ५   | ९        | ५      | १२ | ४  | ९ | ८  | ५ | १२ | २ | ५  | ३  | ९  |    |
| गुरोः |     |    |     | शुक्रस्य |        |    |    |   |    |   |    |   |    |    |    |    |
| ८     | १०  | ११ | ५   | २        | ९      | ७  | ११ | १ | २  | ३ | ४  | ५ | ८  | ९  | १२ | ११ |
| १     | ८   | १२ | ४   | १२       | १०     | ३  | ८  | ८ | ७  | १ | १० | ९ | ११ | ११ | ६  | ३  |

जन्मके चंद्रमामें पांचकर्म वर्जनीय ।

जन्मस्थक्षे शशांकितु पंचकर्माणि वर्जयेत् ॥

यात्रां युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ॥

टीका—यात्रा और युद्धका जाना विवाह और क्षौरकर्म करना तथा गृहप्रवेश ये पांच कर्म जन्मके चंद्रमामें वर्जितहैं ॥

नेष्टस्थानके अनुसार चंद्रमाका उक्तबल ।

द्विपंचनवमेशुक्ले श्रेष्ठश्चंद्रोहिउच्यते ॥ अष्टमेद्वादशेकृष्णे चतुर्थे  
श्रेष्ठ उच्यते ॥ शुक्लपक्षे बलीचंद्रः कृष्णेतारा बलीयसी ॥

टीका—दूसरे पांचवें अथवा नवमं स्थानमें चंद्रमा होय तो शुक्लपक्षमें

श्रेष्ठ जानिये, तैसेही कृष्णपक्षमें आठवें बारहवें चौथे स्थानका श्रेष्ठ परंतु शुक्लपक्षमें चंद्रमाबल और कृष्णपक्षमें ताराबल ऐसे श्रेष्ठ जानिये ॥

### ग्रहोंके नेष्टस्थान ।

ये खेचरा गोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभाभवन्ति ॥

दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥

टीका—गोचरका अथवा अष्टवर्गका किंवा दशाक्रमका जो ग्रह नेष्ट स्थानी होय उसके प्रसन्न करनेके लिये दान करावै इस कारण अब दानकी विधि कहतेहैं ॥

### वारोंकेअनुसारदान ।

भानुस्तांबूलदानादपहरतिनृणां वैकृतं वासरोत्थंसोमःश्रीखंडदानाद्वनिवरसुतो भोजनात्पुष्पदानात् ॥ सौम्यःशास्त्रस्य मंत्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवःशुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयोब्रह्मनत्यापरेच ॥

टीका—सूर्य तांबूलदानसे. चंद्रमा चंदनके दानसे, मंगल भोजन और पुष्प दानसे, बुध शास्त्रोक्त मंत्रके जपसे, गुरु शिवके आराधन और भोजनसे, शुक्र श्वेतवस्त्रसे और शनि प्रातःकाल तैलस्नान और विप्र सन्मानसे अपने अपने अशुभ फलोंको दूर कर शुभ फलदायक होते हैं ॥

### ग्रहोंकेदान और जप ।

रवि ॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेतुः कौसुंभवासोगुडहेमताम्रम् ॥ आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानां हि विरोचनाय ॥ चंद्रमा ॥ सद्गंशपात्रस्थिततंदुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥ युगोपयुक्तं वृषभंचरौप्यं चंद्राय दद्यात् घृतपूर्णकुंभम् ॥ भौम ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोरुणश्चापिगुडःसुवर्णम् ॥ आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रंचभौमायवदंतिदानम् ॥ बुध ॥ वृषंचनीलंकलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम् ॥ दासी

( ९२ )

ज्योतिषसार ।

चदंतोद्विरदश्चनूनवदंतिदानंविधुनंदनाय ॥ गुरु ॥ शर्कराच  
 रजनीतुरंगमः पीतधान्यमपिपीतमंबरम् ॥ पुष्परागलवणंस-  
 कांचनंप्रीतयेसुरगुरोः प्रदीयते ॥ शुक्र ॥ चित्रांबरं शुभ्रतुरं-  
 गमंचधनुश्चवज्रंरजतंसुवर्णम् ॥ सतंदुलानुत्तमगंधयुक्तंवदंति  
 दानंभृगुनंदनाय ॥ शनि ॥ माषाश्चतैलंविमलेंद्रनीलंतिला  
 कुलत्थामहिषीचलोहम् ॥ कृष्णाचधेनुःप्रवदंतितूनं तुष्ट्यैच  
 दानंरविनंदनाय ॥ राहु ॥ गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैला  
 मलकंबलंच ॥ तिलाश्चतैलंखलु लोहमिश्रंस्वर्भानवेदानमि  
 दंवदंति ॥ केतु ॥ वैडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसुकंबलाश्चापि मदो  
 मृगस्य ॥ शस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतोश्चागस्यदानंकथितंमुनी  
 न्द्रैः ॥ ग्रहोकाजप ॥ रवेःसप्तसहस्राणि चंद्रस्यैकादशैवतु ॥  
 भौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकम् ॥ एकोनविंशतिर्जीवेशु  
 क्रएकादशैवतु ॥ त्रयोविंशतिर्भेदेचराहोरष्टादशैवतु ॥ केतो  
 सप्तसहस्राणि जपसंख्याप्रकीर्तिता ॥

| नाम | रवि        | चन्द्र                  | मंगल      | बुध       | गुरु     | शुक्र       | शनि     | राहु  | केतु   |
|-----|------------|-------------------------|-----------|-----------|----------|-------------|---------|-------|--------|
| शु  | माणिक      | वेणुपात्र<br>युक्ततंदुल | मूंगा     | कालबि,    | शर्करा   | चित्रवस्त्र | उडद     | गोमेद | वेदर्य |
|     | गेहूं      | कर्पूर                  | गेहूं     | सोना      | हलद      | श्वेतअ०     | तेल     | घोडा  | रत्न   |
|     | गोवत्स     | मोति                    | मसूर      | कॉम्पपा   | घोडा     | गाय         | नील     | नीलव० | तिल    |
|     | रक्तवस्त्र | श्वेतवस्त्र             | ताम्रबैल  | मूंगा     | पीतअत्र  | वज्र        | तिल     | कंबल  | तेल    |
|     | गूलर       | श्वेतबैल                | गुड       | घृत       | पीतव०    | रूपा        | कुलथी   | तिल   | कंबल   |
|     | सोना       | रौप्य                   | सोना      | गारुत्मत  | पुष्परा. | सोना        | भैस     | तेल   | कस्तूर |
|     | तांबा      | रूपा                    | लालवस्त्र | सर्वपुष्प | नोन      | तांबूळ      | लोहा    | लाहा  | शस्त्र |
|     | रक्तचंद्र  | घृतकुंभ                 | कनेरपु.   | दासी      | सोना     | चंदन        | कृष्णगी | का०प० | भंडा   |
|     | कमल        | ०                       | तांबा     | हस्तिदंत  | ०        | ०           | ०       | ०     | ०      |
|     | जप         | ७०००                    | ११०००     | १००००     | ८०००     | १९०००       | ११०००   | २३००० | १८०००  |

### ग्रहपीडानिवारणार्थं ।

देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामपिभाषणा  
 च्छुतिरवश्रेयःकथाकारणात् ॥ होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनो-  
 भावाज्जपादानतोनोकुर्वतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवं ग्रहाःपीडनम्

टीका—देव और ब्राह्मणको सादर नमस्कार करे और प्रतिदिन गुरु और साधुओंसे भाषण तथा उत्तम २ कथा श्रवण करे. होम तथा यज्ञके दर्शन करे और शुद्ध मनके भावसे जपदान करे, जो ग्रहोंके निमित्त ऐसे उपाय करें तो पीडा निवृत्त होजाय और शुभफल मिले ॥

### जातकर्म ।

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नांदिश्राद्धंविधानतः ॥

जातकर्मततःकुर्यादन्यैरालंभनात्पुरा ॥

टीका—पुत्र उत्पन्न होनेपर पिता तत्काल नांदिश्राद्ध विधिपूर्वककरे तिसर्पाछे जबतक कोई अन्यजाति बालकको स्पर्श न करें उससे प्रथम जातकर्म करें ॥

### नामकरणम् ।

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरादित्याख्येषुचनामकर्म शुभदयोगेप्रशस्तेतिथौ ॥ अह्निद्रादशकेतथान्यदिवसे शस्ते तथैकादशे गोसिंहालिघटेषुह्यर्कबुधयोजीवेशशंकेपिच ॥

टीका—पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरात्रय पुनर्वसु ये नक्षत्र शुभ कहिये जन्मसे ११ अथवा १२ दिवस उक्त हैं और दूसरे मतके अनुसार १६।२०।२२।१००। ये दिवस उक्त हैं और वृष सिंह कुंभ वृश्चिक ये लग्न शुभहैं और रवि बुध गुरु शुक्र शशांक अर्थात् चंद्रवार शुभहैं रिक्ता तिथि और दुष्ट योगादिक नामकरणमें वर्जितहैं ॥

### नामकावकहडाचक्र ।

चूचेचोलाऽश्विनीप्रोक्ता लीलूल्लो भरण्यथ ॥ आईऊएकृत्ति कास्यादोवाविवूतु रोहिणी ॥ वेवो काकीमृगशिरः क्रूघडछास्तथार्द्रका॥केकोहाहीपुनर्वसुहूहेहोडातुपुष्यभम्॥ डीडूडेडो तुआश्लेषामामीमूमेमघास्मृता ॥ मोटाटीटूपूर्वफल्युटेटोपाप्युत्तरातथा ॥ पूषणाहाहस्ततारापेपोरारीतुचित्रिका ॥ हूरे-रोतास्मृतास्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ नानीनूनेतुराध-

क्षज्येष्ठानोयायियूस्मृता ॥ येयोभाभीमूलतारापूर्वाषाढावु  
धाफढा ॥ भेभोजज्युत्तराषाढा जूजेजोखाभिजिद्रवेत् ॥ खी  
खूखेखोश्रवणभं गागीगूगेधनिष्ठिका ॥ गोसासीसूशतभिष-  
क्सेसोदादीतुपूर्वभाक् ॥ दुथाङ्गभयथाज्ञेयो देदोचाचीतुरेवती ॥

|          |           |            |                |
|----------|-----------|------------|----------------|
| अश्विनी  | पुष्य     | स्वाती     | अभिजित्        |
| भरणी     | आश्लेषा   | विशाखा     | श्रवण          |
| कृत्तिका | मघा       | अनुराधा    | धनिष्ठा        |
| रोहिणी   | पूर्वाफा० | ज्येष्ठा   | शततारका        |
| मृग      | उत्तराफा० | मूल        | पूर्वाभाद्रपदा |
| आर्द्रा  | हस्त      | पूर्वाषाढा | उत्तराभाद्रपदा |
| पुनर्वसु | चित्रा    | उत्तराषाढा | रेवती          |

मंचकारोहण ।

शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरा

स्वातिहस्ताः ॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेर्भकस्य निगदित  
मिहपूर्वैर्मंचकारोहणंतु ॥

टीका—मृगशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा  
तीनों उचरा स्वाती हस्त इन नक्षत्रोंमें और बुध शुक्र गुरु ये वार और  
तुल वृश्चिक कुंभ इन लग्नोंमें शिशूको पूर्वदिशाको शिर करके प्रथम मंच-  
कारोहरण करावे तो शुभ होय ॥

पालनेकामुहूर्त्त ।

आंदोलशयनंपुंसोद्वादशदिवसेशुभम् ॥

त्रयोदशेतु कन्यायाननक्षत्रविचारणा ॥

टीका—जन्म होने उपरांत पुत्रको बारहवें और कन्याको तेरहवें दिवस पाल-  
नेमें शयन करावे और नक्षत्र आदिके विचारकी कुछ आवश्यकता नहीं है ।

अथ बृहस्पतीकेमतानुसारदुग्धपानमुहूर्त्त ।

एकत्रिंशद्दिनेचैव पयःशंखेनपाययेत् ॥

अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ॥

टीका—जन्म होनेके पश्चात् ३१ दिन अब अन्नप्राशन नक्षत्र जो  
आगे कहे जायेंगे उनमें शंखमें दूध भरके बालकको पिलावे ॥

ताम्बूलभक्षणम् ।

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्ताम्बूलं प्रथमंशिशोः ॥ कर्पूरादिकसंमिश्रं

विलासायहितायच ॥ मूलेचत्वाष्टकरतिष्यहरींद्रभेषु पौष्णे

तथामृगशिरोदितिवासरेषु ॥ अर्कैर्दुर्जीवभृगुबोधनवासरेषु

तांबूलभक्षणाविधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः ॥

टीका—जन्मके उपरांत ढाई मासमें कपूर आदि पदार्थ मिश्रित करि  
तांबूल खवावे और मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृगशिर

धनिष्ठा और रवि सोम गुरु शुक्र बुध इन चारोंमें मुनीश्वरोंने तांबूल-  
भक्षण शुभ कहा है ॥

( ९६ )

ज्योतिषसार ।

## सूर्य्यावलोकन ।

हस्तःपुष्यपुनर्वसूहरियुगं मैत्रत्रयंरोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनीमृग-  
युताषाढोत्तरास्वातिभे ॥ मासौतुर्यतृतीयकौशानिकुजात्यक्त्वाच  
रिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुम्भराशिसहितं निष्कासनंशस्यते ॥

टीका—हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी  
रेवती उत्तराफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढा स्वाती और चौथा व तीसरा  
मास शुभ शनि भौम रिक्ता तिथि वर्जनीय है और सिंह कन्या तुल कुंभा  
ये लग्न उत्तम हैं ऐसे शुभदिन विचारके प्रथम बालकको बाहर निकालकर  
सूर्यावलोकन करावना उत्तम है ॥

## कर्णवेध ।

रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे विष्णुत्रयेर्कत्रयेरेवत्यांचपुनर्वसुद्रययु  
मेकर्णस्ववेधःशुभः ॥ मीनेस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटेवर्षेचयुग्मेतिथौ  
सौम्येचेन्दुगुरौरवौचशयनं त्यक्त्वाचविष्णोर्बुधैः ॥

टीका—रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृगशिर श्रवण धनिष्ठा शतता-  
रका हस्त चित्रा शुभ और युग्मतिथि और युग्मवर्ष ये शुभ और चंद्र  
गुरु रवि ये वार विष्णुशयनको छोड़कर पंडितोंने कर्णवेध शुभ कहा है ॥

## शिशुको पृथ्वीमें बैठाना ।

पंचमेचतथामासिभूमौतमुपवेशयेत् ॥ तत्रसर्वेग्रहाशस्ता  
भौमोप्यत्रविशेषतः ॥ उत्तरात्रितयंसौम्यं पुष्पक्षैशकृदैवतम् ॥  
प्राजापत्यंचहस्तश्च शतमाश्विनमित्रभम् ॥

टीका—पांचवें मासमें रविवार आदि समस्ववार शुभ दिनमें भौमवार विशेष  
करके और तीनों उत्तरा मृगशिर पुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनु-  
राधा ये नक्षत्र शुभ ऐसे दिवसमें शिशुको भूमिपर बैठावना शुभ कहा है ॥

## अन्नप्राशन ।

पूर्वाद्राभरणीभुजंगवरुणं त्यक्त्वाकुजाकींतथानन्दापर्वचसप्तमीं

मपितथा रिक्तामपिद्वादशीम् ॥ षष्ठेमास्यथवात्रभक्षणविधिःस्त्री-  
णामयुक्पंचमे गोकन्याझषमन्मथे बुधवले पक्षे च योगेशुभे ॥

टीका—तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी आश्लेषा और भौम शनि ये अशुभ  
वार नंदा पर्व रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सबको त्यागकर छठे अथवा  
आठवें महीनेमें लडकेको और कन्याको पांचवे माससे कहाहै और वृष  
मिथुन मकर कन्या इन लग्नोंका बल पाके शुक्लपक्ष तथा शुभयोगमें  
बालकको अन्नप्राशन करावे ॥

### चौलकर्म ।

रेवत्याद्यकरत्रयावितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये पुष्येचोत्तरगेर-  
वौगुरुकवीन्दुजेषुपक्षेसिते ॥ गोस्त्रीमन्मथचापकुंभमकरे हि-  
त्वाच रिक्तातिथिं षष्ठीपर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालींचचूडाशु-  
भा ॥ जन्मतस्तु तृतीयेब्दे श्रेष्ठमिच्छंति पंडिताः ॥ पंचमे  
सप्तमेवापि जन्मतो मध्यमं भवेत् ॥

टीका—रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृगशिर ज्येष्ठा  
श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुष्य ये नक्षत्र और उत्तरायण शुक्र गुरु सोम  
बधवार और शुक्लपक्ष मुंडनमें शुभ हैं और वृष कन्या मिथुन धन मकर  
कुंभ इन लग्नोंको त्यागके शेष शुभ जानिये और रिक्ता छठ आठ अमा-  
वास्यादिक दुष्ट तिथि वर्जित हैं और जन्म होनेसे तीसरे वर्षमें पंडितोंने  
श्रष्ट आर पांचवें सातवें वर्षमें मध्यम कहा है ॥

### विद्यारंभका मुहूर्त्त ।

रेवत्यांमृगपंचकेहरियुगे पूर्वासुहस्तत्रये मूलश्वेअभिजिच्चभानुभृ-  
गुजे सौम्येधनुर्जीवयोः ॥ अब्देपंचमकेविहाय निखिलानध्यायष-  
ष्ठीयुतान् रिक्तां सौम्यदिने तथैव विबुधैः प्रोक्तोमुहूर्त्तःशुभः ॥

टीका—रेवती मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा श्रवण धनिष्ठा  
पूर्वा हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी अभिजित और रवि गुरु शुक्र बुध  
सोम ये वार और जन्मसे पांचवां वर्ष शुभ कहाहै और अनध्याय षष्ठी



( ९८ )

ज्योतिषसार ।

रिक्ता पर्व आदि दृष्ट योगादिक तिथि वर्जनीय हैं उत्तरायण शुक्लपक्ष और शुभ लग्नोंमें प्रथम विद्याभ्यास करावे ॥

**यज्ञोपवीतका मुहूर्त ।**

पूर्वाषाढहरित्रयेश्विमृगभे हस्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौचपक्षसिते॥गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रैर्कजीवेतिथौ पंचम्यां दशमीत्रयेव्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ॥

टीका—पूर्वाषाढा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिर हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी और उदमश्रम अर्थात् उत्तरायण शुक्लपक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह ये लग्ने और शुक्ल रविवार सोम ये वार और पंचमी दशमी आदि तीन दिन अर्थात् १०।११।१२ में यज्ञोपवीत करना शुभहै ॥

**मासादिमुहूर्त ।**

विप्रं वसंते क्षितिपं निदाघे वैश्यं घनांते व्रतिनं विदध्यात् ॥

मावादिशुक्रांतिकपंचमासाः साधारणा वा सकलाद्रिजानाम् ॥

टीका—ब्राह्मणोंका वसंतमें, क्षत्रियोंका ग्रीष्ममें, वैश्योंका शिशिर-ऋतुमें यज्ञोपवीत करावे, ऐसे वर्णोंके अनुसार व्रतबंधमें ऋतु कहाहै, माघसे ज्येष्ठ पर्यंत ५ मास समस्त द्विजोंको साधारण कहेहैं ॥

**वर्षसंख्या ।**

गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पंचमेसप्तमेपिवा ॥

द्विजत्वंप्राप्तुयाद्रिप्रो वर्षेत्वेकादशोत्पः ॥

टीका—गर्भसे अथवा जन्मसे आठवें अथवा ५ । ७ वर्ष ब्राह्मणका और ग्यारहमें क्षत्रियोंका यज्ञोपवीत करना उचितहै ॥

**गुरुबलम् ।**

वर्णाधिपेबलोपेते उपनीतिक्रियाहिता ॥

सर्वेषांचगुरौसूर्ये चन्द्रेचबलशालिनि ॥

टीका—वर्णके आधिपतिअनुसार बल देखिये और सबोंको गुरु सूर्य चंद्रमाका बल चाहिये ॥

त्रयादश्यादेचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम् ॥

चतुर्थ्यैकाकिनीप्रोक्ता अष्टावेवगलग्रहाः ॥

टीका—त्रयोदशसि प्रतिपदातक चारि तिथि सप्तमी अष्टमी नवमी चतुर्थी ये आठ तिथि गलग्रह वर्जनीय हैं ॥

अथ शूद्रादिकोंकेसंस्कारकामुहूर्त ।

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभे पुष्येतथाचाश्विभे रेवत्यांमृगरोहिणी  
दितिकरे मैत्रेतथावारुणे ॥ चित्रास्वातिमथोत्तराभृगुसुते भौमे  
तथा चांद्रजे शूद्राणांतुबुधैः शुभंहिकथिनं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥

टीका—मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृग-  
शिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाती तीनों उत्तरा  
ये नक्षत्र और शुक्र भौम बुध ये वार शूद्रादिक संकरअंत्यजातिके संस्का-  
रमें शुभ जानिये ॥

विवाहप्रकरणम् ।

तत्रादौदैवज्ञपूजनम् ॥ दैवज्ञपूजयेदादौ फलतांबूलपूर्वकम् ।

निवेदयेत्सुमनसास्वकन्योद्गाहनादिकम् ॥

टीका—प्रथम ज्योतिषीकी यथाशक्ति फल तांबूलपूर्वक पूजा करना  
तिसके पीछे कन्याका पिता कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करै ॥

विवाहसमयेप्रश्नमाह ।

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहे बलिनौ यदिपश्यतः ॥

रचयतोवरलाभमिमौयदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥

टीका--जो प्रश्नकालमें चंद्र शुक्र यह विषम राशिमें होंय वा अंशमें होय  
और दोनोंबली होयके लग्नको देखते होंय तो कन्याको पतिप्राप्ति जानना  
और समराशिमें वा अंशमें चंद्र शुक्र होंय तो वरको स्त्रीप्राप्ति कहना शुभहै ॥

प्रष्टुर्विलग्नात्प्रबलःशशांकः शत्रुस्थितो मृत्युग्रहस्थितोवा ।

यद्यष्टमाब्दात्परतोविवाहात्करोतिमृत्युंवरकन्ययोश्च ॥

टीका—जो प्रश्न लग्नसे बलवान् चंद्रमा षष्ठ अथवा अष्टम स्थानमें बैठा होय तो विवाहसे अष्टम वर्षमें स्त्री पुरुष दोनोंको अरिष्ट जानना ॥

यद्युदयस्थश्चंद्रस्तस्माद्यदिसप्तमो भवेद्भौमः ।

समाष्टकंसजीवतिविवाहकालात्परंपुरुषः ॥

टीका—जो प्रश्न लग्नमें चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तम स्थानमें मंगल होय तो विवाहसे अष्टम वर्षमें पतिको अरिष्ट जानना ॥

स्वनीचगःशत्रुदृष्टः पापः पंचमगोयदा ॥

मृतपुत्रां करोत्येव कुलटावानसंशयः ॥

टीका—जो प्रश्नकालमें पापग्रह अपने नीचस्थानमें होय अथवा शत्रु-ग्रह देखते होंय अथवा पापग्रह पंचमस्थानमें बैठा होय तो संतानका नाश और स्त्री वेश्या होय ऐसा जानना ॥

भिद्यतियद्युदकुंभः शयनासनपादुकाशुभंगोवा ।

प्रश्रसमयेपियस्यास्तस्यावधव्यमादेश्यम् ॥

टीका—जो विवाहप्रश्नकालमें अकस्मात् जलकुंभका भंग होय अथवा निद्रानाश; आसनभंग; पादुकाभंग, ऐसा जिस कन्याके विवाहप्रश्नसमयमें होय तो उसको विधवायोग जानना ॥

अज्येष्ठाकन्यकायत्र ज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥

व्यत्ययोवातयोस्तत्र ज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ॥

टीका—जो कन्या ज्येष्ठ न होय और पुरुष ज्येष्ठ होय ऐसा दोनोंका भेद होय तो ज्येष्ठमासमें विवाह करना शुभ है ॥

**वर्षप्रमाणमाह ।**

षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंततः ॥

सोमोभुंक्ततस्तद्वर्षध्वश्चतथानलः ॥

टीका—प्रथम ६ वर्षतक कन्याका विवाह नहीं करना कारण यह है कि, प्रथम २ वर्ष चंद्रमा भोग करता है, अनंतर दोवर्ष गंधर्व भोग करते हैं, अनंतर २ वर्ष अग्निदेव भोग करता है, तदनंतर विवाहको शुद्ध जानना ॥

अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी ॥ दशवर्षाभवेत्कन्या द्वा-  
दशवर्षलीमता ॥ गौरीदानान्नागलोकं वैकुण्ठरोहिणींददत् ॥  
कन्यादानाद्ब्रह्मलोकं रौरवंतुरजस्वलाम् ॥

टीका—आठ वर्षकी कन्या होय तब उसका नाम गौरी, नव वर्षकी  
कन्या रोहिणीसंज्ञा, दश वर्षकी होय तो उसका नाम कन्या, जो बारह  
वर्षकी होय तो उसे शूद्री नाम जानना, इसका फल गौरीदानसे नागलोक-  
प्राप्ति, रोहिणीदानसे वैकुण्ठप्राप्ति, कन्यादानसे ब्रह्मलोकप्राप्ति, शूद्रीदानसे  
घोर नरकप्राप्ति होय ॥

विवाहोजन्मतःस्त्रीणां युग्मेऽब्देपुत्रपौत्रदः ॥

अयुग्म श्रीप्रदंपुंसां विपरीते तु मृत्युदः ॥

टीका—स्त्रीका विवाहकाल जन्मसे सम वर्षमें करना तो पुत्रपौत्रप्राप्ति  
और पुरुषका जन्मसे विषम वर्षमें विवाह होय तो लक्ष्मीप्राप्ति, इससे  
विपरीत होय तो मृत्युप्राप्ति जानना ॥

कन्याद्वादशवर्षाणि याऽप्रदत्तावसेद्ब्रूहे ॥

ब्रह्महत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत्स्वयम् ॥

टीका—कन्या १२ वर्षकी होय और पिताके घरमें रहै तो पिताको ब्रह्मह-  
त्या प्राप्त, होय नंतर कन्या अपनी इच्छासे पति करे ऐसा आचार्य कहतेहैं.

### मंगलविचार ।

लग्नेव्ययेचपाताले यामित्रेचाष्टमेकुजे ॥

पत्नीहंतिस्वभर्तारं भर्ताभार्याविनाशयेत् ॥

टीका—स्त्रीको और पुरुषको मंगल रहताहै तिसका प्रकार १।१२।४  
।७।८इतने स्थानोंमें मंगल होय तो स्त्री मंगली कहना और मंगलीसे मंग-  
लीको विवाह करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान् होय तोभी करना ॥

### भौमपरिहार ।

यामित्रेचयदासौरिलग्नैवाहिबुकेथवा ॥

नवमेद्वादशेचैव भौमदोषोनविद्यते ॥

( १०२ )

ज्योतिषसार ।

टीका—स्त्रीको अथवा पुरुषको ७।१।४।९।१२। जो इतने स्थानोंमें शनि होय तो मंगलका दोष नहीं जानना ॥

ज्येष्ठविचार ।

द्विज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठःशुभावहः ॥

ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीत विवाहे सर्वसम्मतः ॥

टीका—पुरुष ज्येष्ठ अथवा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठ मास होय ऐसा दो ज्येष्ठमें करना मध्यम समझतेहैं और एक ज्येष्ठमें करना शुभहै, और पुरुष ज्येष्ठ स्त्री ज्येष्ठ मासमें ज्येष्ठ जो तीनों होय तो विवाह नहीं चाहिये ।

ज्येष्ठायाःकन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्यवैमिथः ॥

विवाहोनैवकर्त्तव्यो यदिस्यान्निधनंतयोः ॥

टीका—प्रथम गर्भमें ज्येष्ठ जो स्त्री होय उसको कहना, जो पुरुष ज्येष्ठ होय और कन्याभी ज्येष्ठ होय तो विवाह नहीं करना यह दुःखदायक होताहै ॥

दशवर्षव्यतिक्रांता कन्याशुद्धिविवर्जिता ॥

तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौपाणिग्रहोमतः ॥

टीका—दशवर्षके अनंतर कन्या शुद्धिसे रहित होतीहै तो ताराशुद्धि चंद्रशुद्धि लग्नशुद्धि देखके विवाह करना शुभ है ॥

कन्यालक्षणमाह ।

हंसस्वरां मेघवर्णां मधुपिंगललोचनाम् ॥

तादृशींवरयेत्कन्यां गृहस्थःसुखमेधते ॥

टीका—स्त्रीका लक्षण स्त्रीका मीठा हंसके बोलना ऐसा होय और मेघकासा वर्ण होय नेत्रका वर्ण शहतके तुल्य हो अथवा पिंगल कहिये कुछ सफेद कुछ काला होय ऐसी कन्यासे विवाह करे तो गृहस्थ सुख पाताहै ॥

वरलक्षणमाह ।

जातिविद्यावयःशीलमारोग्यंबहुपक्षता ॥

अर्थित्वंवित्तसंपत्तिरष्टावैतेवरेगुणाः ॥

टीका—पुरुषका लक्षण—जातिमें उत्तम होय और विद्यायुक्त वयमें वृद्धित्व होय और स्वभाव अच्छा होय और निरोगी-परिवार बहुत होय स्त्रीकी इच्छा होय, धन संपत्ति होय, ऐसे आठ लक्षणसे युक्त वर होय तो कन्या देना चाहिये ॥

### वरदोषमाह ।

दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनाम् ॥

शूराणांनिर्धनानांच न देया कन्यकाबुधैः ॥

टीका—पुरुषके दूर रहनेवालेको कन्या देना नहीं, मूर्खको देना नहीं, मोक्षधर्मयोगाभ्यासादिक करै उसको देना नहीं, दरिद्री असमर्थको देना नहीं, ऐसा पंडितजनोंने कहाहै ॥

### अस्तोदय ।

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितःस्यात्पश्चाद्दशाहमिहपंचदि-  
नानिवृद्धः ॥ प्राक्पक्षमेवगदितोत्र वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुप-  
क्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ॥

टीका—पूर्वमें शुक्रका उदय होय तो तीन दिन शिशुत्व और अस्त होय तो वृद्धत्व पंद्रह दिन वर्जित और पश्चिमको उदय होय तो पांच दिन शिशु-  
पन और १० दिन वर्जितहै और गुरुके उदय अस्तमें १५ दिन वर्जनीयहैं.

### अस्त और उदयका लक्षण ।

यमशरभुजवासरवत्रिणोदिशिद्विसप्तसितास्तमनंतथा ॥

गगनबाणयमैर्दिशिपश्चिमेनवदिनास्तमनंतु भृगोर्बुधैः ॥

टीका—२५२ दिन शुक्रका अस्त पूर्वदिशामें होताहै, और उसका उदय ७२ वें दिवस पश्चिममें होताहै, और २५० दिवस पश्चिममें अस्त होताहै तिसका उदय ५९ वें दिन पूर्वमें होताहै यह पंडितोंने कहाहै ॥

### अस्तमेंवर्जनीयकर्म ।

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरं प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामन्दिरकर्णवेधन-

महादानं गुरोस्सेवनम् ॥ तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मंत्रोपदेशं  
शुभं दूरेणैवजिर्जाविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥

टीका—बावडी कूप तडाग अर्थात् तालाब यज्ञ और यात्रा करना चौल  
अर्थात् मुण्डन देवप्रतिष्ठा यज्ञोपवीत विद्यारंभ नूतन गृहप्रवेश बालकका  
कर्णवेध महादान गुरुसेवा तीर्थस्नान विवाह उत्तम कर्म मंत्रोपदेश ये कर्म  
जीवनेकी इच्छा रखनेवाला पुरुष गुरुशुक्रके अस्तमें दूरही वर्जित करै ॥

### विवाहेवर्जनीयम् ।

नाषाढप्रभृतिचतुष्टये विवाहो नोपौषेनचमधुसंज्ञकेविधेयः ॥ नै-  
वास्तंगतवति भार्गवेचजीविवृद्धत्वेनखलुतयोर्नवालभावे ॥ गी-  
र्वाणमंत्रिणिमृगेंद्रमधिष्ठितेनमासेधिके त्रिदिनसंस्पृशिनामभेच ॥

टीका—आषाढ आदिलेके ४ मास और पौष चैत्र मास और गुरु  
शुक्रका अस्त और इन दोनोंका वृद्धत्व और बालत्व और सिंहका वृह-  
स्पति, अधिक मास तथा क्षयमास ये सब विवाहमें वर्जितहैं ॥

### मूलादिजन्मनक्षत्रकादोष ।

मूलजाचगुणं हन्ति व्यालजाकुलटांगना ॥

विशाखजादेवरघ्नीज्येष्ठाजाज्येष्ठनाशिका ॥

टीका—मूल नक्षत्रमें कन्याका जन्म होय तो गुणोंका नाश करे,  
आश्लेषामें व्यभिचारिणी, विशाखामें देवरका मृत्युकारक, और ज्येष्ठामें  
ज्येष्ठ बंधुको मृत्युदायक होतीहै ॥

### जन्मनक्षत्रादिवर्ज्यम् ।

जन्मक्षेजन्मदिवसेजन्ममासे शुभंत्यजेत् ॥ ज्येष्ठेमासाद्यगर्भं

स्यशुभ्रवस्त्रंस्त्रियायथा ॥ अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरोय-

दि ॥ व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासःशुभप्रदः ॥

टीका—जन्मके नक्षत्र दिवस और मासमें बालकोंका शुभ कर्म वर्जित  
है जैसे स्त्रियोंको श्वेतवस्त्र धारण करना और जो कन्या कनिष्ठ होय तथा  
वर ज्येष्ठ होय अथवा इससे विपरीत होय तो ज्येष्ठ मासमें विवाह शुभहै ॥

# भाषाटीकासमेत ।

( १०६ )

अथ वर्षसारणीयम् ॥

| वर्ष    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६  |     |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| वार     | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | १  | ३  | ४  | ५  | ६  | १  | २  | ३  | ४   | ५   |
| घटी     | १५ | ३१ | ४६ | २  | १७ | ३३ | ४८ | ४  | १९ | ३५ | ५० | ८  | २३ | ३९ | ५४ | २   | १७  |
| पल      | ३१ | ३  | ३४ | ६  | ३७ | ९  | ४० | १२ | ४३ | २३ | ४६ | १८ | ४९ | २९ | ५२ | २४  | ४७  |
| ऽक्ष    | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | १  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०   | ३०  |
| तिथि    | ११ | २  | ३  | १४ | २५ | ६  | १७ | २८ | ९  | २७ | १  | १२ | २३ | ३४ | १५ | २६  | ३७  |
| नक्षत्र | ८  | १८ | १  | ११ | २१ | ४  | १४ | २४ | ७  | २० | ३  | १० | २० | ३० | ४  | १३  | २३  |
| वर्ष    | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२  | ३३  |
| वार     | ०  | १  | २  | ४  | ५  | ६  | ०  | २  | ३  | ४  | ५  | ०  | १  | २  | ४  | ५   | ६   |
| घटी     | २३ | २९ | ५४ | १० | २६ | ४२ | ५७ | १२ | २८ | ४६ | ५९ | १४ | ३० | ४६ | ६३ | १६  | ३२  |
| पल      | ५५ | २७ | ५८ | ३० | १  | ३३ | ४  | ३६ | ७  | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८  | १८  |
| ऽक्ष    | ३० | ०  | ३  | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३  | ०  | ३० | ०  | ३० | ०   | ३०  |
| तिथि    | ८  | १९ | ०  | ११ | २२ | ३  | १४ | २५ | ६  | १७ | २८ | ९  | २० | ३१ | १३ | २४  | ३५  |
| नक्षत्र | ६  | १६ | २३ | ९  | २९ | २  | २२ | २२ | ५  | १५ | २५ | ८  | १८ | २९ | १० | २०  | ३०  |
| वर्ष    | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८  | ४९  |
| वार     | ६  | ०  | २  | ३  | ४  | ५  | ०  | १  | २  | ३  | ५  | ६  | ०  | १  | ३  | ४   | ५   |
| घटी     | ३२ | ४७ | ३  | १८ | ३४ | ४९ | ५  | २१ | ३६ | ५२ | ७  | २३ | ३८ | ५४ | ७० | ८६  | १०२ |
| पल      | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०  | ३७ | ३  | ३४ | ६  | ३९ | ९  | ४० | २२  | ५४  |
| विपल    | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ३  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०   | ३०  |
| नक्षत्र | ५  | १६ | २७ | ८  | १९ | ०  | ११ | २२ | ३  | १५ | २५ | ६  | १७ | २८ | १० | २१  | ३२  |
| लग्न    | ४  | १४ | २४ | ७  | १७ | १० | १० | २० | ३  | १३ | २३ | ०  | १६ | २६ | ९  | १९  | २९  |
| अंश     | ६  | ९  | ३  | १३ | ६  | १  | ०  | ४  | ७  | १० | १  | ४  | ७  | १० | १  | ४   | ७   |
| वर्ष    | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४  | ६५  |
| वार     | ५  | ६  | १  | २  | ४  | ४  | ०  | १  | ३  | ४  | ५  | ६  | १  | २  | ३  | ४   | ५   |
| घटी     | २४ | ५६ | ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ०  | १५ | ५२ | ६७ | ८२ | ९८ | ११३ | १२८ |
| पल      | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | ३७ | ५८ | ३० | ६१ | ३३ | ६४ | ३६  | ६७  |
| विपल    | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०   | ३०  |
| नक्षत्र | २  | १३ | २४ | ५  | १६ | २७ | ८  | १९ | १  | ११ | २२ | ३  | १५ | २६ | ३७ | ४८  | ५९  |
| लग्न    | २  | १२ | २२ | ५  | १५ | २५ | २  | १८ | ०  | ११ | २१ | ४  | १४ | २४ | ३४ | ४४  | ५४  |
| अंश     | ७  | ११ | २  | ५  | ०  | ११ | २२ | ५  | ८  | ११ | २  | ६  | ९  | ०  | ०  | ०   | ६   |
| वर्ष    | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८०  | ८१  |
| वार     | ४  | ६  | ०  | १  | २  | ४  | ५  | ६  | ०  | २  | ३  | ४  | ५  | ०  | १  | २   | ३   |
| घटी     | ४९ | ४  | २० | ३५ | ५१ | ६  | २२ | ३७ | ५३ | ८  | २४ | ३९ | ५५ | ७० | ८६ | १०२ | ११८ |
| पल      | ७  | ३९ | १० | ४२ | ५३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ६०  | ९१  |
| विपल    | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०  | ३० | ०   | ३०  |
| नक्षत्र | ३९ | १० | ३१ | २  | १३ | २४ | ५  | १६ | २७ | ९  | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ६४ | ७५  | ८६  |
| लग्न    | ०  | १० | २० | ३  | १३ | २३ | ६  | १६ | २६ | ९  | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ६९  | ७९  |
| अंश     | ९  | २  | ३  | ६  | १० | १  | ४  | ५  | १० | ०  | ४  | ७  | १० | १  | ५  | ९   | १३  |



( १०६ )

ज्योतिषसार ।

वर्षप्रमाण ।

जन्मतोगर्भाधानाद्वा पंचमाब्दात्परंशुभम् ॥

कुमारीवरणंदानं मेखलाबंधनंतथा ॥

टीका—जन्म होनेसे अथवा गर्भधारणसे पंचम वर्ष उपरांत कन्याका वरना अथवा दान और व्रतबंध उत्तम जानिये ॥

गुरुचंद्रबल ।

स्त्रीणांगुरुबलंश्रेष्ठं पुरुषाणांरवेर्बलम् ॥

तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेणभाषितम् ॥

टीका—स्त्रियोंको गुरुका बल और पुरुषोंको रविका और दोनोंको चंद्रमाका बल गर्गमुनिने श्रेष्ठ कहाहै ॥ १ ॥

गुरुकाबल ।

नष्टात्मजाधनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विता हतधवा सुभगा

विपुत्रा ॥ स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्या वंध्याभवेत् सुर-

गुरौक्रमशोभिजन्म ॥

टीका—जो कन्याके जन्मस्थानमें बृहस्पति होय तो विवाहके अनंतर बालकोंकी मृत्यु होय, द्वितीयमें धनवती, तृतीयमें विधवा, चतुर्थमें व्यभिचारिणी; पंचममें पुत्रवती; षष्ठमें पतिनाश, सप्तममें सौभाग्यवती, अष्टममें पुत्रहीन, नवममें पतिप्रिया, दशममें बालकनाश और एकादशमें पति धनाढ्य, द्वादशमें बांझ, ऐसे क्रमसे फल जानिये ॥

गुरुअनुकूलकरनेकाविचार ।

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजयाशुभदोगुरुः ॥

विवाहेच चतुर्थाष्टद्वादशस्थोमृतिप्रदः ॥

टीका—जन्मस्थ तृतीय षष्ठ और दशमस्थानी गुरु नेष्टहै परंतु पूजा करनेसे शुभ फलदायक होताहै और चौथा अष्टम द्वादशस्थ मृत्यु करताहै ये विचार विवाहमें देखना उचित है ॥

अष्टमैत्रीज्ञानम् ।

वर्णोवश्यंतथातारा योनिर्ग्रहगणौतथा ॥

भकूटनाडिमैत्रीचइत्येताश्चात्रमैत्रिकाः ॥

टीका—वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह गण भकूट नाडी और मैत्री आदि आठनको शुद्ध विवाहमें विचार लेना योग्य है ॥

वर्गादिकोंका ज्ञान ।

मीनालिकर्कटाविप्रानृपाः सिंहाजधन्विनः ॥ कन्यानक्रवृषा  
वैश्याशूद्रायुग्मतुलाघटाः ॥ वश्यांका ॥ द्वंद्वचापघटकन्य-  
कातुलामानवाअजवृषौचतुष्पदौ ॥ कर्कमीनमकराजलोद्भ-  
वाः केसरीवनचरालिकीटका ॥

वश्यावश्यज्ञानमाह ।

हित्वानृगेंद्रनरराशिगते च वश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्चभक्ष्याः ॥

सर्वेपिसिंहस्यवशोविनालि ज्ञेयं नराणांव्यवहारतोऽन्यत् ॥

इन तीनों श्लोकोंकी टीका चक्रसे यथाक्रमसे समझ लेना ।

ताराबलम् ।

कन्यर्क्षाद्वरभयावत्कन्याभंवरभादपि ॥

गणयेन्नवभिः शेषेत्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

टीका—वधूनक्षत्रसे वरनक्षत्रतक जो नक्षत्र संख्यामें होंय तामें नवके अंकका भाग देय जो शेष तीन आवें तो अथवा पाँच—सात रहैं तो अशुभ और सब शुभ होतेहैं—ऐसेही वरनक्षत्रसे वधूनक्षत्रतक गिनके पूर्ववत् प्रमाण लिखे अनुसार जानना ॥

योनि ।

अश्वोगजइच्छागसर्पौसर्पश्वानविडालकाः ॥ मेषोविडालकश्चै  
वमूषकोमूषकश्चगौः ॥ महिषीचततोव्याघ्रोमहिषोव्याघ्रकं  
क्रमात् ॥ मृगोमृगस्तथाश्वाचकपिर्नकुलएवच ॥ नकुलोवा-  
नरस्सिंहस्तुरगोमृगराट्पशुः ॥ अघोरेणक्रमेणैव अश्विन्या-  
दिभयोऽनयः ॥ वैरयोनि ॥ गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषं श्वेणंच  
बभ्रूरंगं वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरु ॥ लोकानां

व्यवहारतो न्यदपितज्ज्ञात्वा प्रयत्नादिदंदंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि  
 सदावर्ज्यशुभस्यार्थिभिः ॥ राश्यधिप ॥ मेषवृश्चिकयोर्भौमः  
 शुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ कन्यामिथुनयोः सौम्योगुरुस्तुधनमी-  
 नयोः ॥ शनिर्नक्रस्यकुंभस्यकर्कस्यैवतुचंद्रमाः ॥ सिंहस्या-  
 धिपतिः सूर्यःकथितोगणकैःक्रमात् ॥ गण ॥ अनुराधामृगो  
 श्विस्तुश्रवणोदितिपुष्यके ॥ स्वातीहस्तोरेवती च नवदेव-  
 गणाःस्मृताः ॥ पूर्वात्रयंरोहिणी च उत्तरात्रयमेवच ॥ आर्द्रा  
 तुभरणीचैवनवैते मानुषागणाः॥आश्लेषाशतभिष्मूलविशाखाः  
 कृत्तिकामघा ॥ चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसागणाः ॥

### अंत्यनाडी ।

कृत्तिकारोहिणी स्वाती मघाश्लेषाचरेवती ॥  
 श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वंत्यनाडिका ॥

### मध्यनाडी ।

पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा धनिष्ठाभरणीमृगाः ॥  
 पूर्वाषाढानुराधाच पुष्योहिर्बुध्न्यमेवच ॥

### आद्यनाडी ।

पूर्वाभाद्रपदामूलं ज्येष्ठाहस्तःपुनर्वसुः ॥ अश्विन्यार्द्राशतभि-  
 क्चोत्तरात्वेकनाडिका ॥ अश्विनीभरणी कृत्तिकापादंमे-  
 षः ॥ कृत्तिकात्रयंरोहिणी मृगशिरार्द्धवृषभः ॥ मृगशिरार्द्ध  
 मार्द्रापुनर्वसुत्रयं मिथुनः ॥ पुनर्वसोःपादंपुष्य आश्लेषांतं-  
 कर्कटकः ॥ मघापूर्वा उत्तरापादं सिंहः ॥ उत्तरात्रयं हस्तचि-  
 त्तार्द्धं कन्या ॥ चित्रार्द्धंस्वातीविशाखात्रयस्तुला ॥ विशाखा  
 पादअनुराधा ज्येष्ठांतं वृश्चिकः॥मूलपूर्वाषाढा उत्तराषाढापादं  
 धनुः ॥ उत्तराषाढात्रयं श्रवण धनिष्ठार्धं मकरः ॥ धनिष्ठार्द्धं  
 शततारका पूर्वाभाद्रपदत्रयः कुंभः ॥ पूर्वाभाद्रपदापाद  
 उत्तराभाद्रपदा रेवत्यंतमीनः ॥

## भाषाटीकासमेत ।

( १०९ )

टीका—सवा दो नक्षत्र एक राशि भोगतेहैं इस प्रमाणसे द्वादश राशिके भोगका क्रम और अंत्य—मध्य—आदिनाडीका क्रम चक्रसे प्रतीत होगा ॥

| राशिअनुसार घटितमान |          |         |        | नक्षत्रअनुसार घटितमान |         |         |        |       |
|--------------------|----------|---------|--------|-----------------------|---------|---------|--------|-------|
| राशि               | वर्ण     | वश्य    | स्वामी | नक्षत्र               | योनि    | वैरयोनि | गणः    | नाडी  |
| मेष                | क्षत्रिय | चतुष्पद | भौम    | अश्विनी               | अश्व    | भैस     | देव    | आद्य  |
| वृषा               | वैश्य    | चतुष्पद | शुक्र  | भरणी                  | गज      | सिंह    | मनुष्य | मध्य  |
| मिथुन              | शूद्र    | मानव    | बुध    | कुत्तिका              | मेंढा   | वानर    | राक्षस | अंत्य |
| कर्क               | विप्र    | जलचर    | चंद्र  | रोहिणी                | सर्प    | नौला    | मनुष्य | अंत्य |
| सिंह               | क्षत्रिय | वनचर    | रवि    | मृग                   | सर्प    | नौला    | देव    | मध्य  |
| कन्या              | वैश्य    | मानव    | बुध    | आर्द्रा               | श्वान   | हरिण    | मनुष्य | आद्य  |
| तूल                | शूद्र    | मानव    | शुक्र  | पुनर्वसु              | मार्जार | मूसा    | देव    | आद्य  |
| वृश्चिक            | विप्र    | कीटक    | भौम    | पुष्य                 | मेंढा   | वानर    | देव    | मध्य  |
| धनु                | क्षत्रिय | मानव    | गुरु   | आश्लेषा               | मार्जार | मूसा    | राक्षस | अंत्य |
| मकर                | वैश्य    | जलचर    | शनि    | मघा                   | मूसा    | मार्जार | राक्षस | अंत्य |
| कुंभ               | शूद्र    | मानव    | शनि    | पूर्वा                | मूसा    | मार्जार | मनुष्य | मध्य  |
| मीन                | ब्राह्मण | जलचर    | गुरु   | उत्तरा                | गौ      | व्याघ्र | मनुष्य | आद्य  |
|                    |          |         |        | हस्त                  | भैस     | अश्व    | देव    | आद्य  |
|                    |          |         |        | चित्रा                | व्याघ्र | गाय     | राक्षस | मध्य  |
|                    |          |         |        | स्वाती                | भैस     | अश्व    | देव    | अंत्य |
|                    |          |         |        | विशाखा                | व्याघ्र | गाय     | राक्षस | अंत्य |
|                    |          |         |        | अनुराधा               | हरण     | श्वान   | देव    | मध्य  |
|                    |          |         |        | ज्येष्ठा              | मृग     | श्वान   | राक्षस | आद्य  |
|                    |          |         |        | मूल                   | श्वान   | हरिण    | राक्षस | आद्य  |
|                    |          |         |        | पूर्वाषाढा            | वानर    | मेंढा   | मनुष्य | मध्य  |
|                    |          |         |        | उत्तराषा              | मुंगस   | सर्प    | मनुष्य | अंत्य |
|                    |          |         |        | अभिजित्               | नकुल    | सर्प    | मनुष्य | अंत्य |
|                    |          |         |        | श्रवण                 | वानर    | मेंढा   | देव    | अंत्य |
|                    |          |         |        | धनिष्ठा               | सिंह    | गज      | राक्षस | मध्य  |
|                    |          |         |        | शततारका               | अश्व    | भैस     | राक्षस | आद्य  |
|                    |          |         |        | पूर्वाभाद्रप          | सिंह    | सिंह    | मनुष्य | अंत्य |
|                    |          |         |        | उत्त.भाद्र            | पशु     | व्याघ्र | मनुष्य | मध्य  |
|                    |          |         |        | रेवती                 | गज      | सिंह    | देव    | अंत्य |

## नवपंचक ।

मीनालिभ्यांयुतेकीटे कुंभेमिथुनसंयुते ॥

मकरेकन्यकायुक्ते नकुर्व्यान्नवपंचके ॥

टीका—मीनसे नवके अंतरपर वृश्चिक राशि है और वृश्चिकसे मीन पाँचमी, इसी प्रकार कर्क मीनका और वृश्चिकका कुंभ मिथुन मकर कन्या इन दो २ राशियोंके नवपंचक होतेहैं वे वर्जितहैं ॥

## मृत्युषडष्टक ।

मेषकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा ॥ युग्माल्योस्तुबुधैर्ज्ञेयो

मृत्युवैनक्रसिंहयोः ॥ कुंभकर्कटयोश्चैव वृषकोदंडयोस्तथा ॥

टीका—मेष और कन्या ये परस्पर छठे और आठमें होंय इसी रीतिसे तुला और मीन मिथुन वृश्चिक मकर, सिंह कुंभ, कर्क वृषभ, इन दो दो राशियोंको मृत्युषडष्टक कहाता है सो वर्जित है ॥

## प्रीतिषडष्टक ।

सिंहोमीनयुतश्चैव तुलावृषयुतातथा ॥ धनुःकर्कयुतंचैव कुंभ

कन्यकयोस्तथा ॥ नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योःप्रीतिरुत्तमा

टीका—सिंह मीन, तुला वृष, कुंभ कन्या, मकर मिथुन, मेष वृश्चिक, धनु कर्क, इन दोदो राशियोंका प्रीतिषडष्टक होताहै सो शुभहै ॥

## द्विर्द्वादश ।

मेषझषौवृषमिथुनौ कर्कहरीतुलकन्यके ॥

अलिधनुषीमकरकुंभावेतौ द्विर्द्वादशेराशी ॥

टीका—मेष, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुल, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर कुंभ, ये दो २ राशि द्विर्द्वादशहैं ॥

चतुर्थदशमतृतीयएकादशउभयसप्तम ।

चतुर्थदशमश्चैव तृतीयैकादशःशुभः॥

उभयः सप्तमः साम्यमेकक्षशुभमुच्यते ॥

टीका—बधू और वरकी परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश होयतो शुभ और दोनों सतम सम होय अथवा एकनक्षत्र होयतो शुभ जानिये

### वश्यावश्ययोजना ।

सिंहविना नृणां सर्वैवश्या भक्ष्याश्च तोयजाः ॥

सिंहस्य वश्यास्त्यक्त्वालिं सर्वेण व्यवहारिकः ॥

टीका—सिंहके विना समस्त चतुष्पद मनुष्योंके वशमें हैं और जल-जंतु भक्ष्य हैं और वृश्चिकको छोडके सिंहके सब वश होते हैं, शेष राशियोंमें भक्ष्याभक्ष्यको वर्जित करि वश्यावश्य व्यवहारसे जानिये ॥

### ग्रहोंका शत्रुत्वसमत्वमित्रत्व ।

शत्रूमंडसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषारवेस्तीक्ष्णांशुहिं-  
मरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ॥ जीवेदूष्णकराः कु-  
जस्य सुहृदो ज्ञोरिः सिताकीं समौ मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः  
शत्रुः समाश्चापरे ॥ गुरोः सौम्यसितावरी रवि सुतो मध्योपरेत्व  
न्यथासौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुह्यशुक्रस्य शेषावरी ॥ शु-  
क्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य त्वन्ये रवेर्ये प्रोक्ताः सुहृद-  
द्विकोणभवनात्ते मीमया कीर्तिताः ॥

| नाम   | रवि                | चन्द्र               | भौम                 | बुध             | गुरु                | शुक्र           | शनि              |
|-------|--------------------|----------------------|---------------------|-----------------|---------------------|-----------------|------------------|
| शत्रु | शनि<br>शुक्र       | ०                    | बुध                 | चन्द्र          | बुध<br>शुक्र        | सूर्य<br>चन्द्र | रवि चंद्र<br>भौम |
| सम    | बुध                | शुक्र गुरु<br>भौम श. | शुक्र<br>शनि        | भौम गुरु<br>शनि | शनि                 | गुरु<br>मंगल    | गुरु             |
| मित्र | चंद्र गुरु<br>मंगल | रवि<br>बुध           | चंद्र गुरु<br>सूर्य | सूर्य<br>शुक्र  | सूर्य चंद्र<br>मंगल | बुध<br>शुक्र    | बुध<br>शुक्र     |

( ११२ )

ज्योतिषसार ।

## मार्तण्डमतसेगुणोंकामिलाना ।

## वर्णकेगुण

दोनोका एक वर्ण अथवा  
वर्ण उच्च होय तो शुभ ।

## वश्यकागुण

वैरभक्ष्येगुणाभावाद्द्वयोः सौम्येगुण  
द्वयं ॥ वश्यवैरेगुणश्चैको वशभक्ष्ये  
गुणाद्धकम् ॥ १ ॥

टी०शत्रु और भक्ष्यमें गुण शून्य० एकज  
तिमें गुण २ वश्य और वैरमेंगुण १ वश्य  
और भक्ष्यमें गुणअर्द्ध ॥ १ ॥

## वरोकावर्ण

|            |          | ब्रा.क्ष० | वैश्य | शूद्र | चतुष्पद | २ | ॥ | १ | ० | २ |
|------------|----------|-----------|-------|-------|---------|---|---|---|---|---|
| वश्यकावर्ण | ब्राह्मण | १         | ०     | ०     | मानव    | ॥ | २ | ० | ० | ० |
|            | क्षत्रिय | १         | १     | ०     | जलचर    | १ | ० | २ | २ | २ |
|            | वैश्य    | १         | १     | १     | वनचर    | ० | ० | २ | २ | ० |
|            | शूद्र    | १         | १     | १     | कीटक    | १ | ० | १ | ० | २ |

## ताराकेगुण ।

एकतोलभ्यते ताराशुभा चैवाशुभान्यतः ॥

तदासाद्गौगुणश्चैकस्ताराशुद्धौमिथस्त्रयः ॥

उभयोर्नशुभातारातदा शून्यंसमादिशेत् ॥

टीका-एककी शुभ और एककी अशुभ तारा होय तो गुणडेढ १ ॥  
और दोनोंकी एकतारा अथवा शुभतारा होय तो गुण ३ और जो  
दोनोंकी अशुभ होय तो गुण शून्य जानिये ॥

| नारा | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  |
|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १    | ३  | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | ३  |
| २    | ३  | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | ३  |
| ३    | १॥ | १॥ | ०  | १॥ | ०  | १॥ | ०  | १॥ | १॥ |
| ४    | ३  | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | ३  |
| ५    | १॥ | १॥ | ०  | १॥ | ०  | १॥ | ०  | १॥ | १॥ |
| ६    | ३  | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | ३  |
| ७    | १॥ | १॥ | ०  | १॥ | ०  | १॥ | ०  | १॥ | १॥ |
| ८    | ३  | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | ३  |
| ९    | ३  | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | १॥ | ३  | ३  |

योगिनीके गुण—महावैरेच वैरेच स्वस्वभावेयथाक्रमात् ॥

मैत्र्ये चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥

टीका—महावैरेका गुण शून्य० दोनोंकी शत्रुताका गुण १ स्वभावके गुण २ दोनोंकी मित्रताका गुण ३ अतिमित्रताके गुण ४ जानिये ॥

|         | अ. | ग. | मे. | स. | श्वा. | मा. | मू. | गौ. | म. | व्या. | ह. | वा. | न. | सिं. |
|---------|----|----|-----|----|-------|-----|-----|-----|----|-------|----|-----|----|------|
| अश्वि   | ४  | २  | २   | ३  | २     | २   | २   | १   | ०  | १     | ३  | ३   | २  | १    |
| गज      | २  | ४  | ३   | ३  | २     | २   | २   | ३   | ३  | १     | २  | ३   | २  | ०    |
| मेष     | २  | ३  | ४   | २  | १     | २   | १   | ३   | ३  | १     | २  | ०   | ३  | १    |
| सर्प    | ३  | ३  | २   | ४  | २     | १   | १   | १   | १  | २     | २  | २   | ०  | २    |
| श्वान   | २  | २  | १   | २  | ४     | २   | १   | २   | २  | १     | ०  | २   | १  | १    |
| मार्जार | २  | २  | २   | २  | २     | ४   | ०   | २   | २  | १     | ३  | ३   | २  | २    |
| मूषक    | २  | २  | १   | १  | १     | ०   | ४   | २   | २  | २     | २  | २   | २  | १    |
| गाय     | १  | २  | ३   | २  | २     | २   | २   | ४   | ३  | ०     | ३  | २   | २  | १    |
| महिषी   | ०  | ३  | ३   | २  | २     | २   | २   | ३   | ४  | १     | २  | २   | २  | ३    |
| व्याघ्र | १  | २  | १   | १  | १     | १   | २   | ०   | १  | ४     | १  | १   | २  | २    |
| हरिण    | ३  | २  | २   | २  | २     | ३   | २   | ३   | २  | १     | ४  | २   | २  | २    |
| वानर    | ३  | ३  | ०   | २  | २     | ३   | २   | २   | २  | १     | २  | ४   | ३  | २    |
| नकुल    | २  | ३  | ३   | ०  | ०     | २   | १   | २   | २  | २     | २  | ३   | ४  | २    |
| सिंह    | १  | ०  | १   | २  | २     | १   | १   | १   | ३  | २     | २  | २   | २  | ४    |



( ११४ )

ज्योतिषसार ।

## ग्रहोंके गुण ।

दोनोंका स्वामी १ और मैत्रीके गुण ५ समशत्रुत्व गुण ० ॥ ० सम शत्रुत्व मित्रत्व गुण ४ शत्रुत्व मित्रत्व गुण १ समत्व गुण २ शत्रुत्व गुण ० ॥ ० इस प्रकार जानिये ॥

## गणोंके गुण ।

दोनोंका गण १ होय तिसके गुण ६ वर देवगण और वधू मनुष्यगण तिसके गुण ६ इससे विपरीत होय तो ५ वर राक्षस गण और वधू देवगण तिसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ॥

## वरके गुण

च मं बु गु ज श

५ ५ ३ ५

वधूकेगुण

५

शु ५

श

|                               |        | वरके गुण |        |        |
|-------------------------------|--------|----------|--------|--------|
|                               |        | देव      | मनुष्य | राक्षस |
| वधूकेगुण                      | देव    | ६        | ५      | १      |
|                               | मनुष्य | ६        | ६      | ०      |
|                               | राक्षस | १        | ०      | ६      |
| नाडीकेगुण ८                   |        |          |        |        |
| भिन्ननाडीकेगुण ८ एकनाडीकेगुण. |        |          |        |        |
|                               |        | वरके गुण |        |        |
|                               |        | आदि      | मध्य   | अंत्य  |
| वधूकेगुण                      | आदि    | ०        | ८      | ८      |
|                               | मध्य   | ८        | ०      | ८      |
|                               | अंत्य  | ८        | ८      | ०      |

## सत्कूटकेगुण ।

टीका—राशि एक भिन्नचरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय एका-दश इनके भिन्नराशि नक्षत्र एक इनके गुण ५ प्रीतिषडष्टक अथवा द्विर्दाश वा नव पंचम इनमें वर दूरत्व योनि शत्रुता होनेपरभी भकूटके गुण ६ होते हैं ॥

## असत्कूटकेलक्षण ।

वर योनि भैत्र व स्त्रीदूरत्व होय तो षडष्टक द्विर्दाशक नवपंचमादि दुष्ट कूटोंके गुण ४ जानिये ॥

योनिसमैत्र व स्त्री दूरत्व इनमेंसे एक होय तो दुष्टकूटका एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एक चरण ॥

|         | मेष | वृष | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
|---------|-----|-----|-----|----|------|----|-----|-----|----|----|------|-----|
| मेष     | ७   | ०   | ७   | ७  | ०    | ०  | ७   | ०   | ०  | ७  | ७    | ०   |
| वृष     | ७   | ७   | ०   | ७  | ७    | ०  | ०   | ७   | ०  | ०  | ७    | ७   |
| मिथुन   | ०   | ७   | ७   | ०  | ७    | ७  | ०   | ०   | ७  | ०  | ७    | ७   |
| कर्क    | ७   | ०   | ७   | ७  | ०    | ७  | ७   | ०   | ०  | ७  | ०    | ०   |
| सिंह    | ०   | ७   | ०   | ७  | ७    | ०  | ७   | ७   | ०  | ०  | ७    | ०   |
| कन्या   | ०   | ०   | ७   | ०  | ७    | ७  | ०   | ७   | ७  | ०  | ०    | ७   |
| तुला    | ७   | ०   | ०   | ७  | ०    | ७  | ७   | ०   | ७  | ७  | ०    | ०   |
| वृश्चि* | ०   | ७   | ०   | ०  | ७    | ०  | ७   | ७   | ०  | ७  | ७    | ०   |
| धन      | ०   | ०   | ७   | ०  | ०    | ७  | ०   | ७   | ७  | ०  | ७    | ७   |
| मकर     | ७   | ०   | ०   | ७  | ०    | ०  | ७   | ०   | ७  | ७  | ०    | ७   |
| कुंभ    | ७   | ७   | ०   | ०  | ७    | ०  | ०   | ७   | ०  | ७  | ७    | ०   |
| मीन     | ०   | ७   | ७   | ०  | ०    | ७  | ०   | ०   | ७  | ०  | ७    | ७   |

इस प्रकार गुणोंका मिलना १८ गुण अधिक शुभ, शून्य अशुभ ॥  
वर्णके फल ।

यास्याद्वर्णाधिकाकन्या भर्तातस्या नजीवति ॥

यदिजीवतिभर्ता तु ज्येष्ठपुत्रोविनश्यति ॥

टीका—कन्याका वर्ण वरसे श्रेष्ठ होय तो उसका पति अथवा ज्येष्ठ पुत्र का नाशहोय ॥

### वैरयोनिकाफल ।

जैसे अश्व और भैंसकी वैरयोनिहै इसी प्रकार वधू और वरकी वैरयोनि विचारनी चाहिये और राजा सेवक इत्यादिभी विचारिये इसमें शुभकी इच्छा वर्जितहै ॥

## गणोंकेफल ।

स्वगणेचोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः ॥

कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम् ॥

टीका—दोनोंका एक गण होय तो उत्तम प्रीति मनुष्य और देवमें मध्यम, देव दैत्यमें कलह, मनुष्य राक्षस गण मृत्यु देताहै ॥

## कूटफल ।

षष्टकेऽपमृत्युःपंचमनवमेऽनपत्यताज्ञेया ॥

द्विर्द्वादशे निधनताशेषेषु मध्यमताज्ञेया ॥

टीका—दोनोंका षडष्टक मृत्युकारक और नवपंचम अनपत्यकारक और द्विर्द्वादश निर्द्धनताकारक शेष मध्यम जानिये ॥

## नाडीफल ।

अग्रनाडीव्यधेभर्तामध्यनाडीव्यधेद्रयम् ॥

पृष्ठनाडीव्यधेकन्याप्रियते नात्रसंशयः ॥

टीका—दोनोंकी अग्रनाडी होय तो भर्ताको बुरा मध्यनाडी दोनोंको अशुभ और अंत्यनाडी कन्याको मृत्युदायक होतीहै ॥

## मध्यनाडी ।

जठरेनिर्द्धनत्वं च गर्भेमरणमेवच ॥

पृष्ठेदौभाग्यमाप्नोति तस्मात्तांपरिवर्जयेत् ॥

टीका—दोनोंकी मध्यनाडी निर्द्धनताका कारण और गर्भनाश और अंत्यनाडी दुर्भागकारक जाननी चाहिये ॥

## ज्योतिःप्रकाशेपार्श्वनाडी ।

निधनंमध्यनाड्यां तु दंपत्योनैव पार्श्वयोः ॥

करग्रहेपृष्ठनाड्यो न निवेइतितद्वचः ॥

टीका—दोनोंकी मध्यनाडी मृत्युप्रद तैसेही पार्श्वनाडी, परंतु विवाहमें पार्श्वनाडी निंदित नहीं, अन्य मतमें क्षत्रियादिकोंको कहीहै ॥

## असत्कूटविचार ।

स्त्री नक्षत्रसे वरनक्षत्र निकट होय तो अशुभ और वरनक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र

दूर होय तो शुभ जो नक्षत्र एक अथवा स्वामी एक होय तो शुभ जानिये.

### राजमार्तंडमतसेदुष्टकूटोंकादान ।

षडष्टकेगोमिथुनंप्रदद्यात्कांस्यं सरूप्यंनवपंचमे च ॥

नाड्यांसुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणं च ॥

टीका—अति आवश्यक विवाहमें वधू और वरके दुष्ट कूटादिकोंके दान षडष्टकमें दो गौ, नवपंचममें रूपा सहित कांसेका पात्र, एकनाडीमें गौ, और द्विर्द्वादशमें अन्न सुवर्ण वस्त्र तथा ब्राह्मणोंका तर्पण इत्यादि कर, नैसे दुष्ट कूटादिक दोष दूर होतेहैं ॥

फक्किा—यस्यवर्णस्ययोनिज्ञानं नोक्तंतस्यजात-  
काऽवलोकनप्रकारो वास्तुप्रकरणेउक्तः॥

टीका—जिस वर्णकी योनिका जानना उक्त नहींहै तिसके जातक देख-  
नेका प्रकार वास्तुप्रकरणमें कहाहै ॥

### विवाहकेउक्तनक्षत्र ।

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवेंदवैः ॥

एतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणांविवाहः शुभदःस्मृतः ॥

टीका—मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा  
मृगशिर ये नक्षत्र स्त्रियोंके विवाहमें निर्दोष और शुभहैं ॥

### एकविंशतिमहादोषः ।

पंचांगशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तितः ॥ उदयास्तशुद्धि-  
रहितोद्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ तृतीयः पापषड्गोभृगुः षष्ठः कु-  
जोष्टमः ॥ गंडांतकर्तरीरिःफषडष्टेदुश्चसंग्रहः ॥ दंपत्योरष्टमं  
लग्नराशौविषघटीतथा ॥ दुर्मुहूर्तोवारदोषः स्वार्जुरीकंसमा-  
भ्रिगम् ॥ ग्रहणोत्पातभंक्रूरविद्धर्क्षंक्रूरसंयुतम् ॥ कुनवांशोमहा  
पातोवैधृतिश्चैकविंशतिः ॥

टीका—प्रथम पंचांग शुद्धि रहित दोष १ उदयास्तशुद्धिरहित २संक्रांति  
दिवस ३ पापग्रहका वर्ग ४ लग्नसे छटा शुक्र ५ लग्नसे अष्टम मंगल ६ लग्नसे

|         |    | रा    | मे | मे | वृ | वृ | वृ | मि | मि | मि | क   | क   | क     | सि | सि | सि | क  | क  |    |
|---------|----|-------|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-------|----|----|----|----|----|----|
|         | भा | १     | १  | ।  | ॥  | १  | ॥  | ॥  | १  | ॥  | ।   | १   | १     | १  | १  | ७  | ॥  | १  |    |
| गशि     | भा | नक्ष  | अ  | भ  | कृ | कृ | रो | मृ | मृ | आ  | पुन | पुन | पुष्य | आ  | म  | पू | उ  | उ  | ह  |
| मेष     | १  | अ     | ३६ | ३३ | ३२ | २४ | २१ | ३२ | २७ | २८ | १९  | २३  | ३१    | २८ | २७ | २१ | ३२ | ११ | १२ |
| मेष     | १  | भ     | ३४ | ३६ | ३४ | ३१ | २२ | १७ | १९ | ३६ | २७  | ३१  | ३३    | २५ | ३२ | २७ | ३२ | २१ | २० |
| मेष     | ।  | कृ    | ३२ | ३२ | ३६ | ३३ | १० | १६ | २० | २२ | २१  | २५  | २२    | २३ | २६ | २६ | १५ | १५ | १५ |
| वृषभ    | ॥  | कृ    | १८ | १८ | ३६ | ३६ | ३४ | ३२ | २५ | २५ | २५  | २३  | २४    | २० | १८ | ३१ | ३१ | २८ | २८ |
| वृषभ    | १  | रो    | २३ | २७ | १३ | १४ | ३६ | ३७ | ३५ | ३२ | २९  | २५  | २८    | १२ | १० | २४ | २७ | ३४ | ३४ |
| वृषभ    | ॥  | मृ    | २४ | ११ | ११ | ३३ | ३६ | ३६ | ३५ | २३ | २९  | २६  | २०    | २२ | १८ | २५ | २५ | ३१ | ३४ |
| मिथुन   | ॥  | मृ    | २८ | २९ | २३ | २७ | ३५ | ३६ | ३५ | ३४ | ३१  | १०  | १३    | १० | २२ | १८ | २९ | ३१ | ३२ |
| मिथुन   | १  | आ     | २० | १८ | २३ | ३३ | ३२ | ३३ | ३४ | ३४ | ३३  | ३४  | ३३    | ३३ | १५ | २३ | २१ | २४ | २४ |
| मिथुन   | ॥  | पुन   | ३० | २७ | २३ | २७ | ३० | ३१ | ३० | ३४ | ३४  | ३४  | २३    | १६ | २१ | १५ | २० | २३ | २७ |
| कर्क    | ।  | पुन   | २३ | २९ | २५ | २२ | २५ | २६ | ३० | १६ | ३३  | ३४  | ३४    | ३२ | २६ | २२ | १८ | १८ | १८ |
| कर्क    | १  | पुष्य | ३० | २४ | २७ | २४ | २० | १९ | १३ | २८ | २३  | २४  | ३६    | ३४ | २५ | ३१ | २० | १६ | २६ |
| कर्क    | १  | आ     | २६ | २६ | २२ | १३ | १२ | २० | ३७ | १५ | १५  | ३२  | ३४    | ३४ | २० | १४ | २१ | २० | २० |
| सिंह    | १  | म     | २२ | २८ | ३१ | १७ | १० | १८ | २७ | २२ | २०  | २२  | २५    | २२ | ३६ | ३६ | ३२ | २८ | १५ |
| सिंह    | १  | पू    | २६ | २७ | २२ | २० | २४ | १६ | १९ | २८ | २६  | २१  | ३३    | १९ | ३६ | ३६ | ३४ | ३० | २१ |
| सिंह    | ।  | उ     | १७ | ३२ | ३२ | २० | २६ | २५ | २८ | २० | २०  | २३  | ३१    | ३१ | ३२ | ३४ | ३६ | ३३ | १५ |
| कन्या   | ॥  | उ     | १३ | २२ | १६ | ३४ | ३४ | ३२ | ३१ | २३ | २३  | २०  | २८    | २२ | २३ | ३१ | ३४ | ३५ | ३५ |
| कन्या   | १  | ह     | १३ | २० | २७ | २८ | ३३ | ३४ | ३३ | २२ | २३  | २०  | २८    | २३ | २७ | २८ | २० | ३५ | ३६ |
| कन्य.   | ॥  | चि    | १४ | ७  | २० | ३१ | २८ | २० | १९ | २६ | १७  | २३  | ३३    | २७ | २९ | २५ | १७ | ३० | ३३ |
| तुला    | ॥  | चि    | २३ | १६ | १९ | २७ | २१ | १३ | २० | २७ | ३५  | २२  | १३    | ३१ | २५ | ११ | १७ | १० | ३४ |
| तुला    | १  | स्वा  | २० | १९ | १७ | १२ | १५ | २७ | ३४ | ३३ | ३७  | २२  | २८    | १५ | १२ | २७ | २५ | २६ | ३४ |
| तुला    | ॥  | वि    | २२ | २७ | २३ | १६ | ११ | ९  | ३५ | ३० | २१  | २३  | २२    | २९ | १७ | १९ | १७ | १८ | २५ |
| वृश्चिक | ।  | वि    | १७ | २५ | १५ | २० | १५ | २३ | १३ | १३ | १३  | २०  | २०    | ११ | ११ | २३ | ११ | १८ | १९ |
| वृश्चिक | १  | अ     | २७ | १९ | ११ | २७ | २८ | २१ | १८ | १६ | २०  | १७  | ११    | २१ | २४ | २० | २८ | २५ | २० |
| वृश्चिक | १  | ज्ये  | १२ | १९ | २७ | २१ | २३ | १३ | ३  | ५  | ११  | २१  | २६    | २३ | २० | १५ | १२ | १२ | १२ |
| धन      | १  | मू    | २८ | २८ | ३३ | २० | १४ | १४ | १३ | १३ | १०  | १९  | २६    | ३२ | २६ | १७ | १६ | १३ | ३३ |
| धन      | १  | पू    | ३४ | ३६ | ३७ | १५ | २० | १२ | १९ | २७ | २७  | २७  | २७    | २७ | ३३ | ३२ | ३२ | २० | २० |
| धन      | ।  | उ     | ३२ | ३३ | ३४ | १६ | ११ | १८ | २४ | २७ | २७  | २७  | २७    | २७ | १० | २३ | ३२ | १२ | १८ |
| मकर     | ॥  | उ     | २८ | २८ | १५ | २६ | १३ | २९ | २१ | १३ | १३  | २८  | २८    | १४ | १६ | २० | २० | २७ | २७ |
| मकर     | १  | श्र   | २८ | २७ | २५ | २१ | २१ | ३४ | २५ | २२ | २३  | २८  | २८    | १५ | १३ | १८ | १९ | २६ | २७ |
| मकर     | ॥  | ध     | २१ | १२ | २६ | ३१ | २८ | २० | ११ | १८ | १६  | २०  | १२    | २६ | २६ | १५ | १२ | १० | २० |
| कुंभ    | ॥  | ध     | ३१ | १२ | २६ | ३१ | २८ | २० | १२ | १९ | १३  | १४  | १६    | २० | २५ | ११ | १८ | १७ | २९ |
| कुंभ    | १  | श     | १६ | २२ | २८ | २२ | २६ | २८ | २० | १२ | १२  | ८   | १५    | २१ | २५ | १९ | ११ | ७  | १० |
| कुंभ.   | ॥  | पू    | १९ | २६ | २० | ३४ | ३२ | २७ | १७ | १७ | १३  | २१  | १४    | १९ | २१ | २६ | २२ | १५ | १५ |
| मीन     | ।  | पू    | २१ | २९ | २३ | २३ | २७ | २७ | २७ | २७ | १८  | १७  | २६    | ७  | ३० | २३ | १४ | १८ | १८ |
| मीन     | १  | उ     | ३१ | ३३ | ३१ | ३१ | २७ | ११ | ११ | २७ | २८  | २६  | ११    | २० | २० | २५ | २५ | १९ | २८ |
| मीन     | १  | रे    | ३२ | ३० | १८ | १८ | २७ | २७ | २६ | २६ | १७  | १३  | १३    | १० | २२ | २२ | २६ | ०  | ०  |

| क   | कु  | तु   | तु  | वृ  | वृ  | वृ   | ध   | ध   | ध   | म   | म   | म   | कुं | कुं | कुं | मी  | मी  | मी  | ०  |
|-----|-----|------|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| ॥   | ॥   | १    | ॥॥  | ।   | १   | १    | १   | १   | ।   | ॥॥  | १   | ॥   | ॥   | १   | ॥॥  | ।   | १   | १   | ०  |
| वि  | वि  | स्वा | वि  | वि  | अ   | ज्ये | मू  | पू  | उ   | उ   | अ   | ध   | ध   | श   | पू  | पू  | उ   | रे  | ०  |
| २४  | २२॥ | २२   | २३॥ | १९॥ | २४  | १५   | २१  | ३२  | ३१  | ३६  | २७  | २१  | २१  | १६  | १०  | २२  | ३१  | ३४  | १  |
| ५   | १३॥ | १९॥  | २२॥ | १८॥ | ३५॥ | १९॥  | ३४  | २६  | ३४  | २८॥ | २७॥ | ११  | ११  | २७  | २५  | ३०॥ | २४  | ३२  | ३  |
| १९॥ | २७॥ | १५॥  | १९॥ | १६॥ | १८  | २५॥  | ३३  | ३८॥ | २०  | १४॥ | २४  | २५  | २६  | २७  | २०  | २५॥ | २६॥ | १०॥ | ३  |
| २८  | २०  | ७॥   | १२॥ | २०॥ | १६॥ | ३०॥  | २२॥ | २३॥ | १॥  | १४  | २०॥ | ३१॥ | ३०॥ | ३१॥ | २४॥ | २३॥ | २३॥ | १४  | ४  |
| ३४  | १७  | १३॥  | ६॥  | १४  | २९॥ | २४॥  | १५  | ३१  | १२॥ | १८  | २६  | ३४॥ | २३  | ३१॥ | ३१  | २८  | २८  | ३०  | ५  |
| २७  | १०  | ३०   | १५॥ | २३॥ | २१॥ | २५॥  | १६  | १२  | १८  | २३॥ | ३४  | २१  | २०  | २८  | २०॥ | २७  | २१  | २८  | ६  |
| २१  | २१  | ३४   | ३४॥ | २४  | ११  | १५॥  | २३  | ११  | १८  | २१॥ | २६  | १३  | १४  | २९  | २८॥ | २७  | २९  | २८  | ७  |
| ३४  | ३४  | ३४   | ३४  | २१॥ | १७  | ४    | १४  | २८  | २८  | २४॥ | २९  | १९  | २०  | १३  | ८   | २०॥ | २८  | २८  | ८  |
| २७॥ | २७॥ | ३४   | २१  | १६॥ | २१॥ | ७    | १५  | २७  | २७  | २३॥ | २४॥ | १८  | ११॥ | १४  | १०  | १९  | २८  | २८  | ९  |
| २२॥ | २२  | २८   | २३  | २१  | १६  | ११॥  | १०॥ | २३॥ | २६  | २६  | २७  | २१  | १४  | ८॥  | ११॥ | २०  | २६  | २५  | १० |
| १२॥ | १२  | २७   | २२॥ | २१  | १८  | ११   | १९॥ | १७॥ | २२॥ | २६  | २७  | २३  | ६   | १५  | १०॥ | ८   | २८  | २७  | ११ |
| २७॥ | २७  | ६    | १०  | १६॥ | २०  | २६   | २५  | १७॥ | ९॥  | २३॥ | २३  | २६  | ९   | २०  | १३  | २४  | ३१  | १३  | १२ |
| २८॥ | २४॥ | १०   | १९  | ३२॥ | २४॥ | ३२   | ३२॥ | १६॥ | १७  | ४   | ४   | १९  | २४॥ | २४॥ | १८  | १८  | १८  | ११॥ | १३ |
| १४  | १६॥ | २४॥  | १८॥ | २४॥ | २२॥ | ३३॥  | ३२॥ | ३४॥ | ३२॥ | १९  | १८  | ५   | ९   | ११॥ | २४॥ | २४॥ | १६  | २४  | १४ |
| १९॥ | १५॥ | २५॥  | १५  | २१॥ | ३०॥ | २२॥  | २३  | २२॥ | ३२॥ | १९॥ | १९  | १२  | १६॥ | १०॥ | १०॥ | १५  | २६  | २८  | १५ |
| ३०  | २०॥ | ३०॥  | २२॥ | १८  | १७  | १३   | २४  | ११॥ | १९॥ | २६  | २६  | १८  | १६  | १९॥ | ११  | १८  | ३०  | २८  | १६ |
| ३३  | २६  | २२॥  | २४॥ | २०  | २७  | १४   | १५  | २७  | २६॥ | २५  | २६  | २१  | १७  | १८॥ | १३  | १८  | ३०  | २८  | १७ |
| ३४  | ३३  | २६   | ३०॥ | २७  | ११  | १५   | २६  | १२  | २२  | १८॥ | १९  | १८  | १९  | २२॥ | १७  | २८  | १२  | १२  | १८ |
| ३४  | ३४  | ३२॥  | ३२॥ | २२॥ | ७॥  | ११॥  | २१  | १२  | १२  | २६॥ | २६  | २४  | २४  | २८॥ | २४  | २४  | ५   | ५   | १९ |
| २८  | ३६  | ३३   | ३३  | ३३  | २०॥ | २७॥  | २३  | २७  | १८  | २३॥ | २४  | २७  | २७  | १८  | ३४  | २०  | २१  | १३  | २० |
| ३२॥ | ३२॥ | ३३   | ३४  | २६  | १७॥ | २१॥  | २६  | २०  | १४  | १८॥ | १६  | ३०  | ३०  | ३१  | २०  | १५॥ | १४॥ | ७   | २१ |
| २६  | १९॥ | २६॥  | २६  | ३२  | ३३  | ३५॥  | २०॥ | २३  | १७॥ | १३  | १५॥ | २४॥ | २४॥ | २५॥ | ११॥ | २५  | १५  | १९॥ | २२ |
| १२  | ८   | ३२   | १८  | ३३  | ३४  | ३४   | २४  | ३२॥ | ३०॥ | २६  | ३१  | २६  | ११  | २१  | २४॥ | २१  | २५  | २४  | २३ |
| २५  | २१॥ | १६॥  | २१॥ | २१॥ | ३६  | ३६   | २१  | २५  | २५  | २१॥ | २५॥ | १९॥ | २४॥ | २६  | १०॥ | १६॥ | २८  | २८  | २४ |
| २७  | २७  | २६   | २७  | ३१॥ | १६॥ | २४   | ३४  | ३५  | ३२॥ | २२॥ | २२॥ | ३०॥ | २७  | २०॥ | १३॥ | १६  | २६  | २८  | २५ |
| १२  | १८  | १९   | २६  | ३१॥ | १४॥ | ३२॥  | ३४  | २६  | ३४  | २४  | ३४  | १६॥ | १३  | २३॥ | २७  | ३०  | १७  | ३२॥ | २६ |
| २१  | १७  | १९   | १९  | २३॥ | ३२  | ३२॥  | ३२॥ | २४  | ३६  | ३५  | २६  | ३२  | ३३  | २२॥ | २९॥ | ३२॥ | ३२॥ | २४  | २७ |
| १७  | ३१॥ | ३१॥  | २३॥ | १९॥ | २७  | २२   | २८  | २५  | ३३  | २६  | ३४  | ३२  | २१  | १८॥ | ३१॥ | ३०  | ३०  | २२  | २८ |
| २०  | २७  | २२॥  | १७॥ | १४  | २७  | २३   | १९॥ | २८  | २७  | ३४  | ३६  | ३४  | ३६  | १९॥ | २१॥ | २७  | २९॥ | २२॥ | २९ |
| १७  | २४  | २९   | ३०॥ | २७  | १३  | २७   | २४॥ | ९॥  | १८  | ३२  | २७  | ३४  | ३२  | २५  | २५  | ३४  | १४  | २२॥ | ३० |
| १७  | २५  | २७   | ३१॥ | २६  | १२  | २६   | २२॥ | १५॥ | २४॥ | २६॥ | १९  | ३१  | ३४  | ३३  | ३२॥ | १७॥ | ८   | १५॥ | ३१ |
| २५  | ३३  | २८   | २३  | २७  | ३१  | १९   | ३२॥ | २४  | २४  | २६  | १०  | १५  | ३३॥ | २६  | ३१  | १८  | १०॥ | २०॥ | ३२ |
| १७॥ | ३१  | ३३   | ३३  | २७॥ | १७॥ | ३४   | १६॥ | १९॥ | ३०॥ | ३२॥ | २१॥ | १८॥ | ३२  | ३३  | ३४  | ३४  | ३४  | २१॥ | ३३ |
| २०  | १३  | २०॥  | १८॥ | २७  | २६  | २३   | २३॥ | ३०॥ | ३१  | २९॥ | ३०॥ | ३१॥ | १३॥ | १०  | १७॥ | ३४  | ३३  | ३०॥ | ३४ |
| ११  | ५   | २१   | १३॥ | २६  | १९  | ३४   | ३१॥ | २३॥ | ३१॥ | २१॥ | २३॥ | २२  | ८॥  | १७  | २०  | ३३  | ३६  | ३५  | ३५ |
| २२  | १८  | १२   | ८   | १८॥ | २७  | २९   | २८  | २०  | ३२॥ | २०॥ | २३  | २९॥ | १५॥ | १७॥ | २०॥ | ३०॥ | ३४  | ३६  | ३६ |

( १२० )

ज्योतिषसार ।

६।८।१२ चंद्र ७ त्रिविध गंडांत समय८कर्त्तरी ९ लग्नमें चंद्र और पापग्रह  
१० वधू वरकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जनीय ११ विषघटिका १२ दुष्ट मुहूर्त्त  
१३ यामार्द्ध आदि १४ लत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७  
पापग्रहोंकरि विद्धनक्षत्र १८ पापग्रहयुक्त १९ पापांश २० संक्रांतिसाम्य.

### कर्त्तरीदोषलक्षण ।

लग्नाच्चंद्राद्वयद्विस्थौपापखेटौ यदातदा ॥ कर्त्तरीवर्जनीया-  
साविवाहोपनयादिषु ॥ नहिकर्त्तरिजोदोषः सौम्ययोर्यदिजा  
यते ॥ शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्त्तरी ॥

टीका—लग्न अथवा चंद्रसे बारहवें और दूसरे स्थानोंमें पापग्रह पडे तो  
कर्त्तरी दोष होताहै इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है, कर्त्तरीदोषभंग  
जो इन्हीं उक्त स्थानोंमें सौम्य ग्रह होय तो अथवा शुभग्रहयुक्त लग्न होय  
तो शुभ और क्रूर ग्रह होय तो कर्त्तरीदोष नहीं होता ॥

### वधूवरकीराशिसेअष्टमलग्न ।

वरवध्वोर्वेटोश्चापि जन्मराशेश्चलग्नतः ॥

त्याज्यमष्टमलग्नस्याद्विवाहव्रतबन्धयोः ॥

टीका—वर वधू और बटु इनकी सबकी जन्मराशि और लग्नसे आठमी  
लग्न विवाह और यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं ॥

### दुष्टमुहूर्त्त ।

तिथ्यंशोदिनमानस्य रात्रिमानस्यचैवहि ॥

मुहूर्त्तः कथितस्तेषुदुर्मुहूर्त्तशुभेत्यजेत् ॥

टीका—दिनमान और रात्रिमान इनका पंद्रहवाँ अंश दुर्मुहूर्त्त होताहै  
सो शुभकार्य में वर्जित है ॥

### यामार्द्धादिकथन ।

सूर्याद्यामदलं दिवैवनिगमाद्यश्वीषुनामात्रिषट्संख्याकंकुलिकंदिवें-  
द्ररविदिङ्नागर्तुवेदद्विकम् ॥ द्वयेकंतंनिशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमु  
ज्झंति तैः कालंकंटकमैनिघंटममरेज्यज्ञास्फुजिद्वयः क्रमात् ॥

टीका—रविवारसे अर्द्धयामार्द्ध कोष्ठकके अंतक प्रवृत्ति निवृत्तिके अंक  
होते हैं क्रमकरिके जानिये और शुभ कर्ममें वर्जित हैं दिनमें दिनमानक

सोलहवां भाग रविवारसे कुलिक कोष्ठकके अंततक अंक होते हैं उनकी कुलिकसंज्ञा है, और शुभकर्ममें वर्जित हैं रात्रिमें एक २ घटाइये किसीके मतमें दिनमानका पंचदशांश वर्जित करके गुरुवारसे कालदोष बुधवारसे कंटक और शुक्रवारसे निघंट ये सब यथाक्रम कुलिकाके समान वर्जितहैं॥

| वार   | * यामार्द्धवटिका ४ |           |          | कुलिक<br>व० २ | काल<br>व० २ | कंटक<br>व० २ | ऐनिघंट<br>व० २ |
|-------|--------------------|-----------|----------|---------------|-------------|--------------|----------------|
|       | संख्या             | प्रवृत्ति | निवृत्ति |               |             |              |                |
| रवि   | ४ था               | १२        | १६       | १४ वा         | ८ वा        | ६ वा         | १० वा          |
| चंद्र | ७ वा               | २४        | २८       | १२ वा         | ६ वा        | ४ था         | ८ वा           |
| मंगल  | २ रा               | ४         | ८        | १० वा         | ४ था        | २ रा         | ६ वा           |
| बुध   | ५ वा               | १६        | २०       | ८ वा          | २ रा        | १४ वा        | ४ था           |
| गुरु  | ८ वा               | २८        | ३२       | ६ वा          | १४ वा       | १२ वा        | २ रा           |
| शुक्र | ३ रा               | ८         | १२       | ४ था          | १२ वा       | १० वा        | १४ व           |
| शनि   | ६ वा               | २०        | २४       | २ रा          | १० वा       | ८ वा         | १२ वा          |

लत्तादोष-भौमाऽथाकृतिषड्जिनाष्टनखभंहंत्यग्रतोलत्तया  
खेटोऽर्कोऽर्कमितंशशीमुनिमितं पूर्णोनसन्मालवे ॥

टीका-भौम जिस नक्षत्रका होय तिससे तीसरे नक्षत्रमें, लत्ता दोष और बुध जिस नक्षत्रका होय तिससे बाईसवें नक्षत्रमें, गुरुसे छठे नक्षत्रमें, शुक्रसे २४ वें नक्षत्र में और शनिके नक्षत्रसे ८वें नक्षत्रमें, राहुके नक्षत्रसे २० नक्षत्रमें रविके नक्षत्र से १२वें नक्षत्रमें, और चंद्रमा पूर्ण होय तो सातवें नक्षत्रमें लत्ता-दोष होता है; यह दोष मालवदेशमें अशुभ और अन्य देशोंमें शुभ होता है॥  
ग्रहणतथाउत्पातनक्षत्र-यस्मिन्धिष्णयेमहोत्पातोग्रहणवाभवेद्यदि ॥  
तस्मिन्धिष्णयेशुभं कर्म षण्मासवर्जयेद्बुधः ॥

टी० जिसनक्षत्रमेंउत्पातअथवाग्रहणहोयतिसनक्षत्रमेंषट्मासतकशुभकर्मवर्जहै.

पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र ।

श्रुत्यग्निभेभिजिद्वाहये वैश्वेद्वर्क्षेतुरुद्रभे ॥ मूलादित्ये च पुष्ये-

\*एक दिनका यामार्द्ध ८कुलिक १६ वारानुसार जानै परंतु उनमेंसे जिस वारको जो वर्जितहै वह कोष्ठकमें लिखाहै



द्रैमैत्राश्लेषेमर्घांतके ॥ दस्रभामार्यमांत्ये च हस्ताहिबुर्ध्यभेतथा ॥  
चित्राजचरणेस्वातीवारुणे च परस्परम् ॥ वासवेंद्राग्निभेतद्वेधः  
सप्तशलाकजः ॥ त्याज्यःपापोद्भवोयत्नाद्भतबंधादिकर्मसु ॥

टीका—पंच सप्त शलाकाचक्रमें जिस रेखापर जो नक्षत्र होय और उसीमें पापग्रह होय तो वह शुभनक्षत्र विद्धजानिये ॥

### नक्षत्रचरणवेध ।

सप्तपंचशलाकाभ्यां विद्धमेकार्गलेनयत् ॥ लतोपग्रहं  
धिष्ण्यंपादमात्रंशुभेत्यजेत् ॥ वेधमाद्यंतयोरंध्योरन्योन्यं  
द्वितृतिययोः ॥ ऋरैरपित्यजेत्पादंकेचिदूचुर्महर्षयः ॥

टीका—विद्धनक्षत्र एकार्गल और लता उत्पात नक्षत्र इनके चरणमें शुभ ग्रह होय तो वह चरण शुभ कर्ममें वर्जित है प्रथम चतुर्थ द्वितीय तृतीय नक्षत्रके चरण परस्पर विद्धहोते हैं किसीके मतमें पापग्रह विद्ध नक्षत्रोंके चरण वर्जित हैं—एकार्गल दोषो मार्तण्डमते-विष्कंभादि दुष्ट योग रहित दिननक्षत्रसे अभिजित सहित गणनासे विषमनक्षत्रमें सूर्य होय तो एकार्गलदोष होताहै ।

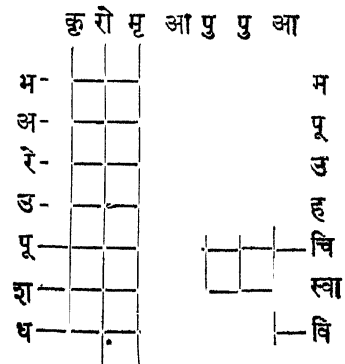
चंडायुध-शूलगंडांतपापानां साध्यहर्षणयोस्तथा ॥

अंत्यंयच्चंद्रभंतस्मिन्नेतच्चंडायुधंनसत् ॥

टीका—शूल गंड व्यतीपात साध्य वैधृति हर्षण योगोंके अंतमें जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

सप्तशलाकाचक्रा ।

पंचशलाकाचक्र



श्रंभि उ पू मृ ज्ये सु

## क्रांतिसाम्य ।

युग्मेधनुःकर्किरलौ च युक्तेकन्या च मीनेवृषनक्रयुक्ते ॥

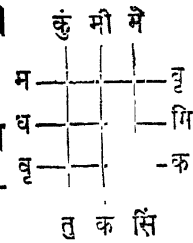
मेषे च सिंहे च घटेतुलायांक्रांति च साम्यंशशिसूर्ययोगे ॥

टीका—धन मिथुन इन लग्नोंके सूर्य और चंद्रमा होय तो क्रांतिसाम्य होय इसी प्रकारसे कर्क वृश्चिक आदि दो २ राशियोंके क्रांतिसाम्यदोष जानिये ॥

चक्रकाक्रम-ऊर्ध्वरेखात्रयं चैवतिर्यग्रेखात्रयंतथा ॥

क्रांतिसाम्यंबुधैर्ज्ञेयमध्ये मीनंतुयोजयेत् ॥

टीका—तीन ऊर्ध्व और तीन आडी रेखा खींचे मध्य भागकी रेखाओंमें तीन २ लग्न क्रमसे लिखे द्वादशलग्नो-  
मंसे दो २ का क्रांतिसाम्य होता है ॥



## यामित्रदोष ।

लग्नेद्रोर्नास्तगः पापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः ॥ तदायामित्रदोषः  
स्यान्नहिन्यूननाधिकांशके ॥ क्रूरोवायदिवासौम्यो लग्नाच्चंद्राच्चखे-  
चरः ॥ एकोपियदियामित्रे समांशेचतदाभवेत् ॥ यामित्रंनप्र-  
शंसन्ति गर्गकश्यपदेवलाः ॥ आयषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदोरविः ॥

टीका—लग्न चंद्र मध्य सप्तम स्थानका पापग्रहशून्य करनेसे उसके तुल्यांश आवें तो यामित्रदोष होय, अधिक वा न्यून हो तो दोष नहीं है ॥ दूसरा पक्ष ॥ लग्नचंद्रसे सप्तमस्थानी शुभग्रह अथवा पापग्रह सम अंश होय तो यामित्र दोष होय, गर्ग कश्यप देवल इन ऋषि मतानुसार यामित्र दोष विवाहमें वर्जित है जो लग्नसे एकादश षष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें सूर्य हो तो यामित्र दोष शुभ और सुखदायक जानिये ॥

चरत्रयदोष—कर्कलग्नेथवामेषे घटांशोयदिदीयते ॥

तुलायामकरेचंद्रे वैधव्यंजायतेध्रुवम् ॥

टीका—कर्क और मेष लग्नमें तुलाका अंश और मकर अथवा तुलाका चंद्रमा ऐसे योगोंका दोष वैधव्य करता है ॥

## तिथिअनुसारवर्जितलग्न ।

प्रतिपदितुलामकरौ सिंहमकरौतृतीयायाम् ॥ कन्यामिथुनेपंचम्यांसप्तम्यांचैवधनुःकर्कौ ॥ नवम्यांकर्कसिंहौ एकादश्यांतुधनुर्मीनौ ॥ त्रयोदश्यांवृषभर्मानौ शून्यलग्नानितिथियोगात् ॥

टीका—प्रतिपदाको तुला और मकर तृतीयाको सिंह मकर पंचमीको कन्या मिथुन सप्तमीको धन कर्क नवमीको कर्क सिंह, एकादशीको धन मीन, त्रयोदशीको वृष मीन इन तिथियोंमें ये लग्न शून्य वर्जनीय है ॥

दोषनिवारण—द्यूनंविनाकेंद्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगोवापिहिलक्षमेकम् ॥निहंतिदोषत्रिशतंभृगुश्च शतं बुधोवापिहृदृश्यमूर्तिः ॥

टीका—गुरु शुक्र अथवा बुध ये १ । ४।९।१० ५ इन स्थानोंमें होय तो एक लक्ष गुरु तीनसौ शुक्र १ सौ बुध दोषोंको नाश करे हैं ॥

लग्नप्रमाण वा राशुदय- गजाग्निदस्त्रा गिरिषट्कदस्त्राव्योमेन्दुरामारसरामरामाः॥कुरामरामा गजचंद्ररामा नागेंदुलोकाः कुगुणानलाश्च ॥ षड्रामरामाःखशशांकरामःसत्तांगपक्षाश्च गजाग्निदस्त्रा ॥

टीका—राशिउदय कहिये मेषादि बारह राशि तिनकी १२ लग्न होती हैं जिस राशिके सूर्य होय वही उदयकालकी प्रथम लग्न जानिये तिसकी पलसंख्याका क्रम कोष्टकमें है ॥

|      |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| लग्न | वृ  | मि  | क   | सि  | क   | त   | म   | कुं | मी  |     |     |     |
| पल   | २३८ | २६७ | ३१० | ३३६ | ३३१ | ३१८ | ३१८ | ३३१ | ३३६ | ३१० | २६७ | २३८ |

लग्नकीघटिकाओंकीसंख्या—मीनेमेषेऽयष्टपच क्रमान्नाडयःपलानिच॥वृषेकुंभेऽब्धिसप्तद्विपंचदिड्मिथुनेमृगे॥धनुःकर्केशरेषट्त्रिसिंहालयोःशरभूत्रयम्॥बाणाष्टदशतूलांगे लग्ननाडयःपलानिच ॥

टीका—मेषादि लग्नोंकी घटी और पलोंका क्रम ॥

|      |     |     |      |      |      |    |      |        |    |    |      |     |
|------|-----|-----|------|------|------|----|------|--------|----|----|------|-----|
| लग्न | मेष | वृष | मिथु | कर्क | सिंह | क  | तुला | वृश्चि | धन | मक | कुंभ | मीन |
| घटी  | ३   | ४   | ५    | ५    | ५    | ५  | ५    | ५      | ५  | ५  | ४    | ३   |
| पल   | ५८  | २७  | १०   | ३६   | ३१   | १८ | १८   | ३१     | ३६ | १० | २७   | ५८  |

प्रतिदिवसभुक्तपलजाननेकाक्रम ।

मीनाजेसप्तषट्पंच पलानिविपलानितु॥गोकुंभेष्टौयुगशरादि-

गिंशतिनृयुङ्मृगे ॥ कर्केचापेभवाःसूर्याःसिंहालयोरुद्रदृङ्-  
मिताः ॥ तुलांगेदिकचषट्त्रीणि लग्नेष्वेकांशसम्मितिः ॥

टीका—जो लग्न उदय कालमें हो तिसकी प्रतिदिन भोग्य पल विपल संख्या.

| लग्न | भे | वृ | मि | क  | सि | क  | तु | वृ | ध  | म  | कुंभ | मी |
|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|
| पल   | ७  | ८  | १० | ११ | ११ | १० | १० | ११ | ११ | १० | ८    | ७  |
| विपल | ५६ | ५४ | २० | १२ | २  | ३६ | ३६ | २  | १२ | २० | ५४   | ५६ |

उदयास्तलग्नकथन—यस्मिन्नाशौयदासूर्यस्तलग्नमुदयोभवेत् ॥

तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नंतदुच्यते ॥

टीका—जिस राशिके सूर्य होय वही लग्न सूर्योदयमें होतीहै और उससे सप्तम लग्न सूर्यास्तमें होताहै उसीको अस्तलग्न जानिये ॥

| लग्न    | वृ      | मि      | क      | के      | तु     | धन      | मीन     |
|---------|---------|---------|--------|---------|--------|---------|---------|
| भेष     | ० ३० ०  | ० ७ ३०  | ० २० ० | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २० ३० | ० ० ०   |
| वृष     | ० २० ३० | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० ० ०  | ० ० ०   | ० ० ०   |
| मिथुन   | ० ३० ३० | ० २५ ३० | ० ० ०  | ० ० ०   | ० ० ०  | ० १५ ३० | ० १५ ३० |
| कर्क    | ० ० ०   | ० ० ०   | ० ० ०  | ० १५ ३० | ० २० ० | ० १५ ३० | ० २५ ३० |
| सिंह    | ० ३० ३० | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० ० ०   |
| कन्या   | ० २० ३० | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० ० ०  | ० ० ०   | ० ० ०   |
| तुला    | ० ३० ३० | ० २५ ३० | ० ० ०  | ० ० ०   | ० ० ०  | ० १५ ३० | ० १५ ३० |
| वृश्चिक | ० ० ०   | ० ० ०   | ० ० ०  | ० १५ ३० | ० २० ० | ० १५ ३० | ० २५ ३० |
| धन      | ० ३० ३० | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० ० ०   |
| मकर     | ० २० ३० | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० ० ०  | ० ० ०   | ० ० ०   |
| कुंभ    | ० ३० ३० | ० २५ ३० | ० ० ०  | ० ० ०   | ० ० ०  | ० १५ ३० | ० १५ ३० |
| मीन     | ० ० ०   | ० ० ०   | ० ० ०  | ० १५ ३० | ० २० ० | ० २५ ३० | ० ३५ ३० |

लग्नकेउक्तअंशदेनैकाक्रम—वृषश्चमिथुनकन्यातुलाधनवीझषस्तथा ॥

एतेशुभनवांशास्तु ततोन्येकुनवांशकाः ॥

टीका—वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन ये अंश द्वादश लग्नके शुभ होते हैं शेष अशुभ, मेषादि १२ लग्न वा अंश ७ कोष्ठकमें हैं तिनमेंसे जिसके अंशकी वर्गशुद्धि होय उनकी कोष्ठकमें लग्न लिखे और उस अंशघडीको अयनांश देकर भुक्त काल लाइये ॥

( १२६ )

ज्योतिषसार ।

प्रत्येक कोष्ठकमें ४ अंकहैं उनके नाम राशि अंश कला विकला जानिये राशिकी संज्ञा शून्यकानाम मेष और वृषके नाम १ इसप्रकार १ २ राशिहोतीहैं

**तात्कालस्पष्टसूर्यलानेकासाधन ।**

गतगम्यदिनाहनद्युभुक्तः खरसप्तांशवियुग्युतोग्रहःस्यात् ॥

टीका—पंचांगस्थ ग्रहोंके कोष्ठकमें पूर्णिमासे अमावास्यापर्यंत और अमावास्यासे पूर्णिमा पर्यंत सूर्य स्पष्टहै, परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जिस दिनका सूर्य स्पष्ट करनाहो उसदिनको लेकर और दिनोंके अंतरको वर्तमान दिनकी सूर्य गतिसे कोष्ठांतमें गुणै और ६० का भाग देनेसे जो अंक आवैवे अंक घटीपठ जानिये, परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जो पीछेका स्पष्ट करना हो तो पंचांग सूर्यके अंश घटी पल जो कोष्ठकमेंहैं उनमेंसे उन अंकोंको हीन करै जो आगे काल न होय तो उनमें जोडदे इसप्रकारसे तात्कालिक सूर्य स्पष्ट होजाताहै यह जानिये.

**भुक्त दिवसोंका उदाहरण ।**

शकः १७६९ कार्तिक शुक्ल ९ भौमका स्पष्ट सूर्य कहो ॥

सूर्यकी गति.

स्पष्ट रविका उत्तर

| प. | वि.                                     | रा.          | अं. | क. | वि.   |
|----|---|--------------|-----|----|-------|
| ६० | ४७ गति<br>६दिन ९ से १५ तक<br>अंतरकोगुणै | पंचांगस्थरवि | ७   | ७  | २१ ५७ |
|    |   | गति          | ६   | ४  | ४२    |

३६. २८२ गुणा शेष संख्या ७ १ १७ १५  
भाग ६० ) २८२ ( ४ अंश यह स्पष्ट सूर्य जानिये.

२४०

४२ शेषफल.

३६०

४

४२ मिलावे

३६४

६४

४२

४२ भाग ६० ) ३६४ ( ६।४।४२

अं. प. वि.

## अभुक्त दिवसोंका उदाहरण ।

शकः १७६९ कार्तिक कृष्ण६को सूर्य स्पष्ट लानेका क्रम पूर्णिमाका स्पष्ट रवि राशि ७ अंश ७ घटी २१ पल ५७ अभुक्त दिवस ६ सूर्यकी गति ६०।४७ इन अंकोंको ६ से गुणा तो हुए ३६४।४२ इनमें ६० का जाग देनेसे शेष रहे वे अंश ६ घटी ४ प. ४ इन अंकोंको सूर्यके अंश घटिका और पलों मिलावे तौ ७ राशि १३ अंश २६ घटी ३९ पल इस प्रकार होतेहैं.

## अयनांशलानेकाक्रम ।

शाकोवेदाब्धिवेदोनः षष्टिभक्तोऽयनांशकाः ॥

देयास्तेतुरवौस्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ॥

टीका—वर्तमान शकमें ४४४ घटानेसे जो शेष बचै उसमें ६० का भागदे ॥ चरस्थिर द्विस्वभाव लग्नोंकी सिद्धिके लिये उन अयनांशोंको स्पष्ट सूर्यके अंश और घटिकाओंमें मिलानेसे सायन सूर्य होजाताहै ॥

## उदाहरण ।

|           |                        |                     |
|-----------|------------------------|---------------------|
| शके १७६९  | भा.६० ) १३२५ (२२अंश) ७ | १ १७ १५ स्पष्टरवि   |
| उत्से ४४४ | १२०                    | २२ ५ अयनांशमिलावे.  |
| घटाना     | १२५                    | ७ २३ २२ १५          |
| १३२५      | १२०                    | यह सायनसूर्यजानिये. |
|           | ५                      |                     |
|           | ६०गुणक                 |                     |
|           | भाग ६० ) ३०० (५कला     |                     |
|           | ३००                    |                     |
|           | ०००                    |                     |

## लग्नसेइष्टकाललानेकाक्रम ।

स्फुटसायनभागर्कभोग्यांशफलसंमितः ॥ सायनांशतनोश्चापि भुक्तांशफलसंयुता ॥ मध्यलग्नोदयैर्युक्ताषष्ट्याप्तानाडिकास्तनोः ॥

( १२८ )

## ज्योतिषसार ।

टीका—सायन सूर्यसे भोग्य और सायन लग्नसे भुक्त बनानेकी रीति ॥ दोनोंका योग करके सूर्य लग्नके मध्यका उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देनेसे लग्न परसे सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट होजाताहै ॥ उदाहरणः—शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारको स्पष्ट सूर्यकी राशि आदि ७।१। १७। १५ और अयनांश २२।५ को सूर्यके अंश और घडियोंमें मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादि ७।२३।२२।१५ यह वृश्चिक राशिका सूर्य २३ अंश २२ घटिका १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक राशिका है तो वृश्चिकका उदय कहिये ३३।१ से भोग्यांश गुणनेसे हुए अंक २१९४ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ७३।८ यह सूर्यका भोग्यकाल जानिये ॥

लग्नसे भुक्त लानेका प्रकार ॥ मकर लग्न वृषकी तिसको कोष्ठकमें देखकर वह स्पष्ट लग्न लेते वे राश्यादि ९। १३।२० कहिये मकर राशिकी लग्न १३ अंश २० घटिका होतीहै, इस लग्नके अंश घडीमें अयनांश २।५।५ मिलानेसे सायन लग्न १०।५।२५ हुई कुंभराशिके लग्न अंश ५ घडी २५ सायन लग्न होतीहै, लग्नके भुक्तांश ५२।५ कुंभराशिका उदय २६७ इनको गुणनेसे अंक हुए १४४६ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ४८।१२ यही अंक लग्नका भुक्त होताहै ॥

## भोग्य भुक्तसे इष्टकाल लानेका प्रकार ।

भोग्य भुक्त योग १२१।२० सूर्य अथवा लग्न जिसराशिके मध्यांतरका उदय २ धन ३१६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्य भुक्त योग १२१ इसमें मिलाये तो अंक हुए ७६७ इस युक्त अंकमें ६० का भाग दिया तो वह इष्ट कालकी घटी १२ पल ४७ हुए इन पलोंमें वृत्तिके ५ पल जोडनेसे स्पष्ट इष्टकाल १२।५२ आय जाताहै ॥

उदाहरण  
सायन सूर्यसे भोग्यलानेका क्रम

| अंश                     | घटी    | पल                        |
|-------------------------|--------|---------------------------|
| ३०                      |        |                           |
| २३                      | २२     | २५                        |
|                         | ३७     | ४५                        |
|                         |        | ३३१ गुणक                  |
| १९८६                    | २३१७   | १६५५                      |
| २०८                     | ९९३    | १३२४                      |
| २१९४                    | १२२४७  | भाग ६० ) १४८९५ (घटिका २४८ |
|                         | २४८    | १२०                       |
| भाग ६० ) १२४९५ ( अं २०८ |        | २८९                       |
|                         | १२०    | २४०                       |
|                         | ४९५    | ४९५                       |
|                         | ४८०    | ४८०                       |
|                         | १५ शेष | १५ शेषपल                  |

रविके भोग्य काल लानेका प्रकार

| अंश                  | घटी       |
|----------------------|-----------|
| भाग ३० ) २१९४        | १५ ( ७३।८ |
| २१०                  |           |
| ९४                   |           |
| ९०                   |           |
| ४                    |           |
| ६० गुणक              |           |
| २४०                  |           |
| १५ शेषघटि            |           |
| भाग ३० ) २५५ ( ८ शेष |           |
| २४०                  |           |
| १५ शेष               |           |



( १३० )

ज्योतिषसार ।

लग्नसे भुक्तकाल लानेकाक्रम ।

| रा अं क.              | अभुक्तांश.            |
|-----------------------|-----------------------|
| ९ १३ २० मकरलग्न       | भाग ३०) १४४६ ( १४५.१२ |
| २३ ५ अयनांशमिलावे     | १२०                   |
| १० ५ २५ सायनलग्नभुक्त | २४६                   |
| २६७ लग्नकाउदय         | २४०                   |
| १३३५ १७५              | ६                     |
| १३३५ १७५              | ६० गुणक               |
| १११ १५०               | भाग ३०) ३६० ( १२      |
| १४४६ ५० अंश           | ३६०                   |
| ६०) ६६७५ ( १११        |                       |
| ६०                    |                       |
| ६७                    |                       |
| ६०                    |                       |
| ७५                    |                       |
| ६०                    |                       |
| १५                    |                       |

इष्टकाल.

धन ३३६  
मकर ३१० मिलावे

६४६

१२१ यह भुक्त मिलावे

भाग ६०) ७६७ ( १२ घ्न

६०

१६७

१२०

४७

६० गुणक

भाग ६०) २८२० ( ४७ पल

२४०

४२०

४२०

भुक्तभागयोग.

४८ १२ भुक्त

७३ ८ भोग्या

१२१ २० सूर्य व लग्न इनराशिको  
मध्यन्तरका उदय.

उत्तर इष्टघटिका

घ. प.

१२ ४७

५ प्रवृत्तिकाफल.

१२ ५२ उत्तर इष्टघटी.

## इष्टकाल समयका तत्कालसूर्यसाधन ।

तत्कालभवस्तथाघटिद्याःखरसैर्लब्धकलोनसंयुतःस्यात् ॥

टीका—इष्ट घडीमें सूर्य लाना होय तो उसको और उससे सूर्यकी घडियों गुणाकर ६० का भागदे जो लब्धि होय उसमें जो सूर्य गत होय तो हीन करै और भोग होय तो उसमें युक्त करनेसे तत्काल सूर्य आजाताहै ॥

### उदाहरण ।

शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारके दिन प्रातःकालका सूर्य ७।१।१७।१५ है तो कहो कि, सायनसूर्य कितना होगा ॥

#### इष्ट घडीकी गतिका गुणाकार

|       | १२  | ५२   | इष्टघटी |
|-------|-----|------|---------|
| ग. ६० | ७२० | ३१२० |         |
| ४७    | ५६४ | २४४४ |         |
|       | ७२० | ३६८४ | २४४४    |

इनका भाग ६० ) ७८२ ( १३।२

६०

१८२

१८०

२

६० गुणक

भाग २० ) १२०

१२०

#### घटीपलोंका भागाकार

|     |      |           |
|-----|------|-----------|
| ७२० | ३६८४ | ६० ) २४४४ |
| ६२  | ४०   | २४        |
| ७८२ | ३७२४ | ८६२       |
|     | ३६०  |           |
|     | १२४  |           |
|     | १२०  |           |

७ १.१७ १५ प्रातःकालका रवि

१३ २ गम्यघटि

७ १ ३० ३५

३२ ५ अयनांश

७ २३ ३५ १७ सायनतत्कालसूर्य

### इष्टघटीसे लग्न लानेका क्रम ।

तत्कालार्कःसायनोऽस्योदयघ्ना भोग्यांशा खण्ड्युद्धृता भोग्यकालः ॥ एवंयातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥ तदनुजहीहिनगृहोदयांश्चशैषंगगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ॥ सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवतिविलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥

टीका—पीछे सायन सूर्य जिस राशिमें होय उसका उदय लेना चाहिये और सायन सूर्यके अंशादिकोंको ३० अंशोंमें हीन करे वे भोग्यांश जा-

( १३२ )

## ज्योतिषसार ।

निये और उदयको भोग्यांशसे गुणिके ३० का भाग दे तो सूर्यका भोग्यकाल निकल आवै । सूर्यका गतकाल लानेका क्रम ॥ सायन सूर्यके उदयमें उसीके अंशादिकोंको गुणिके ३० का भाग दे तो भुक्तकाल आजायगा इष्टं घटियोंके पल करके उसमें भोग्यकाल हीन करे शेष जिस राशिमें सूर्य उदय होगा वह राशि आगे जितनी राशि उदयराशिमें कम होगी उनको घटादे जो उदय न घटे तो अशुद्ध जानिये और शेष अंकोंको ३० से गुणाकर अशुद्ध उदयसे भाग दे तो अंशादिक आवेंगे उसमें शेष राशिसे अशुद्ध राशि को पूर्व राशितक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट होजाताहै ॥ उदाहरण ॥ पीछे जो सायनसूर्य आयाहै वो ७।२३।३५। १७ उसका उदय ३३१ सूर्यके अं. २३।३५।१७ ये ३० अंश में हीन करै शेष बचै वह भोग्यांश ६।२४।४३ इनको उदयसे गुणै वे अंक २१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्यकाल निकल आवै ॥ उसके हिसाबका क्रम-

|               |                   |      |                         |
|---------------|-------------------|------|-------------------------|
| ३०            | ३१                | १७   | सायन सूर्यके अंश घटावै  |
| २३            |                   |      |                         |
| ६             | २४                | ४३   | शेष भोग्य               |
|               |                   | ३३१  | उदय                     |
| अंश           |                   | कला  | विकला                   |
| १९८६          |                   | १२२४ | ४३                      |
| १३६           |                   | ६६२  | १२९                     |
| ३०) २१२२ ( ७० |                   | ७२४४ | १२९                     |
| २१०           |                   | २३७  | भाग ३०) १४२३३ ( २३७ कला |
| २२            | ६०) ८९८१ ( १३६ अं |      | १२०                     |
| ६० गुणक.      | १६०               |      | २२३                     |
| ३०) १३२० ( ४४ | २१८               |      | ३८०                     |
| १२०           | ३८०               |      | ४३३                     |
| १२०           | ३८१               |      | ४२०                     |
| १२०           | ३६०               |      | १३                      |
| ०             | २१                |      |                         |

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये.

इष्ट घटीमें १२।५२ इनके पल ७७२ इस अंकमें भोग्यकाल घटाया तो

शेष अंक ७०।१।१६ धन राशिका उदय ३३६ वा मकर राशिका उदय ३१०  
इन दोनोंका योग ६६४ शेष अंक में न्यून किया तो रहे ५५।३६ इन अंकोंमें  
कुंभराशिका उदय २६७ घटा नहीं सकते इसलिये अशुद्ध उदय जानिये ॥

|                   |        |    |
|-------------------|--------|----|
| इष्ट घटी १२       |        |    |
| गुणक ६०           |        | ५२ |
| ७२०               |        |    |
| ५२                |        |    |
| ७७२               |        |    |
| भोग्यकाल ७०       |        | ४४ |
| धनराशिका उदय ७०१  |        | १६ |
| मकरराशिका उदय ६४६ |        | १६ |
| ५५                | इन अंश | १६ |

सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं

अंशादि ५५।१६ इनको ३० से गुणे वे अंक १६ । ५८ हुए इनका अ-  
शुद्ध उदयमें भागदे जितने भाग आवें वे अंश और शेष अंश ५६ को ६० से  
गुणा तो हुए ३३६० फिर इनके उदयमें भाग दिया तो घटी १२ और शेष  
१५६ को ६० से गुणा तो हुये ९३६० फिर उनके उदयमें भाग दिया तो पल  
३५ मेष राशिसे अशुद्धकी पूर्वराशितक राशि १० और पहलीके अंशादिक  
६ । १२ । १५ तिनके और राशिके अंशोंके लिखनेसे स्पष्ट सायनलग्न १०।  
३६।१२।३५ अयनांश १२।५ सायनलग्नके अंश घटियोंमें घटानेसे स्पष्ट  
लग्न ९।१४।७।३५ मकर लग्न १४ अंश ७ घटिका ३५ फल जानिये ॥

|        |              |             |                 |
|--------|--------------|-------------|-----------------|
| शेषांक | १६           | ५६          | १५६             |
|        | १६५०         | ६० गुणक     | ६० गुणक         |
|        | ८            | ४८० (८ २६७) | ३३६० (१२ घ २६७) |
| २६७)   | १६५८ (६ अं.) | ४८०         | २६७             |
|        | १६०२         |             | ६९०             |
|        | ५६           |             | ५३४             |
|        |              |             | २५६             |
|        |              |             | १६              |

|      |     |     |    |
|------|-----|-----|----|
| राशि | अंश | घटी | पल |
| १०   | ६   | १२  | ३५ |
|      | १२  | ५   |    |
|      | १४  | ७   | ३५ |

अयनांश घटावे

इस प्रकार मकर लग्नका प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ॥

**सूर्य और लग्न एक राशिके हो तौ इष्टलानेका क्रम ।**

यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशांतरहतउदयःस्यात्स्वाग्नि-  
हत्विष्टकालः ॥

टीका—सूर्य और लग्न एक राशिके होंतो दोनोंका अंतर निकाले और तिसको राशिके उदयसे गुणै ३०का भागदे जो लब्धि होय सोई इष्टकाल जानै और रात्रिमें लग्न अथवा इष्टकाल निकालना होय तो सूर्यकी राशि६उसमें मिलावै.

**लग्नके शुभाशुभ ग्रहोंका विचार ।**

लग्ने चन्द्रखलारिपौशशिसितौसर्वेद्युनेखेबुधोऽब्जोऽत्येगुःसुख-  
गोष्टमाःकुजशुभाःशुक्रस्तृतीयःशुचे ॥ लाभेसर्वखगाःशुभा  
अखिलगाह्यष्टारिगाःस्युःखलाश्चंद्रह्यंबुधने श्रियेशभटके-  
द्रस्यान्मृत्यवेऽष्टारिगः ॥

टीका—लग्नमें चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्नसे षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्र और सप्तमस्थानमें कोईग्रह होय, दशमस्थानमें बुध, द्वादशमें चंद्र, चतुर्थ-स्थानीराहु, अष्टमस्थानी मंगल व शुभग्रह, और तृतीयस्थानमें शुक्र, ऐसे लग्नके ग्रह होंय तो अनिष्ट शोककारक अशुभस्थानी ग्रह जानिये ॥

लग्नसे एकादशस्थानमें संपूर्ण ग्रह और निंबस्थान वर्जितके और शेष स्थानमें शुभग्रह होय और तृतीय अष्टम तथा षष्ठस्थानमें सूर्य और २ । ३ चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा होय तो शुभलक्ष्मीकारक जानै, लग्नका स्वामी अथवा अंशका स्वामी अथवा द्रेष्काणका स्वामी ये षष्ठ व अष्टमस्थानमें होय तो मृत्युदायक जानिये ॥

**पंचभिरिष्टं पुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यम् ॥**

**स्थानादिफलमृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥**

टीका—लग्नके पांचग्रह शुभस्थानी होय तो पुष्टिकारक होतेहैं और अशुभ हो तौ अनिष्टकारक होतेहैं और यवनादिमतसे चारग्रहभी इष्टकारकजानिये.

## षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम ।

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः ॥

त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥

टीका—प्रथम जाननेमें लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ये ६ छः वर्ग इनमें शुभग्रहोंके वर्ग शुभ होतेहैं ॥

## त्रिंशांशादिकथनम् ।

त्रिंशद्भाग्गात्मकं लग्नं होरा तस्यार्द्धमुच्यते ॥ लग्नात्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः ॥ द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥

टीका—लग्नके अंश ३० होतेहैं तिनका अर्ध १५ अंश होरा कहताहै और लग्नही का तीसराभाग १० ऐसे ३ तीन द्रेष्काण होतेहैं और नवम भाग नवांश और तिसका बारहवां भाग द्वादशांश और तीसवाँ भाग त्रिंशांश इसरीतिसे एकलग्नके ३० अंश होतेहैं और उन्हीं तीस अंशोंके छः वर्ग होतेहैं ॥

## आदौ गृहज्ञानम् ।

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥

टीका—जिस ग्रहकी जो राशि होय सो गृह उसीका कहा जाताहै ॥

|      |     |       |       |        |       |     |       |        |      |     |      |      |
|------|-----|-------|-------|--------|-------|-----|-------|--------|------|-----|------|------|
| ग्रह | भौ  | शुक्र | बुध   | चन्द्र | सूर्य | बुध | शुक्र | भौम    | गुरु | शनि | शनि  | गुरु |
| राशि | मेघ | वृष   | मिथुन | कर्क   | सिंह  | क.  | तुला  | वृश्चि | धन   | मक. | कुंभ |      |

होराकथनं—सूर्येद्रोर्विषमे लग्नेहोराचन्द्रार्कयोःसमे ॥

टीका—विषमलग्नमें १५ अंशतक सूर्यका होरा तदनंतर चन्द्रमाका होरा जानिये, सम लग्नमें १५ अंशके अन्तलग्न होय सो चंद्रमाका होरा तिसपीछे सूर्यका जानिये. होरा चंद्रमाका शुभ और सूर्यका अशुभ ॥

|        |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |    |
|--------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|
| लग्न   | मे | वृ | मि | क  | सि | क  | तु | वृ | ध  | म  | कुं | मी |
|        | ०  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १०  | ११ |
| अंश १५ | सू | चं | सू | चं | सू | चं | सू | चं | सू | चं | सू  | चं |
| अंश ३० | चं | सू | चं | सू | चं | सू | चं | सू | चं | सू | चं  | सू |

## द्रेष्काणकथनम् ।

द्रेष्काणआद्योलग्रस्य द्वितीयः पंचमस्य च ॥

(१३६)

ज्योतिषसार ।

द्रेष्काणश्चतृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिः ॥

टीका—प्रथम द्रेष्काण कहिये लग्नके ३० अंश तिनमेंसे १० अंशका एक द्रेष्काण ऐसे २० अंश ३० अंश तीन द्रेष्काण होतेहैं प्रथम द्रेष्काणका स्वामी लग्नका स्वामी होताहै द्वितीयद्रेष्काणका पंचमस्थानका स्वामी होताहै और तृतीयद्रेष्काणका नवम स्थानका स्वामी होताहै शनि मंगल सूर्यका द्रेष्काण अशुभ जानिये ॥

| लग्न    | मेष | वृष | मि० | कर्क | सिंह | क०  | तुला | वृश्च | धन  | मकर | कुंभ | मीन |
|---------|-----|-----|-----|------|------|-----|------|-------|-----|-----|------|-----|
| १ अं १० | मं० | शु० | बु० | चं०  | र०   | बु० | शु०  | मं०   | गु० | श०  | श०   | गु० |
| २ अं १० | र०  | बु० | शु० | मं०  | गु०  | श०  | श०   | गु०   | मं० | शु० | बु०  | चं० |
| ३ अं १० | गु० | श०  | श०  | गु०  | मं०  | शु० | बु०  | चं०   | र०  | बु० | शु०  | मं० |

सप्तांश ।

|    | मेष | वृष | मि० | कर्क | सिंह | क० | तुल | वृ० | धन | मकर | कुंभ | मीन |
|----|-----|-----|-----|------|------|----|-----|-----|----|-----|------|-----|
|    | ०   | १   | २   | ३    | ४    | ५  | ६   | ७   | ८  | ९   | १०   | ११  |
| १० | १   | ८   | ३   | १०   | ५    | १२ | ७   | २   | ९  | ४   | ११   | ६   |
| ११ | २   | ९   | ४   | ११   | ६    | १  | ८   | ३   | १० | ५   | १२   | ७   |
| १२ | ३   | १०  | ५   | १२   | ७    | २  | ९   | ४   | ११ | ६   | १    | ८   |
| १३ | ४   | ११  | ६   | १    | ८    | ३  | १०  | ५   | १२ | ७   | २    | ९   |
| १४ | ५   | १२  | ७   | २    | ९    | ४  | ११  | ६   | १  | ८   | ३    | १०  |
| १५ | ६   | १   | ८   | ३    | १०   | ५  | १२  | ७   | २  | ९   | ४    | ११  |
| १६ | ७   | २   | ९   | ४    | ११   | ६  | १   | ८   | ३  | १०  | ५    | १२  |

लग्नकानवांश ।

अग्नेनवांशामेषतःस्मृताः । वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकः ॥ कर्कालिमीनलग्नेषुनवांशाःकर्कतःस्मृताः ॥ नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥

टीका—मेष सिंह धन इन लग्नोंका नवांशका क्रम मेषसे जानिये और वृष कन्या मकर इनका मकरसे क्रम और मिथुन तुल कुंभका तुलसे क्रम कर्क वृश्चिक मीन इनलग्नोंका नवांश कर्कराशि जानना चाहिये. नवांश सूर्य मंगल शनिका अशुभ होताहै ॥

|    |    |    |    |      |    |    |    |    |    |    |     |    |    |
|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|
|    | मे | वृ | मि | कर्क | सि | क  | तू | वृ | ध  | म  | कुं | मी |    |
| ३  | २० | मं | श  | शु   | चं | मं | श  | शु | चं | मं | श   | शु | चं |
| ६  | ४० | शु | श  | मं   | र  | शु | श  | मं | र  | शु | श   | मं | र  |
| १० | ०  | बु | गु | गु   | बु | बु | गु | गु | बु | बु | गु  | गु | बु |
| १३ | २० | चं | मं | श    | शु | चं | मं | श  | शु | चं | मं  | श  | शु |
| १६ | ४० | र  | शु | श    | मं | र  | शु | श  | मं | र  | शु  | श  | मं |
| २० | ०  | बु | बु | गु   | गु | बु | बु | गु | गु | बु | बु  | गु | गु |
| २३ | २० | शु | चं | मं   | श  | शु | चं | मं | श  | शु | चं  | मं | श  |
| २६ | ४० | मं | र  | शु   | श  | मं | र  | शु | श  | मं | र   | शु | श  |
| ३० | ०  | गु | बु | बु   | गु | बु | बु | गु | गु | बु | बु  | गु | गु |

### द्वादशांशकथन ।

लग्नस्य द्वादशांशस्तु स्वराशेरेव कीर्तिताः ॥

—लग्नके अंश ३० तिनके भाग १२ द्वादश कहातेहैं तिनका क्रम चलते लग्नसे जो पर्यंत लग्नके अंश हों ताके स्थानसे जो द्वादशांश पति जानिये, तिनमें मंगल शनि रवि इनके अंश अशुभ होतेहैं ॥

|    |    |    |    |      |    |    |    |    |    |    |     |    |
|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|-----|----|
| (  | मे | वृ | मि | कर्क | सि | क  | तू | वृ | ध  | म  | कुं | मी |
| ३० | मं | शु | बु | चं   | र  | बु | शु | मं | गु | श  | श   | गु |
| ५  | शु | बु | चं | र    | बु | शु | मं | गु | श  | श  | गु  | मं |
| ७  | बु | चं | र  | बु   | शु | मं | गु | श  | श  | गु | मं  | शु |
| १० | चं | र  | बु | शु   | मं | गु | श  | श  | गु | मं | शु  | बु |
| १३ | र  | बु | शु | मं   | गु | श  | श  | गु | मं | शु | बु  | चं |
| १६ | बु | श  | मं | गु   | श  | श  | गु | मं | शु | बु | चं  | र  |
| १९ | शु | मं | गु | श    | श  | गु | मं | शु | बु | चं | र   | बु |
| २० | मं | गु | श  | श    | मं | शु | बु | चं | र  | बु | बु  | शु |
| २३ | गु | श  | शु | गु   | मं | शु | बु | चं | र  | बु | शु  | मं |
| २६ | श  | श  | गु | मं   | शु | बु | चं | र  | बु | शु | मं  | गु |
| २९ | श  | गु | मं | शु   | बु | चं | र  | बु | शु | मं |     | श  |
| ३० | गु | मं | शु | बु   | चं | र  | बु | शु | मं | गु | श   | श  |

### विषमत्रिंशांश ।

कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् ॥  
पंचपंचाष्टशैलेषु भागानां विषमेगृहे ॥



( १३८ )

ज्योतिषसार ।

टीका—विषमलग्नमें पंचमांश लग्नपर्यंत होय तो भौमके आगे ५ अंश शनिके ५ गुरु ८ अंश तिसके आगे ७ अंश बुधके और ५ अंश शुक्रके इसक्रमसे विषम लग्नमें त्रिंशांशपति जानो इनमें मंगल शनि अशुभ जानिये ॥

|     |    |    |    |    |    |     |
|-----|----|----|----|----|----|-----|
| अं. | मे | मि | सि | तु | ध  | कुं |
| ५   | मं | मं | मं | मं | मं | मं  |
| ५   | श  | श  | श  | श  | श  | श   |
| ८   | गु | गु | गु | गु | गु | गु  |
| ७   | बु | बु | बु | बु | बु | बु  |
| ५   | शु | शु | शु | शु | शु | शु  |

समत्रिंशांश ।

शुक्रज्ञेज्याकिंभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे ॥

पंचांगेष्वेषु पंचानां भागानां कथिता बुधैः ॥

टीका—सम लग्नमें प्रथम ५ अंश पर्यंत शुक्र तिसके आगे ७ अंश बुध तिसके आगे ८ अंश गुरु तिसके आगे ५ अंश शनि तिसके आगे ५ अंश मंगल ये सम लग्नमें त्रिंशांशपति जानिये. तिसमें मंगल शनि अशुभ हैं ॥

|     |    |    |    |    |    |    |
|-----|----|----|----|----|----|----|
| अं. | वृ | क  | क  | वृ | म  | मी |
| ५   | शु | शु | शु | शु | शु | शु |
| ७   | बु | बु | बु | बु | बु | बु |
| ८   | गु | गु | गु | गु | गु | गु |
| ५   | श  | श  | श  | श  | श  | श  |
| ५   | मं | मं | मं | मं | मं | मं |

षड्वर्गजाननकाक्रम ।

टी०-कार्तिक शुक्र ९ मंगलवार लग्न मकर अंश १४ घटिका ११ पल ५१ स्वामी शनि सो गृहेश ॥ ये षड्वर्ग तिनमें शनि अशुभ शेष ५ वर्ग शुभ जानिये ॥

|       |       |          |       |          |          |
|-------|-------|----------|-------|----------|----------|
| गृहेश | होरा  | द्रेष्का | नवमां | द्वादशां | त्रिंशां |
| शनि   | चंद्र | शुक्र    | शुक्र | बुध      | गुरु     |

उक्तांश ।

मेषेषष्ठधटौवृषेत्रिद्विगिनाद्द्वेद्वेद्रिगोर्काग्रयः कीटेब्ध्यं  
गनवाद्वयोर्कभवनेगाश्वाःस्त्रियांन्व्यर्कषट् ॥ जूकेर्का-  
द्विखगा अलौगवगषट् चापेत्रिषड्गोद्रयोनकेशारुयरु-  
णाधटेझषवृषौमीनेद्रिगोषट्शुभाः ॥

| रा. | उ. | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. |
|-----|----|-----|-----|-----|----|------|----|-----|-----|----|----|-----|-----|
| अंश | ६  | ३   | ७   | ४   | ६  | ६    | १२ | ९   | ३   | ३  | १२ | ७   |     |
|     | ७  | ३   | ९   | ६   | ७  | १२   | ७  | ७   | ६   | १२ | २  | ९   |     |
|     |    | १२  | १२  | ९   |    | ६    | ९  | ६   | ९   |    |    |     | ६   |
|     |    |     | ३   | ७   |    |      |    |     | ७   |    |    |     |     |

षड्वर्गं पंचवर्गं वा चतुर्वर्गमथापिवा ॥

कैश्चित्रिवर्गसत्प्रोक्तं द्वयेकवर्गं तनुंत्यजेत् ॥

टीका—६ अथवा ५ किंवा ४ वर्ग लग्नके होंय तो लग्न बलिष्ठ होय और किसी २के मतसे ३ वर्ग शुभ होतेहैं और दो एक होंय तो लग्न वर्जनीयहै ॥

लग्नांशफल ।

लग्नेचतुर्दशोभागो वृषस्यमकरस्यच ॥

कन्याकर्कटमीनानामष्टमे द्वादशैलिनः ॥

टीका—वृष मकर इनके १४ अंश कन्या कर्क मीनके ८ अंश और वृश्चिकके १२ अंश ये शुभ फल देतेहैं ॥

कुंभस्यांशेषद्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ॥

नृयुक्तामुकयोर्लग्नं शुभंसप्तदशांशके ॥

टीका—कुंभके २६ अंश तुलके २४ मिथुनके ७ और धनुके १० अंश शुभहैं इस प्रकारसे जानिये ॥

एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशैहरेः ॥

संपूर्णफलदं चादौ मध्यमध्यफलप्रदम् ॥

टीका—मेषके २१ अंश सिंहके १८ ऐसे लग्नों आदिमें संपूर्ण और मध्यम फल अंश अनुसार जानिये ॥

लग्नवर्गोत्तमलक्षण ॥ अंततुच्छफलंलग्नयदिवर्गोत्तमंनचेत् ॥

लग्नस्यस्वनर्वाशोयः सवर्गोत्तमउच्यते ॥

टीका—लग्नके अंत भागमें वर्गोत्तम न होय तो लग्न अनिष्ट फल देताहै और लग्न अपने नवांशमें होय तो वर्गोत्तम कहिये ॥

### गोधूललग्नकाकथन ।

गोधूलंपदजादिके शुभकरंपंचांगशुद्धौरेवर्धास्तात्परपूर्वतो-  
र्धघटिकंतत्रेदुमष्टारिगम् ॥ सोप्रांगंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपात-  
मर्कक्रमजह्याद्विप्रमुखेति संकटइदंसद्यौवनाद्येकचित् ॥

टीका—शुद्धादिकोको पंचांग शुद्ध देख करिके सूर्यके अर्द्धास्तसमय प्रथम और पश्चात् १५ पल गोधूलीकाल शुभ और गोधूललग्नसे षष्ठ और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पापग्रह भौम अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जिके शुभ और किसीके मतमें वि-  
प्रादिकके अति संकटमें वर और कन्या होय तो गोरज शुभ होय ॥

वधूप्रवेशः॥विवाहमारभ्यवधूप्रवेशो युग्मेथवाषोडशवासरांतात् ॥

तदूर्ध्वमध्येयुजिपंचमांतादतः परस्तान्नियमोनचास्ति ॥

टीका—विवाहसे सम १६ दिवस पर्यंत वधूप्रवेश कहाहै आगे पांच वर्ष पर्यंत विषममासादिक कहेहैं आगे स्वेच्छा ॥

उक्तमासादि ॥ माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने ॥

गुर्वाद्यस्तविशुद्धौस्यान्नित्यंपत्नीद्विरागमः ॥

टीका—माघ फाल्गुन और वैशाख शुक्लपक्षमें शुभदिवसमें गुरु आदि अस्त वर्जिके द्विरागमन उक्तहै ॥

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनीशाक्रोभास्कर-

वायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रेप्रशस्तेतिथौ ॥ कुंभाजालिगतेरवौशुभ-

करेप्राप्तोदयेभार्गवेजीवज्ञास्फुजितांदिने नववधूवेश्मप्रवेशःशुभः ॥

टीका—मृग तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहीणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाती श्रवण शततारका चित्रा ये नक्षत्र और कुंभ मेष वृश्चिक इनराशियोंके सूर्य शुक्रादिका उदय और गुरु बुध चंद्रये वार ऐसे शुभदिवसमें प्रवेशकरावे

## नूतनपल्लवधारणका मुहूर्त ।

हस्तादिपंचमृगपूषभदस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिने गुरुशुक्रवारैः ॥

स्त्रीणांशुभंप्रथमपल्लवधारणस्यात्पाणिग्रहोक्तसमये खलुपीतवस्त्रैः ॥

टीका—हस्तसे पांच और मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुध गुरु शुक्र ये वार और वे ग्रह होंय जो विवाह कालमें कथित हैं ऐसे दिवसमें नूतन पीतवस्त्र करिके स्त्रियोंको प्रथम पल्लवधारण करावे ॥

## गंधर्वविवाहमुहूर्त ।

शूद्रांत्येषुपुनर्भवापरिणयः प्रोक्तोविवाहोक्तभैर्नालोक्यं तिथिमा-

सवेधभृगुजेज्यास्तादि तत्रार्कभात् ॥ त्रिव्यक्षैषुमृतिर्धनंमृतिमृती

पुत्रोमृतिर्दुर्भगं श्रीरौन्नत्यमथोधृतीशकृततत्वक्षैत्ययःसाभिजित् ॥

टीका—शूद्र आदि और रजक आदि और अन्यजाति जिनकी स्त्रियोंका पुनर्विवाह होजाता है उनके धरेजेका मुहूर्त विवाहनक्षत्र अवश्य देखे. मास तिथि वार गुरु शुक्र इनके उदय अस्तका कुछ दोष नहीं और सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत नक्षत्र गिने, क्रमसे प्रथम ३ मरण द्वितीय ३ धन

३ मरण चतुर्थ ३ मरण पंचम ३ पुत्रलाभ षष्ठ ३ मरण सप्तम ३

अष्टम ३ लक्ष्मी नवम ३ औन्नत्य और सूर्यनक्षत्रसे चौथे ग्यारहवें पच्चीसवें इन चारस्थानोंके नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र सब अशुभ होते हैं.

## दूसरेमतअनुसार ।

इंद्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयंवारुणंतथा ॥

अश्विनीवसुदैवत्यंपट्टकालेशुभंस्मृतम् ॥

टीका—ज्येष्ठा पुनर्वसु, आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी धनिष्ठा ये नक्षत्र धरेजा करनेमें शुभ जानिये ॥

## दत्तक पुत्र लेनेका मुहूर्त ।

हस्तादिपंचकभिषग्वसुपुष्यभेषुसूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु ॥

रिक्ताविबर्जिततिथी अलिङ्गुंभलम्रैसिंहे वृषेभवतिदत्तपरिग्रहोयम्

टीका—हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य

( १४२ )

ज्योतिषसार ।

और रविवार मंगलवार गुरुवार शुक्रवार ये उक्तहैं और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी वृश्चिक कुंभ ये लग्न वर्जित और सिंह वृष ये लग्न शुभहैं ॥

वास्तुप्रकरण ।

ग्रामादिअनुकूल ।

ग्रामादेरनुकूलत्वंदिशोभूतग्रहस्यच ॥

मासधिष्ण्यादिशुद्धिच वीक्ष्यायव्ययभांशकाम् ॥

टीका—ग्राम दिशा और भूतग्रह इनके अनुकूल देखिके मास व नक्षत्र-शुद्धि और आय व्यय व लग्न अंशशुद्धि शुभ देखिलीजिये ॥

ग्रहबल ।

गुरुशुक्रार्कचंद्रेषु स्वोच्चालिबलशालिषु ॥

गुर्वर्केदुबलंलब्ध्वा गृहारंभःप्रशस्यते ॥

टीका—गुरु शुक्र सूर्य चंद्र इनको अपने उच्चादिक स्थानोंमें बलयुक्त देखिके और सूर्य चंद्र गुरु इनका बल पाके गृहका आरंभकरना शुभहै ॥

॥ वर्ज्य ॥ विवाहोक्तात्महादोषानृतेजामित्रशुद्धितः ॥

रिक्ताकुजार्कवारौच चरलग्नचरांशकम् ॥

टीका—जामित्रशुद्धि बचाके विवाहके जो दोष कहेहैं वे सब वर्जितहैं और रिक्तातिथि भौमवार रविवार वा चरलग्न और लग्नके अंश वर्जितहैं ॥

त्यक्त्वाकुजार्कयोश्चांशंपृष्ठेचाग्रेस्थितंविधुम् ॥

बुधेज्यराशिगं चार्ककुर्याद्गृहंशुभाप्तये ॥

टीका—रवि भौमके अंश और पीछे वा आगे स्थित चंद्र वर्जितहैं ॥ मिथुन कन्या धन और मीन इन राशियोंका सूर्य गृहारंभ करनेमें शुभहै ॥

द्वारशुद्धि ।

निष्पंचकेस्थिरेलग्नेद्व्यंगेवाऽऽलयमारभेत् ॥

टीका—प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्रसे नक्षत्रशुद्धि देखि करी पंचक रहित स्थित वा द्विस्वभाव लग्नमें प्रारंभ कीजिये ॥

## ग्रामअनुकूल ।

स्वनामराशेर्यद्राशिर्द्विशरांकेशदिङ्मितः ॥

सग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोऽन्यथा ॥

टीका—अपनी राशिसे २।५।९।११।१० जिस ग्रामकी राशि होय वह शुभ और अन्यथा अशुभ जानिये ॥

एकभेसतमेव्योम गृहहानिस्त्रिषष्टगे ॥

तुर्याष्टद्रादशे रोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखम् ॥

टीका—एक राशि अथवा सप्तम होय तो शून्य तीसरी अथवा सप्तम होय तो गृहकी हानि, चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्मकी होय तो रोगकारक जानिये और शेष स्थान शुभहै ॥

## जातकजाननेकाक्रम ।

अकचटतपयशवर्गाअष्टौक्रमतः स्मृताः ॥ एकोनखेषुवर्णानां

स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ अवर्गेषोडशज्ञेयाः स्वराः कादिषुपंच-

सु ॥ पंचपंचैववर्णाः स्युर्यशौतुचतुरक्षरौ ॥

टीका—अवर्गादि शवर्गपर्यंत ४९ अक्षरहैं तिनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गके पवर्ग पर्यंत ५ तिनके अक्षर २५ और यश इन दोनों वर्गोंके अक्षर चार २ होतेहैं यह स्वरशास्त्रके ज्ञाता कहतेहैं ॥

## वर्गोंकेस्वामी ।

ताक्षर्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजमेषकाः ॥

वर्गेशाः क्रमतोज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमोरिपुः ॥

टीका—अवर्गका स्वामी गरुड १ कवर्गका मार्जार २ चवर्गका सिंह ३ टवर्गका श्वान ४ तवर्गका सर्प ५ पवर्गका मूषक ६ यवर्गका गज ७ शवर्गका मेष ८ इस क्रमसे वर्गोंके स्वामी जानिये और जिस वर्गका अक्षर अपने नामका होय उससे पांचवे वर्गका स्वामी उसका रिपु जानिये और चौथा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये ॥

## काकिणी ।

स्ववर्गद्विगुणंकृत्वापरवर्गेणयोजयेत् ॥

अष्टभिश्चहरेद्रागंयोधिकःसऋणीभवेत् ॥

टीका—अपने नामके वर्गको द्विगुणाकरे उसमें ग्रामादिकका वर्ग मिलावे और आठका भागदे पुनि ग्रामादिकका वर्ग द्विगुण करके अपने नामका वर्ग मिलावे पूर्ववत् आठका भागदे इन दोनोंमेंसे जिसके शेष अधिक बचे सो उसका अर्थात् न्यूनवालेका ऋणी जानिये ॥

चंद्रमाकेमुखजाननेकाविचार ।

वाहान्मैत्राब्रगर्क्षस्थेचंद्रेयाम्योत्तराननम् ॥

पित्र्याद्रासवतस्तद्रत्प्राक्परास्याद्ब्रह्मंशुभम् ॥

टीका—रुत्तिकासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख दक्षिणको और अनुराधासे ७ नक्षत्रोंका चंद्र होय तो गृहोंका मुख उत्तरको और मघासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पूर्वको और धनिष्ठासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पश्चिमको शुभ जानिये ॥

आयादिसाधन ॥ गृहेशकरमानेनगृहस्यायादिसाधयेत् ॥

करैश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥

टी० गृहस्वामीकेहस्तमानसे अथवा अंगुलीमानकरके इष्ट आयादिसाधनकरे

क्षेत्रफल ।

विस्तारगुणितदैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं लभेत् ॥

तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायोच्चजादिकः ॥

टीका—ध्वज आदि साधनका प्रकार ॥ चौडाई लंबाई अथवा लंबाई चौडाईको आपसमें गुणनेसे क्षेत्रफल जानिये ॥ और उसीमें आठका भागदेनेसे जो शेष बचे सो ध्वजआदि आय जानिये ॥

आयोकेनाम ॥ ॥ ध्वजो धूम्रोथसिंहः श्वासौरभेयः खरोगजः ॥

ध्वाक्षश्चैवक्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥

टीका—ध्वज १ धूम्र २ सिंह ३ श्वान ४ बैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ या क्रम करिके आयाष्टक जानिये ॥

वर्णानुसारउक्तआय—ब्राह्मणस्थध्वजोज्ञेयः सिंहो वैक्षत्रियस्य च ॥

वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥

टीका—ब्राह्मणको ध्वजा आय, क्षत्रीका सिंह, वैश्यका वृषभ और सर्व वर्णोंके गज आय उक्तहैं ॥

### मतांतरसेआयोंकाफल ।

ध्वजेकृतार्थो मरणंचधूम्रे सिंहेजयश्चाथशुनिप्रकोपः ॥

वृषे च राज्यं च खरेचदुःखं ध्वाक्षेमृतिश्चैव गजेसुखं स्यात् ॥

टीका—ध्वजआयका फल कृतार्थ, धूम्रायका मरण, सिंहायका जय, श्वान आयका कोप, वृषआयका राज्य, खरआयका दुःख, ध्वाक्ष आयका मृत्यु और गजआयका फल सुखप्राप्ति होती है ॥

नक्षत्रानुसारव्ययसाधन ॥ पूर्वद्वारेवृषःश्रेयान्गजः प्राग्य-

मदिङ्मुखः ॥ क्षेत्रमष्टाहतंधिष्णयैर्विभक्तेस्याद्गृहस्यभम् ॥

भेषुभक्तेव्ययः शेषमायादल्पोव्ययःशुभः ॥

टीका—पूर्वाभिमुख गृहोंका वृषाय और गजाय श्रेयस्कर होताहै और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहोंका गजाय कहाहै पूर्वमेंके क्षेत्रफलको आठ से गुणाकरै और २७ का भागदे शेष बचै सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें ८ का भागदे शेषरहै सो उस गृहका व्यय और आयकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ ॥

### ग्रहोंकीराशि ।

अश्विन्यादित्रयेमेषो मघादित्रितयेहरिः ॥

मूलादित्रितयेधन्वी भद्रयंशेषराशिषु ॥

टीका—गृहोंके अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंकी राशि मेष १ रोहिणी और मृगशिरकी वृष २ आर्द्रा पुनर्वसुकी मिथुन ३ पुष्य आश्लेषाकी कर्क ४ मघा पूर्वा और उत्तराकी सिंह ५ हस्त चित्राकी कन्या ६ स्वाती विशाखाकी तुला ७ अनुराधा ज्येष्ठाकी वृश्चिक ८ मूल पूर्वाषाढाकी धन ९ श्रवण धनिष्ठाकी मकर १० शतभिषा पूर्वाभाद्रपदाकी कुंभ ११ उत्तराभाद्रपदा रेवतीकी मीन १२ इस क्रमसे राशि जानिये ॥



## गृहोंकेनामलानेकाप्रकार ।

गृहस्यपूर्वतोदिक्षुक्रमात्कक्ष्याब्धिदंतिनः ॥

संस्थाप्यालिदजानंकांस्तन्मित्याषोडशगृहाः ॥

टीका—गृहोंके पूर्व दिशा क्रमसे अंक स्थापित करे वे ऐसे—पूर्वको १ दक्षिणको २ पश्चिमको ४ उत्तरको ८ ऐसे चारों दिशाके अंकमें सालाकी संख्या अधिक एक करके मिलावै जो अंक होय सोई नाम गृहका जानिये

गृहोंकेनाम ॥ ध्रुवं धान्यंजयनंदंखरं कांतंमनोरमम् ॥

सुमुखंदुर्मुखंकरं रिपुदं धनदंक्षयम् ॥ आक्रंदंविपुलंज्ञेयं

विजयंचेतिषोडश ॥ गृहंध्रुवादिकंज्ञेयंनामतुल्यफलप्रदम् ॥

टीका—और इन गृहोंके ध्रुव धान्य जय इत्यादिक सोलह नामहैं

इनका शुभाशुभ नामानुसार जानिये ॥

अंशलानेकाप्रकार ॥ व्ययेन संयुतेक्षेत्रेगृहनामाक्षरान्विते ॥

त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषांद्वितीयांशोनशोभनः ॥

टीका—पीछेका जो व्यय होय उसे क्षेत्रफलमें मिलावे और गृहोंको नामके अक्षर संयुक्त करिके तीनका भागदे शेष दो बचें तो अशुभ और एक अथवा पूर्ण भाग लगजानेसे शुभ फल होताहै ॥

गृहोंके भाग ॥ नवभागंगृहंकुर्यात्पंचभागंतुदक्षिणे ॥

त्रिभागंवामतःकुर्याच्छेषंद्वारंप्रकल्पयेत् ॥

टीका—गृह क्षेत्रके नव भाग कर तिसमेंसे पांच भाग दक्षिणको तीन भाग उत्तरको और एक भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करै ॥

गृहोंकेद्वार ॥ द्वारस्योपरियद्वारंद्वारस्यान्यच्चसंमुखम् ॥

व्ययदं तु यदातच्च न कर्त्तव्यंशुभेषुभिः ॥

टीका—द्वारके ऊपर द्वार और आमने सामनेके द्वार व्ययदायक होते हैं शुभाभिलाषी पुरुषोंको ऐसे वरजने चाहिये ॥

गृहोंके स्थानोंके योजनाका प्रकार ।

स्नानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम् ॥ याम्यायांशय

नागारं नैर्ऋत्यांशमंदिरम् ॥ प्रतीच्यांभोजनागारं वायव्यां  
पशुमंदिरम् ॥ भांडकोशंचोत्तरस्यामीशान्यादेवमंदिरम् ॥

टीका—पूर्वमें स्नानका घर १ अग्निकोणमें रसोईका स्थान २ दक्षि-  
णमें सोनेका स्थान ३ नैर्ऋत्यमें शस्त्रालय ४ पश्चिममें भोजनस्थान ५  
वायव्यमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें ऋण्डारकोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इस  
प्रकारसे स्थानोंकी योजना करावै ॥

अल्पदोष ॥ अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषायनभवेद्बृहम् ॥

आयव्ययौप्रयत्नेनविरुद्धं भं च वर्जयेत् ॥

टीका—जिस गृहमें दोष तो अल्प होय परंतु वह बहुत गुणों करके  
श्रेष्ठ होय तो दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय  
तो यत्न करके वर्जित करै ॥

गृहारंभचक्र ॥ आरंभे वृषभं चक्रं स्तंभे ज्ञेयंतुकूर्मकम् ॥

प्रवेशे कालशं चक्रंवास्तुचक्रंबुधेःशुभम् ॥

टीका—गृहारंभमें वृषभचक्र और स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र गृहप्रवेशमें  
कलश यह वास्तुचक्रमें देखिलीजिये ॥

गृहारंभकेमास ॥ सौम्यफाल्गुनवैशाखभाद्रश्रावणकार्तिकाः ॥

मासाःस्युर्गृहनिर्माणेषुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥

टीका—पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन  
महीनोंमें गृहारंभ और शिलान्यास और स्तंभ प्रतिष्ठा शुभ जानिये पुत्र  
लाभ आरोग्यता और आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति होय ॥

गृहारंभकेमासोंकाफल ।

शोकोधान्यं पंचतानिःपशुत्वंस्वातिर्नैःस्वंसंगरंभृत्यनाशम् ॥

सच्छ्रीप्रार्तिवह्निभीर्तिचलक्ष्मींकुर्युश्चैत्राद्यागृहारंभकाले ॥

टीका—चैत्रमासमें शोक प्राप्ति १ और वैशाखमें धान्यप्राप्ति २ ज्येष्ठमें  
मृत्यु ३ और आषाढमें पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें  
दंडिद्र ६ और आश्विनमें कलह ७ और कार्तिकमें भृत्योंका नाश ८ मार्गशी-



दिशानुसारगृहोंका मुख करना ।

कर्कनक्रहरिकुंभगतेकैपूर्वपश्चिममुखानिगृहाणि ॥

तौलिमेषवृश्चिकयानेदक्षिणोत्तरमुखानिवदंति ॥

टीका--कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंका सूर्य होय तो घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करे, तुला मेष वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य होय तो गृहोंका मुख दक्षिण अथवा उत्तरको करै, इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहाहै.

गृहारंभकेनक्षत्र ।

पुष्यमैत्रकरत्रये ॥ धनि

रंभःप्रशस्यत ॥ आदित्यभौमवर्ज्यतुसर्वेवारः ॥

द्रादित्यबलंलब्ध्वा लग्नेशुभनिरीक्षिते ॥ स्तंभोच्छ्रायस्तुकर्तव्यो

ह्यान्यस्तुपरिवर्जयेत् ॥ प्रासादेष्वेवमेवस्यात्कूपवापीषुचैवहि ॥

टीका—तीनों उत्तरा मृग रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शतभिषा रेवती ये नक्षत्र शुभ रवि भौमवार वर्जिके शेषवार शुभ और स्थिर लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि देखे और स्तंभारोपण करावे अन्य कर्मोंको उक्त नहीं है देवालय कूप तडाग वापी इन कृत्योंको शुभ जानिये ॥

वृषचक्र ।

त्रिवेदाब्धित्रिवेदाब्धिद्वित्रिभेष्वर्कतःशशी ॥ कुर्यालक्ष्मीं समुद्रा-

संस्थैर्यलक्ष्मीं दरिद्रतां॥धनं हानिं क्रमान्मृत्युमारंभेवृषचक्रकम् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनमें प्रथम भाग ३ नक्षत्र लक्ष्मीदायक दूसरा भाग ४ उद्वास तृतीय भाग ४ स्थिरताकारक चतुर्थ भाग ३ लक्ष्मी पंचम भाग ४ दरिद्रता षष्ठ ४ धनदायक सप्तम भाग २ नक्षत्र हानिकारक अष्टम ३ नक्षत्र मृत्यु इस क्रमसे जिस दिनका नक्षत्र शुभफलदायक हो उसीमें गृहारंभ करावे ॥

शिलान्यास ॥ दक्षिणपूर्वकोणेकृत्वा पूजांशिलांयसेत्प्रथमाम् ॥

शेषाःप्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवंप्रतिष्ठाप्याः ॥

( १५० )

## ज्योतिषसार ।

टीका—ब्रूजन करिके आग्नेय कोणमें प्रथम शिलास्थापनकरे शेष शिला प्रदक्षिण स्थापित करावे इसी प्रकार स्तंभस्थापनभी करे ॥

शिलान्यासनक्षत्र ॥ शिलान्यासःप्रकर्तव्योगृहाणांश्रवणेमृगे ॥

पौष्णेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥

टीका—श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा इनमें शिलान्यास कर्तव्यहै ॥

## शेषकेमुख ।

कन्यासिंहेतुलायांभुजगपतिमुखं शंभुकोणेशिखातं वायव्ये स्यात्तदास्यंत्वलिधनमकरे ईशखातंवदंति ॥ कुंभे मीने च मेषेनिर्ऋतिदिशि मुखंखातवायव्यकोणे चाश्र्ये कोणे मुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ॥

टीका—कन्या तुल सिंह इन लग्नोंमें शेषके मुख ईशान्यकोणको जानो तो अग्निकोणमें खात करावे ॥ वृश्चिक धन मकर इन लग्नोंमें शेषके मुख वायव्यको तिनमें ईशानको खात करावे ॥ कुंभ मीन मेष इन लग्नोंमें शेषके मुख नैऋतको तामें वायव्यकोणमें खात करावे ॥ वृष मिथुन कर्क इनमें शेषके मुख आग्नेयको तामें नैऋत्यको खात करावे ॥

दुष्टयोग ॥ वज्रव्याघातशूलश्वव्यतीपातश्चगंडकः ॥

विष्कंभपरिचौवज्यौवारौमंगलभास्करौ ॥

टीका—वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गंड विष्कंभ परिघ और भौम रविवार ये वर्जितहैं ॥

## कूर्मचक्रम् ।

तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिकाद्यूक्षसंयुता ॥ तथाद्वादश-  
मिश्राचनवभागेनभाजिता ॥ ॥ फल ॥ ॥ जले वेदाग्नि-  
श्वंद्रःस्थलेपंचद्वयंवसुः ॥ त्रिषट्कनवचाकाशं त्रिविधं कूर्मल-  
क्षणम् ॥ जलेलाभस्तथाप्रोक्तःस्थले हानिस्तथैवच ॥ आ  
काशेमरणंप्रोक्तमिदं कूर्मस्यचक्रकम् ॥

टीका—गृहारंभकी तिथियोंको पांचसे गुणाकरे और कृत्तिका नक्षत्रसे लेकर दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्याको उस गुणनफलमें मिलावे फिर १२ और उसीमें मिलावे नवका भाग दे जो ४ । ७ । १ शेष रहें तो कूर्म जलस्थानमें जानिये ताको फल लाभ और ५।२।८। बचें तो कूर्म स्थलमें जानिये तिसका फल हानि और ३।६।९। शेष बचें तो कूर्म आकाशमें जानिये तिसका फल मरण ये तीनों प्रकारका कूर्म कहाहै ॥

स्तंभचक्र ॥ सूर्याधिष्ठितभद्रयंप्रथमतो मध्येतथा  
विंशतिःस्तंभाग्रे रससंख्ययासुनिवरैरुक्तंमुहूर्त्तशु-  
भम् ॥ फल ॥ स्तंभाग्रेमरणंभवेद्ब्रह्मपतेर्मूले धना-  
र्थक्षयोमध्येचैवतुसर्वसौख्यमतुलं प्राप्नोतिकर्त्तासिदा ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम तिसमें प्रथम दो २ नक्षत्र स्तंभमूल तिसका फल धनक्षय और द्वितीय २० नक्षत्र स्तंभके मध्य तिसका फल लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्ति और तृतीय ६ नक्षत्र स्तंभ के अग्रभागमें मृत्यु जानिये ऐसे शुभ फल देखके स्तंभारोपण करावे देहलीकामुहूर्त्त ॥ मूले मोभेत्रिऋक्षं गृहपतिमरणं पंचगर्भं सुखंस्यान्मध्येदेयाष्टऋक्षंधनसुखसुखदं पुच्छदेशेष्टहानिः ॥ पश्चाद्देयंत्रिऋक्षं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यक्षांचंद्रऋक्षंप्रतिदिनगणयेन्मोभचक्रं विलोक्य ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्र संख्या और फल ऐसे क्रमसे जाने प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें तिसमें स्तंभारोपण करे तो मृत्यु द्वितीय ५ नक्षत्र गर्भमें फल सुख तीसरे ८ नक्षत्र मध्यमें फल धनसुत सुख चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छ भाग फल मित्रहानि पंचम ३ नक्षत्र अग्र भागमें सुख भोग पुत्रलाभ ऐसे शुभफल हैं ॥

द्वारचक्र ॥ अर्काञ्चत्वारिऋक्षाणि ऊर्ध्वेचैव प्रदापयेत् ॥  
द्वौद्रौकोणेषु दद्याद्देशाखायां च चतुश्चतुः ॥ अधश्च-  
त्वारिदेयानिमध्येत्रीणि प्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वंतुलभते रा-  
ज्यमुद्रासंकोणकेषु च ॥ शाखायां लभते लक्ष्मीर्मध्ये रा-  
ज्यप्रदंतथा ॥ अधःस्थेमरणं प्रोक्तं द्वारशक्रप्रकीर्तितम् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखनेका क्रम तिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वारकोण चार तिनमें प्रतिकोणमें २ नक्षत्र तिनका फल उद्वसन, बाजू दो तिनमें नक्षत्र चारि तिनका फल लक्ष्मी और नीचे नक्षत्र ४ फल राज्य, मध्यमें नक्षत्र ३ तिनका फल मरण यह जानिये ॥

### शांतिका अग्निचक्र ।

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषे गुणेभ्रेभुविवाह्निवासः ॥

सौख्यायहोमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौदिविभूतलेच ॥

टीका—जिस तिथिको शांति करनी होय तिसमें एक मिलावे और जो बार होय सो अंक मिलावे ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल तीन अथवा शून्य बचे तो अग्नि मृत्युलोकमें जानिये तिनका फल सुख प्राप्ति और उसमें शांति करनी भी शुभहै और एक शेष रहे तो स्वर्गमें अग्नि ९ प्राणनाश और दो बचे तो पातालमें तिसका फल धन नाश होय ॥

### ग्रहके मुखमें आहुतिका विचार ।

तरणिविद्भुगुभास्करिचंद्रमःकुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः ॥

रविभतोदिनभंगणयेत्क्रमात्प्रतिखगंत्रितयंत्रितयंन्यसेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनका इस क्रमसे फल जानिये ये प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य फल अशुभ; द्वितीय भाग ३ न. बुध शु० तृतीय भाग ३ न. शनि फल अशुभ, फिर ३ न. चंद्रके फिर ३ न. भौमके फिर ३ न. गुरुके तिस पीछे ३ न. राहुके फिर ३ न. केतुके इसमें शुभ ग्रहके शुभ पाप ग्रहके अशुभ जानिये ॥

### गृहप्रवेशका मुहूर्त ।

अथप्रवेशेनवमंदिरस्ययात्रानिवृत्तावथभूपतीनाम् ॥

सौम्यायने पूर्वदिनेविधेयं वास्त्वर्चनंभूतबलिश्चसम्यक् ॥

टीका—यात्रा और राजदर्शन मुहूर्तमें उत्तरायण सूर्य होय, और प्रवेशके प्रथम-दिवसमें वास्तुपूजा और भूतबली करके गृहप्रवेश योग्यहै ॥

चित्रानुराधामृगपौष्णपुष्यस्वातीधिनिष्ठाश्रवणंचमूलम् ॥

वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौप्रशस्तोभवनप्रवेशः ॥

टीका—चित्रा अनुराधा रेवती पुष्य स्वाती धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथिको त्यागिके गृहप्रवेश कीजिये ॥

कलशचक्र॥ प्रवेशः कलशैर्कक्षात्पंचनागाष्टषट्क्रमात् ॥

अशुभंचशुभंज्ञेयमशुभंचशुभंतथा ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जो नक्षत्र होय उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और आठ नक्षत्र शुभ आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ ऐसे कलशचक्र जानिये ॥

वामार्कलक्षण ॥ रंध्रात्पुत्राद्धनादायात्पंचस्वर्कैस्थितेक्रमात् ॥

पूर्वांशादिमुखं गेहंविशेद्रामोभवेदतः ॥

टीका—घरमें प्रवेश करनेके समय सूर्य वामार्क होय तिसका जाननेका क्रम प्रवेश लग्नोंमें अष्टमस्थानमें पंचमस्थानी सूर्यहोय और घरका द्वार पूर्व तथा दक्षिणकी ओरको होय २ तिसका स्थान ० या ० पंचमस्थान पर्यंत और घरका मुख पश्चिमको होय स्थान ० या ० पंचमस्थान पर्यंत ३ अथवा ग्रहोंका मुख उत्तरको होय तो सूर्य १ १ स्थान ५ स्थानोंतक आवे प्रवेशमें वामार्क युक्त है ॥

शुभाशुभग्रहऔरलग्न॥ त्रिकोणकेंद्रगैःशुभैस्त्रिषष्टलाभसंस्थितैः ॥

असद्रहैः स्थिरोदयेगृहंविशेद्रलेविधौ ॥

टीका—त्रिकोण और केंद्रस्थानमें शुभग्रह होय ऐसे स्थिर लग्न देखके और तीसरे छठे तथा लाभस्थानमें पापग्रह होय तो बली चंद्रमामें गृहप्रवेश करना शुभजानिये ॥

गृहारंभकीलग्नशुद्धि ॥ त्रिषडायगतेः पापैरष्टात्येन्तरगैःशुभैः ॥

चंद्रे लग्नैः रिरंध्रांत्यवर्जिते स्याच्छुभं गृहम् ॥

टीका—३ । ६ । १ १ स्थानमें पापग्रह शुभ और ८ । १ २ । स्थानमें इतरस्थानोंमें शुभग्रह होंय तो शुभ जानिये परंतु चंद्रमा लग्न तथा षष्ठ द्वादश अष्टमस्थानमें न होय ॥



( १५४ )

ज्योतिषसार ।

अशुभयोगोंकेलग्न ॥ धनकेंद्रत्रिकोणस्थःक्षीणश्चंद्रोनशोभनः ॥

शत्रोर्नवांशगःखेटःखास्तसंस्थोपिनोशुभः ॥

टीका—लग्नविषे २ । १ । ४ । ७ । १० । ५ । ९ । स्थानोंमें क्षीण-  
चंद्र स्थित होय तो अशुभ है और स्वराशिका शत्रु नवांशकमें होय तो  
भी अशुभ क्षीणचंद्र कृष्णपक्षकी पंचमीसे जानो ॥

आयुष्यप्रमाण ॥ लग्नेजीवःसुखेशुक्रोबुधःकर्मण्यरौरविः ॥

रविजःसहजेनूनंशतायुःस्यात्तदागृहम् ॥

टीका—लग्नमें बृहस्पति ४ शुक्र ४ बुध १० सूर्य ३ शनि ऐसी ल-  
ग्नमें गृहारंभ करनेसे उसगृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जाननी ॥

दूसराप्रकार ॥ भृगुर्लग्नेबुधोव्योमिलाभेऽर्कःकेंद्रगोगुरुः ॥

यस्यारंभचतस्यायुर्वत्सराणांशतद्वयम् ॥

टीका—शुक्र और बुध १० दशमस्थानी ११ रवि और १ । ४ । ७ । १०  
गुरु ऐसे लग्नमें गृह आरंभ करावे तो २०० वर्षकी आयु कहिये ॥

अन्यच्च ॥ जीवोबुधोभृगुव्योमि लाभगौभानुभूमिजौ ॥

प्रारंभेयस्यतस्यायुःसमाशीतिःसहश्रिया ॥

टीका—गुरु बुध शुक्र ये १० स्थानमें ११ रवि भौम होंय तो लक्ष्मी  
युत घरकी ८० वर्षकी आयु जाननी ॥

स्वोच्चर्तिनिभृगौविलग्नगेदेवमंत्रिणिरसातलेऽथवा ॥

स्वोच्चगेरविसुतेऽथवाऽऽयगेस्यात्स्थितिश्चसुचिरंसहश्रिया ॥

टीका—लग्नमें उच्चका शुक्र होके बैठा होय गुरु ४ होय उच्चका वा स्वक्षेत्री  
शनि होके ११ स्थानी हो तो लक्ष्मीयुक्त चिरकाल घरकी आयु कहना ॥

स्वक्षेगेहिमगौलाभेसुरेज्येकेन्द्रसंस्थिते ॥

धनधान्यसुतारोग्ययुक्तंधामचिरंभवेत् ॥

टीका—कर्कका चंद्रमा ११ वें स्थानमें और गुरु केंद्रमें १ । ४ । ७ ।  
१० होंय तो वह धनयुक्त और सुत आरोग्य सहित चिरकाल रहे ॥

दूसरे मतसे पृथ्वी शोधनेका प्रकार ।

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यःप्रथमस्फुटीभवेत् ॥

वर्गादिवर्णः किल तद्दिशि स्मृतं शल्यं मुनीन्द्रैर्हपयास्तु मध्यतः ॥  
स्मृत्वेष्टदेवताप्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ॥ गृहीत्वा तु ततः  
शल्यशल्यं सम्यग्विचार्यते ॥

टीका—कुंडके निमित्त अर्थात् नूतन गृहके बनानेको प्रथम भूमि शो-  
धनेका प्रकार पृच्छक इष्टदेवताका स्मरण करके ब्राह्मणसे प्रश्न करे ताके  
मुखसे आदि अक्षर जिस वर्गका निकले तिसके उत्तर अ क च ट त प यह  
वर्ग पूर्वादि अष्टदिशाओंमें मध्यभागी ह प य वर्गोंके आदि अक्षर जहां  
होंय इस स्थानमें अमुक शल्य है तिसका प्रकार नीचे लिखा है जिसमेंसे  
उन २ स्थानोंका फल जानिये ॥

### प्रश्नअक्षरफल ।

पूर्व ॥ पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ॥ सार्धहस्त  
प्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युकृत् ॥ आग्नेय ॥ आग्नेय्यां दिशिकः  
प्रश्ने खरशल्ये करद्रयम् ॥ राजदंडो भवेत्त्रभयं नैव निवर्तते ॥  
दक्षिण ॥ याम्यायां दिशि चः प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम् ॥  
नरशल्यं गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ॥ नै ॥ नैर्ऋत्यां दिशि टः प्र  
श्ने सार्धहस्तादधः स्थले ॥ शुनोः स्थिजायते तत्र बालानां जायते  
मृतिः ॥ प ॥ तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ॥  
सार्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ वाय ॥ वायव्यां दि-  
शि पः प्रश्ने तुषांगाराश्च तुष्करे ॥ कुर्वति मित्रनाशं च दुःस्वप्नद-  
र्शनं सदा ॥ उत्तर ॥ उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः ॥  
तच्छीघ्रं निर्धनत्वाय कुबेरसदृशस्य हि ॥ ई ॥ ईशान्यां दिशि शः  
प्रश्ने गोशल्यं सार्धहस्ततः ॥ तद्गोधस्य नाशाय जायते गृहमे-  
धिनः ॥ मध्यभाग ॥ हपयामध्यकोष्ठे च वक्षोमात्रं भवेदधः ॥  
नृकपालमथो भस्मलोहं तत्कुलनाशकृत् ॥

टीका—पृच्छकके मुखसे आदि अक्षर अवर्गका निकले तो पूर्वको डेढ

हाथ गहरा खोदे तो मनुष्यकी हड्डी निकले वह मृत्युकारक जानिये १ ( क ) निकले तो २ हाथके गहरावमें गदहेकी निकले उससे राजदंडका भय कभी निवृत्ति न होय ३ ( च ) अक्षरका उच्चारण होय तो दक्षिणकी ओर कटि बराबर खोदनेसे नरके अस्थि निकले तिसका फल चिरकालके रोगसे मरण ४ ( ट ) का उच्चार होय तो नैर्ऋत्य दिशामें डेढहाथ ओंडा खोदनेसे कुत्तेके अस्थि निकलें तिसके फल बालक न जीवे ५ ( त ) का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशामें डेढ हाथके गहरायमें बालकके अस्थि निकलें तिसका फल गृहका स्वामी सदा घरमें न रहै ६ ( प ) होय तो वायव्य दिशामें ४ हाथपर जली हुई धातुकी भूसी वा कोयले निकलें तिसका फल मित्रनाश दुस्वप्नदर्शन ७ ( य ) वर्ग होय तो एक हाथपर उत्तर कोणमें ब्राह्मणके हाड निकलें तिसका फल कुबेर समान भी धनाढ्य दरिद्री होय ७ ( श ) होय तो ईशान दिशामें डेढ हाथपर गौकी अस्थि निकलें तिसका फल गोधनका नाश ८ ( ह प य ) होय तो मध्य भागमें छाती बराबर ओंढेमें मनुष्यका कपाल वा भस्म वा लोह निकले तिसका फल कुलका नाश ९ जिस वर्गका नाम प्रश्नकर्ताके मुखसे उच्चारण होय उसी दिशाको देखे ॥

### यात्राप्रकरणम् ।

शुक्र संमुख ॥ एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविप्लवे ॥

विवाहेतीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रोनाविद्यत ॥

टीका—गांवके गांवमें अथवा शहरके शहरमें दुर्भिक्षकालमें तथा देशोपद्रवमें विवाह समयमें और तीर्थयात्रामें सम्मुख शुक्र होय तो दोष नहींहै ॥

पौष्णदावाग्निपादांतं यावत्तिष्ठतिचंद्रमाः ॥

तावच्छुक्रोभवेदंधःसन्मुखंगमनंशुभम् ॥

टीका—रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंके प्रथम चरण चंद्रमा होनेसे शुक्र अंध होताहै उसके सन्मुख गमनमें दोष नहींहै ॥

शुभाशुभफलम् ॥ दक्षिणेदुःखदःशुक्रःसंमुखोहंतिमंगलम् ॥

वामेपृष्ठेशुभो नित्यंरोधयेदस्तंगःशुभः ॥

टीका—गमन अर्थात् यात्रामें दाहिना शुक्र होय तो दुःखदायक संमुख कार्य नाशक और वामभागमें पीछेकाशुक्र मंगलदायक और पूर्वमें अस्त होय तो पश्चिमको गमन शुभ और पश्चिममें अस्त होय तो पूर्वमें शुभगमन जानिये ॥

घातचन्द्रनिर्णय-प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणिज्यसंग्रहे ॥

वादेचैवगृहारंभेवर्जितोघातचंद्रमाः ॥

टीका—यात्रा युद्ध खेतकर्ममें व्यापार अन्न आदि भरनेमें विवाद गृहके आरंभमें घात चंद्रमा वर्जितहै ॥

घातप्रकरणम्- घाततिथिघातवारंघातनक्षत्रमेवच ॥

यात्रार्यावर्जयेत्प्राज्ञोह्यन्यकर्मसुशोभनम् ॥

टीका—घाततिथि घातवार घातनक्षत्र यात्रामें वर्जितहै और कार्योंमें

॥

मेषेरविर्मघाप्रोक्ताषष्ठीप्रथमचंद्रमाः ॥ वृषभेपंचमोहस्तश्च-  
तुर्थीशनिरेवच ॥ मिथुनेनवमःस्वातीअष्टमीचन्द्रवासरः॥क-  
र्केंद्रिनुराधाचबुधःषष्ठीप्रकीर्तिता ॥ सिंहेषष्ठश्चंद्रमाश्चदश-  
मीशनिमूलके ॥ कन्यायांदशमश्चंद्रःश्रवणःशनिरष्टमी ॥ तु-  
लेगुरुर्द्वादशीस्याच्छतंतृतीयचंद्रमाः ॥ वृश्चिकेरेवतीसप्तदश-  
मीभार्गवस्तथा ॥ धनेचतुर्थीभरणीद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥  
मकरेष्टमीरोहिणीद्वादशीभौमवासरः ॥ कुंभेएकादशश्चार्द्रा  
चतुर्थीगुरुवासरः ॥ मीनेचद्वादशःसार्पद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥

| राशि    | मेष | वृष  | मिथु. | कर्क | सिंह | क.   | तुला | वृश्चि. | धन  | मक. | कुंभ | मीन   |
|---------|-----|------|-------|------|------|------|------|---------|-----|-----|------|-------|
| चंद्र   | १   | ५    | ९     | २    | ६    | १०   | ३    | ७       | ४   | ८   | ११   | १२    |
| वार     | रवि | शनि  | च.    | बु.  | श.   | श.   | गु.  | शु.     | शु. | मं. | गु.  | शु.   |
| नक्षत्र | मघा | हस्त | स्वा. | अनु. | मू.  | श्र. | श.   | रे.     | भ.  | रो. | आ.   | आश्ले |
| तिथि    | ६   | ४    | ८     | ६    | १०   | ८    | १२   | १०      | २   | १२  | ४    | २     |

मेषादि १२ राशि घातचंद्रादिचतुष्टय बचाकर यात्रामें शुभनक्षत्रआदि देखले  
कालचंद्र-मेषेवेदावृषेऽष्टौचमिथुनेचतृतीयकः॥दशकैरविः  
सिंहेकन्याअंकःप्रकीर्तितः ॥ षट्तुलेवृश्चिकेखेदुधनेरुद्राःप्र-  
कीर्तिताः ॥ मकरेऋषयःप्रोक्ताःकुंभेबाणाउदाहताः॥मीने  
त्वंग्रिःकालचंद्राःशौनकश्चेदमब्रवीत् ॥

( १५८ )

ज्योतिषसार ।

टीका—मेषराशिको ४ वृषको ८ मिथुनको ३ कर्कको १ ० सिंहको १ २ कन्या ९ तुलाको ६ वृश्चिकको १ १ धनको १ १ मकरको ७ कुंभको ५ मीनको ४ चौथा चंद्रमा कालचंद्र जानिये ये कालचंद्र शौनकऋषिप्रोक्त सर्व कर्मोंमें वर्जितहैं ॥

तिथिपरत्वसेवर्जितलग्न ।

नंदायामलिहयौस्तुतुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायांमीनधनुषोः  
कालस्तिष्ठतिसर्वदा ॥ जयायांस्त्रीमिथुनयोरिक्तायांमेषक-  
र्कयोः ॥ पूर्णायांकुंभवृषयोर्मनुष्यपरणंध्रुवम् ॥

टीका—नंदातिथिको वृश्चिक सिंह तुला मकर और भद्रातिथिको मीन धन और जया तिथिको कन्या मिथुन और रिक्ता तिथिको मेष कर्क पूर्णातिथिको कुंभ वृष इन तिथियोंमें लग्न वर्जितहैं ॥

यात्राकेनक्षत्र ।

हस्तेंदुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्ठाचपुनर्वसुश्च ॥

प्रोक्तानिधिष्यनिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपंचादिमसप्तताराः ॥

टीका—हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र प्रयाणमें उक्तहैं परंतु ३।५।१।७ ये तारा गमनमें वर्जितहैं ॥

मध्यनक्षत्र—रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ॥

षाढोत्तराभाद्रविश्वे प्रयाणेमध्यमाःस्मृताः ॥

टीका—रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उ-  
त्तराषाढा ये नक्षत्र यात्रामें मध्यमहैं ॥

वर्ज्यनक्षत्र ।

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका ॥ सार्ष्णातीविशा-  
खाचनित्यंगमनवर्जिताः ॥ कृत्तिकाएकविंशत्या भरण्याः स  
प्तनाडिकाः ॥ एकादशमघायाश्चत्रिपूर्वाणांचषोडश ॥ विशा  
खासार्षचित्रासुस्वातीरौद्रचतुर्दशी ॥ आद्यास्तुषटिकास्त्या-  
ज्याःशेषांशेगमनंशुभम् ॥

टीका—इन नक्षत्रोंको प्रयाण कालमें वर्जित करै परंतु जो कुछ आवश्यक काम व संकट आन पड़े तो तीनोंपूर्वाकी १६ घटिका मघाकी ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणीकी ७ घटिका कृत्तिकाकी २१ जन्मनक्षत्र संपूर्ण आश्लेषा विशाखा चित्रा स्वाती आर्द्रा इन नक्षत्रोंकी आय १४ घटिका वर्जिके प्रयाण करै ॥

प्रयाणमेंशुभाशुभविचार॥अर्ककेशमनर्थकंचगमने सोमेचवं-  
धुप्रियंचांगारेऽनलतस्करज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थबुधे ॥ क्षेमारो  
ग्यसुखं करोतिचगुरौलाभश्चशुकेशुभोमंदेबंधनहानिरोगमर-  
णान्युक्तानिगर्गादिभिः ॥

टीका—रविवारको गमनकरे तो मार्गमें केश और अर्थकी हानि होय सोमवारको गमनकरै तौ बंधु और प्रियदर्शन मंगलमें अग्नि चोर भय और ज्वर प्राप्ति बुधवारमें द्रव्य और सुखप्राप्ति गुरुवारमें आरोग्य और सुख शुक्रवारमें लाभ और शुभ फलप्राप्ति शनिवारमें गमनकरै तौ बंधन रोग और मरण प्राप्तिहोय ॥

## होराकथन व शकुन ।

अर्कशुक्रौः

योगाः ॥ यस्यग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम् ॥ तस्य  
ग्रहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते ॥

टीका—जिस वारका होरा होय उसीमें प्रथम २ घटिका होरा तिसके छठे वारको दूसरा होरा इस क्रमसे दिवसके वार होरा जानिये २ रविवारका होरा राजसेवाको शुभ द्वितीय २ शुक्रका गमनको तृतीय बुधका ज्ञानप्राप्ति चतुर्थ चंद्रका सर्वकार्यको, पंचम शनिका द्रव्यका संग्रह योग्य, छठा गुरुका विवाह को, सातवा मंगलका युद्धको जानिये इस प्रमाण होराका क्रम जानिये और जिस २ ग्रहका जो २ वार तिसमें कथित कृत्य उसके होरामें करावै ॥

सूर्यकाहोरा ॥सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयंच ॥  
काकत्रयंद्वौनकुलौ तथैव चाषस्तथैको वृषभश्चगौश्च ॥

( १६० )

ज्योतिषसार ।

टीका—रविके होरामें गमन करे तो आगे जो शकुन होय तिनको कहतेहैं रजकी, वस्त्र, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, दो न्योला, दो चाष एक बैल, और गायके शकुन मिलैं ॥

चंद्रकाहोरा ।

चंद्रस्यहोरेद्विजयुगमकाकभेरीमृदंगानकुलाःखरोष्ट्रौ ॥

हयश्चगोमेषशुनस्तथैवपुष्पाणिनारीद्रयमेवमार्गै ॥

टीका—चंद्रमाके होरामें गमनकरे तो मार्गमें दो ब्राह्मण और काक नगारे मृदंग और न्योला गर्दभ ऊंट घोडा गाय मेंढा कुत्ता और पुष्प दो स्त्रियां ये शकुन मिलैं ॥

मंगलकाहोरा ।

मार्जारयुद्धंकलहःकुटुंबरजस्वसास्त्री भवनस्यदाहः ॥

नपुंसकःश्वत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्तोधरणीसुतस्य ॥

टीका—मंगलके होरामें गमन करे तो मार्जारयुद्ध अथवा स्त्री पुरुषोंका कलह अथवा रजस्वला स्त्री अथवा जलताहुआ घर किंवा नपुंसक तीन कुत्ता किंवा नग्न ब्राह्मण भेदे ॥

बुधकाहोरा ।

बुधस्यहोरेशकुनस्यसर्वःस्त्रीपुत्रयुक्ताकलशस्तुपूर्णः ॥

सुचातकश्चाषगजौकुमारःपुष्पाणिनारीखलुदर्पणश्च ॥

टीका—बुधके होरामें सर्व शकुन स्त्री पुत्रयुत, पानी भराहुआ कलश, चातक पक्षी वा चाषपक्षी, गज किंवा बाल, पुष्प, स्त्री, दर्पण, ये मार्गमें मिलैं ॥

गुरुकाहोरा ।

गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुःस्त्रीबालयुक्तासजलोघटस्तु ॥

ऊर्णाचकाकोनकुलोवकश्चहंसस्यराजावहवस्तुवैश्याः ॥

टीका—गुरुकेहोरामें ब्राह्मण गणिका अथवा गाय पुत्रसहित स्त्री जलपूर्णघट शाल अर्थात् ऊन वस्त्र काक न्योला बगला हंसकाराजाकिंवा बहुत वैश्यमिलैं

## शुक्रकाहोरा ।

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेन्द्रःकाकत्रिपंचाथनपुंसकोवा ॥

मद्यंहिमांसगणिकाचधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयंचवैश्यः ॥

टीका—शुक्रके होरामें ब्राह्मण गणिका ३ अथवा ५ काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीनशूद्र वैश्य ये मिलें ॥

## शनिका होरा ।

पतंगसूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्रीमृतकस्तथैव ॥

पिशाचगृध्रौविधवाचवाह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः ॥

टीका—शनिके होरामें नग्न मुसलमान, रजस्वला स्त्री, प्रेत, पिशाच, गृध्र पक्षी, विधवा स्त्री, अग्नि, नपुंसक, तथा प्रचंड तरुणपुरुष, ये शकुन मिलें ॥

## उत्तमप्रश्न न होयतो ।

मनुकावाक्य ॥ गमनंप्रतिराजंस्तु सन्मुखादर्शनेनच ॥

प्रश्नस्तांश्चैवसंभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्तयेत् ॥

टीका—राजा प्रति कहतेहैं—गमनकालमें पूर्वोक्त शकुनोंका कीर्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न होय तो मनमें स्मरण करिके गमन करे तो शुभ होय ॥

## वारानुसारवस्त्रधारण ।

रवौनीलंबुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ॥

श्वेतं गुरौभृगौभौमेरक्तंसोमेतुचित्रकम् ॥

टीका—रविवारको नीलेवस्त्र धारणकरे, बुधवारको पीत, शनिवारको काले, गुरु व शुक्रको श्वेत, मंगलको रक्त, सोमवारमें चित्र, इस प्रकार वस्त्र धारण करिके गमन करे ॥

नक्षत्रतिथिवार अनुसार दिक्छूल वज्र्य ॥

पूर्वदिशा ॥ मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नवमीषुच ॥

शनौसोमेबुधे चैव पूर्वस्यांगमनं त्यजेत् ॥



( १६२ )

ज्योतिषसार ।

टीका—मूल श्रवण ज्येष्ठा ये नक्षत्र प्रतिपदा नवमी तिथि और शनि सोम बुधवार इनमें पूर्व दिशाको गमन न कीजिये ॥

दक्षिणदिशा ॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यौपंचमीचत्रयोदशी ॥

गुरुर्धनिष्ठाद्राचैवयाम्येसप्तविवर्जयेत् ॥

टीका—पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी नक्षत्र और पंचमी त्रयोदशी तिथि गुरुवार धनिष्ठा इनमें दक्षिण दिशाको गमन न कीजिये ॥

पश्चिम ॥ रोहिण्यांचतथापुष्येषष्ठीचैव चतुर्दशी ॥

भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमांदिशम् ॥

टीका—रोहिणी पुष्यनक्षत्र षष्ठी चतुर्दशी तिथि रवि गुरुवार इनमें पश्चिम दिशाको गमन न कीजिये ॥

उत्तर ॥ करेचोत्तरफाल्गुन्यांद्वितीयांदशर्मांतथा ॥

बुधेरवौ भौमवारे नगच्छेदुत्तरांदिशम् ॥

टीका—हस्त उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र २।१० तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तर दिशाको गमन न कीजिये ॥

विदिक्शूल ॥ ऐशान्यांज्ञेशनौशूलआग्नेय्यांगुरुसोमयोः ॥

वायव्यांभूमिपुत्रेतुनैर्ऋत्यांशुक्रसूर्ययोः ॥

टीका—वारानुसार विदिशाओंका शूलहोताहै तिसमें गमन न कीजिये बुध और शनिवारमें ईशान्य दिशाको वर्जितहै गुरु और सोमवारमें आग्नेयको और मंगलमें वायव्यको शुक्र और रविवारमें नैर्ऋत्यको गमन वर्जितहै ॥

शूलदोषनिवारणार्थं भक्षण ।

सूर्यवारेघृतंपीत्वा गच्छेत्सोमपयस्तथा ॥ गुडमंगारवारे

तुबुधवारेतिलानपि ॥ गुरुवारेदधिज्ञेयं शुक्रवारियवानपि ॥

माषान्भुक्त्वाशनेवारे शूलदोषोपशांतये ॥

टीका—रविवारको घी और सोमवारको दूध पीवै मंगलको गुड बुधको तिल गुरुको दधि शुक्रको बब शनिवारको उडदकी वस्तु खाय, ऐसे भक्षण करके गमन करे ॥

## कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जितकर्म ।

शय्यावितानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणाजिनम् ॥

याम्यदिग्गमनंकुर्यान्नचंद्रेकुंभमीनगे ॥

टीका—पलंग बुनवाना और प्रेताग्निक्रिया और तृणकाष्ठादिसंग्रह और दक्षिणको गमन ये सकल कर्म कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जितहैं ॥

संमुखचंद्रविचार ॥ करणभगणदोषंवारसंक्रांतिदोषंकुति-  
थिकुलिकदोषंयामयामार्द्धदोषम् ॥ कुजशनिरविदोषंराहु-  
केत्वादिदोषंहरतिसकलदोषंचंद्रमाःसंमुखस्थः ॥

टीका—करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्ध मंगल शनि रवि राहु केतु इत्यादि दोषोंको संमुखस्थ चंद्रमा गमन करनेसे समय दूर करताहै.

## दिशानुसारसंमुखचंद्रमाविचार ।

मेषेचसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेचयाम्ये ॥ तुलेचकुंभे  
मिथुनेप्रतीच्यांकर्कालिमीनेदिशिचोत्तरस्याम् ॥ फल ॥ सं  
मुखेश्चार्थलाभायदक्षिणेसुखसंपदः ॥ पृष्ठतःप्राणनाशायवा-  
मेचंद्रेधनक्षयः ॥

टीका—मेष सिंह धन इन राशियोंका चंद्रमा पूर्वमेंहै और वृष कन्या मकर दक्षिणमें तुला कुंभ मिथुनका पश्चिममें कर्क वृश्चिक मीनका उत्तरमेंवास करताहै ॥ फल ॥ दिशानुसार संमुख चंद्रमा होते गमन करे तो अर्थलाभ होय और दाहिना होय तो धनसंपत्तिकी प्राप्ति होय और पृष्ठभागमें चंद्रमा होय तो प्राणनाश और वामभागी होय तो धनक्षय जानिये ॥

कालवेलविचार ॥ पूर्णाह्नेचोत्तरांगच्छेत्प्राच्यांमध्याह्नकेतथा ॥

दक्षिणेअपराह्नेतुपश्चिमेह्यर्धरात्रके ॥

टीका—दिवसके प्रथम प्रहरमें उत्तरको दूसरे प्रहरमें तथा मध्याह्नमें पूर्वको और तीसरेमें दक्षिणको और अर्द्धरात्रमें पश्चिमको गमन करे ॥

योगिनीवास ॥ प्रतिपन्नवमीपूर्वेद्वितीयादिशिचोत्तरे ॥ तृतीयै-  
कादशीबह्वौचतुर्दादशिनैर्ऋते ॥ पंचत्रयोदशीयाम्येषष्ठभूतं

चपश्चिमे ॥ सप्तमीपूर्ववायव्येह्यमावास्याष्टमीशिवे ॥ फल ॥  
पृष्ठेचशिवदाप्रोक्तावामेचैवविशेषतः ॥ योगिनीसाभवेन्नित्यं  
प्रयाणेशुभदानृणाम् ॥

टीका--प्रतिपदा और नवमीको पूर्वमें द्वितीया और दशमीको उत्तरमें तीज और एकादशीको आग्नेयमें चौथ और द्वादशीको नैर्ऋत्यमें पंचमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें षष्ठी और चतुर्दशीको पश्चिममें सप्तमी और पूर्णिमाको वायव्यमें अमावास्या और अष्टमीको ईशान्यमें इस प्रमाणसे योगिनीका वास जानिये ॥ तिसका फल ॥ पृष्ठभागी अथवा वामभागी होय तो शुभ जानिये ॥

वारानुसार कालराहुका वास॥अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमेभौमे  
प्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेच ॥ याम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रमेदंचपूर्वे  
पवदंतिकालम् ॥

टीका--रविवारको उत्तरमें सोमवारको वायव्यमें मंगलको पश्चिममें बुधवारको नैर्ऋत्यमें गुरुवारको दक्षिणमें शुक्रवारको आग्नेयमें शनिवारको पूर्वमें इसप्रमाणसे कालराहु वार अनुसार जानिये ॥

फलकाश्लोक ॥ रविदिनगुरुपूर्वेसोमशुक्रेचयाम्येवरुणदिशितु  
भौमेचोत्तरेसौरिसंस्थे ॥ प्रतिदिनमितिमत्वाकालराहुर्दिशा-  
नांसकलगमनकार्येवामपृष्ठेचसिद्धिः ॥

टीका--रवि अथवा गुरु इन वारोंमें पूर्वको गमनकरे तो कालराहु वाम पृष्ठभागी जानिये तिसमें गमन करे तो सर्व कार्यकी सिद्धि होय सोम शुक्रमें दक्षिणको गमनकरे भौमवारमें पश्चिमको शनिवारमें उत्तरको गमनकरे तो कार्यसिद्धि होय ॥

क्षुधितराहु ॥ इन्द्रेवायौयमेरुद्रेतोयेग्नौशशिरक्षसोः ॥ यामार्द्धं  
क्षुधितोराहुर्भ्रमत्येवदिगष्टके ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगोनच  
चंद्रमाः ॥ सिद्धयंतिसर्वकार्याणियात्रायां दक्षिणे रवौ ॥

टीका--प्रथम यामार्द्धमें क्षुधितराहु पूर्वको जानिये द्वितीयमें वायव्यको

तृतीयमें दक्षिणको चतुर्थमें ईशान्यको पंचममें पश्चिमको षष्ठमें आग्नेयको सप्तममें उत्तरको अष्टम यामार्द्धमें नैऋत्यको इसप्रमाणसे अट्टदिशाओंमें भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भागमें स्थित रवि विचारके गमन करे तो तिथि नक्षत्रादिकका दोष जाता रहे और समस्त कार्य सिद्धि होय ॥

काल कहाँ है तिसका ज्ञान ॥ कालः पलंपातकलोहपातवडवानलः  
खड्गकचोलिकांतिः ॥ नखाश्चतुर्विंशतिषट्त्थादिशुद्राधृति-  
वैदगुणाः क्रमेण ॥ तिथ्यायुतवैवसुभाजितंचशेषश्चकालोमुनयो  
वदंति ॥ फल ॥ कालंचपृष्ठेफलसंमुखेनपातंचलोहंवडवांचपृष्ठे ॥  
खड्गंचचाप्रेकवचंचवामेकांतिश्चयोज्यादिशिदक्षिणस्याम् ॥

टीका—कालोंके नाम १ काल २ पल ३ पातक ६ लोहपात ६ वडवानल  
खड्ग ७ कवच ८ कांति ऐसे आठ नाम तिनके ऊपर अंक लिखे हैं उनमें गमन  
कालकी जो तिथि है उनको एक २ अंकमें मिलावे आठका भाग दे शेष  
जो अंकरहे तिस दिशाको काल जानिये, इस प्रकार पूर्वादि आठ दिशा  
क्रमसे जानिये पृष्ठभागी काल शुभ सन्मुखका फल शुभ पृष्ठभागमें पातक  
लोह और वडवानल ये तीनों शुभ अग्रभागमें खड्ग शुभ वामभागमें कवच  
शुभ दक्षिणभागमें कांति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचारिके उस दिशाको  
युद्धमें किंवा यात्रामें गमन करे तो शुभहो ॥

पंथाराहुचक्र ॥ स्युर्धर्मेदस्रपुण्योरगवसुजलपट्टीशमैत्राप्यथा-  
र्थेयाम्याज्यांघ्रांद्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥  
वह्न्याद्राबुध्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षोऽथरोहिण्य  
यंमणाब्जेदुविश्वांतिमभदिनकरक्षाणिपंथादिराहौ ॥

|       |          |          |         |        |            |           |                |
|-------|----------|----------|---------|--------|------------|-----------|----------------|
| धर्म  | अश्विनी  | पुष्य    | आश्लेषा | विशाखा | अनुराधा    | घनिष्ठा   | शततारका        |
| अर्थ  | भरणी     | पुनर्वसु | मघा     | स्वाती | ज्येष्ठा   | श्रवण     | पूर्वाभाद्रपदा |
| काम   | कृत्तिका | आर्द्रा  | पूर्वा  | चित्रा | मूल        | अभिजित्   | उत्तराभाद्रपदा |
| मोक्ष | रोहिणी   | मृग      | उत्तरा  | हस्त   | पूर्वाषाढा | उत्तराषा. | रेवती          |

टीका—नक्षत्र २८ तिनके भाग ४ तिनके नाम प्रथम धर्ममार्गके नक्षत्र ७  
दूसरे अर्थ मार्गके नक्षत्र ७ तृतीय काम मार्गके नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्गके

( १६६ )

ज्योतिषसार ।

नक्षत्र ७ इसप्रकार चार मार्गोंके नक्षत्र जानिये तिनमें मार्गके नक्षत्रमें सूर्य होय तो चंद्रमा चार वर्गोंके नक्षत्रमें फिरताहै तिनके फल कहतेहैं ॥

धर्ममार्गोंकेफल ॥ धर्ममार्गेंगतेसूर्ये अर्थांशेचंद्रमायदि ॥

तदाशत्रुभयंतस्यज्ञेयंतुविबुधैःशुभम् ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्रमें सूर्य और अर्थमार्गी नक्षत्रमें चंद्रमा होय तो गमन करनेसे मार्गमें शत्रुभय होय ॥

धर्ममार्गेंगतेसूर्येचंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥

संहारश्चभवेत्तत्र भंगोहानिःप्रजायते ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्रोंके सूर्य और चंद्रमा दोनों होय तो संहार भंगहानि प्राप्ति होय ॥

धर्ममार्गेंगतेसूर्येकामांशेचंद्रमायदि ॥

विग्रहोदारुणंचैवचौराकुलसमुद्भवम् ॥

टीका—धर्ममार्गीमें सूर्य और काममार्गी नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो विग्रह दारुण और चोरभय ॥

धर्ममार्गे गतेसूर्येचंद्रेमोक्षगतेयदि ॥

गृहलाभोभवेत्तस्य विज्ञेयो नात्रसंशयः ॥

टीका—धर्ममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल गृहलाभ व मार्गसुख होय ॥

अर्थमार्गकेफल ।

अर्थमार्गेंगतेसूर्येचन्द्रे धर्मस्थितेयदि ॥

गजलाभोभवेत्तस्य तत्रश्रीः सर्वतोमुखी ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल लाभ और लक्ष्मीप्राप्ति और सर्वदा सुखी होय ॥

अर्थमार्गेंगतेसूर्येचंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥

प्रथमंजायतेकार्यंतत्रभंगो भविष्यति ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और चंद्रमा दोनों होय तो प्रथम कार्यसिद्धि होय और पीछे भंग होजाय ॥

अर्थमार्गैंगतेसूर्ये चंद्रकामांशसंस्थिते ॥

सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्रसंशयः ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो ऐसे योगका फल सर्व कार्यसिद्धि होय ॥

अर्थमार्गैंगतेसूर्येचंद्रेमोक्षस्थितेयदि ॥

भूमिलाभोभवेत्तस्य हर्षयुक्तःसुखी भवेत् ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगोंका फल भूमि-लाभ व हर्षयुक्त सुख मार्गमें स्थिरपावे ॥

काममार्गीके फल ॥ काममार्गैंगतेसूर्येचंद्रे धर्मेचसंस्थिते ॥

गजाश्वाश्चविलभ्यन्तेराजसन्मानसंभवात् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोडा-भूमी इनका लाभ और राजसन्मान पावे ॥

काममार्गैंगतेसूर्येचंद्रेचैवार्थसंस्थिते ॥

सकलं जायतेतस्यविघ्नभंगोविनिर्दिशेत् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा ऐसा योग होय तो सब विघ्नोंका नाशहोय ॥

काममार्गैंगतेसूर्येचंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥

विग्रहंदारुणचैवकार्यनाशंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो विग्रह और कार्यनाश होय ॥

काममार्गैंगते सूर्येचंद्रेमोक्षगतेपिवा ॥

राज्ञोलाभोभवेत्तस्य स्वर्णलाभंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा होय तो राजासे लाभ व सुवर्णलाभहो ॥

मोक्षमार्गीकेफल ॥ मोक्षमार्गैंगतेसूर्ये चंद्रधर्मस्थितेयदि ॥

हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यप्रसिद्धयति ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य व धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हेमलाभ और सर्वसिद्धि होय ॥

मोक्षमार्गगतेसूर्ये अर्थांशेचंद्रमायदि ॥

विफलंतस्यकार्यंचचोरराजरिपोर्भयम् ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा होय तो राजा और चोरसे रिपुसे भय होय ॥

मोक्षमार्गगतेसूर्येचंद्रेकामस्थितेयादि ॥

सर्वसिद्धिमवाप्नोतिकार्यंचजयमेवच ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो सर्वकार्य-सिद्धि और जयप्राप्ति होय ॥

मोक्षमार्गगतेसूर्ये चंद्रेतत्रैवसांस्थिते ॥

विग्रहंदारुणंचैवविघ्नस्तस्यभविष्यति ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो दारुण विग्रह और विघ्न-प्राप्ति होय ॥

पंथाराहुवकर्मकरनेयोग्य ॥ यात्रायुद्धेविवाहेचप्रवेशेनगरादिषु ॥

व्यापारेषुचसर्वेषुपंथाराहुःप्रशस्यते ॥

टीका—यात्रामें युद्धमें और विवाहमें और नगरादिप्रवेशमें और व्यापार अर्थात् सर्व वस्तुके लेनदेनमें राहु मार्गमें शुभदायक होताहै ॥

गर्गादिकोंकामुहूर्त ॥ उषःप्रशस्यतेगर्गःशकुनंचबृहस्पतिः ॥

अंगिरामनउत्साहोविप्रवाक्यंजनार्दनः ॥

टीका—गर्गजीके मतसे रात्रिकी पिछली ५ घटी उषःकालमें गमन शुभ और बृहस्पतिके मतसे शकुन और अंगिराके मतसे मनका उत्साह शुभ और जनार्दनके मतसे ब्रह्मवाक्य शुभ जानिये ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनोजन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेवच ॥ ए-

कीकृत्वाहरेद्रागंनंदशेषेचवाहनम् ॥ रासभोऽश्वोगजोमेषोजं-

बुकःसिंहसंज्ञकः॥काकश्चैवमयूरश्चहंसइत्येववाहनम् ॥ फल ॥

रासभेअर्थनाशश्चधनलाभश्चघोटेके ॥ लक्ष्मीप्राप्तिर्गजा-

ख्येहिमेषेचयरणंध्रुवम् ॥ जंबुकेस्वल्पलाभश्चसर्वसिद्धिश्चसि-

हके ॥ काकेचनिष्फलंकार्यंमयूरेचसुखावहम् ॥ हंसेतुसर्वसि-

द्धिःस्याद्वाहनानांफलंस्मृतम् ॥

टीका—अपने जन्मनक्षत्रसे दिवसके नक्षत्रतक गिने नवका भाग दे शेष-  
बचै सो वाहन जानिये, १ रहे तो गर्दभ तिसका फल अर्थनाश २ बचै तो  
घोडा धनलाभ होय ३ बचै तो हस्ती लक्ष्मी ४ बचै तो मेंढा मरण ५ बचै तो जंबुक  
स्फल्पलाभ ६ बचै तो सिंह सर्व कार्यसिद्धि ७ बचै तो काक निष्फल ८  
बचै तो मोर सुखप्राप्ति ९ बचै तो हंस सर्वसिद्धि जानिये ॥

### अंकमुहूर्त ।

तिथयःपक्षगुणितासप्तभिर्भाजिताश्चताः ॥ वाराःस्यु-  
र्वह्निगुणिता मसुभिश्चैवभाजिताः ॥ चतुर्गुण्यानिभा-  
न्यंगभाजितानियथाक्रमम् ॥

टीका—जिस तिथिमें गमन करना चाहे उसे १ ५से गुणाकरके सातका भाग-  
दे और जो वार होय तिसे तीन गुणाकरे आठका भागदे और जो नक्षत्र  
होय तिस चार गुणाकरके ६ का भाग दे जो शेष बचै उसका फल कहेंगे.

फल--पीडास्यात्प्रथमेशून्येमध्यशून्येमहद्भयम् ॥

अंत्यशून्येतुमरणंत्र्यंकेचविजयीभवेत् ॥

टीका—प्रथमतिथिके भागका शून्य बचै तो पीडा और वारके भागमें  
शून्य बचै तो बहुत भय होय और नक्षत्रके भागमें शून्य हो तो मरण  
और तीनों जगह अंक बचै तो विजय होय ॥

### भ्रमणाडलमुहूर्त ।

सूर्यभाद्रणयेच्चांद्रसप्तभिर्भागमाहरेत् ॥ त्रिषट्कभ्रमणंचैवद्विः  
सप्तमहदाडलम् ॥ प्रथमंपंचचत्वारिआडलोनास्तिनिश्चितम् ॥  
आडलेताडनंप्रोक्तं भ्रमणेकार्यनाशनम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताई गिने सातका भागदे ३ । ६  
बचै तो भ्रमण और २ । ७ बचै तो महदाडल ये ताडनामें जानिये और  
१ । ४ । ५ बचै तो आडल नहीं होता ये गमनमें उक्तहै ॥



( १७० )

ज्योतिषसार ।

वरमुहूर्त ।

सूर्यभाद्रणयेच्चांद्रं पक्षादितिथिवारयुक् ॥

नवभिस्तु हरेद्रागंसप्तशेषंतुहैवरम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताई गिनके पक्ष तिथिवार मिलाके नौका भाग देनेसे ७ शेष बचें तो हैवर योग होताहै सो यात्रामें शुभहै ॥

घवाडमुहूर्त—सूर्यभाद्रणयेच्चांद्रं त्रिगुणं तिथिमिश्रितम् ॥

नवभिस्तु हरेद्रागं त्रीणि शेषं घवाडकम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने तिगुनाकर तिथि मिलाय नवका भागदे तीन शेष बचें तो घवाड मुहूर्त जानिये ॥

वारअनुसारस्वरशकुन ।

गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणःस्वरः ॥ अन्यवारेषु वाम-

स्तुस्वरश्चैव शुभः स्मृतः ॥ निर्गमेवामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः

शुभः ॥ यःस्वरः स चनासाग्रे योगिनां मतमीदृशम् ॥

टीका—गुरु शनि रवि भौम इन चारों वारोंमें दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करनेमें शुभ होय और सोम बुध शुक्रवारोंमें वामस्वर चले तो गमनको श्रेष्ठ ऐसे स्वरविचार योगियोंके मतसे कहाहै ॥

वारानुसार छायाशकुन ।

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधरणिसुतेसप्तजीवेपदानिज्ञेयंचैकादशा

केशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमर्थंचतुष्कम् ॥ तस्मिन्कालेमुहूर्तस

कलगुणयुतेकार्यसिद्धिः शुभोक्ता नास्मिन्पंचांगशुद्धिर्नखलु

शशिवलं भाषितं गर्गमुख्यैः ॥

टीका—आठ पद अपनी छाया होय तो बुधवारमें गमन करे नवपाद होय तो भौमवारको गमनकीजै ७ गुरुको १ १ सूर्यवारको गमन करे शनि सोम शुक्रमें चार २ पद हो तो सर्वगुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त इसमें चंद्रमा आदि न देखे शुभहै ॥

काकशब्दशकुन ॥ काकस्यवचनंश्रुत्वापादच्छायांतुकारयेत् ॥  
त्रयोदशयुतांकृत्वाषड्विंशतिभागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःखेदस्तथा  
सौख्यंभोजनंचतथागमः ॥ अशुभंचक्रमेणैवगर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—काकका शब्द सुनके अपने पैरोंकी छाया नापके १ ३ और मिला  
के ६ का भागदे शेष बचे उसका फल १ बचे लाभ २ खेद ३ सुख ४ भोजन  
५ धनप्राप्ति पूराभाग लगजाय तो अशुभ ये गर्गमुनिका वचन है ॥

पिंगलशब्दशकुन ॥ उह्वासःकिल्बिलेचैवचिल्पित्यांभोजनंतथा ॥

बंधनांखिट्खिट्स्यात्कुर्कुशब्दैर्महद्भयम् ॥

टीका—जो किल्बिल शब्द होयतो उह्वासहोय और चिल्बिल शब्दहोय तो  
भोजनप्राप्ति खिट्खिट् शब्द होयतो बंधन कुर्कुशब्द होय तो महाभय होय ॥

छिक्कानुसारपादच्छायाशकुन ।

बुधश्छिक्कारवंश्रुत्वापादच्छायांचकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृ  
त्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःसिद्धिर्हानिशोकौभ  
यंश्रीर्दुःखनिष्फले ॥ क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥

टीका—छींकका शब्द सुनके अपने पैरकी छाया मापे १ ३ मिलावे ८  
का भागदे शेष रहे तिसका फल १ रहे तो लाभ २ सिद्धि ३ हानि ४ शोक  
५ भय ६ लक्ष्मी ७ दुःख ८ निष्फल ऐसे गर्गमुनि कहतेहैं ॥

छींकशकुन ।

छिक्काप्रश्रंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलम् ॥ आग्नेय्यांशोकदुःखं  
स्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ नैऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेषुमिष्टभक्षणम् ॥  
वायव्येधनलाभस्तुउत्तरेकलहस्तथा ॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्म  
छिक्कामहद्भयम् ॥ उर्ध्वंचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयम् ॥ आसनेशय-  
नेचैवदानेचैवतुभोजने ॥ वामांगेषुषुतश्चैवषट्छिक्काश्चशुभावहाः ॥

टीका—दिशानुसार छींक फल ॥ पूर्वकी छींक अशुभ आग्नेयकी शोक  
दुःख करे दक्षिणकी अरिष्टकरै नैऋत्यकी पश्चिम शुभकी मिष्टभक्षण वाय-

व्यकी धनदायक उत्तरकी कलहकृत ईशान्यकी शुभदायक और अपनी छींक बहुत भयदे ऊपरकी छींक शुभ मध्यकीमें भी बड़ा भय आसनमें सोनेमें दानमें भोजनमें बाँई ओर वा पीछे होय तो ये ६ शुभ जानिये ॥

### पल्लीशब्दशकुन ।

वित्तब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलां शक्रेहुताशेभयंयाम्येमित्रवधः  
क्षयश्चनिर्ऋतेलाभःसमुद्रालये ॥ वायव्यांवरमिष्टमन्नमशनंसौ  
म्येऽर्थलाभस्तथाईशान्यांगृहगोधिकार्यमतुलंसर्वत्रभूमौभयम् ॥

टीका—पूर्वमें शब्द पल्ली करे तो शकुन वित्त ब्रह्मसंबंधी कार्यविशेष धनप्राप्ति आग्नेयमें अग्निका भय होय दक्षिण मित्रवध होय नैऋत्यमें क्षय पश्चिममें शब्द होय तो लाज वायव्यमें सुंदर मीठा भोजन उत्तरमें धनप्राप्ति ईशानमें कार्यसिद्धि और जो भूमिमें होय तो भयकरे ॥

### पल्लीपतन और सरठकाअवरोहण ।

राज्यंतुशिरसिज्ञेयं ललाटेबंधुदर्शनम् ॥ भ्रूमध्येराजसन्मानमुत्तरो-  
ष्ठेधनक्षयम् ॥ अधरोष्ठेधनेश्वर्यनासतिव्याधिपीडनम् ॥ आयुष्यंद-  
क्षिणेकर्णंबहुलाभस्तुवामके ॥ अक्ष्णोस्तुबंधनंज्ञेयंभुजेभूपतितु  
ल्यता ॥ राजक्षोभंतथावामेकंठेश्चुविनाशनम् ॥ स्तनद्वयेचदुर्भा  
ग्यमुदरेमंडनंशुभम् ॥ प्रजानाशःपृष्ठदेश्चानुजंघेशुभावहम् ॥ कर  
द्वयेवस्त्रलाभःस्कंधयोर्विजयीभवेत् ॥ नाभौबहुधनंप्रोक्तमूर्वांश्चैव  
भयादिकम् ॥ दक्षिणेमणिबंधेचमनस्तापोधनक्षयः ॥ मणिबंधेतथा  
वामेकीर्तिवृद्धिधनप्रदम् ॥ नखेषुधान्यलाभंचवक्रेमिष्टान्नभोजनम् ॥  
गुल्फयोर्बंधनंज्ञेयंकेशांतिमरणंध्रुवं ॥ अध्वातुदक्षिणेपादेवामेबंधुवि  
नाशनम् ॥ स्त्रीनाशःस्यात्पादमध्येपादांतिमरणंभवेत् ॥ पह्याःप्रप-  
तनेज्ञेयंसरठस्याधिरोहणे ॥ यात्रोद्युक्तमनुष्यस्यैतच्छुभाशुभ  
सूचकम् ॥ तिलमाषादिदानंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने ॥ पिनाकिनं  
नमस्कृत्यजपेन्मंत्रंषडक्षरम् ॥ शतंसहस्रमथवासर्वदोषानिबर्हणम् ॥  
शिवालयेप्रदद्याद्वैदीपंदोषोपशांतये ॥

टीका—मनुष्योंके गमनसमयमें अंगपर पड़ी अर्थात् छिपकली गिरे अथवा गिरगिट चढे तो शुभाशुभसूचक फल स्थानानुसार कहाहै ॥

१ शिर राज्यप्राप्ति ११ वामबाहु राज्यभय २१ ऊरुपर घोडावाहन  
 २ कपाल बंधुदर्शन १२ कंठपर शत्रुनाश २२ दायापहुँचा धनक्षय  
 ३ भ्रुकुटी राजसन्मान १३ स्तनोंपर दुर्भाग्य २३ वा. मणिबंध कीर्ति  
 ४ उत्तरोष्ठ धनक्षय १४ उदरपर शुभमंडन २४ नख धनलाभ  
 ५ अधरोष्ठ धनऐश्वर्य १५ पृष्ठ पर बुद्धिनाश २५ मुखपर मिष्टान्नभोजन  
 ६ नासिका व्याधिपीडा १६ जानुओंपर शुभ २६ टकनोपर बंधन  
 ७ दा. कान आयुष्य १७ जंघाओंपर शुभ २७ केशोंपर मरण  
 ८ बायां कान बहुतलाभ १८ हाथोंपर वस्त्रलाभ २८ दाहोंपाव मार्गचलाना  
 ९ नेत्रोंपर बंधन १९ कांधोंपर विजय २९ वामपद बंधुनाश  
 १० बाहु राजासम २० नाभिपर बहुधन ३० मध्यपाद स्त्रीनाश  
 छिपकली अंगोंपर गिरे अथवा गिरगिटचढे तो सचैल स्नानकरके तिल उडद दानदे और ब्राह्मणको दानदे और शिवको नमस्कार करके ११०० शिवमंत्र जपै और शिवके मंदिरमें दीपक घृतको प्रज्वलित करे तो दोषनिवृत्ति होजाय.

अंगस्फुरण—मनुः ॥ ब्रूहिमेत्वंनिमित्तानिअशुभानिशुभानिच ॥  
 सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठत्वंहिसर्वाविवुद्धचसे ॥

टी० मनु मत्स्यप्रति प्रश्नकरतेहैं हेधर्मधारियोंमेंश्रेष्ठशुभाशुभफल वर्णनकीजिये.

अंगस्यदक्षिणेभागे प्रज्ञस्तंस्फुरणंभवेत् ॥

अप्रज्ञस्तंतथावामे पृष्ठस्यहृदयस्यच ॥

टी० अंगस्फुरण दक्षिणभागमें और वामभाग वा पृष्ठभाग वा हृदयमें अशुभ.

अंगानांस्पर्दनंचैव शुभाशुभविचेष्टितम् ॥ तन्मेविस्तरतोब्रूहि

येनस्यात्तद्विधोभुवि ॥ ॥ मत्स्यउवाच ॥ ॥ पृथ्वीलाभोभ-

वेन्मूर्ध्नि ललाटेरविन्दन ॥ स्थानंबुद्धिसमायाति भ्रूनसोःप्रिय-

संगमः ॥ भृत्यलंब्विश्वाक्षिदेशे दृगुपांतिधनागमः ॥ उत्कंठो-

पगमेमध्ये दृष्टंराजन्विचक्षणैः ॥ दृग्बंधनेसंगरेच जयंशोघ्रम-  
 वाप्नुयात् ॥ योषिल्लाभोपांगदेशे श्रवणातिप्रियश्रुतिः ॥ नासि-  
 कार्यांप्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ॥ कंठेतुभागलाभःस्या  
 द्भोगवृद्धिर्थासयोः ॥ सुहृच्छ्रेष्ठश्चबाहुभ्यां हस्तेचैवधना-  
 गमः ॥ पृष्ठेपराजयोत्सेधो जयोवक्षस्थलेभवेत् ॥ कुक्षिभ्यां  
 प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननभगे ॥ स्थानभ्रंशोनाभिदेशे अत्रे  
 चैवधनागमः ॥ जानुसंधौपरैः संधिर्वलवद्भिर्भवेच्चप ॥ एकेदेशे  
 भवेत्स्वामीजंघाभ्यांरविनंदन ॥ उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां  
 प्रस्फुरणेनृप ॥ अलाभंचाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृप ॥

टीका—मनु प्रश्नकरतेहैं कि, अंगके स्थान स्फुरणका विचार शुभाशुभ  
 फल विस्तार सहित वर्णन कीजिये ॥

- १ मस्तकस्फुरण पृथ्वीलाभहो १४ दोनोंबाहु मित्रकामिलाप  
 २ लालटस्फुरण स्थानकीवृद्धि १५ दोनोंहाथ धनप्राप्ति  
 ३ भ्रुकुटीके मध्यमें प्रियदर्शन १६ पृष्ठमें दूसरेसेजयहोय  
 ४ नेत्रोंमें भृत्यमिले १७ ऊरुमें जयप्राप्ति  
 ५ नेत्रोंकीकोरोंमें धनप्राप्ति १८ कक्षिमें प्राप्तिहोय  
 ६ कंठमध्ये राजप्राप्तिहोय १९ शिश्रुइंद्रि. स्त्रीप्राप्ति  
 ७ दृग्बंधन युद्धमेंजानेसेजय २० नाभिमें, स्थानभ्रंश  
 ८ अपांगदेशमें स्त्रीलाभहोय २१ आंतोंमें, धनप्राप्ति  
 ९ कर्णांतमें प्रियमित्रकी सुधि २२ जानुसंधीमें बलवानशत्रुओंसेसंधि  
 १० नासिकामें प्रीतिसुखहोय २३ जंघाके एकदेश एकदेशका स्वामीहोय  
 ११ अधरोष्ठमें प्रियवस्तुकी प्राप्ति २४ पादोंमें उत्तमस्थानमें मान्यता.  
 १२ कंठमें ऐश्वर्यप्राप्ति २५ तलुओंमें अलाभ और गमन.  
 १३ कंधोंमें भोगवृद्धिप्राप्ति

## स्त्रियोंका अंगस्फुरण ।

लांछनपीठकंचैव ज्ञेयंस्फुरणवत्तथा ॥ विपर्ययेणविहितः सर्व  
स्त्रीणांविपर्ययः ॥ दक्षिणेपिप्रशस्तंगे प्रशस्तंस्याद्विशेषतः ॥

टीका—स्त्रियोंका अंगस्फुरण भूमध्यमेंहो तो पुरुषोंहीके समानहै परंतु  
और सब अंग पुरुषोंसे विपरीत अर्थात् वाम अंग स्त्रियोंका शुभ कहाहै ॥

अनन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्यशस्तस्यचर्निन्दितस्य ॥

अनिष्टनिद्रोपगमोद्विजानां कार्यसुवर्णेनतुतर्पणंस्यात् ॥

टीका—हेराजा ! अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण करावे,  
सुवर्ण दान करे तो अंगस्फुरणका दोष जाता रहै ॥

नेत्रस्फुरण ॥ नेत्रस्योर्ध्वं हरतिसकलं मानसंदुःखजालं नेत्रो-

पांते दिशतिचधनं नासिकातेचमृत्युः ॥ नेत्रस्याधः स्फुरण

मसकृत्संगरेभद्रहेतुर्वामेचैतत्फलमविफलं दक्षिणेवैपरीत्यम् ॥

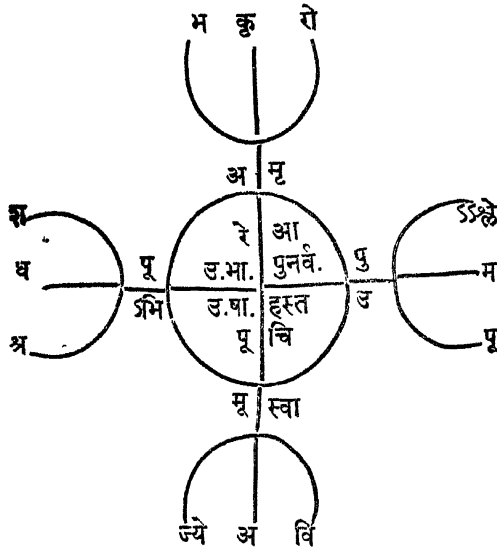
स्त्रीणांविपर्ययौ ॥

टीका—नेत्रोंके ऊर्ध्वप्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण होय तिसका फल  
कहतेहैं—नेत्रके ऊपरका पलक स्फुरण होय तो मनका दुःख जाय और ध-  
नकी प्राप्ति होय और नासिकाके निकट स्फुरण होय तो मृत्यु नेत्रके नी-  
चेकी पलकमें स्फुरण होय तो युद्धमें पराजय होय ये सर्वफल वामनेत्रके  
स्त्रियोंको और दक्षिणके पुरुषोंके नेत्रका विचार जानो ॥

त्रिशूलयंत्र ॥ रोगिणश्चकुजाद्यर्क्षं दिनाद्यर्क्षंचयुद्धतः ॥

कृत्तिकागमनेदद्यादन्यत्ररविदीयते ॥

टीका—रोगीके प्रश्नका त्रिशूल मध्याग्रमें जिसनक्षत्रका मंगल होय  
तिसको धरे और चंद्रमा जिस स्थानविषे यंत्रमें होय तो फलदेवे इस प्रमाणसे  
आगे फल जानो, युद्धमें जाना होय तो दिवसनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिने और  
गमन करना होय तो कृत्तिकासे दिवस नक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मोंके  
सूर्य नक्षत्रसे चन्द्र नक्षत्रतक इस क्रमसे जाने ॥



त्रिशूलग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमंबहिरष्टकम् ॥

लाभक्षेमं जयारोग्यं चंद्रगर्भेषुसंमतम् ॥

टीका—त्रिशूलके अग्रभागमें दिवस नक्षत्र होय तो मृत्यु और बाहिरी अष्टकमें होय तो मध्यम मध्याष्टकमें होय तो लाभ क्षेमजय आरोग्य ये सर्व संमतजानिये ॥

गमनकीलग्न ॥ चरलग्ने प्रयातव्यं दिस्वभावे तथा नरैः ॥

लग्नेस्थिरेनगंतव्यं यात्रायांक्षेममीप्सुभिः ॥

टीका—चरलग्न कहिये कर्क तुला मकर ये चार और दिस्वभाव मिथुन कन्या धन मीन ये चार इन आठोंमें गमन करना शुभफलदायकहै और बाकी चारलग्न स्थिरहै उनमें गमन न करे ॥

दूसराप्रकारलग्नका ।

लग्नेकार्मुकमेषतौलिगमने कार्यविलंबान्मृणां पंचत्वमकरे तथैवचवटे तद्वत्फलंवृश्चिके ॥ सिंहेकर्कटके वृषेपरिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुने सौख्यं शुभान्नवसु ॥

टीका—धन मेष तुल इन तीन लग्नोंमें गमन करै तो कार्यमें विलंब होय और मकर कुंभ वृश्चिक ये तीन लग्न मृत्युकारक सिंह कर्क वृष इनमें कार्यसिद्धि

होय कन्या मीन मिथुन ये लग्न शुभकारक अन्न और धनदायक जानिये ॥

**द्वादशस्थानोंके अनुसार गमनलग्नमें ग्रहबल ।**

प्रथमस्थान ॥ जन्मस्थं चाष्टमं त्याज्यं लग्ने द्वादशमेव च ॥

ग्रहाणां च बलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः ॥

टीका—लग्न, अष्टम और द्वादशमें पापग्रह वर्जिके ग्रहबल देख गमन करे तो दिग्विजय और कार्यसिद्धि होय ॥

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिद्धयंति कार्याणि च पंचमेहि ॥

राज्ञः पदं वा सुखदेशलाभं मासस्य मध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥

टीका—लग्नमें गुरु अथवा बुध शुक्र होय तो पांचदिवसमें अथवा एक मासमें राज्यपद सुख किंवा देशलाभ होय ॥

दूसरेस्थानके फल ॥ जीवो बुधो वा भृगु नंदनो वा स्थाने द्वितीये गमनस्य काले ॥ सुवस्त्रलाभं चतुरंगलाभं मासस्य मध्ये च चतुर्दशेहि ॥

टीका—दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र होय तो वस्त्र और तुरंगलाभ एकमास मध्यमें अथवा चौदहदिवसमें होय ॥

क्रूरा धनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्च केतुस्त्रिभिरेव मासैः ॥

वित्तस्य नाशं च ददाति मृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदन्ति ॥

टीका—२ रे स्थानमें रवि अथवा राहु मंगल शनि केतु इनमेंसे कोई-भी क्रूरग्रह होय तो तीनमासमें मृत्यु और वित्तनाश होय यह मुनीश्वरोंने सत्यवाक्य कहा है ॥

तृतीयस्थानके फल ॥ स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ च सोमस्य मृत्युश्च निशापतिश्च ॥ करोति कार्यं सफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥

टीका—तृतीयस्थानमें गुरु शुक्र अथवा चंद्र बुध होय तो दो पक्ष अथवा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

गमनं गमनात्पुनः पुनश्चाप्यत्र गमनं न तात्पर्यात् ॥

टीका—क्रूरग्रह जो कहे हैं उनमें से कोई ग्रह चतुर्थस्थानमें होय उसे वर्जिके शेष ग्रह होय वे शुभ परंतु दैवयोग करके तीन मास वा दशवें दिवसके अंतमें कार्यसिद्ध होय ॥



## पंचमस्थान ।

गुरुर्भृगुश्चंद्रबुधो यदास्याच्छुभेचलग्नेतु सुतेचयुक्ता ॥

कुर्वंतिकार्यस्यचसिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापि वदंतिसत्यम् ॥

टीका—गुरु शुक्र चंद्र अथवा बुध चारों ग्रह पंचमस्थानमें होय तो शुभहोय और दो मासमें इष्टकार्यसिद्धि होय ॥

## षष्ठस्थान ।

जीवश्चशुक्रश्च बुधश्चषष्ठे करोतियात्रां सुफलां विलग्नात् ॥

पक्षद्वयेनापि वदंति सत्यं सौम्यक्षसंस्थः सबलश्चंद्रः ॥

टीका—शुक्र गुरु अथवा बुधमें चारि ग्रह शुभस्थानमें होय तो यात्रा सफल और मृग नक्षत्रका चंद्रमा उस स्थानमें होय तो सकलकार्य एक मासमें सिद्धहोय ॥

## सप्तमस्थान ।

चेत्सप्तमस्थागुरुसोमसौम्याः कुर्वंतियात्राविजयंनृपाणाम् ॥

सर्वेनृपास्तस्यभवंतिवश्या मासद्वयेनापिचपंचभिर्दिनैः ॥

टीका—सप्तमस्थानमें गुरु अथवा सोम बुध होंय तो यात्रामें विजय होय और सर्व राजा दो मास वा पांचदिवसमें वशीभूत होंय ॥

## अष्टमस्थान ।

क्रूराश्चसर्वेयादिलग्रकाले मृत्युस्थितामृत्युकराभवंति ॥

सौम्योगुरुर्वाभृगुनंदनश्च दीर्घायुषंमृत्युकरश्चंद्रः ॥

टीका—क्रूर कहिये शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टमस्थानमें होंय तो मृत्युकारक और ये न होंय सौम्यग्रह होंय तो आयुष्यकी वृद्धि परंतु चंद्र होय तो मृत्युकारक जानिये ॥

## नवमस्थान ।

धर्मस्थितायदिभवंतिहिपापखेटाः प्रयाणकालेचतथैवचंद्रमाः ॥

तदाजयंवेसबलेचचंद्रे मासत्रयेणापिदिनैश्चतुर्भिः ॥

टीका—नवम स्थानमें पापग्रह तथा चंद्र होय और चंद्र सबल होय तो तीन मास व चार दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

धर्मस्थितौवायदिजीवशुकौ सोमस्यमूनुर्यदिलग्रकाले ॥

लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा कार्यस्यसिद्धिश्चभवेच्चलाभः ॥

टीका—धर्मस्थानमें गुरु शुक्र अथवा सोम बुध ये ग्रह चर अथवा स्थिरलग्नमें स्थित होंय तो कार्यसिद्धि और लाभ होय ॥

### कर्मस्थान ।

कर्मस्थिताःपापखगास्तुसौम्याः कुर्वतिकार्यशानिवर्जिताश्च ॥

लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा मासत्रयेणापिचचैकमासः ॥

टीका—दशमस्थानमें शनि आदिके पापग्रहोंको छोडके सौम्यग्रह चर अथवा स्थिर लग्नमें होंय तो उक्त तीन मासमें अथवा एकमासमें कार्यसिद्धि होय ॥

### लाभस्थान ।

लाभस्थितौगुरुबुधौभृगुनंदनोवा क्रूराश्चसर्वेशशिनैवयुक्ताः ॥

सद्यःफलाप्तिश्चभवेद्धियात्रा पक्षकमध्येदिवसत्रयेच ॥

टीका—एकादशस्थानमें रविको आदिले पापग्रह चंद्रसहित अथवा गुरु आदिले सौम्यग्रह होंय तो एक पक्षमें वा तीनदिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

### व्ययस्थान ।

सर्वेशुभाद्वादशसंस्थिताश्च यात्राभवेत्त्रविचित्रलाभः ॥

पापाश्चसर्वेव्ययदाभवंति यात्राफलं गर्गमुनिप्रणीतम् ॥

टीका—द्वादशस्थानोंमें सर्वग्रह शुभहोंय तो विचित्र लाभहोय और पापग्रह होंय तो व्ययकारक जानिये यह यात्राफल गर्गमुनिने कहाहै ॥

### प्रस्थानरखना ।

सुमुहूर्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यम् ॥ श्लोक ॥ यज्ञो-

पवीतकंशस्त्रं मधुचस्थापयेत्फलम् ॥ विप्रादिकमतःसर्वे स्व

र्णधान्यांबरादिकम् ॥

टीका—मुहूर्तके समय जो किसीकार्यवशसे आप न जासके तो प्रस्थान करना योग्यहै उसकी विधि ब्राह्मणादिक अनुसार कहतेहैं, ब्राह्मण यज्ञोपवीतका और क्षत्रिय शस्त्रका, वैश्य मधुका और शूद्र फलका प्रस्थान करै इसक्रमसे जानिये और सुवर्ण वस्त्र धान्य सबोंको युक्तहै ॥

**प्रस्थानकितनेदिवसतकउपयोगी होय ।**

राजादशाहंपंचाहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत् ॥

अंगप्रस्थानसंपूर्णं वस्तुप्रस्थानकेर्द्धकम् ॥

टीका--राजाओंको प्रस्थान करनेपर दशदिवस औरोंको पांच दिवस-तक मुहूर्त उपयोगी रहताहै परंतु वस्तुप्रस्थानमें आधा फल जानिये और अंगके प्रस्थानमें पूर्णफल जानिये ॥

**प्रस्थानके स्थानकाविचार ।**

गेहाद्रेहांतरंगर्गः सीमः सीमांतरंभृगुः ॥ बाणक्षेपंभरद्राजो व-

सिष्ठोनगराद्बहिः ॥ प्रस्थानेपिकृतेनेयान्महादोषान्वितेदिने ॥

टीका--गर्गजीके मतसे दूसरे घरमें और भृगुजीके मतसे सीमाके बाहर तथा भर द्राजके मतसे बाणकेपतनस्थानमें अर्थात् जितना तीर जाताहै और वसिष्ठके मतसे नगरके बाहर प्रस्थानकरै तिसपरभी महादोषयुक्त दिवसमें यात्रानकरे.

**प्रस्थान दिवसमें वर्ज्यपदार्थ ।**

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडघृताश्रुदुग्धासवक्षाराभ्यंगभयासि

तांबरवमिस्तैलंकटुह्युद्रमे ॥ क्षौरक्षौररतीःक्रमात्रिंशरसता-

हंपरंतद्दिनेरोगंरुयातैवकंसितान्यतिलकं प्रस्थानकेपीतिच ॥

टीका--कोप क्षौर स्त्रीसंग परिश्रम मांस गुड घृत रोदन दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्यविषयक भय श्वेतवस्त्र गमन तैल कटुपदार्थ इतनी वस्तु प्रस्थान दिन वर्जितहै तिनमें दूध क्षौर स्त्रीसंग ये क्रमसे ३। ५। ७ दिवस प्रस्थान दिनसे पहिले वर्जितहैं ॥ शेष और कहीहुई वस्तु केवल प्रस्थान दिनमें वर्जितहै और श्वेतसे भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्ण आदि तिलक और रोगविषयक चिंताभी प्रस्थानके दिन वर्जितहै ॥

**मात्स्याक्तदुष्टशकुनकहतेहैं ।**

ओषध्याचनियुक्तोहि धान्यंकृष्णंतुयद्भवेत् ॥

कार्पासश्चतृणंशुष्कं शुष्कंगोमयमेवच ॥

टीका--औषधी युक्त मनुष्य, कालाधान्य, कपास, सूखातृण अर्थात् मूसाइत्यादि वस्तु उपला ये प्रस्थानसमय आगेसे आवें तो अशुभ जानिये ॥

इंधनंचतथांगारं गुडंसर्पिस्तथाशुभम् ॥

अभ्यक्तोमलिनोमंदस्तथानग्नश्चमानवः ॥

टीका—इंधन भस्म गुड घी दुष्टपदार्थ तेल लगानेसे मलिन मंद नग्न-  
नुष्य ये अशुभ जानिये ॥

मुक्तकेशोरुजार्तश्च काषायांबरधारिणः ॥

उन्मत्तःकथितोसत्वोदीनोवाथनपुंसकः ॥

टीका—खुले केशयुक्त मनुष्य रोगी गेरुआवन्न पहिने मनुष्य, उन्मत्त  
कंथायुक्त पुरुष, पापी पुरुष, दीन अथवा नपुंसक येभी अशुभ शकुन जानिये ॥

आयःपंकस्तथाचर्म केशबंधनमेवच ॥

तथैवोद्धृतसाराणि पिण्याकादितथैवच ॥

टीका—लोहेके खंडकी चर्म केशबांधता हुआ मनुष्य, जिनके सार-  
निकाल लिये गयेहैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक ये भी अशुभ जानिये ॥

चांडालस्यशवंचैव राजबंधनपालकाः ॥

वधकाःपापकर्माणोगर्भिणीस्त्रीतथैवच ॥

टीका—चांडाल प्रेतबंधुओंके रक्षक वधकर्ता पापीपुरुष गर्भिणी स्त्री येभी  
अशुभ जानिये ॥

तुषंभस्मकपालास्थि भिन्नभांडानियानिच ॥ रक्तानिचैवभांडानि

मृतसारंगणवच ॥ एवमादीनिचान्यानियप्रशस्तानिदर्शने ॥

टीका—तुष भस्म कपाल अस्थि रीते वा फूटे बर्तन, मराहुआ सारंग-  
पक्षी ये गमनकालमें हानिकारक हैं ॥

क्रयासितिष्ठआगच्छ कितेतत्रगतस्यतु ॥

अन्यशब्दाश्चयेनिष्ठास्तेविपत्तिकराअपि ॥

टीका—कहाँ जाते हो ठहरो आओ वहाँ जानेसे तुमको क्या होगा ये  
तथा औरभी अनिष्टशब्द विपत्तिकारक होतेहैं ॥

ध्वजादौवायसास्थानं क्रव्यादानंविगर्हितम् ॥

स्खलनंवाहनानांच वस्त्रसंगस्तथैवच ॥

टीका—ध्वजा वा पताकाके ऊपर काक बैठे अथवा मांसका लाना और  
वाहनोंका गिरना वस्त्र लपेटता हुआ पुरुष येभी अशुभ जानिये ॥

## दुष्टशकुनदापानवारण ।

दुष्टेनिमित्तेप्रथमे अमंगल्यविनाशनम् ॥

केशवंपूजयेद्विद्वान्स्तवेनमधुसूदनम् ॥

टीका—यात्रासमयमें ऊपर कहेहुए अपशकुनोंमेंसे जो प्रथम अमंगल दृष्टि आवे तो नाशकारक होय इसके निवारणके लिये विष्णुकी पूजा और मधुसूदनके स्तोत्रपाठ करावे ॥

द्वितीयेचततोदृष्टे प्रतीपेप्रविशेद्ब्रह्मम् ॥

अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि मंगलानितथानघ ॥

टीका—जो दूसरी वारभी अशुभ शकुन दृष्टि आवें तो घरमें प्रवेशकरे इसके बाद मंगलकारक शकुन कहतेहैं ॥

## गमनकालमें उत्तम शकुन ।

प्रज्ञस्तोवाद्यशब्दश्च भिन्नभेरीरवास्तथा ॥ पुरतःशब्दएहीति  
ज्ञस्यतेनतुपृष्ठतः ॥ गच्छेतिचैवपश्चाद्यः पुरस्तात्सुविगार्हितः ॥

टीका—गमन कालके शुभ शकुन कहतेहैं. वाजनेके शब्द भेरी अर्थात् नकारके शब्द और आओ यह आगेसे होय तो शुभ और पृष्ठ भागमें अशुभ और जाओ यह शब्द पीठपीछे होयतो शुभ और आगे होयतो अशुभ जानिये ॥

श्वेताःपुष्पाःसुमनसःपूर्णकुंभस्तथैवच ॥

जलजाःपक्षिणश्चैव मांसमत्स्यस्यपार्थिव ॥

टीका—बड़ेबड़े श्वेतपुष्प पूर्ण कुंभ जलकेपक्षी मत्स्यका मांस ये शुभ जानिये  
गावस्तुरंगमोनागो वृद्धएकःपशुस्त्वजा ॥

त्रिदशाःसुहृदोविप्रा ज्वलितश्चहुताशनः ॥

टी०—गाय,तुरंग,हस्ती,वृद्ध,एकपशु,बकरी देवता;मित्र,ब्राह्मण,जलताअग्नि.

गणिकाचमहाभाग दूर्वाश्चार्द्राश्चागोमयम् ॥

रुक्मरौप्यंचताम्रंच सर्वरत्नानिचाप्यथ ॥

टीका—गणिका हरितदूर्वा गोबर सोना रूपातांबा और सर्वरत्न येशुभजानिये.

औषधानिचसर्वज्ञा यवाःसर्वार्थकास्तथा ॥

खड्गपात्रंपताकाच मृत्तिकायुधपीठकम् ॥

टीका—औषधी सर्वज्ञ पुरुष यव श्वेतसरसों खड्गपात्र पताका  
मृत्तिका आयुध आसन ये शुभहैं ॥

राजलिङ्गानिसर्वाणि श्वरुदितवर्जितम् ॥  
घृतंदधिपयश्चैव फलानिविधानिच ॥

टीका—समस्त राजचिह्न रोदनरहित मृतक घृत दधि दूधनानाप्रकारके फल  
स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नंद्यावर्तःसकौस्तुभः ॥  
वादित्राणांशुभःशब्दो गंभीरःसुमनोहरः ॥

टीका—आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभमणिके साथ नंद्यवर्त्तमणि वाद्य  
तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशकहै ॥

गांधारषड्जऋषभा येगीताःसुस्वराःस्वराः ॥  
वायुःसशर्करोत्युष्णः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥

टीका—गांधार षड्ज ऋषभ ये राग और अच्छे गाये स्वर सुंदर  
मीठा पवन अथवा उष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ॥

प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्विजः ॥  
अनुकूलोमृदुःस्निग्धःसुखस्पर्शःसुखावहः ॥

टीका—वर्णसंकर मनुष्य तैसैही नीच मुसलमानादिक ब्राह्मण बडेभयंकर होते  
हैं अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे और सुखस्पर्श मनुष्यादिक सुखकारीहोतेहैं.

शस्तान्येतानिधर्मज्ञ यत्रस्यान्मनसःप्रियम् ॥  
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमंजयलक्षणम् ॥

टीका—हेधर्मज्ञ ! ऊपर कहेहुये शकुन शुभ जानिये और जो अपने मनको प्या  
री वस्तु होय उसका दर्शन उत्तम और तुष्टिकारक तथा जयदायक जानिये.

चित्तोत्सवत्वं मनसःप्रहर्षः शुभस्यलाभो विजयप्रवादः ॥  
मांगल्यलब्धिः श्रवणंचराज्ञां ज्ञेयानिनित्यं विजयावहानि ॥

टीका—यात्रासमयमें मनमें हर्ष शुभ तथा लाभकारक विजयवाद और  
मंगलप्राप्तिका श्रवण शुभजानो ॥

क्षेमंकरानीलकंठाः श्वोलूकखरजंबुकाः ॥

प्रस्थाने वामतःश्रेष्ठाः प्रवेशे दक्षिणाःशुभाः ॥

टीका—मयूर कुत्ता उलूकपक्षी गर्दभ, जम्बुक, प्रस्थान समय वामभागों होय तो गमनमें शुभ और प्रवेश समय दक्षिणभागमें शुभ जानिये ॥

### अथ शिवद्विघटीमुहूर्ताः ।

देव्युवाच ॥ श्रीशंभो प्राणनाथेश वदमेकरुणानिधे ॥ त्रिपुर-  
स्यवधे प्रोक्ता मुहूर्ताये शुभप्रदाः ॥ भूतानामुपकारार्थं सर्वकाले-  
ष्टसिद्धिदम् ॥ यातुरर्थप्रदं ब्रूहि करुणाकरसुन्दर ॥ ईश्वर  
उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानत्रैलोक्यदीपकम् ॥ ज्योतिः-  
सारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रं नयो-  
गं करणं तथा ॥ कुलिकं यमयोगं च न भद्रानच चंद्रमाः ॥ नशू-  
लयोगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः ॥ व्यतीपाते च संक्रांतौ भद्रा-  
यामशुभे दिने ॥ शिवालिखितमित्येवं सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ क-  
दाचिच्चलते मेरुः सागरश्च महीधरः ॥ सूर्यः पतति वाभूमौ वह्निर्वा  
याति शीतताम् ॥ निश्चलश्च भवेद्वायुर्नान्यथाममभाषितम् ॥  
तत्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्तानि च षोडश ॥ गुणत्रयप्रयोगेण  
चलन्त्येव अहर्निशम् ॥ अथ षोडशमुहूर्तम् ॥ रौद्रं श्वेतं तथा मैत्रं  
चार्वाटं चतुर्थकम् ॥ पंचमोजयदेवश्च षष्ठं वैरोचनं तथा ॥ तु-  
रगादिकं सप्तमं च तथाष्टौ चाऽभिजित् तथा ॥ रावणं नवमं प्रोक्तं  
बालवंदं दशमं तथा विभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशं च सुनंदनम् ॥ या-  
म्यंत्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं ज्ञेयं चतुर्दशम् ॥ भार्गवंतिथिसंज्ञं च  
सविता षोडशं भवेत् ॥ अथ मुहूर्तकार्याणि ॥ रौद्रे रौद्रतरं कार्यं  
श्वेते कुंजरबंधकः ॥ स्नानदानादिकं मैत्रे चार्वाटे स्तंभनं  
भवेत् ॥ कार्यं जयदेवसंज्ञे सर्वार्थकरमुच्यते ॥ तद्वैरोचनसं-  
ज्ञके प्रभवति पट्टाभिषेकं क्रमात् ॥ ज्ञात्वैवं तुरदेवतानि विदिते  
शस्त्राधिकं साधयेत् ॥ सत्कार्यमभिजिन्मुहूर्तकवरे ग्रामप्रवेशं  
सदा ॥ रावणे साधयेद्द्वैरं युद्धकार्यं च बालवे ॥ विभीषणं शुभं कार-  
यं यंत्रकार्यं सुनंदने ॥ याम्ये भवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्ये स-

भायानृपवेशनंस्यात् ॥ स्त्रीसेवनंभार्गवकेमुहूर्त्तं सावित्रिना-  
 म्निप्रपठेत्सुविद्याम् ॥ अथमुहूर्त्तोदयंवारपरत्वेन ॥ उदयेरौद्र-  
 मादित्यैमंत्रसोमेप्रकीर्तितम् ॥ जयदेवंकुजेवारे तुरदेवंबुधे  
 तथा ॥ रावणंचगुरौज्ञेयं भार्गवेचविभीषणम् ॥ शनौयाम्यंसु-  
 हूर्त्तंच दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ अथमुहूर्त्तांगत्वेनगुणोदयम् ॥  
 गुरुसोमादिनेसत्वं रजश्चांगारकेभृगौ ॥ रवौमन्देबुधेचैव तमो  
 नाडीचतुष्टयम् ॥ सत्यंगौरंरजइश्यामं तामसंकृष्णमेवच ॥  
 इमंवर्णविजानीयात्सत्वादीनांयथोदितम् ॥ अथसत्वादिगु-  
 णानांफलम् ॥ सत्वेनसाधयेत्सिद्धिं रजसाधनसंपदाम् ॥ तम-  
 सासाधयेन्मोक्षं इतिज्ञेयंसदाबुधैः ॥ सत्वेरजसिसत्कार्यमथवा  
 शुभमेवच ॥ तमसाछेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ अथ  
 मुहूर्त्तांगत्वेनरेखाज्ञानम् ॥ शून्यंनभःखादिभिरेववर्णैर्विघ्नध-  
 नुयुग्मगणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युंतथापादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुना-  
 मामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ अमृतश्चोद्धरेखैका कालरेखात्रयंभवेत् ॥  
 विघ्नमावर्त्तकंतत्र शून्येशून्यमितिक्रमात् ॥ अथरेखाफलम् ॥  
 शून्येनैवभवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तकेभवेत् ॥ कालरेखामृत्युकरी  
 सर्वासिद्धिस्तथामृते ॥ धनुर्मीनेकर्कटानां घातसत्वेविनिर्दि-  
 शेत् ॥ तुलालिवृषमेषाणां घातोरजसिनिश्चितम् ॥ कन्यामि-  
 थुनसिंहानां कुंभस्यमकरस्यच ॥ घातस्तामसवेलायां विप-  
 रीतंशुभावहम् ॥ धनुःकर्कटमीनारूपा गौरवर्णः क्रमोदितः ॥  
 वृषमेषेतुलायांच वृश्चिकेश्यामवर्णता ॥ मिथुनेमकरेकुंभेक-  
 न्यासिंहेचकृष्णता ॥ गौरश्चम्रियतेसत्त्वे श्यामवर्णैरजोगुणे ॥  
 कृष्णंतामसवेलायां म्रियतेनात्रसंज्ञयः ॥ यस्मिन्वर्षेभवेन्मा-  
 सो गौणाधिक्यस्तथाक्षयः ॥ मासेनगृह्यतेमासः सर्वकार्यार्थं  
 साधने ॥ माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखेश्रावणेतथा ॥ नभस्ये  
 मासवाराणां मुहूर्त्तानियथाक्रमात् ॥ रुद्रप्रोक्तमिदंज्ञानं शिवा  
 यैरुद्रथामले ॥ गोपनीयंप्रयत्नेन सद्यःप्रत्ययकारकम् ॥









अथ चौपहरा मुहूर्त श्रीमुछंदर गोरखनाथकृतयात्रानिचरम्भः ॥ तृतीया त्रयोदशीका फल १ चौथ चतुर्दशीका फल १  
 पंचमीपूर्णिमाका फल १ अमावास्याकेदिन गमन न करै-मूल काम अच्छानकरै । कृष्ण वा शुक्लपक्षकी तिथिको फल १  
 जिस मासकी तिथिको जायतौ अपने चित्तसे गमनकरै-चंद्रमाको बल भरणी भद्रा दिशा शूल योगिनी काल वास तिथिघात  
 नक्षत्रघात चंद्रमाघात व्यतीपात कल्याणी संक्रांतिअनेक कुयोगके दोष नहोंगे यह गोरखनाथने कहा है जो तिथि  
 साधिके यात्रा करैगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्यसिद्ध करिके आवेगा ॥ शुभम्

| दोष | माघ | फा. | चत्र | वैशा | ज्येष्ठ | आषा | श्राव | भाद्र | आ. | कार्ति | माग | प्रथम        | द्वितीय      | तृतीय      | प्रहर      | चतुर्थ | प्रहर     | तिथि  | पूर्व       | दक्षिण     | पश्चिम  | उत्तर |
|-----|-----|-----|------|------|---------|-----|-------|-------|----|--------|-----|--------------|--------------|------------|------------|--------|-----------|-------|-------------|------------|---------|-------|
| १   | २   | ३   | ४    | ५    | ६       | ७   | ८     | ९     | १० | ११     | १२  | अर्थलाम      | सौख्य        | अतिसुख     | राजपद      | राजपद  | १         | सुख   | केश         | शुभ        | गमनार्थ |       |
| २   | ३   | ४   | ५    | ६    | ७       | ८   | ९     | १०    | ११ | १२     | १   | भलानहो.      | केश          | विघ्नहाय   | अतिसुख     | २      | दुःख      | निष्ठ | विघ्न       | मध्यम      |         |       |
| ३   | ४   | ५   | ६    | ७    | ८       | ९   | १०    | ११    | १२ | १      | २   | अर्थप्राप्ति | राजपद        | अतिगुल     | विघ्नहो    | ३      | द्रव्यकें | दुःख  | अर्थप्राप्त | धनप्राप्ति |         |       |
| ४   | ५   | ६   | ७    | ८    | ९       | १०  | ११    | १२    | १  | २      | ३   | केशहाय       | अशुभ         | कार्यसिद्ध | अतिभय      | ४      | लाम       | सुख   | मंगल        | धनलाम      |         |       |
| ५   | ६   | ७   | ८    | ९    | १०      | ११  | १२    | १     | २  | ३      | ४   | अर्थलाम      | मित्रलाम     | शत्रुभय    | कार्यसिद्ध | ५      | लाम       | धनला  | धनगम        | धनलाम      |         |       |
| ६   | ७   | ८   | ९    | १०   | ११      | १२  | १     | २     | ३  | ४      | ५   | संकटहोय      | केश          | सर्वसुख    | कर्जदेना   | ६      | शून्य     | लाम   | मित्रलाम    | अयोग्य     |         |       |
| ७   | ८   | ९   | १०   | ११   | १२      | १   | २     | ३     | ४  | ५      | ६   | विलंबहो      | अर्थप्राप्ति | यमघट       | सर्वसुख    | ७      | लाम       | कष्ट  | द्रव्यलाम   | सुखप्राप्त |         |       |
| ८   | ९   | १०  | ११   | १२   | १       | २   | ३     | ४     | ५  | ६      | ७   | यमघट         | अशुभ         | सर्वसुख    | यमघट       | ८      | कष्ट      | सुख   | केश         | सौख्य      |         |       |
| ९   | १०  | ११  | १२   | १    | २       | ३   | ४     | ५     | ६  | ७      | ८   | अर्थलाम      | अशुभ         | सुखसेआ.    | सर्वसुख    | ९      | सुख       | लाम   | कार्यसिद्ध  | कष्ट       |         |       |
| १०  | ११  | १२  | १    | २    | ३       | ४   | ५     | ६     | ७  | ८      | ९   | चिंताव्या.   | चिंताहोय     | कार्यसिद्ध | सुखसेआ     | १०     | केश       | दुःख  | अर्थगवन     | धनप्राप्त  |         |       |
| ११  | १२  | १   | २    | ३    | ४       | ५   | ६     | ७     | ८  | ९      | १०  | विग्रह       | विघ्नहोय     | सुखपावे    | सुखप्राप्त | ११     | मृत्यु    | लाम   | द्रव्यनाश   | मृत्युपद   |         |       |
| १२  | १   | २   | ३    | ४    | ५       | ६   | ७     | ८     | ९  | १०     | ११  | मृत्यु       | मृत्यु       | कार्यसिद्ध | १२         | सख     | मृत्यु    | अकाम  | कष्टपद      |            |         |       |

## अथगोरक्षकमतेना

फलञ्च ।

मासेशुक्लादिकेपौषे तिथिः प्रतिपदादितः ॥ द्वितीयाद्यास्तुमा-  
 वेस्युस्तृतीयाद्यास्तुफाल्गुने ॥ एवंचान्येषुमासेषु तिथ्योद्वा-  
 दशसंज्ञिकाः ॥ लेख्याश्चक्रेत्रयोदश्यां संविहायतिथित्रयम् ॥  
 तृतीयादित्रयेतत्र त्रयोदश्यादिकेफलम् ॥ यानेप्राच्यादिका-  
 ष्टासु वक्ष्येद्वादशधाक्रमात् ॥ सौख्यंशून्यंधनार्त्तिश्च लाभो  
 लाभभयंधनं ॥ कष्टं सौख्यं कलिर्मृत्युः शून्यंप्राच्यां फलं क्रमात् ॥  
 क्लेशो नैःस्वव्यथासौख्यं द्रव्यानिर्लाभपीडनं ॥ सौख्यं लाभः क-  
 ष्टसिद्धिर्लाभः सौख्यंतुदक्षिणे ॥ भयनैःस्वंप्रियासिश्च भयद्रव्यं  
 मृतिर्धनम् ॥ क्लेशाह्लाभोर्थसिद्धिःस्वं लाभोमृत्युश्चपश्चिमे ॥  
 धनमिश्रंधनं लाभः सौख्यं लाभः सुखंसुखम् ॥ कष्टं द्रव्यत्वशू-  
 न्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥

## यथाचक्रम् ।

| पौ. | मा. | फा. | च. | वै. | ज्ये. | आ. | श्रा. | भा. | आ. | का. | मा. | पूर्व      | दक्षिण     | पश्चिम   | उत्तर   |
|-----|-----|-----|----|-----|-------|----|-------|-----|----|-----|-----|------------|------------|----------|---------|
| १   | २   | ३   | ४  | ५   | ६     | ७  | ८     | ९   | १० | ११  | १२  | सौख्यं     | क्लेश      | भय       | अर्था०  |
| २   | ३   | ४   | ५  | ६   | ७     | ८  | ९     | १०  | ११ | १२  | १   | शून्यं     | नैःस्वं    | नैःस्वं  | मिश्र   |
| ३   | ४   | ५   | ६  | ७   | ८     | ९  | १०    | ११  | १२ | १   | २   | द्रव्यक्ले | दुःख       | प्रिया   | अर्थ०   |
| ४   | ५   | ६   | ७  | ८   | ९     | १० | ११    | १२  | १  | २   | ३   | लाभः       | सौख्यं     | भय       | वित्तला |
| ५   | ६   | ७   | ८  | ९   | १०    | ११ | १२    | १   | २  | ३   | ४   | लाभः       | द्रव्यप्रा | धनप्रा   | सौख्य   |
| ६   | ७   | ८   | ९  | १०  | ११    | १२ | १     | २   | ३  | ४   | ५   | भयभी.      | लाभः       | मृत्यु   | अर्थला  |
| ७   | ८   | ९   | १० | ११  | १२    | १  | २     | ३   | ४  | ५   | ६   | लाभः       | कष्टं      | द्रव्यला | सुखं    |
| ८   | ९   | १०  | ११ | १२  | १     | २  | ३     | ४   | ५  | ६   | ७   | कष्टं      | सौख्यं     | क्लेश    | सुखं    |
| ९   | १०  | ११  | १२ | १   | २     | ३  | ४     | ५   | ६  | ७   | ८   | सौख्यं     | लाभः       | कार्यं   | कष्टं   |
| १०  | ११  | १२  | १  | २   | ३     | ४  | ५     | ६   | ७  | ८   | ९   | क्लेश      | कष्टांग    | अर्थसि   | धनं     |
| ११  | १२  | १   | २  | ३   | ४     | ५  | ६     | ७   | ८  | ९   | १०  | मृत्यु     | लाभः       | द्रव्यला | शून्यं  |
| १२  | १   | २   | ३  | ४   | ५     | ६  | ७     | ८   | ९  | १०  | ११  | शून्यं     | सौख्यं     | मृत्यु   | कष्टं   |

अथ आनन्दादिशुभाशुभयोगाः ।

सूर्यैश्विभात्तुहिनरोचिषिचंद्रधिष्ण्यात्सार्पाञ्चभूमित-  
नयेथबुधेचहस्तात् ॥ मैत्राङ्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदे-  
वाच्छायासुतेवरुणभात्क्रमशःस्युरेवम् ॥ आनन्दः  
कालदंडश्च धूम्राख्योथप्रजापतिः ॥ सौम्योर्ध्वांक्षो  
ध्वजोनाम्ना श्रीवत्सोवज्रमुद्गरः ॥ छत्रंमैत्रोमानसश्च  
पद्माख्योलंबकस्तथा ॥ उत्पातोमृत्युकाणाख्यः सि-  
द्धिश्चैवशुभोमृतः ॥ मुसलोथगदाख्यश्च मातंगोराक्षस  
श्चरः ॥ स्थिरःप्रवर्द्धमानश्च योगाऽष्टाविंशतिःक्रमा-  
त् ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ आनंदे लभते सिद्धिं कालदंडे मृ-  
तितथा ॥ धूम्राख्येन सुखं प्रोक्तं सौभाग्यं च प्रजापतौ ॥  
सौम्ये चैव महत्सौख्यं ध्वांक्षे चैव धनक्षयम् ॥ ध्वजना-  
म्नि च सौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यसंपदः ॥ वज्रे क्षयो मुद्गरे च  
श्रीनाशस्तु तथैव च ॥ छत्रे च राजसन्मानं मैत्रे पुष्टिर्न सं-  
शयः ॥ मानसे चैव सौभाग्यं पद्माख्ये च धनागमः ॥  
लंबके धनहानिश्च उत्पाते प्राणनाशनम् ॥ मृत्युयोगे  
भवेन्मृत्युः काणे च क्लेशमादिशेत् ॥ सिद्धियोगे भ-  
वेत्सिद्धिः शुभे कल्याणमेव च ॥ अमृते राजसन्मानो  
मुसले च धनक्षयः ॥ गदाख्ये चाक्षया विद्यामातंगे कुल-  
वर्द्धनम् ॥ राक्षसे तु महत्कष्टं चरे कार्यं च सिद्धयति ॥  
स्थिरयोगे गृहारंभो प्रवृद्धे पाणिपीडनम् ॥

| योगिके नाम     | रवि      | चंद्र    | मंग.     | बुध      | गुरु     | शुक्र    | शनि      | फल         |
|----------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|
| १ आनंद         | अश्वि    | मृग      | आश्ले    | हस्त     | अनु      | उ.पा.    | शत       | सिद्धि     |
| २ कालदंड       | भरणी     | आर्द्रा  | मघा      | चित्रा   | ज्येष्ठा | अभि.     | पूर्वा   | मृत्यु     |
| ३ धूम्र        | कृत्ति   | पुनर्वसु | पूर्वा   | स्वाती   | मूळ      | श्रव.    | उत्त     | असुख       |
| ४ प्रजापति     | रोहि.    | पुष्य    | उत्तरा   | विशा     | पू.      | धनि.     | रेवती    | सौभाग्य    |
| ५ सौम्य        | मृग      | आश्ले    | हस्त     | अनु      | उ.पा     | शत       | अश्वि    | अधिकसौ.    |
| ६ ध्वांस       | आर्द्रा  | मघा      | चित्रा   | ज्येष्ठा | अभि      | पू.भा.   | भरणी     | धनक्षय     |
| ७ ध्वज         | पुनर्व   | पूर्वा   | स्वाती   | मूळ      | श्रव     | उ.भा.    | कृत्ति   | सौभाग्य    |
| ८ श्रीवत्स     | पुष्य    | उत्तरा   | विशा     | पू. पा.  | धनि      | रेवती    | रोहि     | सौख्य      |
| ९ वज्र         | आश्ले    | हस्त     | अनु      | उ.पा.    | ज्ञात    | आश्वि    | मृग      | क्षय       |
| १० सुदर        | मघा      | चित्रा   | ज्येष्ठा | अभि      | पू.भा.   | भरणी     | आर्द्रा  | लक्ष्मीना. |
| ११ छत्र        | पर्वा    | स्वाती   | मूळ      | श्रव     | उ.भा.    | कृत्ति.  | पुन      | राजसन्मा   |
| १२ मैत्र       | उत्तरा   | विशा     | पूर्वाषा | धनि      | रेवती    | रोहि.    | पुष्य    | पुष्टि     |
| १३ मानस        | हस्त     | अनु      | उत्तरा   | शत       | अश्वि    | मृग      | आश्ले    | सौभाग्य    |
| १४ पद्मारुच्य  | चित्रा   | ज्येष्ठा | अभि.     | पू.भा.   | भरणी     | आर्द्रा. | मघा      | धनप्राप्ति |
| १५ लंबक        | स्वाती   | मूळ      | श्रव.    | उ.भा     | कृत्ति   | पुन      | पूर्वा   | धनहानि     |
| १६ उत्पीत      | विशा     | प.पा.    | धनि      | रेवती    | रोहि     | पुष्य    | उत्तरा   | प्राणनाश   |
| १७ मृत्यु      | अनुरा    | उ.पा.    | शत       | अश्वि    | मृग      | आश्ले    | हस्त     | मृत्यु     |
| १८ क्राणारुच्य | ज्येष्ठा | अभि      | पू.भा    | भर       | आर्द्रा  | मघा      | चित्रा   | कुश        |
| १९ सिद्धि      | मूळ      | श्रव     | उ.भा     | कृत्ति   | पुन      | पूर्वा   | स्वाती   | कार्यसि.   |
| २० शुभ         | पू.पा    | धनि      | रेवती    | रोहि     | पुष्य    | उत्तरा   | विशा     | कल्याण.    |
| २१ अमृत        | उ.पा     | शत       | अश्वि    | मृग      | आश्ले    | हस्त     | अनु.     | राजसन्मा.  |
| २२ सुसल        | अभि      | पू.भा.   | भर       | आर्द्रा  | मघा      | चित्रा   | ज्येष्ठा | धनक्षय     |
| २३ गदारुच्य    | श्रव.    | उ.भा     | कृत्ति   | पुन      | पूर्वा   | स्वाती   | मूळ      | अक्षयवि०   |
| २४ मातंग       | धनि.     | रेवती    | रोहि     | पुष्य    | उत्तरा   | विशा     | पू.पा.   | कुलवृद्धि  |
| २५ राक्षस      | शत       | अश्वि    | मृग      | आश्ले    | हस्त     | अनु      | उ.पा     | महाकष्ट    |
| २६ चर          | पूर्वाभा | भर       | आर्द्रा  | मघा      | चित्रा   | ज्येष्ठा | अभि०     | कार्यसि.   |
| २७ स्थिर       | उ.भा.    | कृत्ति   | पुन.     | पूर्वा   | स्वाती   | मूळ      | श्रवण    | ग्रहारंभ   |
| २८ प्रवर्धमान  | रेवती    | रोहिणी   | पुष्य    | उत्तरा   | विशा     | पूर्वा   | धनि      | लग्न       |

टीका—आनंदादियोग अठ्ठाईसहै तिनमें—एक १ योगका ७ वार और ७ नक्षत्र तिनका क्रम ऐसे जानिये रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृग, मंगलवारको आश्लेषा, बुधवारको हस्त, गुरुवारको अनुराधा, शुक्रवारको चित्राषाढा, शनिवारको शतताराका, इन वारोंमें नक्षत्रोंका संयोग होय तो

आनंदादिक योग जानिये ऐसे अट्हाईस योगोंका क्रम पीछे लिखाहै ॥

चरयोगः ।

रवौपूषागुरौपुष्यः शनौमूलंभृगौमघा ॥ सौम्येब्राह्म्यं विशा-  
भौमे चंद्रेद्राचरयोगकः ॥ ॥ क्रकचयोगः ॥ ॥ रवौतुद्रादशी  
प्रोक्ता भौमेचदशमीतथा ॥ चंद्रेचैकादशीप्रोक्ता नवमीबुधवा  
सरे ॥ शुक्रेचसप्तमीज्ञेया शनौचैवतुषष्टिका ॥ गुरौचाष्टमि-  
काज्ञेयो योगस्तुक्रकचोबुधैः ॥ ॥ दग्धयोगः ॥ ॥ बुधेतृतीया  
कुजपंचमीच षष्ठ्यांगुरावष्टमीशुक्रवारे ॥ एकादशीसोमश  
निर्नवम्यां द्वादश्यमकार्मातिदग्धयोगः ॥ ॥ मृत्युदा ॥ ॥ र  
वौभौमेभवेत्रंदा भद्राजीवशशांकयोः ॥ जयाशुक्रेबुधेरिक्ता  
शनौपूर्णाचमृत्युदा ॥ ॥ सिद्धियोगः ॥ ॥ शुक्रेनंदाबुधेभद्रा  
जयाभौमेप्रकीर्तिता ॥ शनौरिक्तागुरौपूर्णा सिद्धियोगाउदा-  
हृताः ॥ ॥ उत्पातादियोगाः ॥ ॥ विशाखादिचतुष्कंतु भा-  
स्करादिक्रमेणतु ॥ उत्पातमृत्युकालाख्यसिद्धियोगाःप्रकी-  
र्तिताः ॥ ॥ यमदंष्ट्रयोगः ॥ ॥ मघाधनिष्ठासूर्येतु चंद्रेमूलवि-  
ज्ञास्वके ॥ कृत्तिकाभरणीभौमे सौम्येपूषापुनर्वसुः ॥ गुरौपू-  
षाश्विनीशुक्रे रोहिणीचानुशाधिका ॥ शनौविष्णुःशतभिषक्  
यमदंष्ट्रःप्रकीर्तितः ॥ ॥ यमघंटः ॥ ॥ रवौमघाबुधेमूलंगुरौचै-  
वहिकृत्तिका ॥ भौमेचार्द्राशनौहस्तः शुक्रेचैवतुरोहिणी ॥ चं-  
द्रेविशाखायोगोऽयं यमघंटःप्रकीर्तितः ॥ ॥ मुसलवज्रयोगः ॥  
चंद्रेचित्राभृगौज्येष्ठा शनौचैवतुरेवती ॥ चांद्रजेतुधनिष्ठोक्ता  
रवौतुभरणीतथा ॥ उषाश्चैवतुभौमेच गुरौचैवोत्तरातथा ॥  
अयंमुसलवज्राख्ययोगोवज्र्यःशुभेबुधैः ॥ ॥ अमृतसिद्धियोगः ॥  
आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणीच ॥  
सौमेचविष्णुर्भृगुरेवतीच भौमाश्विनीचामृतसिद्धियोगः ॥



( १९६ )

## ज्योतिषसार ।

टीका--चरयोगादिक त्रयोदश योग और वार सात कोष्ठकमें लिखेहैं तिनमें जिस वारमें नक्षत्र किंवा तिथि होय सो योग उस दिन जानिये ॥

| योगोंकेनाम   | रविवार       | सोमवार      | मंगळवा.      | बुधवार       | गुरुवार      | शुक्रवार     | शनिवार       |
|--------------|--------------|-------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|
| १ चरयोग      | पूर्वाषाढा   | आर्द्रा     | विशाखा       | रोहिणी       | पुष्य        | मघा          | मूल          |
| २ क्रकच      | १२ तिथि      | ११ तिथि     | १० तिथि      | ९ तिथि       | ८ तिथि       | ७ तिथि       | ६ तिथि       |
| ३ दग्धयोग    | १२ तिथि      | ११ तिथि     | ५ तिथि       | ३ तिथि       | ६ तिथि       | ८ तिथि       | ९ तिथि       |
| ४ मृत्युदा   | १ तिथि<br>११ | ३ ति.<br>१२ | ६ तिथि<br>११ | ४ तिथि<br>१४ | ३ तिथि<br>१२ | ३ तिथि<br>१३ | ५ तिथि<br>१५ |
| ५ सिद्धियो.  | ० ति ०       | ० ति ०      | ३ तिथि<br>१३ | ३ तिथि<br>१२ | ५ तिथि<br>१५ | ४ तिथि<br>११ | ४ तिथि<br>१४ |
| ६ उत्पात     | विशाखा       | पूर्वा      | धनिष्ठा      | रेवती        | रोहिणी       | पुष्य        | उत्तरा       |
| ७ मृत्युयोग  | अनुराधा      | उत्तरा      | शततार        | अश्विनी      | मृग          | आश्लेषा      | हस्त         |
| ८ काल        | ज्येष्ठा     | अनु.        | पूर्वा       | भरणी         | आर्द्रा      | मघा          | चित्रा       |
| ९ सिद्धि     | मूल          | श्रवण       | उत्तरा       | कृत्तिका     | पुनर्वसु     | पूर्वा       | स्वाती       |
| १० यमदंष्ट्र | मघा धनि.     | मूलविशा.    | कृत्ति.रो.   | पू.षा.पुन.   | उ.षा.अ.      | रोहि.अ.      | श्रव.श.      |
| ११ यमघंट     | मघा          | विशाखा      | मृग          | मूल          | कृत्तिका     | रोहिणी       | हस्त         |
| १२ मुसलवज्र  | भरणी         | चित्रा      | उ.षाढा       | धनिष्ठा      | उत्तरा       | ज्येष्ठा     | रेवती        |
| १३ अमृतसि    | हस्त         | श्रवण       | अश्विनी      | अनुराधा      | पुष्य        | रेवती        | रोहिणी       |

## दासदासीलेनेका मुहूर्त ।

दासचक्रम्॥नराकारंलिखेच्चक्रं सेवार्थंमृत्युसंग्रहे ॥ शीर्षेत्रीण्य  
र्थलाभःस्यान्मुखेत्रीणिविनाशनम्॥दृदिपंचधनंधान्यं पादेष  
दुंदरिद्रता ॥ पृष्ठेद्वेप्राणसंदेहो नाभौवेदाःशुभावहम् ॥ गुदे  
द्वेभयपीडाच दक्षहस्तैकमर्थकम् ॥ एकंवामेनाशकरं भृत्य  
भात्स्वामिभांतकम् ॥

टीका--नराकारचक्रके अवयवस्थानोंमें स्थापितकरे शिरसे ३ नक्षत्रधरे तिसका फल अर्थलाभ,मुखमें ३ फल नाश,हृदयमें ५ फल धनधान्यवृद्धि,पावोंपर ६ फल दरिद्र,दृष्टिपर २ फल मृत्यु,नाभिमें ४ फ.शुभ,गुदापर २ फल भयपीडा, वाम हाथपर १ फल अर्थप्राप्ति नवस्थान,दाहिने हाथपर १ फल नाश होय ॥

दासीचक्रम्॥ दासीचक्रं प्रवक्ष्यामि दासीभात्स्वामिभांतकम्॥शी

षेत्रीणिमुखेत्रीणि स्कंधयोश्चद्रयंस्मृतम् ॥ हृदयेपंचक्रक्षाणि  
नाभौपंचभगैककम् ॥ जानुद्वयेद्वयंज्ञेयं पादयोश्चत्रयंत्रयम् ॥  
॥ फलम् ॥ शिरःस्थानेभवेच्छाभोमुखेहानिःप्रजायते ॥ स्कंधे  
चस्वामिनोमृत्युर्हृदयेपुष्टिवर्द्धनम् ॥ नाभौहानिप्रदंप्रोक्तं-  
भगैचैवपलायनम् ॥ जानौसेवांलभेन्नित्यं पादयोस्तुधनक्षयः॥

टीका—दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामी के जन्मनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय  
तिनका क्रम सीसपर ३ फललाभ, मुखमें ३ फल हानि, कंधापर २ फल स्वामीकी  
मृत्यु, हृदयमें ५ फल पुष्टिहोय, नाभमें ५ फल हानि, भगपर १ फल पलायन, जानु-  
पर २ फल सेवाकरे, पदपर ६ फल धनक्षयकारक इनमें शुभफल देखिके रक्खे ॥

### गवादिपशुलेनेका मुहूर्त ।

गोवृषमहिषीचक्रम् ॥ शीर्षेत्रयंमुखेद्वेच पादेष्वष्टौविनिर्दिशेत् ॥  
हृदयेपंचक्रक्षाणि स्तनेष्वष्टौभगैककम् ॥ ॥ फलम् ॥ शिरः-  
स्थानेभवेच्छाभो मुखेहानिःप्रजायते ॥ पादयोरर्थलाभःस्या  
हृदयेसौख्यवर्द्धनम् ॥ स्तनयोस्तुमहालाभो गुह्यस्थानेमह-  
द्भयम् ॥ अर्यमादिगवांज्ञेयं महिष्यांसूर्यभान्यसेत् ॥ इदमेववृ-  
षेज्ञेयंविशेषःपत्सु षोडश ॥

टीका—गाय अथवा वृषभ लेना होय तो उत्तराफाल्गुनीसे दिवसनक्षत्र-  
तक गिने उसमेंसे मस्तकपर ३ फल लाभदायक, मुखमें २ फल हानि, पद-  
पर ६ फल अर्थलाभ, हृदयमें ५ फल सुख, स्तनमें ६ फल महालाभ, भगपर  
१ फल प्रजावृद्धि, गुह्यपर ४ फल भय जानिये ॥ और महिषी लेनी होय  
तो भी इसीक्रमसे शुभाशुभ फल जानिये. परंतु सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक  
गिने और वृषभ लेना होय तो भी यही क्रम जानिये परंतु पदपर १६ नक्ष-  
त्र धरे शेषस्थानमें २ धरे और गायके समान शुभाशुभ फल जाने ॥

### अश्व मोललेनेका मुहूर्त ।

अश्वेतुसूर्यभाच्चैव साभिजिद्रानिविन्यसेत् ॥ पंचस्कंधेजन्मभातं

पृष्ठे तु दशकं न्यसेत् ॥ पुच्छे ज्ञेयं द्रयं प्राज्ञैश्च तुष्पादे च तुष्टयम् ॥ उदरे पंचधिष्ण्यानि मुखे द्वे च प्रकीर्तिते ॥ फलम् ॥ सौभाग्यमर्थलाभश्च स्त्रीनाशोरणभंगता ॥ नाशश्च ह्यर्थलाभश्च फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रतक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करे इस क्रमसे स्थानोंका फल कंधेपर ५ फल सौभाग्य, पीठपर १० फल अर्थलाभ, पूँछपर २ फल स्त्रीनाश, पैरोंपर ४ फल रणभंगता, उदरपर ५ फल नाश, मुखमें २ अर्थलाभ, ऐसे फल पंडितोंने कहे हैं ॥

हाथीमोललेनेका मुहूर्त ।

द्रयं सर्वत्र योजयेत् ॥ शुंडायां तु द्रयं योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ॥ षड्विचतुर्षु पादेषु साभिजिद्वैन्यसेत् क्रमात् ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ कर्णैश्चैव महाल्लाभो मस्तके लाभ एव च ॥ दंते चैव भवेच्छाभो पुच्छे हानिः प्रजायते ॥ शुंडायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखसंपदः ॥ उदरे रोगसंभूतिमुखे तु मध्यमं स्मृतम् ॥ पादयोश्च भवेच्छाभो गजे चैवं विनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रथम सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक स्थापित करनेका क्रम लिखा है, परंतु इसके स्थानों और फलों तथा नक्षत्रोंकी संख्या भिन्न है प्रथम कानोंपर २ फल लाभ, मस्तकपर २ फल लाभ, दाँतोंपर २ फल लाभ, पूँछपर २ हानि, सुंडपर २ शुभ, पीठपर ४ सुखसंपदा, पेटपर ४ रोग, मुखपर ४ मध्यम, पाँवोंपर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥

शिविकारोहणचक्र मुहूर्त ।

सूर्यभादिनभंयावत्पंचपंचचतुर्दिशि ॥ मध्ये तु सप्तदेयानि चक्रं ज्ञेयं सुखावहम् ॥ ॥ फलम् ॥ पूर्वभागे तु चारोग्यं दक्षिणे कष्टकारकम् ॥ पश्चिमे कृशता चैव ह्युत्तरे व्याधिसंभवः ॥ मध्यमं च शुभं प्रोक्तमायुर्वृद्धिकरं परं ॥ पालकारोषणं चैतद्बालकस्य बुधैर्हितं ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत पालकी अथवा पालना इनमेंसे जिस-  
पर आरोहण करना चाहें उसके चहूँ और ओर मध्यभागमें लिखनेका क्रम  
पूर्वभागमें ५ फ० आरोह्य, दक्षिणमें ५ कष्टकारक, पश्चिममें ५ कृशता, उत्तरमें ५  
व्याधिनाश, मध्यमें ७ फ० शुभ तथा आयुष्यवृद्धिकारक जानिये ॥

### छत्रचक्र ।

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रं पुष्यश्चशततारका ॥ धनिष्ठा श्रवणञ्चैव शुभ-  
भानिच्छत्रधारणम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ मूलेत्रीणिसप्तदंडे कंठेचैवतुपं  
चकम् ॥ मध्येवसुप्रदातव्यं शिखरेवेदएवच ॥ मूलेचजायते  
नाशो दंडेहानिर्वनक्षयः ॥ कंठेचराजसन्मानो मध्येछत्रपतिर्भवेत्  
शिखरेकीर्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभांतकम् ॥

टीका—तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य शततारका धनिष्ठा श्रवण-  
ये नक्षत्र छत्रधारणमें शुभहैं परंतु अपने जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक लिख-  
नेके क्रमसे प्रथम मूलपर ३ फल जीवनाश, दंडपर ७ हानि धनक्षय, कंठ-  
पर ५ राजसन्मान, मध्यमें ८ छत्रपति, शिखरपर ४ कीर्तिवृद्धि जानिये ॥

मंचकचक्रम् ॥ सूर्यभाद्रणयेच्चांद्रं मंचमूलेचतुश्चतुः ॥ गात्रेषुत्वेक  
विंध्यासु मध्येसप्तविनिर्दिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ मूलेतुसुखसौभाग्यं  
गात्रेप्रोक्तं भयंमहत् ॥ मध्येसत्पुत्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरंपरम् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र मंचकचक्रमें अंक स्थापन कर-  
नेकी रीति पहिले मुखपर १६ फ० सुखप्राप्ति, मध्यगात्रपर ४ भयप्राप्ति,  
आगे विंध्यापर १ भय, मध्यमें ७ पुत्रलाभ और आयुकी वृद्धिहोष ॥

शरसहितधनुषचक्र ॥ सूर्यभाज्जन्मभांतंच धनुष्येवं च योजये  
त् ॥ चापग्रेवाणसंख्याकं शराग्रेपंचयोजयेत् ॥ शरमूलैत-  
थापंच पंचसंधौप्रकीर्तयेत् ॥ दंडेचैवतुदद्याद्वै धनुषश्चक्रमु-  
त्तमम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ अग्रेहानिः शरेलाभो शरमूलेजयस्तथा ॥  
चापसंधौतुशौर्यस्यादंडेभंगःप्रजायते ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्र पर्यंत धनुषपर अंकस्थान करनेकी रीति

प्रथम अग्रपर ५ हानि, शराग्रपर ५ लाभ, शरमूलपर ५ जय, फिर संधिपर ५ शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग इनमेंसे शुभफल देखके धनुष धारण करावै ॥

### रथचक्र ।

रथाकारं लिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेषु ततो न्यसेत् ॥ ऋक्षत्रयं मध्यदंडे रथाग्रे भत्रयंतथा ॥ युगेच भत्रयं ज्ञेयं षट्क्षणाण्यंति मेऽध्वनि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैः सर्वतो मुखे ॥ ॥ फल ॥ ॥ शृंगे मृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेया च दंडके ॥ रथाग्रे दंड अध्वानं मध्ये चैव सुखं शुभम् ॥ बुधैरेवं फलं ज्ञेयं जन्मभातं क्रमेण च ॥ गर्गोक्तानि चक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधैः ॥

टीका—रथके आकारचक्र खींचके उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोंपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ और सर्वत्र ३ सुख जानिये ॥

### तिलोंकी घानीकरनेका मुहूर्त ।

घाणाचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेव च ॥ त्रीणि त्रीणि त्रयं त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ॥ त्रीणि त्रीणि तु भान्यत्र योजयेद्घाणकेशुभम् ॥ फल ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोऽद्रव्यमेव च ॥ स्वाभिघातो निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात् ॥

### ऊखोंका रसकाढनेका मुहूर्त ।

वेदद्विनेत्रभूतबाणहस्तरसाः क्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ प्रथमं च भवेच्छमीर्द्वितीये हानिमेव च ॥ तृतीये सर्वलाभं च चतुर्थे च क्षयं तथा ॥ पंचमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थानेशु भंस्मृतम् ॥ सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदम् ॥ सूर्यभाद्घणयेच्चांद्रमिक्षुयंत्रे नियोजयेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रतक घानीचक्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके भाग घानीके भाग ८ तिनके फल नीचे लिखे हैं ॥

| घाना.      |  | ऊर्खोंका रस. |         |
|------------|--|--------------|---------|
| ६ प्रथमभाग | हानि                                     | ४ प्रथमभाग   | लक्ष्मी |
| ३ भाग      | ऐश्वर्य                                  | २ भाग        | हानि    |
| ३ भाग      | आरोग्य                                   | २ भाग        | सर्वलाभ |
| ३ भाग      | नाश                                      | १ भाग        | क्षय    |
| ३ भाग      | द्रव्य                                   | ५ भाग        | मृत्यु  |
| ३ भाग      | स्वामघात                                 | ५ भाग        | शुभ     |
| ३ भाग      | निर्धन                                   | २ भाग        | पीडा    |
| ३ भाग      | मृत्यु                                   | ६ भाग        | धनक्षय  |
| ३ भाग      | सुख.इनमें जिस दिन शुभफल आवे उस दिन काढै. |              |         |

### कृषिकर्मका मुहूर्त ।

स्वातीब्राह्म्यमृगोत्तरादितियुगे राधाचतुष्कंमघारेवत्युत्तरवि  
ष्णुभंकृषिविधौ क्षेत्रादिवापेविधौ ॥ गोकन्याझषमन्मथाश्च  
शुभदा वाराः कुजार्कींतरे षष्ठीद्वादशिरिक्तपर्वसु तथा वर्ज्य  
द्वितीयाद्वयम् ॥

टीका—स्वाती रोहिणी मृग उत्तरां पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल  
पूर्वाषाढा मघा उत्तराफाल्गुनी श्रवण ये नक्षत्र और वृष कन्या मकर मि-  
थुन ये लग्न शुभहैं मंगल शनि और षष्ठी द्वादशी तथा रिक्ता दोनों पर्वणी  
अर्थात् १५।३० और दोनों द्वितीया इनको छोडके कृषिकर्मका आरंभ  
और बीजादिकोंका वपन करावे ॥

### हलचक्रम् ।

त्रिकंत्रिकंत्रिकंपंच त्रिकंपंचत्रिकंत्रिकम् ॥

सूर्यभाद्रणयेच्चांद्रमशुभंचशुभंक्रमात् ॥

टीका—प्रथम हल धारण करनेका मुहूर्त सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र  
पर्यंत गिने तिनके भाग ८ तिनका क्रम प्रथम ३ फल अशुभ, द्वितीयभाग

(२०२)

## ज्योतिषसार ।

३ शुभ, तृतीय भाग ३ अशुभ, चतुर्थ ५ शुभ, पंचम ३ अशुभ, षष्ठ ५ शुभ, सप्तम ३ अशुभ, अष्टम २ नक्षत्र शुभ, जिस नक्षत्रके भागमें दिवसनक्षत्र आवे उस दिन धारण करे ॥

**नौकाबनाने वा जलमें उतारनेका मुहूर्त ।**

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्रचित्रशीतोष्णरश्मिवसुजीवक भान्यमूनि ॥ वारेचजीवभृगुनंदनकौप्रशस्तौ नौकादिसंघटनवाहनमेषुकुर्यात् ॥

टीका—रेवती पुनर्वसु अश्विनी आश्लेषा शततारका अनुराधा चित्रा मृग हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार शुभहैं इनमें नौका बनवाना वा जलमें उतारना उत्तमहै ॥

## नौकाचक्रम् ।

रविभुक्तक्षमारभ्य कुर्यात्रीण्युदयेचषट् ॥ नाल्यात्रीणिहृदित्रीणिपृष्ठेभूःपार्श्वगंत्रयम् ॥ शुक्लाणेत्रीणिषण्मध्ये नौकाचक्रेभसंस्थितिः ॥ उपरिस्थंचमध्यस्थं षट्श्रेष्ठंचपरंसत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे तीन ३ नक्षत्र लिखनेका क्रम ऊपरके भागमें ६ नालीमें ३ हृदयपर ३ पीठपर १ पार्श्व ३ शुक्लाणमें ३ नौकाके मध्यभागमें ६ दीजिये तिन तिनमेंसे ऊपर और मध्यके नक्षत्र शुभ और अन्यस्थानोंके अशुभ जानिये ॥

## लग्न और ग्रहबल ।

त्रिषडायगतःसूर्यश्चंद्रोद्वित्र्यायगःशुभः ॥ कुजाकींत्रिषडायस्थौ त्रिषट्खेतरगोगुरुः ॥ द्विसुतास्ताष्टरिःफायरिपुसंस्थोबुधःस्मृतः ॥ सुखांत्यारीन्विनायत्र नौयानेशुभदःसितः ॥

टीका—नौकामें माल भरने अथवा चलानेकी लग्नका ग्रहबलज्ञान तृतीय षष्ठ एकादश इन स्थानोंमें सूर्य अथवा चंद्रमा मंगल शनि ये होंय तो शुभ और ३।६।१० इन स्थानोंको छोडकर अन्यस्थानोंमें गुरु शुभ

२ । ५ । ७ । ८ । १२ । ६ इनस्थानोंमें बुध होंय तो शुभ ७ । १२ ।  
६ । इनस्थानोंमें छोड अन्यस्थानका बुध शुभ जानिये ॥

### नौकास्थानकेग्रह ।

नाल्यांपापखगाःसौम्याः शुक्लाणेशुभकारकाः ॥ व्यस्तामृत्यु-  
कराःऋराः पृष्ठेकूर्पेचभीतिकृत् ॥ अंतवाह्येस्थितास्तेचह्यला-  
भायस्मृताबुधैः ॥ एवंविचार्यदैवज्ञो नौयानसमयंवदेत् ॥

टीका—लग्नकुंडली लिख तिसमें जो २ ग्रह जिस २ स्थानमें पडा होय तिसका  
तैसा फल, नालीमें पापग्रह, शुभ शुक्लाणपर शुभग्रह शुभ ये विपरीति होंय तो  
अशुभ और ऋरग्रह पीठपर अथवा कूर्पपर आवे तो भयदायक और इन  
ग्रहोंमेंसे बाहर आवे तो लाभ होय यह विचारकरिके ज्योतिषी बनावे.

### दीपिकाचक्र ।

दीपिकायांमुखेपंच राजसन्मानलाभदः ॥ कंठेनवधनप्राप्तिर्मध्ये-  
ष्टौस्वामिमृत्युदाः ॥ दंडेपंचभवेद्राज्यमग्निऋक्षाच्चदीपिकाम् ॥

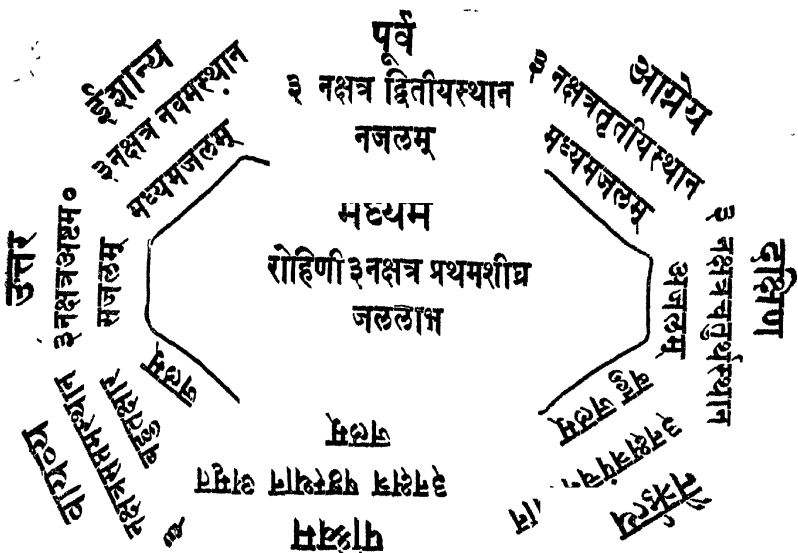
टीका—रुक्तिका नक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखनेका क्रम मुखपर ५  
लाभ राजसन्मान; कंठपर ९ धनप्राप्ति, मध्यमें ८ स्वामिमृत्यु, दंडपर ५  
राज्यप्राप्ति, इसरीतिसे नक्षत्रक्रम जानिये ॥

### कूपचक्र ।

कूपवाप्योस्तुचक्रं वै विज्ञेयं विबुधैः शुभम् ॥ रोहिणीगर्भमेतस्य त्रि-  
त्रिऋक्षाणि चंद्रभम् ॥ मध्ये पूर्वै तथाग्नेये याम्ये चैव तु नैऋते ॥ पश्चि-  
मे चैव वायव्यां सौम्येशूलिदिशिक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ शीघ्रं  
जलं न जलं मध्यमजलमजलं बहुजलं च ॥ अमृतजलं बहुक्षारं सज-  
लं मध्यजलं क्रमाज्ज्ञेयम् ॥ मत्स्ये कुलीरे मकरे बहुजलं तथैव चार्धं  
वृषभकुंभयोश्च ॥ अलौचतौ लौचजलाल्पतामताशेषाश्च सर्वेऽज-  
लदाः प्रकीर्तिता ॥



टीका—नवीनकूप और वापी खोदनेका मुहूर्त रोहिणीसे वर्तमानदिवसके नक्षत्र पर्यंतका क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियोंका चंद्रमा होय तो बहुत जल निकले, वृष कुंभ इनका पद होय तो उसका आधाजल रहे, वृश्चिक तुल इनका चंद्रमा होय तो अल्पजल रहे शेषराशियोंके चंद्रमामें खोदे तो जल नहीं निकले यह बात सिद्ध है ॥



### बागलगानेकामुहूर्त ।

गोसिंहालिमतेषुचांतरगते भानौबुधादित्रये चंद्राकैचशुभाबुधैरभिहितारामप्रतिष्ठाक्रिया ॥ आश्लेषाभरणीद्वयं शतभिषक्त्यक्त्वाविशाखांकुहूं रिक्तापक्षतिमष्टमीपरिहरेत्षष्ठीमपिद्रादशीम् ॥

टीका—उत्तरायणमें वृष अथवा सिंह वृश्चिक इनराशियोंका सूर्य और बुध गुरु शुक्र चंद्र रवि इनमें कोई वार होय ऐसा शुभदिन देखिकर नवीन बाग लगावे और आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावस्या रिक्तातिथि द्वितीया अष्टमी षष्ठी द्वादशी इन सबोंको छोडकर अन्यदिनोंमें बाग लगावे ॥

## सिक्काढालनेकामुहूर्त ।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुभेषु योगेप्रशस्तेशनचंद्रवर्ज्यम् ॥

वारंरथापूर्णजलाह्वयेचमुद्राप्रशस्ताशुभदाहिराज्ञाम् ॥

टीका—मृदुध्रुव क्षिप्र चर इननक्षत्रोंमें शुभ और शनि चंद्र ये वार वर्जितहैं.

## अथ प्रश्नप्रकरण ।

तिथ्यादिप्रयुक्तप्रश्न ।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अग्निभिस्तुहरेद्भागं

शेषंसत्वंरजस्तमः ॥ ॥ फल ॥ ॥सिद्धिस्तात्कालिके सत्वे

रजसातुविलंबिता ॥ तमसानिष्फलंकार्यं ज्ञातव्यंप्रश्नकोविदैः॥

टीका—जिस तिथि वार नक्षत्र और प्रहरमें प्रश्न करै तिसका उत्तर नीचे लिखतेहैं; उदाहरण—तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोडातो हुए १७ इसमें ३ का भागदिया तो भोग्य १५ शेष २ जिसका नाम दूसरा रज तिसका फल कार्यमें विलंब इस प्रमाणसे ३ बचै तो तम निष्फल, १ बचै तो सत्व फल कार्यसिद्धि होय ॥

## अपनीछायासेप्रश्न ।

आत्मच्छायात्रिगुणितात्रयोदशसमन्विता ॥ वसुभिश्चहरेद्भागं

शेषंचैवशुभाशुभम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ लाभश्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृ-

द्धिःपंचमसप्तके ॥ द्वयोर्हानिश्चतुःशोकं षष्ठाष्टमरणंध्रुवम् ॥

टीका—आपनी छायाको तिगुनी करके उसमें १३ मिलावे फिर आठका भागदे शेष बचै वह फल जानिये ॥

|       |       |        |       |        |       |        |       |
|-------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|
| शेष १ | शेष २ | शेष ३  | शेष ४ | शेष ५  | शेष ६ | शेष ७  | शेष ८ |
| लाभ   | हानि  | सिद्धि | शोक   | वृद्धि | मरण   | वृद्धि | मरण   |

## अथपंथाप्रश्न ।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं  
तुफलमादिशेत् ॥ वर्तमानंचनक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः॥ सप्त

( २०६ )

ज्योतिषसार ।

भिश्चहरेद्रागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं सतभिर्भा  
जिततंथा ॥ फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषांहिशुभाशुभम् ॥

टीका—तिथि प्रहर वार नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करिके सातका भा-  
गदे शेषबचै वह फल जानिये ॥ दूसराप्रकार—कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्रतक  
गिनके सातका भागदे ॥ तीसराप्रकार—प्रश्नके अक्षरोंमें ११ मिलाके सा-  
तका भागदे शेषबचै वह फल जानिये ॥

फल-एकशेषेतथास्थाने द्वितीयेपथिवर्तते ॥ तृतीयेप्यर्द्धमा-  
र्गंतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ पंचमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतं  
वदेत् ॥ शून्यंज्ञेयंसप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥

टीका—१ शेष रहे तो स्थानहीमें जानिये, २ रहै तो मार्गमें, ३ बचै तो  
अर्धमार्गमें, ४ बचै तो ग्राममें आया जानिये, ५ बचै तो मार्गसे लौट गया  
कहिये, ६ बचै तो रोगग्रस्त, ७ बचै तो शून्य अर्थात् खरण जानिये ॥

दूसराप्रकार ।

धनसहजगतौसितामरेज्यौकथयतआगमनंप्रवासिपुंसाम् ॥

तनुहिबुकगताविमौचतद्वज्झटितिनृणांकुरुतोगृहप्रवेशम् ॥

टीका—द्वितीयस्थानी शुक्र तृतीयस्थानी गुरु अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र  
चतुर्थ स्थानी गुरु ऐसा योग होय तो फरदेशी घरमें शीघ्रही आया जानिये.

अथकार्याकार्यप्रश्न ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अष्टभिस्तुहरेद्रागं

शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ पंचैकेत्वरितासिद्धिःषट्

तुर्येचदिनत्रयम् ॥ त्रिसप्तकेविलंबश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ ॥

टीका—पृच्छकका मुख जिसदिशाको होय वहदिशा और प्रहर वार नक्षत्र  
इन सबको एकत्र करिके आठका भागदे शेष बचै तिनमें शुभाशुभ फल  
जानिये, १ अथवा ५ शेषबचै तो शीघ्र कार्यासिद्धि जानिये, ६, ७ बचै तो तीन  
दिनमें कार्यासिद्धि, ३, ४ बचै तो विलंबसे, १, ८ बचै तो कार्यनहीं होय ॥

अंकप्रश्न—अकंद्विगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम्॥त्रयोदशयु  
तंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ एकेहिधनवृद्धिश्च  
द्वितीयेचधनक्षयः ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहिं ॥  
स्त्रीलाभःपंचशेषेस्यात्षष्ठे बंधुविनाशानम् ॥ सप्तमेईप्सितासिं  
द्धिरष्टमेमरणंध्रुवम् ॥ नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—जितने अंकका नाम होय उनको दूनाकरके फल और नामके अक्ष-  
रोंको मिलावे फिर १ जोडकरी नवका भागदेशेषवचैतिसकाफल कहिये-  
एकसे धनवृद्धि, २से धनक्षय, ३से आरोग्य, ४से व्याधि, ५से स्त्रीलाभ, ६से बंधु-  
नाश, ७से कार्यसिद्धि, ८से मरण, ९से राज्यप्राप्ति, यह गर्गमुनिका वचनहै ॥

नवग्रहात्मकंयंत्रं कृत्वाप्रश्ननिरीक्षयेत् ॥

फलंपूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः ॥

टीका—नवग्रहात्मकयंत्र बनाके उसमें अवलोकनकरै

|   |   |   |
|---|---|---|
| ४ | ३ | ८ |
| ९ | ५ | १ |
| २ | ७ | ६ |

जो अंक आवै उसका फल पूर्वोक्त प्रकारसे जानिये ॥

दूसरामत—सप्तत्रयाकेकथयंतिवार्ता नवैकपंचत्वरितंवदंति ॥

अष्टौद्वितीये नहिकार्यसिद्धी रसाश्चवेदा घटिकात्रयंच ॥

टीका—पूर्व जो अंक कहेहैं तिनके प्रमाणसे कृत्प परंतु फल भिन्नहै शेष  
७ वा ३रहैं तो वार्ता करना जानिये और जो ९ । १ । ५ बचै तो शीघ्र  
कार्य होय २।८बचै तो कार्य नहीं होय ६।४बचै तो तीनघडीमें कार्यहो.

वारनक्षत्रयुक्तपंथाप्रश्न ।

बुधेचंद्रेतथामार्गे समीपेगुरुशुक्रयोः ॥ रवौभौमेतथादूरे श-

नौचपरिपीड्यते ॥ निर्जीवःसप्तऋक्षाणि सजीवोद्वादशेभवेत् ॥

व्याथितोनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यातुच्चाद्भम् ॥

टीका—बुध अथवा सोमवारको प्रश्नकरै तो मार्गमें चलताहुआ जानिये  
और जो गुरु तथा शुक्रको प्रश्नकरै तो समीप आया जानिये रवि तथा भौमके  
दूरजानिये और शनिको पीडायुक्त जानिये. सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र पर्यंत लि-

(२०८)

ज्योतिषसार ।

खनेका क्रम प्रथम ७ नक्षत्र पर्यंत चंद्रमा आवे तो निर्जीव, द्वितीय १२ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो जीवता जानिये, तृतीय नवनक्षत्र पर्यंत चंद्र आवे तो रोगकी उत्पत्ति जानिये इस भाँति पंथाप्रश्न समुच्चि लीजिये ॥

**नष्टवस्तुप्रश्न ।**

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नं वह्निविमिश्रितम् ॥ पंचभिस्तुहरेद्रागंशेषं  
तत्वं विनिर्दिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ पृथिव्यांतुस्थिरं ज्ञेयमप्सुव्यो-  
मिनलभ्यते ॥ तेजस्तुराजसंज्ञेयं वायुशोकं विनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रश्न तिथिवार नक्षत्र लग्न इनमें तीन मिलाके ५ का भागदे शेष १ बचै तो पृथ्वीमें, २ बचै जलमें, पर मिले नहीं ३ बचै तो आकाशमें यह भी मिले नहीं, ४ बचै तो तेजमें नह राजमें बई जानिये, ५ बचै तो वायु इसमें शोक जानिये.

**गर्भिणीप्रश्न ।**

तत्पृच्छलग्नैरविजीवभौमे तृतीयसप्तमवपंचमेच ॥ गर्भः  
पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहेस्त्रीविबुधैः प्रणीता ॥

टीका—गर्भिणी जिस लग्नमें प्रश्नकहै उस लग्नमें प्रश्नकहै. लग्नके तृतीय अथवा सप्तम नवम पंचम स्थानमें रवि भोम गुरु ये ग्रह स्थितहोंय तो पुत्र होय और इन्ही स्थानोंमें अन्यग्रह पडे होंय तो कन्याहोय ॥

मुष्टिप्रश्न ॥ मेषैरक्तवृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम् ॥ कर्कचपांडुरं  
ज्ञेयं सिंहधूम्रं प्रकीर्तितम् ॥ कन्यायांनीलमिश्रंतु तुलायांपी  
तमिश्रितम् ॥ वृश्चिकेताम्रमिश्रंच चापेपीतं विनिश्चितम् ॥  
नक्रकुंभेकृष्णवर्णं मीनेपीतं वदेत्सुधीः ॥

टीका—प्रश्नकर्ताकी मुष्टिमें किसरंगकी वस्तुहै तिसके बतानेकेरीति जो मेष लग्न होय तो लाल रंगकी वस्तु मुष्टिमेंहै, और वृषहोय तो पीत, मिथुन होय तो नील, कर्कच पांडुर, सिंह धूमिली, कन्या नीलमिश्रित, वृश्चिक ताम्रमिश्रित, धन पीतमिश्रित, मकर और कुंभ लोहमय अर्थात् काली, मीन पीतवर्ण ॥

**लग्नसेमनचिन्तितप्रश्नकहना ।**

मेषेचंद्रिपदांचिता वृषेचिन्तितत्तुष्टपदः ॥ मिथुनेगर्भचिन्ताच

व्यवसायस्यकर्कटे ॥ सिंहेच जीवचिंतास्यात्कन्यायांचछि-  
यास्तथा ॥ तुलेचधनचिंताच व्याधिचिंताचवृश्चिके ॥ चा-  
पेचधनचिंतास्यान्मकरे शत्रुचिंतनम् ॥ कुंभेस्थानस्यचिंता  
स्यान्मीनेचिंताचदैविकी ॥

टीका—लग्नसे प्रश्नका उत्तर मेषलग्नमें प्रश्नकरे तो मनुष्यकी चिंता क-  
हिये, वृषमें गाय भैसकी, मिथुनमें गर्भकी, कर्कमें व्यापारकी, सिंहमें जीवकी,  
कन्यामें स्त्रीकी, तुलामें धनकी, वृश्चिकमें रोगकी, धनमें धनकी, मकरमें श-  
त्रुकी, कुंभमें स्थानकी, मीनमें भूतपिशाचादि बाहरी बांधाकी चिंताहै ॥

### संज्ञाके अनुसारलग्नोंके नाम ।

धातुमूलंचजीवश्चचराद्याःस्युः क्रमादिह ॥

मेषादयःक्रमेणैवज्ञातव्याःप्रश्नकोविदैः ॥

टीका—मेषादिक्रमसे बारहलग्ने तिनके नामकी दो दो संज्ञा कहतेहैं—धा-  
तुचरसे मेषलग्नकी संज्ञा, मूलस्थिर वृषकी, जीव द्विस्वभाव मिथुनकी, धातु  
चर कर्ककी, मूल स्थिर सिंहकी, जीव द्विस्वभाव कन्याकी, धातुचर तुलाकी,  
मूलस्थिर वृश्चिककी, जीव द्विस्वभाव धनकी, धातुचर मकरकी, मूलस्थिर  
कुंभकी, जीवद्विस्वभाव मीनकी, इस प्रकारसे बारह लग्नोंकी संज्ञा जानिये ॥

### अंकप्रश्नः ।

अष्टोत्तरशतकेषु प्राश्निकोन्यूनमाचरेत् ॥ शेषंद्रादशभिर्भक्तं  
शेषंचैवशुभाशुभं ॥ फलं ॥ एकंदुर्गासप्तकेवैविलंबश्चागितुर्येदिक्षुभूते  
षुनाशः ॥ रुद्रसिद्धिर्युगुलेवृद्धिरुक्ताशीघ्रंकार्यस्यात्रिषड्द्रादशेषु ॥

टीका—पूछकके कहे एकसौ आठ अंकोंमेंसे एक अंकका नाम लि-  
खावे और उसमें बारहका भागदे शेष बचें तिससे फल कहिये, १।७।९  
बचें तो देरमें कामहो । ८।४।१०।५ बचें तो नाश ११ सिद्धि २  
वृद्धि ६।० बचें तो शीघ्र प्रश्नकार्य होय ऐसा जानिये ॥

### रोगीप्रश्नः ।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंप्रहरएवच ॥ अष्टभिस्तुहरेद्रागं शेषंतु

फलमादिशेत् ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ हयाम्रौदेवताबाधा पैत्रीवैनेत्र  
दंतिषु ॥ षट्चतुर्भूतबाधा नवाधाएकपंचके ॥

टीका—तिथिवार नक्षत्र और प्रहर लग्न इन सबको एकत्र करके ८ का भागदे शेष बचे तिससे फल कहिये ७ अथवा ३ बचे तो देवताकी बाधा २।८ पितरोंकी ६।४ भूतकी १।५ बचे तो बाधा नहीं जानिये ॥

### केवललग्नसे प्रश्न ।

मेषेचदेवीदोषःस्याद्वृषेदोषश्चपैतृकः ॥ मिथुनेशाकिनीदोषः  
कर्कटेभूतदोषकः॥सिंहेसहोदराणांवि कन्यायांकुलमातृजः ॥  
तुलेदोषश्चंडिकाया नाडीदोषोहिवृश्चिके॥चापेचयक्षिणीपीडा  
मकरेग्रामदेवतात्॥अपुत्रादृष्टिजःकुंभेमीनेआकाशगामिनः ॥

टीका—जिस लग्नमें रोगी प्रश्नकरे तिसका उत्तर मेष लग्नमें देवीका दोष वृषमें पितृदोष, मिथुनमें शाकिनी, कर्कमें भूत, सिंहमें भाइयोंका, कन्यामें कुलदेवताका, तुलामें चंडिकाका, वृश्चिकमें नाडीदोष, धनमें यक्षिणी, मकरमें ग्रामदेवता, कुंभमें अपुत्रादृष्टीकी दृष्टिका, मीनमें आकाशगामियोंका दोष, ऐसे प्रश्न बतावे ॥

### मेघका प्रश्न ।

आषाढस्यासितेपक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥ रोहिणीकालमा-  
ख्यातिसुखदुर्भिक्षलक्षणम्॥रात्रावेवनिरभ्रंस्यात्प्रभाते मेघडं  
वरम् ॥ मध्याह्नेजलविंदुःस्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥

टीका—आषाढ कृष्णपक्षकी दशमी किंवा एकादशी द्वादशी इन तीनों दिवसोंमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तीव्र फल तिथि-  
क्रमसे जानिये और रात्रि मेघरहित होय प्रातःकाल मेघगर्ज मध्याह्नमें  
बूँदें पड़ें ऐसे लक्षण जिस संवत्सरके हों उसमें महर्घता जानिये ॥

### जललग्नम् ।

कुंभकर्कवृषौमीनमकरौवृश्चिकस्तुला ॥ जललग्नानिचोक्तानि  
लग्नेष्वेतेषुसूर्यभम् ॥ लभत्येवसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ॥

टीका—कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये ७ जल लग्ने हैं इनमें जो सूर्य नक्षत्र मिले तो वर्षा जानिये ॥

### मेघनक्षत्रम् ।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासुच ॥

स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षतेनात्रसंशयः ॥

टीका—अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रवण मघा स्वाति इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वृष्टि अधिक होय ॥

### स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्रम् ।

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ॥ मूलाच्चतुर्दशं

पुंसां नक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ॥ वायुर्नपुंसकेभेच स्त्रीणांभेचाभ्र

दर्शनम् ॥ स्त्रीणांपुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥

टीका—आर्द्रा आदि स्वातिपर्यंत १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञकहैं और विशाखादि ज्येष्ठांत ३ नपुंसक मूल आदि मृगपर्यंत १४ पुरुष नक्षत्रहैं. नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवे तो वायु चले और दोनों स्त्रीनक्षत्र आवे तो मेघदर्शन होय जो स्त्री पुरुषनक्षत्रोंका योग होय तो निश्चयकरके वर्षा होय ॥

### सूर्य तथा चंद्रनक्षत्रकी संज्ञा ।

अश्विन्यादित्रयंचैव आर्द्रादेः पंचकंतथा ॥ पूर्वाषाढादिचत्वारि

चोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यंतेसूर्यभान्यथ ॥

रोहिणीचमृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिकातथा ॥ सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चं

द्रेचंद्रेनवर्षति ॥ चांद्रसूर्योभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ॥

टीका—अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्रनक्षत्र और शेष सूर्य नक्षत्र जानिये ॥ फल ॥ दिवसनक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों जो सूर्यके होंय तो वायु चले और जो दोनों चंद्रके होंय तो मेघ नहीं वर्षे जो चंद्र और सूर्य नक्षत्रका योग होय तो वर्षा अच्छी होय ॥



( २१२ )

ज्योतिषसार ।

धान्यप्रश्नः ।

कापायेजयशर्मलाभकुगिरौ मित्राणिसर्वशुभं गोरायेप्रियभुग्धना-  
निलपरे लाभारिनाशादिकम् ॥ रय्याङ्गेकलहःश्रियश्चबलगे स्था-  
नानिमित्रागमौ रोरोंविपदःपराङ्गकलहःखालेयशोकावहः ॥

टीका—सत्ताईस दानें धान्यके लेकर एक राशिकरे उसी राशिमेंसे एक चुटकी भर निकालकर रखे ऐसे तीन राशिकरे उसमेंसे तीन २दानें जूदे जूदे करता जाय जो तीन राशियोंमेंसे एक २बचे तो जय और लाभ होय १ का कहिये १ पा कहिये १ ये कहिये ऐसी तीन राशियोंसे पृथक् २ एक २ बचे उसका फल जय और लाभ ॥

२ कु क० १ गी क० ३ रौ क० २ मितादिसर्वसिद्धि

३ गौ क० ३ रा २ ये १ प्रियभोग धनप्राप्ति

४ ल ३ प १ रे ३ लाभ और पुत्रका नाश

५ र २ प १ ग ३ कलह होय

६ ब ३ ल ३ ग ३ लक्ष्मी और मित्रलाभ

७ रो २ रो २ रां २ विपत्तिप्राप्ति

८ प १ रां २ ग ३ कलह

९ स्वा २ ला ३ य १ शोकप्राप्ति—ऐसे ३ वारकरनेसे बुरा  
जला फल जानिये और राशिकी गणनाके समय तीन २ दानें गिने ॥

पशुके विषयमें प्रश्न ।

द्युमणिभान्नवभेषुवनेपशुस्तदनुषट्सुचकर्णपथेस्थितम् ॥

अचलभेषुगतं गृहमागतं द्वयगतंगतमेव मृतं त्रिषु ॥

टीका—जो सूर्यनक्षत्रसे वर्तमान नक्षत्र नचम होय तो पशु वनमें जानिये और जो ६ नक्षत्रांत आवे तो मार्गमें जानिये तिसके आगे ७ नक्षत्रांत आवे तो घरमें आया जानिये तिस पीछे २ नक्षत्रांत आवे तो आवनहार नहीं तिसके आगे ३ नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा जानिये ॥

## राज्यभंगादियोगः ।

यदि भवति कदाचिन्नाश्विनीनष्टचंद्रा शशिरविकुजवारे स्वा-  
तिरायुष्मयोगे ॥ गगनचरपशूनां जंगमस्थावराणां नृपतिजन-  
विनाशो राज्यभंगस्तु चोक्तः ॥

टीका—कदाचित् शनि रवि भौम इनमें किसी वारकरि युक्त अमावा-  
स्याको अश्विनी किंवा स्वातिनक्षत्र और आयुष्मान् यौम होय जो ऐसा  
योग पडे तो पक्षी पशु जंगम स्थावर व राजा व जन इनका नाश और  
राज्यभंग होय ॥

सूर्यतथाचंद्रकेपरिवेषार्थात् मंडलका फल ।

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामेचपीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामे  
चवृष्टिः ॥ रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरि-  
वेषे राज्यभंगश्चतुर्थे ॥

टीका—रविका अथवा चंद्रका मंडल जो प्रथम प्रहरमें होय तो जनो-  
को पीडा होय, दूसरे प्रहरमें होय तो मेघ वर्षे, तीसरे प्रहरमें धान्यका नाश,  
चौथे प्रहरमें राज्यभंग होय ॥

## उत्पातोंका फल ।

रात्रौ धनुर्दिने उल्का ताराचैव दिने तथा ॥ रात्रौ तु धूमकेतुश्च  
भूकंपश्च तथैव हि ॥ एतानि दुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणि च ॥

टीका—रात्रिमें धनुष दिनमें उल्का तथा नक्षत्रपात और रात्रिमें धूमकेतुका  
उदय तथा भूमिकंप ऐसे दुष्टचिह्न लक्षित होंय तो देशक्षयकारक जानिये ॥

## अथ छायाबलयात्रा ।

शनौ सप्तपादः कवौषोडशस्यू रवौ भौमके रुद्रसंख्याविधेया ॥

निशेशे वधेष्टेशसंख्याविधेया गुरावाग्निभूसंख्यच्छायाविधेया ॥

नलत्तानपातं व्यतीपातघातं नभद्रानसंक्रांतिशूलंतथाच ॥

नरोयातिसंशोध्य छायायदाहि तदाकार्यसिद्धिस्त्ववश्यंभ

वेत्र ॥ स्वच्छायात्रिगुणाविश्वयुताभाज्याष्टभिःफलम् ॥ ला-  
भोऽ१२रहानी३रुग्४वृद्धि५भयं६सिद्धि७मृतिः ८ क्रमात् ॥

टीका—शनिवारको ७ पाँवकी छाया शुक्रवारको १६ पाँवकी छाया रविवार तथा मंगलमें ११ पाँवकी छाया विधान करीहै, चंद्रवारको ८ और बुधवारको ११ संख्या विधान करी है—गुरुको १३ संख्या विधान करी है—इस छाया बलमें जो यात्रा करते हैं उनको लत्तापात व्यतीपात भद्राघात संक्रांति दिशाशूल नहीं फल देता अपनी छायाके साधन करनेमें मनुष्यको कार्यसिद्धि अवश्य होतीहै, पुनः अपनी छायाको तीन गुणा कर फिर १३ युक्त करे, ८ का भाग देय जो १ बचें तो लाभ, २ बचें तो लक्ष्मीप्राप्ति. ३ बचें तो हानि, ४ बचें तो रोग, ५ बचें तो वृद्धि, ६ बचें तो भय, ७ बचें तो सिद्धि ८ बचें तो मृत्यु इस क्रम करनेसे यथावत् फल देती है सो यात्रामें विचार लेना चाहिये ॥

### अथ वायुपरीक्षाकथनम् ।

आषाढमासस्यचपौर्णमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवातिवातः ॥

पूर्वस्तदासस्ययुताचमेदिनी नन्दंतिलोकाजलदायिनोचनाः ॥

टीका—जो आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन सूर्यास्त कालमें पवन पूर्व दिशाकी होय तो पृथ्वी धान्य युक्त लोक सुखी मेघकी वृष्टि करे ऐसा फल जानना ॥

कृशानुवातेमरणंप्रजानामन्नस्यनाशःखलुवृष्टिनाशः ॥

याम्येमहीसस्यविवर्जितास्यात्परस्परंयातितृपाविनाशम् ॥

टीका—अग्निकोणकी वायु चाले तो प्रजाका मरण अन्नका नाश और वर्षाका नाश होय, और दक्षिणदिशाकी पवन होय तो पृथ्वी धान्य करके वर्जित होय और परस्पर राजोंमें विरुद्ध होय यह फल दक्षिणदिशाका जानना.

नैशाचरोवारियदात्रवातो नवारिदोषक्षतिकारिभूरि ॥

तदामहीसस्यविवर्जितास्यात्क्रंदंतिलोकाःक्षुधयाप्रपीडिताः ॥

टीका—नैर्ऋत्य कोणकी जो पवन होय तो थोड़ी वर्षा होय और पृथ्वी धान्य करके वर्जित क्षुधा करिके रोगी और पीडित लोग रुदन करें ॥

आषाढमासेयदिपौर्णमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवारुणेऽनिलः ॥

प्रवातिनित्यंसुखिनःप्रजाःस्युर्जलान्नयुक्तावसुधातदास्यात् ॥

टीका—आषाढ मासमें पूर्णिमाके दिन जो सूर्यास्त कालमें पश्चिम दिशाकी पवन होय तो प्रजा सुखी रहे और पृथ्वी जल अन्न करके पूरित होय ऐसा पश्चिमकी दिशाका फल जानना ॥

वायव्यवातेजलदागमःस्यादन्नस्यनाशःपवनोद्धताद्यौः ॥

सौम्येनिलेधान्यजलाकुलाधरानंदंतिलोकाभयदुःखवर्जिताः ॥

टीका—जो वायव्य कोणकी पवन होय तो जलका आगमन अन्नका नाश और पृथ्वी प्रचंडपवन करके युक्त और उत्तर दिशाकी पवन होय तो श्रेष्ठ वर्षा और धनधान्य करके पृथ्वी युक्त लोक सुखी भय दुःख करके वर्जित ऐसा कहना चाहिये ॥

ईशानवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धराचगावोबहुदुग्धसंयुताः ॥

भवंतिवृक्षाःफलपुष्पदायिनोवातेभिनंदंतिनृपाःपरस्परम् ॥

टीका—जो ईशान कोणकी पवन चले तो पृथ्वी जलसे पूरित होय और गौदुग्ध करिके पूरित और वृक्ष फल पुष्पोंसे युक्त और राजाओंकी परस्पर मैत्री ऐसा जानना चाहिये ॥

### वर्षनिकालनेका प्रकार ।

गताब्दवृंदैर्भुविखाभ्रचंद्रैर्निघ्नेनभोव्योमगजैःसुभक्ता ॥

त्रिधाफलंवारघटीपलानि स्वजन्मवारादियुतानिइष्टम् ॥

टीका—वर्तमान संवत्में जन्म संवत् हीन करे तो गताब्द संज्ञा होगी गताब्दोंको भुवि १ ख०अभ्र० चंद्र १ अर्थात् १००से गुणा किया, नभ० व्योम०गज ८ अर्थात् ८०० का भाग देय ३ इसमें स्थापना करे जो फल प्राप्त होय सो वार इष्ट होगा इसमें जन्मका वार इष्ट जोड देय और ऊर्ध्वाकर्म ७ का भाग देय तो वर्षका वार इष्ट सिद्ध होगा. उदाहरण—वर्तमान संवत् १९३६ जन्म संवत् १९३४ इन्होंका अंतर २इसको १०० से तो २०१४ हुये और इसमें ८००का भाग दिया तो २प्राप्ति हुये और

( २१६ )

ज्योतिषसार ।

शेष ४१४ रहे इनको ६० से गुणा तो २४८४० ये हुये फिर इनमें ८०० का भाग दिया तो ३१ मिले और शेष ४० रहे इनको ६० से गुणा तो २४०० हुये तो इनमें ८०० का भाग दिया तो ३ मिले इस कारण ०२ वार ३१ घटी ० ३ पल सिद्ध हुये इनमें जन्मवारादि ६।४५०५ जोडे ० ९।१६।०८ ऊर्द्धांक ९ में ७ के भागसे शेषांक ०२।१६।०५ यह वर्षका इष्ट हुआ ॥

अथ तिथिबनानेका क्रम ।

याताब्दवृंदोगुणवेदरामै ३४३ निर्घ्नः कुरामै ३१ विहृतो दिनाद्यम् ॥

घस्रैः सहोत्थैः सहितं खरामै ३० भक्तं च शेषातिथिरत्र वर्षे ॥

टीका—गत वर्षोंको ३४३ से गुणा करे पुनः ३१ का भाग देय जो अंक प्राप्ति होय सो तिथि जानना इसमें जन्मकी तिथि युक्त करे फिर ३० से जो शेष रहे सो वर्षकी तिथि होगी परंतु तिथिमें १ ऊनाधिक कहीं होजाती है ॥

अथ नक्षत्रलानेकाक्रम ।

व्योमेन्दु १०भिःसंगुणितागताब्दाः खशून्यवेदाश्चि २४० लवैर्वि-  
हीनाः। जन्मर्क्षयोगैः सहिताप्रवस्था नक्षत्रयोगो भवतो भ २७ तष्टौ ॥

टीका—गत वर्षोंको १० गुणा करे फिर दो जगह रखे और एक जगहमें २४ का भाग देय जो बल प्राप्ति हो वह दूसरे में घटादे और जन्मर्क्ष या योग जोड दे उस नक्षत्रमें २७ का भाग से शेष नक्षत्र होगा ॥

अथ ग्रहचालनकथनम् ।

स्वेष्टकालोदाग्रे स्यात्पंक्तिचशोधयेद्धनम् ॥

पंक्तिश्चैव यदाग्रे स्यादिष्टं चशोधयेद्वनम् ॥

टीका—इष्टकाल पंचांगस्थ पंक्तिसे आगे होंय तो पंक्तिमें कालशोधन करना तो चालनधन करना होता है और जो पंक्ति इष्टकालसे आगे होय तो इष्टमें पंक्ति शोधन करना तो चालन ऋण होता है ॥

अथ ग्रहस्पर्ष्टाकरणम् ।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषड्भुता ॥

लब्धमंशाधिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टौ भवैद्ब्रहः ॥

टीका—गत दिनसे अथवा आगत दिनसे सूर्यादि ग्रहोंकी गतिको गुण देना और ६० से भाग देना लब्धि अंशादि जो आवे सो गत दिनका होय तो ग्रहमें कम करना और आगत दिनका होय तो युक्त करना इससे ग्रह स्पष्ट होता है ॥

### अथ भयातभभोगबनानेकी रीति ।

गतर्क्षनाढ्यः खरसेषुशुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषुयुक्ताः ॥

भभुक्तमेतच्चनिजर्क्षनाडिकाःशुद्धाःसुयुक्ताश्चभभोगसंज्ञकाः ॥

टीका—गत नक्षत्रकी घटीको ६० में शुद्ध करना और वर्षमें सूर्योदय से जो इष्ट घटी होय सो युक्त करना तो भयात होताहै और ६० में शुद्ध किया जो नक्षत्र उसमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी मुक्त करना तो भभोग होताहै ॥

### अथ चंद्रस्पष्टक्रममाह ।

खड्ग्रंभयातंभभोगोद्धृतं तत्स्वतर्कघृणिष्येषुयुक्तं द्विनिघ्नम् ॥

नवाप्तंशशीभागपूर्वस्तुभुक्तिः खखाभ्राष्टवेदाभभोगेनभुक्ताः ॥

टीका—बीते हुये नक्षत्रका पिंड बांधके ६० से गुणे और भभोगका पिंड बांधके तीनवार भाग देय गत नक्षत्रको ६० से गुणे और जो भभोगके भागसे प्राप्त हुआ जो भयातहै उसे इसमें जोड देय फिर इसे दुगुणा करे और ९ का भाग देय तीनवार तो चंद्रमा अंशपूर्वक होताहै और अंशोंमें ३० का भागसे राशि करे और ४८००० में भभोगका भागदेय दोवार तो चंद्रमाकी भुक्ति स्पष्ट हो जायगी ॥

### अथ लग्नसाधनम् ।

समागणश्चंद्रकृशानुनिघ्नः खचंद्रभक्तोजनिलग्नयुक्तः ॥

तष्टोदिनेशैःकिलवर्षलग्नं सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम् ॥

टीका—गताब्दको ३१ से गुण देना १० से भाग लेना उसमें जन्म लग्न युक्त करना १२ से उसे वष्टित करना जो शेष बचे तो सामान्यरीति से वर्षलग्न जानना चाहिये ॥

(२१८)

ज्योतिषसार ।

अथ मुंथा ।

सैकागताब्दाविरताःपतंगैस्तच्छेषभावे मुथहाजनुर्भात् ॥

टीका—गताब्दमें १ युक्त करना १२ से भागदेना जो शेष रहे सो जन्मलग्नसे मुंथाका स्थान जानना चाहिये ॥

अथ पंचाधिकारि ।

मुंथेशो वर्षलग्नेशस्तत्रैराशिकनायकः । दिवाकैराशिनाथश्च  
रात्रौचंद्रक्षनायकः ॥ जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षपंचाधिकारिणः ॥

टीका—वर्षमें पंचाधिकारी बनानेका क्रम—मुंथेश १ वर्षलग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिनमें वर्षप्रवेश होय तो सूर्यके राशिका स्वामी रात्रिमें वर्ष-प्रवेश होय तो और चंद्रके राशिका स्वामी ४ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्षमें यह पंचाधिकारी शुभाशुभ फलके लिये ग्रह अधिकार देखना जिसके दो तीन अधिकार आवें सो बलवान् जानना चाहिये ॥

त्रिराशिपाःसूर्यसितार्कशुक्रा दिनेनिशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ॥

मेषाच्चतुर्णाहरिभाद्रिलोमं नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचंद्राः ॥

टीका—त्रिराशिपति होते सूर्य शुक्र और शनि शुक्र दिनमें मेषसे आदि लेकर कर्क राशितक चक्रसे प्रतीत होगा ॥

| राशयः        | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  | ११  | १२  |
|--------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| दिवास्वामी   | सू. | शु. | श.  | शु. | शु. | बु. | श.  | शु. | सू. | सू. | श.  | शु. |
| रात्रिस्वामी | बु. | चं. | बु. | चं. | बु. | चं. | बु. | मं. | बु. | चं. | बु. | मं. |
| हृदास्वामी   | श.  | मं. | बु. | मं. | श.  | चं. | बु. | मं. | श.  | मं. | बु. | मं. |

दृष्टिक्रममाह ।

पादंत्रिरुद्रे १५ सदलंस्वतुर्यै ३० पादत्रयस्यान्नवपंचमेपि ॥

पश्यंति पूर्णैसमसप्तकेच ग्रहानचान्यत्र विलोकयंति ॥

स्पष्टार्थचक्रं विलोकयन्ति ।

०५०४ भाव लग्नस्थमुंथाप्रकारोति सौख्यं नृप-  
१११० ७ प्रसादं विजयं रिपूणाम् । हर्षोदयं ।

३०४५/६ कलादृष्टि बाहुबलप्रतापं वृद्धिविलासं धन-

लाभमुग्रम् ॥ मुंथाधनस्थानगेलाभमुग्रं करोतिमिष्टान्नस-  
मागमंच ॥ सर्वार्थसिद्धिनिजबाहुवीर्यात्सुखोदयं मित्र-  
सुतोदयंच ॥ लोकाजयंनिजजनाच्चमहोत्थसौख्यं देहात्ति-  
कीर्तिशुभकार्यसमृद्धिदात्री ॥ सत्संगतिश्चसवलातनुतेह  
मैत्री मुंथाचप्राक्क्रमगतानृपतिप्रसादम् ॥ वित्तक्षयंरिपुज-  
नादयशस्यवृद्धिं वैरोदयंस्वजनराजकुलेषुकुर्यात् ॥ गुप्तात्ति-  
कृद्ददरुजस्यविवर्तिदात्री तूर्येन्धिहाविविधरोगभयानिपुं-  
साम् ॥ प्रतापमाहात्म्यसुरार्चनंच सुबुद्धिवृद्धिर्यशसःप्रवृद्धिः ॥  
वित्तप्रलाभो जनताप्रसादः पुत्राप्तिसौख्यं मुथनेधिहायाम् ॥  
नृपाद्भयं चौरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजंभयंच ॥ कार्या-  
र्थहानिःकुमतीष्टवैरं षष्ठेधिहादुष्टरुजंविदध्यात् ॥ सौख्यार्थ  
नाशोवनितादिकष्टं चिंतामनोमोहमनलपरोगम् ॥ क्लेशो-  
दयं स्वेष्टजनेषुवैरं यशोविनाशो मुथगेधिहायाम् ॥ दुष्टंभया-  
त्ति धनधान्यनाशो विपक्षभीतिर्व्यसनानिमोहाः ॥ कांतिवि-  
नाशं स्वजनेषुपीडा नृपाद्भयंचाष्टमगेधिहायाम् ॥ धर्मार्थला-  
भं स्वजनेषुमैत्रीनृपोत्तमैःप्रीतियशःप्रवृद्धिः ॥ प्रमोदभाग्यो-  
दयकार्यसिद्धिः पुण्योपगेथा प्रकरोति सौख्यम् ॥ मनोरथा-  
त्तिस्वजनेषुसौख्यं निजेष्टमंत्री स्वजनोपकारकः ॥ भूपात्प्र-  
सादो दशमेधिहायां पुण्योदयःस्याद्विपुल्यशश्च ॥ सुखार्थ-  
लाभं शुभबुद्धिवृद्धिमनोरथात्ति नृपतिप्रसादम् ॥ निजेष्टसौ-  
ख्यं मनसिप्रहर्षं करोतिमुंथा भवगेवशित्वम् ॥ निरुद्यमत्वं



( २२० )

ज्योतिषसार ।

निजमित्रकष्टं दुष्टातिरुद्धमृपतेर्भयंच ॥ धर्मार्थनाशो रिपु  
चौरभीतिः स्वाभीष्टपीडा व्ययगोथिहायाम् ॥

अथ त्रिपताकीचक्रका प्रकार ।

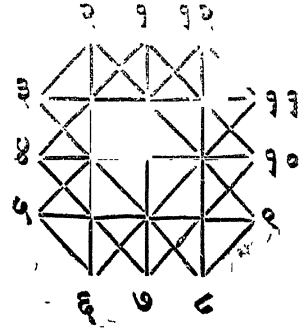
रेखात्रयं तिर्यग्धोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ॥

स्मृतंबुधैस्तत्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखा ग्रहवर्षलग्नात् ॥

टीका—रेखा ३ टेढी ३ सीधी करे और परस्पर ईशान कोणसे रेखा का वेध करे इसको पंडितजन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसमें पूर्वकी मध्य रेखापर वर्ष लग्नका न्यास करना ॥

तत्र ग्रहन्यासमाह ।

न्यसेद्भ्रुचक्रंच विलग्नकार्या ताराब्द  
संख्या विभजेन्नभोगैः ॥ शेषोन्मिते  
जन्मगचारराशेस्तुल्येचराशौ वि-  
लिखेच्छशाके ॥ परेचतुर्भाजितशे-  
षतुल्येस्थानेखरांशेखचरास्तुलेख्याः ॥



टीका—त्रिपताकी चक्रपर १२ राशि कन्या करना और ग्रहन्यासका प्रकार गर्तवर्षमें १ युक्त करना ८ भाग लेना जो शेष रहे सो जन्मकालमें चंद्रराशिसे शेषस्थानमें चंद्रमा लिखना और ग्रहको ४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे वहां अपने स्थानसे लिखना, और राहु केतु अपने स्थानसे पीछे लिखना तो त्रिपताका चक्र स्पष्ट होताहै ॥

वेधविचार ।

स्वभानुविद्धे द्विमगौत्वरिष्टं तापोर्काविद्धे रुगिनोर्ध्वविद्धे ॥

महीजविद्धेतु शरीरपीडा शुभैश्वविद्धे जयसौख्यलाभाः ॥

शुभाशुभाव्योमगवीर्यगोत्रफलंतुवेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥

टीका—त्रिपताकी चक्रमें वेध देखनेका प्रकार सर्वग्रहोंका वेध चंद्र-

मासे देखना और राहुसे चंद्रसे वेध होय तो अरिष्ट जानना, सूर्यसे वेध होय तो ताप जानना, शनिसे वेध होय तो रोग जानना, मंगलसे वेध होय तो शरीरकी पीडा जानना, और शुभ ग्रहसे वेध होय तो जयप्राप्ति सौख्य लाभ और शुभग्रहका वीर्य देखकर वेधमें फल कहना ॥

### मुद्दादशा ।

जन्मक्षसंख्या सहितागताब्दा दृगूनितानंदहृतावशेषात् ॥

आचंकुराजीशबुकेषुपूर्वं भवंतिमुद्दादशिकाक्रमोयम् ॥

टीका—जन्म नक्षत्रकी जो संख्या उसमें गताब्दकी संख्या मिलावना और दोनोंकी जो संख्या होय उसमेंसे दो दो कमती करना और ९से भाग देना जो अंक शेष रहें सो दशा जानना, १ शेष रहे तो सूर्यकी दशा, २ शेष रहे तो चंद्रमाकी दशा, ३ शेष रहे तो मंगलकी दशा, ४ शेष रहें तो राहुकी दशा ५ शेष रहें तो गुरुकी दशा, ६ शेष रहै तो शनिकी दशा, ७ शेष रहें तो बुधकी दशा, ८ शेष रहें तो केतुकी दशा, ० शेष रहे तो शुक्रकी दशा जानना, यह दशाका क्रम ज्योतिषशास्त्रके आचार्योंने कहाहै ॥

### मुद्दादशाचक्रम् ।

| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | ग्रहाः |
|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|--------|
| ०   | १   | ०   | १   | १   | १  | १   | ०   | ०   | मास    |
| १८  | ०   | २१  | २४  | १८  | २७ | २१  | २१  | ०   | दिन    |

### मासबनानेका क्रम ।

मासार्कस्यतदासन्नपंत्यर्केणसहांतरम् ॥ कलिकृत्यार्कगत्याप्तदिनावेनयुतो नितम् ॥ तत्पंक्तिस्थंयातपूर्वं मासार्केधिं कहीनके ॥ तद्वाराद्येमासवेशोद्युप्रवेशःकलासमः ॥

टीका—वर्ष सूर्य मासको जो सूर्य सो वर्षके सूर्यसे अंशोंमें निकट होय हीन वा अधिक तो उसका अंतर करे राशि छोड फिर उसका पिंड बांधि कर सूर्य पंक्तिके गतिका पिंड बांधिके भाग दे तीन दफे तो उससे वार आदि प्राप्त होयेंगे, फिर जिस पंक्तिके सूर्यका अंतर किया है उसे उसी मिश्र-मान में घटा दे अथवा जोडदे, जो सूर्य वर्षकी पंक्तिके सूर्यसे अधिक होय तो जोडदे और हीन होय तो घटा देय तब मास वारादि स्पष्ट होगा ॥

### अथ ग्रहचक्रप्रकरणम् ।

सूर्य॥ ऋक्षसंक्रमणंयत्र द्वेवक्रेविनियोजयेत् ॥ चत्वारिदक्षिणे  
बाहौ त्रीणित्रीणिचपादयोः ॥ चत्वारिवामबाहौच हृदयेपंच  
निर्दिशेत् ॥ अक्ष्णोर्द्वयंद्रयंयोज्यं मूर्ध्निचैकैककंगुदे॥फलम् ॥  
रोगोलाभस्तथाध्वाच बंधनंलाभएवच ॥ ऐश्वर्यराजपूजाच  
अपमृत्युरितिक्रमात् ॥ ॥चंद्र॥ चंद्रचक्रंप्रवक्ष्यामि नराकारं  
सुशोभनम् ॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकं त्रीणिदक्षिणहस्तके॥हृदि  
षट्कंप्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ कुक्ष्योः षट्कंचदातव्यं  
पादैकैकं विनिर्दिशेत्॥ ॥फलम्॥ ॥ शीर्षेलाभकरंज्ञेयं मुखेतु  
द्रव्यहारकम् ॥ हानिदंदक्षिणेहस्ते हृदयेच सुखावहम् ॥ वा-  
महस्तेतुरोगाश्च कुक्ष्योः शोकस्तथैवच॥पादयोर्हानिरोगौच  
जन्मधिष्ण्यादि चंद्रभम् ॥ ॥ भौम--भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि  
जन्मधिष्ण्यादिभौमभम्॥शीर्षे षट्कं मुखेत्रीणि त्रीणि वै द-  
क्षिणेकरे ॥ पादयोः षट्प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ गुह्ये  
चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये त्रयमेवच ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ विजयश्चैवरो  
मश्च लक्ष्मीः पंथा भयंतथा ॥ मृत्युर्लाभः सुखंचापि  
फलंज्ञेयं विचक्षणैः ॥

सूर्य.

चंद्र

मंगल

सूर्य संक्राति जिस नक्षत्र-जन्म नक्षत्रसे जिस नक्ष-जन्मनक्षत्रसे जिस नक्ष-  
में होय उससे जन्म नक्षत्र-त्रमें चंद्रहोय तिस पर्यंत-त्रमें मंगल होय तिनके  
पर्यंत गणनेसे जितने न-गिनै जितने नक्षत्र आवैं-गिननेसे जितने नक्षत्र  
क्षत्र आवे वे फल जानिये। वे फल जानिये ॥ आवैं वे फल जानिये

| स्थान      | नक्ष | फल          | स्थान     | नक्ष | फल          | स्थान      | नक्ष | फल           |
|------------|------|-------------|-----------|------|-------------|------------|------|--------------|
| मुखमें     |      | रोगप्राप्ति | मस्तकमें  | ६    | लाभ         | शिरपर      | ६    | विजय         |
| दाहिनेहा   | ४    | लाभ         | मुखमें    | १    | श्रव्यहरण   | मुखमें     | ३    | रोगप्राप्ति  |
| पायाम      | ६    | भागचलन      | दाहिनेहा  | ३    | हानिकर      | पायाहाथ    | ३    | लक्ष्मीप्रा. |
| वाईबाहु.   | ४    | बंधन        | हृदयमें   | ६    | सुखप्राप्त  | पायोंमें   | ६    | मार्गचल.     |
| हृदयमें    | ५    | लाभ         | वायेंहा.  | ३    | रोगप्राप्ति | वायांहाथ   | ३    | भय           |
| नेत्रोंमें | ४    | लक्ष्मीप्रा | कुक्षिमें | ६    | शोक         | गुदामें    | १    | मृत्यु.      |
| मस्तकमें   | १    | राजसेपूजा   | दाहिनेपा. | १    | हानि        | नेत्रोंमें | २    | मृत्यु       |
| गुदामें    | १    | अपमृत्यु    | वायापाय.  | १    | रोगप्राप्ति |            | ३    | सुख          |

॥ बुध ॥ बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मऋक्षादि सौम्यभम् ॥  
शिरसित्रीणिराज्यंस्याद्रकैकंधनधान्यदम् ॥ नेत्रेद्रे प्री-  
तिलाभौच नाभौश्रीः पंचकंतथा ॥ पादयोः षट्प्रवासश्च  
वामेवेदा धनंतथा ॥ चत्वारि दक्षिणेहस्ते धनलाभस्तथैवच ॥  
गुह्यस्थाने भद्रयंच बंधनंमरणंफलम् ॥ ॥ गुरुः ॥ गुरुचक्रं प्रव-  
क्ष्यामि गुरुभाजन्मऋक्षकम् ॥ दद्याच्छिरसिचत्वारि चत्वा-  
रि दक्षिणेकरे ॥ एकं कंठे मुखे पंच पादयोः षट्प्रदापयेत् ॥  
करेवामे च चत्वारि त्रीणि दद्याच्चनेत्रयोः ॥ ॥ फलम् ॥ राज्यं  
लक्ष्मीर्धनप्राप्तिः पीडामृत्युस्तथैवच ॥ सुखंचैव क्रमेणैवं फ-  
लंज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ॥ शुक्रः ॥ शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधि-  
षण्यात्तुजन्मभम् ॥ मुखेत्रीणि महालाभः शीर्षेपंच शुभापहाः ॥  
त्रिकंतु दक्षिणेपादे क्लेशहानिकरं सदा ॥ तथैववामपादेच

त्रीणिभानितुयोजयेत् ॥ हृदयेद्वे धनंसौख्यं भाष्टकंहस्तयो-  
र्द्वयोः ॥ मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्गुह्येत्रीणि तथैवच ॥ स्त्रीलाभश्च  
फलंप्रोक्तं भृगुपुत्रस्यसूरिभिः ॥

बुध ॥

गुरु ॥

शुक्र ॥

|                         |                |                   |                                |
|-------------------------|----------------|-------------------|--------------------------------|
| जन्म नक्षत्रसे बुध जिसा | जननक्षत्रमें   | होयउसस            | शुक्रजिसनक्षत्रमेंहोयउस-       |
| नक्षत्रमें              | होय तिस पर्यंत | जन्मनक्षत्रतक     | गिन्नेसे जिसेजन्मनक्षत्रपर्यंत |
| गिनै जिस स्थान बुध पडा  | सस्थानमें      | पडाहोय उसक        | जिसस्थानमें पडाहोय उस          |
| उसका फलजानिये ॥         | फलजानिये ॥     | स्थानका फलजानिये— |                                |

| स्थान    | नक्ष | फल           | स्थान      | नक्ष | फल             | स्थान      | नक्ष | फल        |
|----------|------|--------------|------------|------|----------------|------------|------|-----------|
| मस्तक    | ३    | राज्यप्राप्त | मस्तक      | ४    | राज्यप्राप्त   | मुखमें     | ३    | उत्तमला   |
| मुखमें   | १    | धन           | दाहनेहा    | ४    | लक्ष्मीप्राप्त | मस्तकम     |      | शुभ       |
|          | २    | प्रीतलाभ     | कंठमें     | १    | धनलाभ          | दाहिनेपा.  |      | क्लेशहानि |
| नाभिम    | ५    | लक्ष्मी      | मुखमें     | ५    | पडा            | वामेपादमें | २    | क्लेशहान  |
| पायोमें  | ६    | प्रवास       | पायोमें    | ६    | मृत्यु         | हृदयमें    | २    | धनसौख्य   |
| वायेहाथ  | ४    | धनलाभ        | वायेहाथ    | ४    | सुखप्राप्त     |            | ८    | मित्रसुख  |
| दाहिनेहा | ४    | धनलाभ        | नेत्रोंमें | ३    | सुखप्राप्त     |            |      | स्त्रीलाभ |
| गुदामें  | २    | बंधवमर.      | ०          |      |                |            |      |           |

॥ शनिः ॥ सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभाज्जन्मऋक्षभम् ॥  
मूर्ध्वैकंच तथावक्रे करेचत्वारि दक्षिणे ॥ विन्यसेत्पादयुग्मे  
षट् वामबाहौ चतुष्टयम् ॥ हृदये पंचऋक्षाणि क्रमाच्चत्वारि  
नेत्रयोः ॥ हस्तेद्वयं गुदे चैकं मंदस्य पुरुषाकृतेः ॥ ॥ फलम् ॥  
मूर्ध्वक्लस्थभेरोगो लाभो वै दक्षिणेकरे ॥ स्यादध्वा चरणद्वंद्वे  
बंधो वामकरे नृणाम् ॥ हृदये पंचलाभेवै नेत्रेप्रीतिरुदाहता ॥  
पूजामस्ते परानूनं गदेमृत्युं विनिर्दिशेत् ॥ ॥ राहुः ॥ राहुचक्रं  
प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुऋक्षभम् ॥ मूर्ध्वित्रीणि तथाप्रोक्तं करे

चत्वारि दक्षिणे ॥ पादयोः षट्चक्ररक्षाणि वामहस्ते चतुष्टयम् ॥  
हृदयेत्रीणि कंठैकं मुखेद्वौ नेत्रयोर्द्वयम् ॥ गुह्येद्वयं क्रमेणैव  
राहुचक्रं स्वभादतः ॥ फलम् ॥ राज्यं रिपुक्षयः पंथा मृत्युर्ला-  
भोऽथरोगकः ॥ जयः सौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयं फलं बु-  
धैः ॥ ॥ केतुः ॥ केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुःक्षमम् ॥  
मूर्ध्निपंचजयश्चैव मुखेपंच महद्भयम् ॥ हस्तयोर्भानिचत्वारि  
विजयश्चजयस्तथा ॥ पादयोः षट्चसौख्यं स्याद्धृदिद्वेशोकका  
रके ॥ कंठेचत्वारिचव्याधिर्गुह्यैकंच महद्भयम् ॥

ज्ञान

राहु.

केतु.

ज्ञानि जितने नक्षत्रमें होय उ- जन्मनक्षत्रसे राहुनक्षत्र जन्मक्षत्रसे केतु जितने न-  
ससे जन्मनक्षत्र पर्यंत गिनै पर्यंत गिनै जहां नक्षत्रक्षत्रमें होय उसतक गिनै  
जिसस्थलमें नक्षत्रपडाहो- पडाहोय वह फल जा- जितने नक्षत्र पडे वे फल  
य वह फल जानिये ॥ ॥ जानिये ॥

| स्थान      | न० | फल        | स्थान      | न० | फल       | स्थान    | न० | फल     |
|------------|----|-----------|------------|----|----------|----------|----|--------|
| मस्तक      | १  | रोग       | मस्तक      | ३  | राज्यभात | मस्तक    | ५  | जय     |
| मुख        | १  | रोग       | दायांहा.   | ४  | रिपुक्षय | मुखमें   | ५  | बडाभय  |
| दाक्षिणहा. | ४  | लाभ       | पार्योमें  | ६  | मार्गचलन | हाथोंमें | ४  | विजय   |
| पार्योमें  | ६  | मार्गचलन  | बायेहाथ    | ४  | मृत्यु   | पार्योपर | ६  |        |
| वायांहाथ   | ४  | बंधन      |            | ३  | लाभ      | हृदयमें  |    | शोक    |
| हृदयमें    | ५  | लाभ       | कंठमें     | १  | रोग      | कंठमें   |    | व्याधि |
| नेत्रोंमें | ४  | प्रीतिला. | मुखमें     | २  | जय       | गुह्यपर  |    | बडाभय  |
| मस्तकमें   | १  | पूजा      | नेत्रोंमें | ३  | सौख्य    |          |    |        |
| गुदामें    | १  | मृत्यु    | गुदामें    | २  |          |          |    |        |

जन्मनक्षत्रकहांपडाहै तिसका ज्ञान ।

शीर्षेत्रीणि मुखेत्रयं च रविभादेकैकभं स्कंधयोरेकैकं भुजयो-  
स्तथा करतले धिष्ण्यानि पंचोदरे ॥ नाभौ गुह्यतले च जानु-

( २२६ )

ज्योतिषसार ।

गुमले चैकैकमृक्षं क्षिपेजंतोः केचिदितिब्रुवंतिमणकाः शेषा-  
णिपादद्वये ॥ अल्पायुश्चरणस्थितेचगमनं देशांतरंजानुभे  
गुह्येस्यात्परदारलंभनमथो नाभौचसौख्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्यहृदि  
चौर्यमस्य करयोर्बाह्वोर्बलं वैमुखे मिष्टान्नंचलभेच्च मानवगणो  
राज्यं स्थिरंमूर्द्धनि ॥

टीका—केवल मनुष्यचक्र सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक देखनेका क्रम  
प्रथम ३ नक्षत्र मस्तकपर फल राज्यप्राप्ति, मुखपर ३ नक्षत्र फल मिष्टान्न-  
भोजन, स्कंधपर २ नक्षत्र फल बलवान्, भुजापर २ नक्षत्र फल बल, हा-  
थके तलवेपर २ नक्षत्र फल चौर, हृदयपर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य, नाभिपर  
३ नक्षत्र फल सुख, गुह्यपर १ नक्षत्र फल स्त्रीसे लंपट, जानुपर २ नक्षत्र  
फल देशवास, पादपर ६ नक्षत्र फल थोडा आयुष्य, ऐसा जन्मनक्षत्रसे  
स्थानविचार करना ॥

लग्नशुद्धिपंचकदेखना ।

गततिथियुतलग्नं नंदहृच्छेषकंच वसुयमयुगषट्के क्षोणिसं-  
ख्या क्रमेण ॥ रुगनलनृपचौरं मृत्युदंपंचकंस्याद्गतगृहनृप  
मार्गोद्गाहके वर्जनीयम् ॥

टीका—गततिथिको लेकर उसमें लग्न मिलावे और नवका भागदे शेष  
बचे तिसका फल जानिये, ८ बचे तो रोगपंचक वे यज्ञोपवीतमें वर्जित,  
२ बचे तो आग्निपंचक वे गृहारंभमें वर्जित, ४ बचे तो राज्यपंचक वे  
और ६ बचे चौरपंचक ये दोनों पंचक गमनलग्नमें वर्जित हैं, १ बचे  
तो मृत्युपंचक ये विवाहमें वर्जित, इनसे अधिक जो शेषांक बचे तो नि-  
ष्पंचक जाने ये सर्वकार्यमें उक्त हैं ॥

वारोंमें पंचकवर्जित ।

रवौरोगं कुजेवर्द्धिं सोमेतुनृपपंचकम् ॥

बुधेचौरं शनौमृत्युं पंचकानितुवर्जयेत् ॥

टीका—रविवारमें रोगपंचक, मंगलमें अग्निपंचक, सोमवारमें राजपंचक बुधवारको चौरपंचक, शनिवारको मृत्युपंचक, ऐसे ये पंचक इनवारोंमें वर्जित जानिये ॥

## दिनमान रात्रिमान ।

अयनादिकवासररामहता गगनानलबाणशशांकयुताः ॥

परिभाजितशून्यरसैर्घटिका कर्कादिनिशा मकरादिदिनम् ॥

टीका—अयन कहिये कर्क संक्रांतिसे मकरसंक्रांतितक ६ महीने तैसेही मकरसे कर्कतक ६ महीने जिस दिवसका दिनमान जानना होय तिस पर्यंत कर्क संक्रांतिसे दिन गिनके उसको ३ से गुणा करे जो अंक आवे उनमें १५३० मिलावे और ० का भागदे जो बचे वह रात्रिमान और जो मकरसंक्रांतिसे गणना करे तो दिनमान आवे यह जानिये ॥

## दिन कितना चढाहै यह जाननेकी रीति ।

पादप्रभा नगयुता रहिताचमेषात्षट्स्विन्दुनात्रियुगबाणश-  
राब्धिरामैः ॥ स्याद्भाजको दिनदलस्य नगाहतस्य पूर्वे गताः  
स्युरपरे दिनशेषनाड्यः ॥

टीका—अपनी छायाको पाँवसे नापे जितने पाँव आवे उनमें ७ मिलावे और मेषसंक्रांतिसे कन्या संक्रांतिपर्यंत इन्दु कहिये एक उसमें घटावे तिसके आगे तुलासे मीनपर्यंत जो संक्रांति होय उसका क्षेपक तो घटादेवै ऐसे तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ इसप्रमाणसे अंक घटावे जुदे लिखे तिस पीछे दिनदल कहिये १५ इसको ७ से गुणाकिया तो हुए तुला १०५ इनमें पीछे लिखेहुए अंकको भागदे जो भागांक आवै वे घटि जानिये परंतु दिनके पूर्वार्द्धमें दिवसकी घटी आवें और उत्तरार्द्धमें दिन शेष आवे यह जानिये ॥

## रात्रि कितनीगई यह जाननेकी रीति ।

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्तसंख्यादि



( २२८ )

ज्योतिषसार ।

विंशतिघ्ननवहृतं गतारात्रिःस्फुटाभवेत् ॥

टीका—रात्रिमें जो नक्षत्र होय तिसपर्यन्त सूर्यनक्षत्रसे गिनके ७ घटादे शेष रहे उसको २० से गुणा करे और ८ का भागदे जो अंक शेष रहे उतनी ही गतरात्रि कहिये ॥

अंतरंगबहिरंगनक्षत्र ।

सूर्यभादुगुणंपुनः पुनर्गण्यतामितिचतुष्टयंत्रयम् ॥

अंतरंगबहिरंगसंज्ञकं तत्रकर्मविदधीततादृशम् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इसप्रकार वर्त्तमान नक्षत्र तक वारंवार गिने तो वे क्रमसे अंतरंग बहिरंगसंज्ञक होते हैं इनमें छाना और पठवाना आदि कर्म करे ॥

सूतिकास्नान ।

करेंद्रभाग्यानिलवासवांत्ये मैत्रैंदवाश्विध्रुवभेऽह्निपुंसाम् ॥ तिथा-  
वरिक्तेशुभमामनंति प्रसूतिकासनानविधिमुनीन्द्राः ॥ इति श्रीशुक  
देवविरचिते ज्योतिषसारे संवत्सरादिप्रकरणं समाप्तम् ॥

टीका—हस्त ज्येष्ठा पूर्वाफाल्गुनी स्वाति घनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग  
अश्विनी और ध्रुवनक्षत्र इनमेंसे कोई नक्षत्र जिसदिन होय उस दिन सूति-  
कास्नान शुभ कहाहै, परंतु रिक्तातिथि वर्जित है यह मुनीन्द्रोने कहाहै ॥

इति पं० केशवप्रसादविरचितज्योतिषसारभाषा समाप्ता ॥

पुस्तक मिलनेका ठकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवैकटेश्वर” छापाखाना—मुंबई,

## विक्रयग्रन्थ.

| नाम.   | ह० आ० |
|--|-------|
| लीलावती सान्वय भाषाटीका अत्युत्तम ...  | १-८   |
| बृहज्जातकसटीक भट्टोत्पलीटीकासमेत जिल्द...  | १-८   |
| बृहज्जातकमहीधरकृतभाषाटीका अत्युत्तम ...  | १-८   |
| वर्षदीपकपत्रीमार्ग ( वर्षजन्मपत्र बनानेका )...                                   | ०-४   |
| मुहूर्त्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफू रु० १ ग्लेज                                   | १-८   |
| मुहूर्त्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका ...   | २-८   |
| ताजिकनीलकंठीसटीक तंत्रत्रयायात्मक ...  | १-०   |
| ताजिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत<br>भाषाटीका अत्युत्तम टैपकी छपी ...        | १-८   |
| ज्योतिषसार भाषाटीकासहित ... ..   | १-०   |
| मुहूर्त्तचिंतामणिभाषाटीका महीधरकृत ...   | १-०   |
| मानसागरपिद्धति ( जन्मपत्रबनानेमेंपरमोपयोगी )..                                   | १-०   |
| बालबोधज्योतिष ... ..   | ०-२   |
| ग्रहलाघव सान्वय सोदाहरण भाषाटीकासमेत स्पष्ट<br>उदाहरण गणिताभ्यासियोंको परमोपयोगी | १-४   |
| जातकसंग्रह ( फलादेश परमोपयोगी ) ...  | ०-१२  |
| चमत्कारचिंतामणि भाषाटीका ... ..  | ०-४   |
| जातकालंकार भाषाटीका ... ..   | ०-६   |
| जातकालंकारसटीक ... ..  | ०-६   |
| जातकाभरण ... ..  | ०-१२  |
| प्रश्नचंडेश्वर भाषाटीका ... ..   | ०-१२  |
| पंचपक्षी सटीक ... ..   | ०-४   |
| पंचपक्षी सपरिहार भाषाटीकासमेत ...  | ०-६   |
| लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वयसहित ...  | ०-३   |
| मुहूर्त्तगणपति * ... ..  | ०-१२  |

( २३० )

जाहिरात.

| नाम.  | ह० आ० |
|---|-------|
| मुहूर्त्तमार्तण्ड संस्कृतटीका भाषाटीकासहित  | १-०   |
| शीघ्रबोध भाषाटीका ... ..  | ०-६   |
| षट्पंचाशिका भाषाटीका ... ..   | ०-४   |
| भुवनदीपक सटीक ४ आ० भाषाटीका ...   | ०-८   |
| जैमिनिसूत्र सटीक चार अध्यायका ...   | ०-६   |
| रमलनघरत्न ... ..  | ०-८   |
| बृहत्पाराशरी ( होरा ) ... ..  | ६-०   |
| सर्वार्थचिंतामणि ... ..   | ०-१२  |
| लघुजातकसटीक ... ..  | ०-५   |
| लघुजातक भाषाटीका ... ..   | ०-८   |
| सामुद्रिकभाषाटीका ... ..  | ०-४   |
| सामुद्रिकशास्त्र बड़ा सान्वय भाषाटीका ...   | १-४   |
| यवनजातक ... ..  | ०-२   |
| पंचांग तिथिपत्र संवत् १९५७ का ..  | ०-१॥  |
| पंचांग सं० १९५७ पं०महीधरकृत ...   | ०-४   |
| पंचांग १० वर्षका ( ज्योतिर्विदोंको लाभदायक )  | १-८   |
| हायनरत्न ... ..   | १-८   |
| अर्घप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इसमें—तेजी<br>मंदी वस्तु देखनेका विचार है ...                                     | ०-४   |
| ज्योतिषकी लावणी ... ..  | ०-१   |
| शकुनवसन्तराज भाषाटीकासहित इसमें<br>नानाप्रकारके शकुन वर्णित हैं ऐसा पूर्ण<br>शकुनका ग्रन्थ और नहीं छपा है ... | ३-०   |
| रत्नघोतभाषाटीका ... ..  | ०-५   |
| लग्नचंद्रिका मूल ४ आने और भाषाटीका ...  | ०-१०  |

| नाम.   | रु० आ० |
|--|--------|
| मकरंदसारिणी उदाहरणसहित ... ..  | ०-८    |
| भावकुतूहलभाषाटीका ( फलादेशउत्तमोत्तमहै ) ... ..  | १-०    |
| प्रश्नपयोनिधि ... ..   | ०-२    |
| वर्षबोध ( ज्योतिष )... ..  | ०-१२   |
| सिद्धांतद्वैवज्ञविनोद ज्योतिष भाषा—जिसमें<br>भूगोल और खगोल विद्या सूर्यसिद्धांतका<br>उदाहरण और पंचांग बनानेकी पद्धति आदि<br>महर्घ्य समर्घ्य चमत्कारी योगों सहित<br>और धर्मशास्त्रसहित ... .. | २-०    |
| संकेतनिधि सटीक पं० रामदत्तजीकृत इसमें<br>संस्कृत काव्यरचना बहुत सुंदरहै और<br>जन्मपत्र देखनेके चमत्कारी योग बड़े<br>विलक्षण और अनुभवसिद्धविद्या करके<br>विभूषित हैं ... ..                   | १-०    |
| मुकुन्दविजय चक्रों समेत ... ..   | ०-१२   |
| पद्मकोष भाषाटीका ( ज्योतिष )... ..   | ०-२    |
| स्वप्नप्रकाशिका भाषाटीका ... ..  | ०-३    |
| स्वमाध्याय भाषाटीका ... ..   | ०-२    |
| परमसिद्धान्त ज्योतिष ( यह ग्रन्थ ज्योतिष्वक्र<br>के ज्ञानमें अत्यंत उपयोगी है ) ... ..   | २-०    |
| विश्वकर्मप्रकाश भाषाटीका ... ..  | १-८    |
| विश्वकर्मविद्याप्रकाश [ घर बनानेकी सम्पूर्ण<br>क्रिया वर्णित हैं ] ... ..  | ०-६    |
| सूर्यसिद्धान्त संस्कृतटीका और भाषाटीका<br>समेत ( ज्योतिष ) ... ..  | २-०    |

( २३२ )

जाहिरात.

| नाम.  | ह० आ० |
|---|-------|
| मानसप्रश्नदीपिका भाषा ... ..  | ०-३   |
| विवाहवृन्दावन सटीक ... ..   | १-०   |
| राजमार्तण्ड ( भोजराजप्रणीत ) ... ..   | ०-१२  |
| ताजिकभूषण भाषाटीका(अत्युत्तम स्पष्टार्थ स० )  | ०-८   |
| नष्टजन्माङ्गदीपिका और पंचांगदीपिका गद्यपद्य-<br>टीका समेत ( ऐसी उपयोगी कुंजीहैं जो<br>हजारों रु० खर्चसेभी अलभ्यहैं ज्योतिषी<br>इससे अमूल्य लाभ पावेंगे ... .. | ०-४   |
| प्रश्नवैष्णवभाषाटीका ( अनेकप्रश्नोंका भली-<br>भांति वर्णनहै ) ... ..  | ०-१०  |
| ग्रहगोचर ( ज्योतिष ) ... ..   | ०-२   |
| भुवनदीपक सं० टी० भा० टी० ... ..   | ०-८   |

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवेंकटेश्वर ” छापाखाना ( मुंबई )